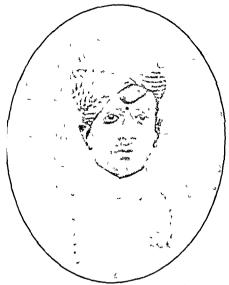
## पानमल सेठिया।

जन्म दिवस सम्पत् १८५० मिती चैत सुदी १३ तारीख १२ अप्रेल सन १८००



फोटु जतारा सम्बत् १८७८ मिती यावण सदी १३ तारीख ५ श्रमष्ट सन १८२२





🕸 श्रीवीतरागाय नमः 🕸

# श्रावक स्तवन संग्रह

संयहकर्ता—

# भैरोदान तत्पुत्र पानमल सेठिया।

वीकानेर निवासी।

PANMULL SETHIA, Mohalla Marotian Bikaner Rajputana,

4766

मृत्य प्र`मर्ले पठनम् प्रति १०००



चीर सचत् २४४६ चिकाम सचत् १६७६ ई० सन १६२२ 76 76 76 F

यह पुस्तक यहा से रक्ले. जयगा

वांचे दुटी भाषा में अशुद्ध लिख्यो : विद्वान ऋपाकर शुधार लेवें यही संग्रह व

की नम्र विनती है।

पानमल सेठिये की तरफ से.: जैनः भाइयो की सेवा में।

#### श्रीवीतरागायनमः

# ॥ त्रानुक्रमगिका॥



ŪŪ

ਰਿਚਸ਼

1414	50
मङ्गला चरण-श्लोक	?
दोहा	<b>ર</b>
<b>ञ्रनु</b> पूर्वी •	8
<b>२</b> ४ तिर्थंकरांका नाम	5
२० विहरमानो का नाम	€
११ गण्धरोका नाम	१०
१६ सतीयो का नाम	1 30
त्र्यनंतचोवीसी साधु वंदणा	११ से २३
१४ नियम	२३ से २८
स्तवन गुण्याम	रुद्ध ।
स्तवन गण्धरजीनो	રદ

श्रीपद्मम प्रभुजी को स्तवन	३०
श्रीचंदाप्रभुजी को स्तवन	३१
<b>अनाथीमुनोकी सज्जाय</b>	३३
त्रिया चारित्र रास	३६से ४४
जीवा पेंतीसी	४५ से ५०
समकित-छकड़	<b>५</b> १
राजुलजीरोवारेमासो	प्रसे प्रप्र
चित संभूतकी सजाय	प्रइ से प्रट
दान अधिकारकी लावणी	६०
ऊपदेशी गजल	६२ तथा १०६
	तथा ११२
काया की चेतन को शिखामण	६३
ऊपदेशी स्तवन	६६ तथा ७५
चौवीसी तिथकरोका स्तवन	
( चोवीसी )	६६ से ७२
चौवीसो की लावणी	७२ से ७४
स्री शिचा दोहा लावगी	७७ से ७६

ऊपदेशी लावगी	८० तथा
कलियुग की लावणी	<b>≃</b> 8
सत्ययुग की लावणी	<del>⊏</del> ξ
वैरागी लावणी	==
पर स्त्री निरखणे ऊपर लावणी	03
सात व्यसन लावणी	83
मनको शीख-पड	६२
ऊपदेशी चुटकलो	દેક
शीखामण्की सजाय	€8
सातवार को स्तवन	<i>e3</i>
नेमिनाथजी को स्तवन	<u> ೯</u>
चिन्तामणजी को स्तवन	१००
ऊपदेशो लावणी	808
चेतन खेलरो स्तवन	१०२
दश वोलां का स्तवन	१०३
संगतरी सजाय	४०म
सुणो सुजान का स्तवन	१०६

£ i

चौवीसी री गजल	१०७
चॅदन वाला की गजल	११०
चउटह नेमकी गजल	१११
बारह मासा श्री रिपभदेवजी का	११३ से १२१
गजल क्रोध	१२२ से १२३
गजल गरूर की	१२४
गजल दगावाजी	१२५ से १२६
गजल संतोषकी	१२७से १२९
ऊपदेशी दोहा,कविता,कुगडलिया	,
मनहरछन्द, सवैया वगेरे	१२६ से १६४





॥ श्रो वीतरागाय नमः ॥

# श्रावक स्तवन संग्रह ।



#### मंगेल—श्लोक।

श्चर्हन्तो भगवंत इन्द्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धिस्थिताः श्राचार्या जिनशासनोज्ञति कराः पूज्याउपाय्यायकाः। श्रो सिद्धान्त सुपाटका सुनिवरा रत्नेत्रयाराधकाः। पंचैतं परमेष्टिनः प्रतिदिनं। कुर्वन्तु वो मंगलस्॥

#### ॥ दोहा ॥

गुरू सम जग दाता नहीं, गुरू विन ज्ञान न होय। मास्ति सिद्धि वंछित फले, पाप पङ्क सवि धोय ॥ दान शोल तप भावना, इह च्यारो जग सार। इह श्रावक स्तवन संयह, सुणजो हृदय विचार॥

अनुपूर्वी पढ्नेकी विधि और फल ॥ दोहा ॥ १ 'रामो अरिहंतारां' कहो एकको। २ 'गमो सिद्धार्गं' दोतांय ॥ ३ 'गमो आयरियागं तोनको कहो ८ 'रामो उवज्भायार्षं' चौजाय ॥ १ ॥ ५ 'गमो लोए सब्ब साहगा। पंचका श्रंक उचार ॥ विलोम अंक अनुक्रमसे। पढ़ो अनुपृद्धी मभार ॥ २ ॥

कोष्टक बीस सौ बोसमंत्र ।

जो पढ़ें स्थिर शुद्ध योग ॥

अतुपूर्व्वी पदनेकी विधि और फल।

एक ञ्रांविल तप फल लहे। मिले इच्छित संजोग ॥ ३ ॥ चंचल मन को स्थिर करण। ठाणांग सूत्रानुसार ॥ श्रनुपृर्व्वा रचना रचि । **ञ्राचार्य करण उपकार ॥ ४ ॥** अशुभ कर्म के हरण को। मंत्र वडो नवकार ॥ वाणो द्वादश ऋंगका ॥ सोध काढा तत्व सार ॥ ५५ ॥। एकही वक्त नवकार को। शुद्ध जपे जो सार ॥ वो वन्धे शुभ देवका। आयुष्य अपरम्पार ॥ ६ ॥ विघन हरे मंगल करे। पावे स्वर्गु विमास ॥ कोड़ा कोड़ी तिरगये। मग्राधर<sup>'</sup>किये व्याख्यान ॥७॥

ೕೲೲ

अनुपूर्वी १	शतुपूर्वी २	अनुपूर्वी ३				
१ २ ३ ४ ५	१ २ ४ ३ ५	१ ३ ४ २ ५				
२१३४५	२१४३५	३१४२५				
१३२४५	१ ध २ ३ ५	१ ४ ३ २ ५				
3 2 2 8 4	8 2 2 3 4	४१३२५				
2 3 28 4	२४१३५	3 8 8 8 4				
3 2 2 8 4	ध २ १ ३ ५	ध ३ १ २ ५				
धनुपूर्व्वी ४        अनुपूर्वी ५        अनुपूर्वी ६						
2 3 8 8 9	2 2 3 4 8	१ २ ५ <u>३ ४</u>				
3 2 8 8 4	2 2 3 4 8	28438				
28384	१३२५8	2 4 2 3 8				
8 2 3 8 4	3 8 2 4 8	4 8 3 8				
38284	2 3 8 4 8	3 4 2 3 8				
धि ३ २ १ ५	इ रिशि ४	५ २ १ ३ ४				
	CA B					

#### अनुपूर्वी पढनेकी विधि और फल।

धनुपूर्जी ७ धनुपूर्जी ८ 🗸 अनुपूर्जी ६

		_				_			_	
	3	3	4	12	8	Ī	२	3	4	Ī
	13	१	ų	ર	ន		3	२	4	
	₹	٤	з	ય	ટ		2	٦	3	-
	3	१	3	٦	뫙		પ	ર	3	1
	ñ	ધ	१	२	ક	1	ş	4	₹	1
ļ	4	3	श	ર	४		4	3	ર	8

Ĺ	१	२	ધ	٥	3
	ર	શ	ន	ų	ŔŶ
	₹	૪	!		ર
	8	१	२	ષ	3
	۹	8	१	٤	ş
1	₹	٦	१	4	3

अनुपूर्वी १० अनुपूर्वी ११

अनुपूर्व्वी १२ शिष्ठ ३

									_	_
ĺ	3	3	4	ક	₹	१	ક	4	3	Ľ
	ع ا	१	ષ	પ્ર	ষ	ध	१	લ	२	3
	Q,	4	2	ધ	3	१	٧	ક	ર	3
!	3	१	ર	ક	Ą	ધ	१	છ	ર	32
	ર	4	8	ષ્ઠ	'n	જ	9	१	ર	¥
	ષ	२	શ	ષ્ઠ	3	ષ	ધ	१	ર	ર

- -	
8 2 4 8 3	ŀ
२५४१३	
५ २ ४ १ ३	
ध ५ २ १ ३	
५ ४ ३ १३	

श्चावक	स्तवन	संग्रह	1
--------	-------	--------	---

Ę

अनुपूर्वी	१३	अनुपूर्वी १४ /	अनुपूर्वी १५ '
	**	2.00	-34. 21

	Ţ	
23842	१३५४ २	१ ४ ५ ३ २
3 8 8 4 3	38483	88932
१ ४ ३ ५ २	१५३४ र	१५ ३३२
88342	५१३४२	4 8 8 3 2
38842	3 4 8 8 8	8 4 8 3 3
8 3 8 4 9	५ ३ १ ४ २.	५ ४ १ ३ २

अनुपूर्व्वी १६ , अनुपूर्व्वी १७ - अनुपूर्वी १८ :

3	ક	۹	8	2 2 2	Ī	=	13	ક	Q	१
8	3	ا— الإ	\$	2		3	12	ક	4	1
RY.	ધ	8	13	2		<b>ર</b>	ક	3	ષ	ર
Ç,	3	ષ્ટ	१	ર	1	ષ્ઠ	ર	ર	Ċ,	18
3 3	۹	3	9	२		3	ક	٦,	L,	१
•	R	١٩	१	2		ક	₹	ર	13	१

अनुपूर्वी १६

अनुपूर्व्यो २०

		_		_
ર	8	٤	3	٤
ક	ર	4	3	१
2	4	8	₹	\$
٤٩	٦	8	3	2
8	١٩	₹	3	१
4	ક	ર	3	१

<b>\</b>	ક	ધ્ય	2	१
ક	, <u> </u>	نې	२	<del>१</del>
₹	9	١	اع	१
ب	₹	8	ર	٤
ક	4	₹ —	<u> </u>	१
١٩	8	₹	ર	१



# ॥ अथ २४ तिर्थंकरोंके नाम ॥

थ्रो विमलनाथ/स्वामी श्री रूपभदेव स्वामी श्री अनतनाय खामी श्रो अजितनाथ खामी श्री धर्मनाय खामी श्री सभवनाथ खामो भ्री शान्तिनाथ खामी श्री अभिनद्न खामी १७ श्री कु थु नाथ खामी श्री सुमत्तिनाथ खामी १८ श्रो अर्हनाथ स्वामी श्री पद्मप्रभु खामी श्रो मल्लिनाथ खामी श्रो सुपार्श्वनाथ खामी ३१ श्री मुनिसुवत सामी २० श्री चद्रप्रभु खामी थी नमिनाथ खामी श्रो सुविधिनाथ खामी ₹ { २३ श्री रिप्रनेमिनाथखामी भी भितलताथ खामी थ्री पार्थनाथ खामी 23 थो थै यासनाथ खामी श्री महावीर खामो श्री वासुपूज्य खामी



### ॥ अथ २० विहरमानोंके नाम ॥

१ श्री सिमंघर खामो
२ श्री युगमधर सामी
३ श्री वाहु सामी
४ श्री सुवाहु सामी
५ श्री सुवाह सामी
६ श्री स्वप्रम सामी
७ श्री रूपभानद सामी
६ श्री अनतवीर्य सामी
६ श्री स्रामाव सामी
६ श्री स्रामाव सामी
६ श्री श्री स्रामाव सामी

११ श्री चज्रधर खामी
१३ श्री चद्रानद्दन खामी
१३ श्री चद्रवाहु खामी
१४ श्री गुजर खामी
१६ श्री देश्वर खामी
१६ श्री नेमम्म खामी
१७ श्री चरिसेन खामी
१८ श्री महाभद्र खामी
१६ श्री देवयस खामी



#### ॥ अथ ११ गणधरोंके नाम ॥

१ श्री इन्द्रभृतिजी २ श्री अग्नीभृतिजी २ श्री वायुभृतिजी श्री विगत खामीजी ५ श्री सुधर्मा खामीजी ६ श्री मडा पुत्रजी ७ श्रो मोरीपुत्रजो ८ श्रो अकम्पीतजी १ श्री अचलजी १० श्री मैतारजजी ११ श्री प्रमासजो

# ॥ अथ १६ सतीयोंके नाम ॥

श्रो वाह्मीजी श्रो सुभद्र।जी १० श्री चेलणाजी श्री सुन्दरीजी ११ श्री शिवाजी श्री कौशल्याजी १२ श्री पद्मावतीजी श्री सीताजी १३ थ्रो मृगावतीजी श्री कु तोजी १४ थ्रो सुळसाजी श्री द्रोपदीजी १५ श्री दवदतीजी श्री राजमतिजी १६ थ्रो प्रभावतोजी श्री चद्रनवालाजी

### अथ अनंत चोवीसी साधु वंदना टिख्यते।

नम् अनंत चोवीसी, चरपभादिक महावीर; आर्य चेत्रमां घाली धर्मनी सीर ॥१॥ महा अतु-ल्य वलिनर, शुरवीर ने धीर, तीर्थ प्रवर्त्तावी, पहोत्या भवजल तीर ॥२॥ श्रोसीमिंधर प्रमुख, जवन्य तीर्थंकर वीश, छे ऋढीद्वीपमां, जयवंतां जगदीश ॥३॥ एक शो ने शितेर, उत्कृष्टा पदे जगीश, धन्य महोटा प्रभुजी, जेहने नमावं शीश ॥४॥ केवली दोय कोड़ी, उस्कृप्टा नव कोड़, मुनि दोय सहस्र कोडी, उत्कृष्ट नव सहस्र क्रोड ॥५॥ विचरे विदेह में मोटा तपखो घोर, भावे करी वंदु, टाले भवनी खोड़ ॥६॥ चोवीशे जिनना, सघला ए गर्णधार; चउदसें ने वावन, ते प्रण्मुं सुखकार ॥७॥ जिनशाशन नायक, धन्य श्रो वीर जिएंट, गौतमादिक गएधर;

वर्त्ताञ्चो झाणंद ॥=॥ श्री रिवभदेवना भरता-दिक सो पुत्र; वैराग्यमन झाणी, संयम लियो

अद्भुत ॥६॥ केवल उपजाई, करि करणी कर-तुत; जिनमत दीपावी, सघला मोच पहु त ॥१०॥ श्री भरतेश्वरना, हुवा पटोधर आठ, आदित्य जशादिक, पहोंत्या शिवपुर वाट ॥११॥ श्री जिन अन्तरना, हुवा पाट असंख्य; मुनि मूक्ति पहोंत्या, टाली कर्मनो वंक ॥१२॥ धन्य कपिल मुनिवर, नेमी नमं ऋणगार; जेरे ततच्रण त्याग्यो, सहस्र रमणी परिवार ॥१३॥ मुनिवर हरकेशि चित्त मुनिश्वर सार, शुद्ध संयम पाली, कर दियो खेवो पार ॥१४॥ वली इखुकार राजा, घर कम-लावती नारः भग्न ने जसा, तेहना दोय कुमार ॥१५॥ अये छति रिद्धि छांड़ीने, लीधो संयम भार; इरा ऋल्पकालमां, पाम्या मोच द्वार ॥१६॥ वली संजतो राजा, हरण आहिडे जाय; मुनिवर गद भाली, त्राएची मारग ठाय ॥१७॥ चारित्र

लइने, भेटया गुरुना पाय; चत्री राज रुषीश्वर, चर्चा करी चित्त लाय ॥१=॥वली दशे चकवर्ति, राज्य रमणी ऋदि छोड़; दशे मुक्ति पहोंत्या, कुलने सोभा मोड़ ॥१६॥ इए। श्रवसर्ष्पिणीमां, श्राठ राम गया मोचः; वलभद्र मुनिश्वर, गया पंचमें देवलोक ॥२०॥ दशार्णभद्र राजा, वीर वांद्या धरि मान: पछे इन्द्र हठायो, दियो छ काय अभेदान ॥२१॥ करकंडु प्रमुख, चारे प्रत्येक बोध; मुनि मुक्ति पहोत्या जीत्या कर्म महा जोध ॥२२॥ धन्य महोटा मुनिवर, मृगापुत्र जगोशः मुनिवर<sup>,</sup> श्रनाथी, जीत्या रागने रोश ॥२३॥ वली समुद्रपाल मुनि, राजिमति रहेनेम; केशोने गौतम, पाम्या शिवपुर चेम ॥२४॥ धन्य विजय-घोष मुनि, जयघोष वली जाए; श्री गर्गाचार्य. पहोरया छे निर्वाण ।।२५॥ श्री उत्तराध्ययनमां, जिनवर कया वखाणः शुद्ध मनसे ध्यावो, मनमें , धिरज आण् ॥२६॥ वली खंदक सन्यासी, राख्यो

गौतम स्नेह; महावीर समीपे, पंच महावत लेह<sub>ा।२०११</sub> तप कठोण् करीने, भूत्री आपणीः देह; गया अच्युत देवलोके, चवी लेशे भव छेह ॥२=॥ वली ऋषभदत्त मृनि, शेठ सुदर्शन सारः शिवराज ऋवीश्वर, धन्य गंगेयो अणगार ॥२६॥ शुद्ध संयम पाली, पाम्या केवल सार; प्र चारे मुनीवर, पहोत्या मोच मकार ॥३०॥ भगवंतनी माता, धन्य धन्य सतो देवानंदा; वली सती जवंति, छोड दिया घरफंदा ॥३१॥ सतो मुक्ति पहोंत्यां, वलो ते वीरनी नंद; महा सतो सुदर्शना, घणी सतियोंना वृद् ॥३२॥ वली कार्तिक शेठे, पड़िमा वही शुरवीर; जिम्यो महोरा उपर तापस वलती खीर ॥३३॥ पछी चारित्र लीघुं, मत्री एक सहस्र आठ धीर; मरी हुवा शक्रेंद्र, चवी लेशे भव तीर ॥३४॥ वली राय उदाइ दियो भागोजने राज; पोते चारित्र लइने, सार्या आतम काज ॥३५॥ गंगदत्तमुनि

ार्णंद, तरणतारण जोहाज; कोशल<sup>्</sup>म्नि वर, ्यो घणाने साज ॥३६॥ धन्य सु नचत्रं मृति-८, सर्वानुभुति अणगार; आराधिक हुद्दने, गया बलोक ममार ॥३७॥ चिवमुक्ति जाशे, बिल हि मुनोश्वर सार; बोजा पण मुनिवर श्रीभग-ीमां अधिकार ॥३**८॥ श्री** शिकनो वेटो मोटो नेवर मेघ; तजो खाठ खंतेउर, खारायो मन रेग ॥३६॥ विरपें व्रत लेइने, बांधी तपनी तेग: ॥ विजय विमाने, चिव लेशे शिव वेग ॥४०॥ व थावर्चा पुत्र, तजो वत्रिसे नार; तेनी साथे कल्या, पुरुष<sup>्</sup>एक हजार ॥४१॥ सुख**देव** याशी, एक सहस्र शिष्य लार; पांच सो शुं क, लिधो संयम भार ॥४२॥ सर्व सहस्र ाइ, घणा जीवांने तार; पुंडरिक गिरि उपर, यो पादोप गमन संथार ॥४३॥ आराधिक ने, कर दियो खेवो पार, हुवा मोटा सुनिवर, न लिया निस्तार ॥४४॥ धन्य जिनपाल मनि-

वर, दोय धना हुवा साध; गया प्रथम देवलोके, मोच जारो आराध ॥४५॥ श्री मह्निनाथना छव मीत्र, महावत्त प्रमुख मुनिराय; सर्व मूक्ति सिधाव्या, गर्णधर पदवी पाय ॥४६॥ विल जि-तसत्र्राजा, सुबुद्धि नामे मधान; पोते चारित्र लेइने पाम्या मोच निधान ॥१७॥ धन्य तेतलि मनिवर, दियो छ काय।ने अभेदान; पाटिला प्रतिवोध्या, पाम्या केवलज्ञान ॥४८॥ धन्य पांचे 'पांडव छठो द्रौपदी नार; स्थिवरनी पासे. लिधो ्संयम भार ॥४८॥ श्री नेमिवंदननो, एहवो श्रभी-'यह कोध; मास मास खमण तप ; शेत्रं जै जाय सिद्ध ॥५०॥ धर्मघोष तणा शिष्य, धर्महिच ्त्र्यणगार; किड़ियोंनी करुणा, त्र्राणो दया धर्म सार ॥५१॥ कडुवा तुंवानो किघो सघलो ऋहार; सर्वार्थसिद्ध पहोत्या, चिव लेशे भवपार ॥५२॥ वली पुंड़रिक राजा, कुंडरीक डगीयो जास; पोते चारित्र लेइने, न घाली धर्ममां हास ॥५३॥ र्थसिद्ध पहोंत्या, चिन लेशे निर्वाण; श्री, ासूत्रमां, जिनवरे कर्याः वखाणः ॥५८॥ ।मादिक कुमर, सगा श्रठारे भ्रात, सर्व क विष्णु सुत्र,धारणी ःज्यारी मातः।।५५॥ ञ्चाठ ञ्चाठ, नारी काढी दिचानी वात; त्र लेइने कीश्रोः मुक्तिनो साथ ॥५६॥ श्री ोक सेनादिक, छुये सहोदर भाय; वसुदेवना **ा, देवको ज्यारी माय ॥५७॥ भद्दीलपुर** ो, नांग गाहावइ.जागः; सुलसा घेर वधिया, ाली नेमिनी वाण्गाप्र⊏॥ तजी व्रत्रीश वत्रीश . इरी., निकलीया छटकाय, नल कुर्वेर समा**णा**, ॥ श्री नेमिना पाय ॥५६॥ करी. छठ छठ<sup>.</sup> ्रां, मनमें बैराग्य लायः एक मास<sup>्</sup>संथारे s वीराज्या जाय ॥६०॥ वली दारुण सारण, ब दुमुख मुनिराय, वली कुमर ऋणादित गया गढ माय ॥६१॥ वर्सुदेवना नंदन, धन्य धन्य ुकमाल; रुपे ृञ्चतिुसुंदर, कलावंत वय

वाल ॥६२॥ श्री नेमि समीपे, छोडयो मोह जंजाल;

भीजुनी पडिमा, गया मशास महाकाल ॥६३॥ देखी सोमल कोप्यो, मस्तक वांधीपाल: खेरना खीरा, शीर ठविया ऋसराल ॥६४॥ मुनि नजर न खंडी, मेटी मननी भाल॥ कठन परीसह सहीने मूक्ति गया ततकाल ॥६५॥ धन्य जाली मयाली उवयालादिक साधः संभुने परजुन, अनीरुद्ध साधु अगाध ॥६६॥ वली सचनेमी हढनेमी, करणी कीधी वाध; दशे मुनि मुगते पहोत्या, जिनवर वचन त्र्याराध ॥६७॥ धन्य अर्जु नमाली कर्यो कदाग्रह दूर; वीरपे वत लेंइने सत्यवादी हुवा शुर ॥६=॥ करी छठ छठ पारणां चमा करी भरपुर छव मासमाही कर्म कियां चकचुर ॥६६॥ वली कुंवर अइवंता दीठा गौतम स्त्राम; सुग्पी वीरनी वाग्पी कोधो उत्तम काम ॥७०॥ चारित्र लइने पहोंत्या शिवपुर ठाम ध्र श्राद मकाइ अंत अलच मुनि नाम ॥७१॥ वली

कृष्ण्रायनी अयमहीषी आठ; पुत्र बहुदोये संच्या पुरायना ठाट चारित्र लड़ने तपकरी कर्मज काट ्रयक मास संथारे पोहती शिवपुर वाट ॥७२॥ यादनकुल सतियां टाल्यो दुःख उचाट पहोंत्या शिवपुरमें, ए छे सुत्रनो पाठ ॥७३॥ श्रे णिकनी ्राणी कालियादिक दश जाण; दश पुत्र वियोगे सांभली श्री वारनी वाण ॥७४॥ चंदनवालापे संजम लेइ हुवा जाणः; तप करी देहमुशी पहोंत्या ् छे निर्वाण ॥ ७५॥ नंदादिक तेरे श्रे णिक नृपनी नार: संघली चंदनवालापे लीधो संजम भार ॥७६॥ एक मास संथारे, पहोत्या मुक्ति मकार; ए नेवुं जगानो अंतगडमां अधिकार ॥७७॥ श्रे णिकना वेटा जालियादिक तेवीस; विरपें वत लेइने पाल्यो विश्वावीश् ॥७८॥ तप कठीन करीने पुरी मन जगोश; देवलोके पहोत्या मोच जाशे तजी - रीस ॥७६॥ काकंदिनो धन्नो तजी वत्रीसे नार; महाबीर समीपे, लीधो संजम भार ॥=•॥ करी

· छठ छठ पारणां श्रायंवितः' उछित्त<sup>्</sup> श्रहार; श्री वीरे वखाएयो धन्य धन्नो ऋएगार ॥ 💵 एक ं मास संथारे; सर्वार्थसिख पहोंत; महाविदेह चेत्र-मां करशे भवनो अन्त ॥ ५२॥ धन्नानी रीते; हुवा न होइ संत; श्री अनुत्तरोववाइमां भांख गया ॱभगवतं ॥⊏३॥ सुवाहु प्रमुख, पांच पांचसो नार; तजी वीरपें लीधो, संजम भार भादशा चारित्र <sup>,</sup> लेइने, पाल्यो पनिरतिचार, देवलोके पहोंत्या, ंसुखविपाके अधिकार ॥=५॥ श्रे शिकना पोता, ं पौमादिक हुवा दस, वीरपें व्रत लइने, काढयो देहनो कस ॥=६॥ संयम आराधी, देवलोकमां .. जड़ वश महाविदेह चेत्रमां,े मोच् जाशे<sup>्</sup> लेड़ जश् ॥⊏७॥ वलभद्रना नंदन, निषधादिक हुवा वार; तजी पचास पचास अंतेउरी, त्याग . दियो संसार ॥⊏⊏॥ सहु÷नेमि समिपे, चार महात्रत लीधः; सर्वार्थसिद्ध पहोत्याः/ होशे विदे-हेमं सिद्ध ॥=६॥ घन्नो ने शालिभंड, मुनिश्वरो-

'नी जोर्ड, नारीना चंधन, ततच्या नाख्यां तोड़ ॥६०॥ घर कुटुंच कवीलो, धन कंचननी कोड, एक मास संथारे, टाले भवनी खोड॥६१॥ श्री सुधर्माखामीना शिष्य, धन्य धन्य जंवुखाम; तजी ज्ञाठ ग्रं तेउरी, मातिपता धन धाम ॥६२॥ प्रभंवादिक तारी, पहोंत्या शिवपुर ठाम; सुत्र ्प्रवर्तावी, जगमां राख्युं नाम ॥६३॥ धन्य ढंढण मुनिवर, कृष्णरायना नंद, शुद्ध अभियह पालि, टाली दीयो भव फंद ॥६४॥ वली खंधक ऋषि-नी, देह उतारी खाल, परीसह सहीने, भव फेरा ्दिया टाल ॥६५॥ वेली खंधक ऋषिना, हवा पांचसें शिष्य, घाणीमां पिल्या, मुक्ति गया तजी रीस ॥६६॥ संभुतिविजय शिष्य, भद्रवाहु मुनी-राय: चउदे पुरवधारी, चंद्रगुप्त त्राग्यो ठाय ॥६७॥ वली आदकुमार मुनि, थुलभद्र नदिवेगा, अर-- णिक ञ्रइमंत्रो,मुनिश्वरोनी श्रेण ॥६८॥ चोवी-से जिनना मुनीवर, सख्या ऋठावीस लाख; उपर

सहस्र ग्रडतालीस, सुत्र परंपरा भांख ॥६६॥ कोइ उत्तम वांचो, मुंढे जयणा राख; उघाड़े मुख बोल्यां, पाप लागे विपाक ॥१००॥ धन्य मरुदेवी माता, ध्यायुं निर्मल ध्यान; गज होदे पाम्या निर्मल केवलज्ञान ॥१०१॥ धन्य श्रादे-श्वरनी पुत्री, ब्राह्मी संदरी दोय; चारित्र लेइने, मुक्ति गयां सिद्ध होय ॥१०२॥ चोवीसे जिननी, वडी शिष्यणी चोवीस; सती मुक्ति पहोंत्या, पूरी मन जगीस ॥१०३॥ चोत्रीसं जिननी, सर्व साधवी सार, अडतालीस लाख ने आठसें शितेर हजार ॥१०४॥ चेडानी पुत्री, राखी धर्मशुं प्रीत; राजिमती विजया, मृगावती सुविनित ॥१०५॥ पद्मावती मयण्रेहां, द्रौपदी दमयंती सीता; इत्यादिक सतियो, गइ जन्मारो जीत ॥१०६॥ चोवीसे जिनना साधु साधवी सार; गया मोच - देवलोके, हृदये राखो धार ॥२०७॥ इस अडी-द्रोपमां ग रडा तपस्त्री वाल; शुद्ध पंच महाव्रत

धारी; नमो नमो तिए काल ॥१०८॥ ए जितयों सितयोंनां, लीजे नित प्रते नाम; शुद्धे मन ध्यावो, एइ तरएानो ठाम ॥१०८॥ ए जितयो सितयोशुं, राखो उज्वल भाव; एम कहें ऋषि जेमलजी, एइ ज तरएानो दाव ॥११०॥ संवत अहारने, वरस सातो शिरदार; गढ भालोरमां एइ कह्यो अधिकार ॥१११॥ समातम् ॥

#### ॥ अथ १४ नियम ॥

<del>\_\_\_\_</del>

(१) सचीत्त-यानें कचा पाणी, कचा दाणा कची हरी ( लिलोत्री ) वगेरे सचीत्त (जीवयुक्त ) अनेक वस्तु समजना जिसकी मर्यादा अपनी इच्छानुसार करना ॥ १॥

(२) द्रव्य-याने जितनी वस्तु अपने मुंहमें जैनेमें आवे सो उनकी गिणतरी रखकर मर्याटा करना ।

- (३) विगय-यानें दूध, दही, घृत, तेल, मिष्टान ( गुड़ सकर तथा उनसे वनी हुई सव जातकी मिठाई ) इनकी मर्यादा करना ॥ ३ ॥ '
- (४) पन्नी-याने, जुत्ते, तलिये, मौजे, खड़ाऊ, ; इत्यादिक पैरमें पहरनेकी मर्यादा करना ॥ ४ ॥
- (५) तंबोल-याने, लविंग सोपारी एला-यची पान जायफल जायपत्री वगैरे मुखवासकी मर्यादा करना ॥ ५ ॥
- (६) वत्थ-याने वस्त्र पहरने श्रोडनेकी मर्यादा करना ॥ ६ ॥
- (७) क्रुसुम-याने फूल प्रमुख जो संग्रामें
- त्रावे उसकी मर्यादा करना ॥ ७ ॥
- ( = ) वाहन-याने गाडी रथ वगी लांगा हाथी घोड़ा ऊंट पालखी म्याना रेलगाडी वेगेरे सवारीकी मर्यादा करना ॥ = ॥,
  - ( ६ ) सयण-याने गादी तिकये छपर पिलंग

मांचे खुरसी वगैरे जो बेठनेको तथा, सोनेको काम त्रावे उसकी मर्यादा करना ॥ ६ ॥

(१०) विलेपण-याने केशर कुंकुं चंदन तेल पीठी वगैरे शरीरकों विलेपन करनेकी मर्यादा करणा ॥ १०॥

(११) दिसी-याने पूर्व पश्चिम दिन्तिण ऊतर ऊंची नीची यह छ दिसीमें जानेकी

मर्याटा करना ॥ ११ ॥ (१२) अवंभ-याने कुशील (स्त्रीसेवन)

की मर्यादा करना ॥ १२ ॥

( १३ ) नाहावण्-याने ह्यान मंजन करनेकी भर्यादा करना ॥ १३ ॥

( १४ ) भंतेसुं-याने ब्राहार पाणी करनेकी मर्यादा करना ॥ १४ ॥ इति ॥

### ॥ छकाया आरंभकी मर्यादा ॥

(१) पृथ्वीकाय-याने मुरड मही खडी मैट गेरू हिरमच निमक वगैरे सचीत्त पृथ्वीकायके आरंभकी मर्यादा करना ॥१॥

ें (२) अपकाय-याने सव जातका सचीत (कचा) पाणी पीने तथा वर्तनेकी मर्यादा करना

( तथा पलिंढेकी मर्यादा करना ॥ २ ॥

(३) तेऊकाय-याने अग्नीका आरंभ चुला, भद्दी, हुका, वीडी चिलम, चुरट, वगैरे पीनेकी मर्यादा करना॥३॥

(४) वाउकाय-याने पंखीसे, पंखासे, कप-डेसें, वींजनेसें, और पत्ता वगैरसें हवा लेनेकी वस्तकी मर्यादा करना ॥४॥

(५) वनस्पतिकाय-याने हरी, लिलोत्री, फूल फल, माजी, तरकारी, छाल, कंद, जड़, वगैरे सचीत्त वनस्पतिकायकी मर्यादा करना ॥५॥ (६) त्रसकाय-याने वेंइंद्री, तेंद्री चौरिंद्री, पंचेंद्री, वगैरे हलते चलते जीवको विन गुन्हेंसे मारनेका तथा सर्वथा मारनेका पचक्खाण करना ॥ ६॥ इति ॥

#### ॥ ३ प्रकारका व्यापारकी मर्यादा ॥

(१) असी-याने शस्त्र, छुरी, कटारी, चकु, ढाल, तरवार, बदुक, कतरणी, वगैरे सब जातके शस्त्रोकी मर्यादा करणा॥१॥

(२) मसी-याने कलमसें कागज पत्र खत स्टांप वहीं, वगेरे लिखनेका समानकी मर्यादा

करणा॥ २॥

्र (३) कृपी-याने करसणीका काम ( खेत वाग वगेचा वगेरे) जितना रखना हो उस उप्रां-तका त्याग कर खेना ॥ ३ ॥ इति ॥

यह सब मिलके एकंदर २३ वोलोकी मर्यादा श्रावक श्रावीकाञ्रोकों नित्य हमेश सुवो' करके सांमको पिछा कम जादा लगा हावे तो याद करके निर्मल होना चाहिये ऐसे करनेसे सब दिन्नमें सिर्फ राई जितना पाप लगता है, और मेरु जितना पाप टलजाता है। ऐसी मर्यादा करनेसें महा फलकी (लाभकी) प्राप्ति होती है,। नरक तिर्यंचकी गति टल जाती है, और सदगतिकी प्राप्ती होती है॥

त्रदुगातका श्राता हाता है ॥ ॥ इति १४ नियम, ६ काय, ३ ट्यापारकी

मर्यादा समाप्तम्॥

#### ॥ स्तवन गुणग्रान ॥ 🕒

सतगुरु म्हारारे सतगुरु म्हारा रे फरमावे वाणी अमृत धारा रे सतगुरु म्हा॰ ॥ टेर ॥ मात पिता अरु कुटम्ब कवीला, घरकी सुन्दर नारी रे ॥ स्वारथ विना नहीं कोई थारो, ज्ञान विचारो रे ॥ सतगुरु० ॥ १ ॥ कुड कपट कर धनको जोड़े सहे भूख और प्यासो रे ॥ तुं जाणे आ लारे श्रासी, छोड सिधास्यो रे॥ सतग्रह ॥ २॥ घड़ी घड़ि यों श्रायु छोजे, खवर पड़े नहीं कांई रे॥ मनुष्य जमारो मुशकिल पायो, भली पुन्याई रे ॥ सतग्रह ॥ ३॥ इम जागोने धर्म करो लुम, खरची वांधो परभव लारो रे॥ तेजमल कहे सिड़सठ साले, उदयपुर मांही रे॥ सतग्रह म्हारा ॥ ॥ इति ग्रंण्याम स्तवन समाहम्॥

## ॥ स्तवन गुणवाम गणधरजीनो ॥

गण्धर प्यारा रे श्री विरजीनंदजीका, शिष्य इन्यारा रे॥ गण्धर प्यारा रे॥ टेर॥ इन्द्र भुतीने अग्निभुती, वायुभुती सुखदाई रे॥ पांच पांचसे निकल्या लारे सगला भाई रे॥ गण्धर॥ १॥ विगत भुतीने सुधरमा स्वामी, वीर पाटवी जाणो रे मडी पुत्रने मोरी पुत्रजी, अकंपित आणो रे॥ गण्धर०॥ ॥ अचलजीने मेतारजजी, वले श्री प्रभासो रे॥ नाम जप्यां सांमको पिछा कम जादा लगा हावे तो याद करके निर्मल होना चाहिये ऐसे करनेसे सव दिन्नमें सिर्फ राई जितना पाप लगता है, श्रौर मेरु जितना पाप टलजाता है। ऐसी मर्यादा करनेसे महा फलकी (लाभकी) प्राप्ति होती है,। नरक तिर्यंचकी गति टल जाती है, श्रौर सद्गतिकी प्राप्ती होती है॥ ॥ इति १४ नियम, ६ काय, ३ व्यापारकी

मर्यादा समातम्॥

### ॥ स्तवन गुणग्राम ॥

सतग्रह म्हारारे सतग्रह म्हारा रे फरमावे वाणी अमृत धारा रे सतग्रह म्हा॰ ॥ टेर ॥ मात पिता अह कुटम्ब कवीला, घरकी सुन्दर नारी रे ॥ स्वारथ विना नहीं कोई थारो, ज्ञान विचारो रे ॥ सतग्रह० ॥ १ ॥ कुड कपट कर धनको जोड़े सहे मूख और प्यासो रे ॥ तुं जाणे आ लारे श्रासी, ब्रोड सिधास्यो रे॥ सतग्रह•॥ २॥ घड़ी घड़ि यों श्रायु ब्रोजे, खबर पड़े नहीं कांई रे॥ मनुष्य जमारो मुश्किल पायो, भली पुन्याई रे ॥ सतग्रह•॥ ३॥ इम जाणीने धर्म करो तुम, खरची बांधो परभव लारो रे॥ तेजमल कहे सिड़सठ साले, उदयपुर मांही रे॥ सतग्रह म्हारा•॥शा ॥ इति ग्रुण्याम स्तवन समाप्तम्॥

# । स्तवन गुणग्राम गणधरजीनो ॥

गण्धर प्यारा रे श्री विरजीनंदजीका, शिष्य इग्यारा रे॥ गण्धर प्यारा रे॥ टेर ॥ इन्द्र भुतीने श्रप्तिभुती, वायुभुती सुखदाई रे॥ पांच पांचसे निकल्या लारे सगला भाई रे॥ गण्धर ॥ १॥ विगत भुतीने सुधरमा स्वामी, वीर पाटवी जाणो रे मडी पुत्रने मोरी पुत्रजी, श्रकंपित श्राणो रे॥ गण्धर०॥ श्रा श्रचलजीने मेतारजजी, वले श्री प्रभासो रे॥ नाम जप्यां सू त्रानन्द वर्ते, वंचितयासी रे ॥ गण्धर ॥३ एक हमारा इन्द्रमलजी, नीमच सहर पधारया रे तेजमल कहे जेठ एण्न्तर, चवदस लारे रे गण्धर ॥ ४ ॥

॥ इति गुण्याम गण्धरजीको स्तवन समाप्तम्॥

॥ अथ पद्म प्रभुजीनो स्तवन छिल्यते सांम कैसे गजको फंद छुडायो ॥ एदेशो ।

पदमत्रभु पावन नांम तिहारो, पतीत उधारन हारो ॥ ए टेर ॥ जदपी धींवर भीलकसाई, अती पापीष्ट जन्मारो॥ तदपी जीव हिंस्या तज प्रभु भज पांमे भवनिधि पारो ॥ पदम० ॥ १ ॥ गौ नाम्हर प्रमदा वालक की, मोटी हित्या च्यारो ॥ तहनो

करण हार प्रभु भजले, होत ही त्यासुं न्यारो ॥ पदम ॥ २॥ वेस्या चुगल छिनाल जुवारी, चोर महा ठग यारो ॥ जो इत्यादि भजे,प्रभु-

चार महा ठग यारा ॥ जा , इत्याद मज,प्रसु-त्रोने, तो निवत्ते संसारो ॥ प०॥ ३॥ पाप प्ररा- लको पुंभा वन्यो अती, मानो मेर आकारो ॥ ते तुम नाम हुतासन सेती, सहेजे प्रजलत सारो ॥ प० ॥ ४ ॥ परम धर्मको मर्म महारस, सो तम नांम उवारो ॥ या सम मंत्र नही कोई दुजो, त्रिभुवन मोहन गारो ॥ पद० ॥ ५ ॥ तो समरण विन इग्रकलयुगमें, अवर न को आधारो॥ में ब-**लिजाउं तो समरण पर, दिन दिन प्रीत वधारो** ॥ प० ॥ ६ ॥ कुसमा राणीको ऋंग जात तुं,श्री-धरराय कुंमारो ॥ विनेचंद कहे नाथ निरंजन, जीवन प्रांग हमारो ॥ प० ॥ ७ ॥

ा। इतिश्री पदम प्रभुजी को स्तवन समाप्तम् ॥

॥ अथ् चंदात्रभुजी जिन रतवन ॥

चोकरी देशीमे ॥ जयजय जगत सीरोमणी, हुं सेवकने तुं धणी ॥ अवतोसुं गाढी वणी, प्रभु आसा 'पूरो हमतणी ॥ ॥ १ ॥ मुमा महेर करो चंदाप्रभु, जगजीवन अतरजामी ॥ भवदुख हरो

सुणीये अर्ज हमारी, त्रिसुवण सांमी ॥ ए टेर ॥ चंदपुरी नगरी हती, महासेन नांमे नरपति॥ ॥ राणी श्रीलिखमा सती, तसुं नंदन तुं चढती रती ॥ मु० ॥ २ ॥ तुं सर्वज्ञ महा ज्ञाता, ञ्रातम अनुभवको दाता ॥ तुं तुठा लहिये साता, धन धन जे जगमें तुमध्याता ॥ मु० ॥ ३ ॥ सिवसुख प्रार्थना करसुं, उज्वल ध्यान हीये धरसुं ॥ रसना तुम महीमा करसुं, प्रभु इनविध भवसागर तरसुं ॥ मु० ॥ ४॥ चंदं चकोरनके मनमे, गाज-अवाज हुवे घनमे ॥ पीय श्रभीलावा त्रीय तनमे, ज्युं वसीयो प्रभु मो चित्तममं ॥ मु० ॥ ५॥ जो सु नीजर साहिव तेरी, तो मांनो वीनती मेरी॥ काटो भरम करम वेरी, प्रभु पुनरपी न परे भव फेरी ॥ मुज०॥ ६॥ त्रातम ग्यान दसाजागी, प्रभु तुमसेती लिव लागी।। अन्य देव भर्मना भागी, विनेचंद तिहारो श्रनुरागी ॥ मु० ॥ ७ ॥ . ॥ इतिश्री चंदा प्रभुजी स्तवन समाप्तम् ॥

र अध्यक्ष्य अध्यक्षय विश्व अध्यक्ष्य अध्यक्ष अध्यक्ष्य अध्यक्ष्य अध्यक्ष्य अध्यक्ष्य अध्यक्ष्य अध्यक्ष अध्यक्ष्य अध्यक्ष्य अध्यक्ष्य अध्यक्ष्य अध्यक्ष अध्यक्ष्य अध्यक्ष राय श्रे शिक वाडी गयो। दीठो मुनि एकंत ॥ रुप देखी अचरज थयो । राय पुछेरे कुण वीरतंत ॥ श्रीणिक राय हुं रे अनाथी नियंथ। मैं तो लिधोरे साधुन्नी रो पंथ॥ श्रोणिक० ॥१॥ कोसम्बी नगरी हुंती पिना मुज परिगत धन्न ॥ पुत्र परवार भरपूर सुं ति एरो हुं कुंबर रतन ॥ श्रे णिक॰ ॥ २ ॥ एक दिवस , मुज वेदना उपजी। मो सुं खमियन जाय। मात विता भारवा घणा । न सम्यारे मुज वेदना वंटाय ॥श्रे शिकः ॥३ ॥पिताजी म्हारे कारशे। खरच्या वहोला दाम ॥तो पिण वेदना गइ नहीं। एहवोरे अथिर संसार॥ श्रेणिकः॥ १॥ माता

पिण म्हारे कारणे। घरती दुःख त्रथाग। उपाव तो किया घणा। पिण म्हारे रे सुख नहीं थाय ॥ श्रेणिफ०॥ ५.॥ वहिनां पिण म्हारे हुंती।

वडी छोटी ताय । वहुविध लुग् उवारती पिण म्हारे रे सुख नहीं थाय ॥ श्रे शिफ्र० ॥६॥ गोरडी मन मोरडी। गोरडी अवला वाल। देख वेदना म्हायरी न सकोरे मुज वेदना वंटाय॥ श्रे णिक० ॥ ७ ॥ ऋांखां वहु ऋांसु पड़े । सिंच रही मुज काय ॥ ख़ारा पार्ण विभुषा तजी । पिरा म्हारे रे समाधी न थाय ॥ श्रे ििक० ॥⊏॥ प्रेम विलुधी पदमगी। मुजसुं अलगी न थाय॥ बहु विध वेदना में सही। वनिता रहीरे विल लाय ॥ श्रे णिक॰ ॥ ६ ॥ वहु राज वैद वुजाविया । किया अनेक उपाय ॥ चन्दन लेप लगाविया । पि**रा म्हारे रे समाधी न थाय ॥ श्रे शिक**० ॥१०॥ जुगमें कोइ किएरो नहीं। तय में थयोरे अनाथ॥ वितरागजोरे धर्म विना । नाही कोइरे मुगतीरो

साथ ॥ श्रे शिक० ॥ ११ ॥ वेदना जावे म्हायरी । तो लेउं संजम भार ॥ इम चिन्तवतां वेदना गइ। प्रभाते रे थयो अएगार ।।श्रे एिक ।।१२॥ ग्रण सुण राजा चिन्तवे । धन धन एह ऋणगार॥ राय श्रे शिक समिकत लोवो । वान्दी आयोरे नगर मकार ॥ श्रीणिक० ॥ १३ ॥ अनाथो जीरा ग्रेण गांवता ॥ कटे कर्मारी कोड़ ग्रेण समय सुन्दर इम भए।। ज्याने वन्दुरे वे कर जोड ॥ श्रे णिफ ।। १४ ॥ इति श्री अनाथी मुनीरो स्तवन समासम् ॥



# ॥ अथ त्रिया चारित्र को चोढ़ालियो

### छिख्यते॥



बख चोरासो में भटकर छायो, मनुष्य ज-मारो दोरो पायो, नव महीना गर्भ में ऊ धो भुल्यो, तव साहिव को नाम कबुल्यो, कोल वोल ले वाहिर त्रायो, माता पिता मन हरखज पायो, वालक ने त्रा धाय रमांवे, दुध पतासा मिसरी पावे, भर जोवन में सुरत संभाली, सखरी जोय परनावुं नारि, सुंदर वर ने टीको दियो, सखरे लगने साहावो जियो, कन्या ने हथ लेवो दरावे, ब्राह्मण मिलकर वेद भणावे, वहु लेकर ने घर में आयो, दत्त दायजो वहुलो लायो, माता पिता मन हरवज थायो, राजी होकर घर में श्रायो, वहु सासु रे पगे लागी, शिली सपुती होय

नागी, नानी वहु ने लाड लडावे, मीठा मीठा भो-नन खवावे, जिहां जावै तिहां साथ ले जावे हीरा नड़ाव रा गहणा पेरावे सासू केह करी कमाई, व-होतग्रणवंती वहू श्राई, नानी जुवां लीखां काढे, तखरा घर में मांडणा मांडे; सासू केह वह मुख तुं वोलो, गेहणा लेकर घृंघट खोलो, वह सासू ने रे टिचकारी, जाणे वाधी भैंस ने छालि, सासू नणदल रा छांदा जोवे, घर वारणे रोवणा रोवे, नव लागी लोगा रे काने, वात करे घणी सुं ब्राने, धर्णी वात ने कान नहीं दियो, मुंडो फर ने पाछो कियो, नारि वोले, करडा वोल, गेहणो ाांठो दिनो खोल, जव घणी ने ब्राई छे दया, तोय ऊपर छे म्हारी पुरी माया, केह धणी ने बुदो घर मांडो, नहीं तो थाने कर सूं भांडो, मणी वोले छे सुण हे नारि, ते तो सखरी वात वेचारी, में ईतरा दिन धन कमायो,थहां सगला मिल २ ने खायो, तरके ऊठी ने कजीयो करस्यां,

धन बांटि ने ऊरो लेखां, तरके ऊठी ने म्हा ्रियर जांऊं, फेर बुलायां वले नहींज श्राऊं, ज

सासू लेवणने आवे, सासु केहत्ं वहू घर क्युं नही आवे, वह केवे घर लाय लगावो, म्हारे भावे घ कुवा में जावो ; में ईगारे धरनो दियो, अह खावणरो सौगन लियो, सुणो सासूजी क्र दं जुदि, नहीं तगो करसूं घणी फजीती, लोग लुगाय सं, नहीं हुं डरसु बात जाय पंचामें करसं, सास् केंह वहू तूं भलां छाई, तें सगला कुल ने लाड लगाई, में वेटे ने मोटो कियो, कामणगारि ते वश कियो, सासू वहू ने बेटो लड़ीया, छाति मांही धमेड़ा धरिया, धिक २ रेथारों जीयो, धन वांटि ने आधो दियो, मन को चाह्यो सो वहू करी, पहली ढाल हुई पुरी, ॥ १ ॥ ॥ दोहा ॥

हाथ जोड़ी नारि केह, सांभल कंथ सुजाण; किंदो कदेई लोपुं नहीं थांरा गलारि त्राण ॥१॥ थांसुं मोह माहरो श्रित घणो, ज्युं चकरि डोर समान; थांने कांई कसी हुई तो सती होऊं थहारे साथ ॥ २ ॥ जन्म दियो माहरी मांयड़ी, रुप दियो किरतार; पूरव पुन्य पूरा किया, भर जोड़ी भारतार ॥ ३ ॥

ढाल २) घणी वोले वै सुन नारी हे, आग्यां लोपो मित म्हारी है। थारे कारण हुं जूदो हुवो रे, मैंतो लोगामें अपजश लीयोरे ॥१॥ नवमास गरम में राख्यो हे, थारे कारण छेह में दाख्यो हे। माय वापकी काया वलसीरे, तोसुं ऊठि सवारे लड़सीरे ॥२॥ तूं छे मोटा छलांरी जाईहे, लीजे शाखने शोभ सवाई हे। दूजी ढाल ए पूरी की धीरे निज नारीने पित सीख दीधी रे॥३॥ दोहा।

दाहा

माय कहें सुन नानख्या, सांभल माहरी वात । चरित्र देखो नारी तस्मा, कुस २ चलसी थारे साथ ॥ १ ॥ सेठजी मनमें जानीयो, माजी

<sup>"</sup>कंहि दुरस वात । करू<sup>:</sup> नारी पारख्या देखुं कुर्न ंचेले म्हारी साथ ॥ २ ॥ सुख भर ढ़ोलीये पोढीयों खांच्यो सास ऊसास नारी मनमें जानीयो, काल कीयो भरतार ॥ ३ ॥ घरमें धर छे ऋति घगो, खवरं हुसी तिनवार। साधु . सुसरा त्रावसी धन ले जासी बुहार ॥ ४॥ क्याने कंका करू रातने, निंद आंख्या री जाय। मर्खे ्वालो मर गयो, रोवे मेरी वलाय॥५॥ ( ढाल॰ '३ चौपीनी०) काल गयो जागा भरतार, हैलो ंन कीयो मूर्ल लिगार । वासन कूसन भेला किया, रखे म्हारा जावे लुंटिया ॥ १ ॥ वैठी बैठी करे विचार, जितरे भूख तो लागी अपार। भूखां मरती ने नीन्द न आवे, क्युं हीक भूखरो जतन करावे ॥ ५ ॥ गरम रोटो फिर घि घालीयो, खुव मसलने मैदा ज्यु' कीयो, चक चंक तो कीयो, चुरमो, मांहि घालीयो घी सुरमो ॥ ३॥ सेठजी ने तड़के ले जासी, कांध्या वाला ढोपहरा ऋासी।

करसी म्हारी हांसी ॥ ४ ॥ क्युंहिक ठांसके भोजन करं। पछे ध्यायी धाई धमेडा धरं भीगो भीणो ल्याउं रोज, शिक्षेन राखं रोट्यारो सोच ॥५॥ सासु सुसरा कहसो त्राय, तो ही न वेंदुं भागे जाय, दिन सगलो देस्यूं अथणाय, सांभ समे

भूखां मरती रोयो नहीं जासी, लोग लगाई

लेस्यूं लाडु खाय ॥ ६ ॥ रूप रहायो *छै* तिस वार, भर वाटको धरचौ छोकै मभार। तडके **ऊठि दांतण नहीं करस, मार गटा गट कलेवो** करसु॥ ७॥ सेठजी मनमें चिन्तवन करें. पेट विगृती सामो धरें। मने मरयो जाणीने ढक दीयो, रांड़ वजर रो हीयो कीयो ॥ 🖛 ॥ सेठजी

सूतो सूतो हंसै, या बैठी कलेवा कसै। ऊपर सुं वाजो आधो रात. सुण ज्यो इन नार री वात ॥६॥ ॥ दोहा ॥ कनै श्राय जब देखीयो, दांत में छै थोड़ो सो माल।

मुरदार किन कामरो, रहसी ञ्राती साल ॥ १॥

कहि दुरंस बात । करूं नारी पारख्या देखुं कुन चले म्हारी साथ ॥२॥ सुख भर ढ़ोलीये पोढ़ीयों खांच्यो सास ऊंसास नारी मनमें जानीयो, काल कीयो भरतार ॥ ३ ॥ घरमें <sup>।</sup>धन छे अति घगो, खबरं हुसी तिनवार। साधु ेससरा आवसी धन ले जासी बुहार N 8 N क्याने कुंका करूं रातने, निंद झांख्या री जाय । मर्गे वालो मर गयो, रोवे मेरी वलाय॥५॥ (ढाल॰ ्३ चौपीनी० ) काल गयो जाणी भरतार, हैली न कीयो मूर्ल लिगार। वासन कूसन भेला किया, रखे म्हारा जावे लुंटिया ॥ १ ॥ वैठी वैठी 'करे विचार, जितरे भूख तो लागी अपार। भूखां मरती ने नीन्द न आवे, क्युंहीक मूलरो जतन करावे ॥ ५ ॥ गरम रोटो फिर घि घालीयो, खुव मसलने मैदा ज्युं कीयो, चक चंक तो कीयो, चुरमो, मांहि घालीयो घी सुरमो ॥ ३॥ सेठजी ने तड़के ले जासी, कांध्या वाला दोपहरा आसी।

भूखां मरती रोयो नहीं जासी, लोग लुगाई करसी म्हारी हांसी ॥ ४॥ क्युंहिक टांसके भोजन करं, पछे ध्यायी धाई धमेड़ा धरं भीगो भीगो ल्याउं रोज, शिञ्चेन राखुं रोट्यारो सोच ॥५॥ सासु सुसरा कहसो छाय, तौ ही न बैठुं भागो जाय, दिन सगलो देस्यूं ऋथणाय, सांभ समै . लेस्यूं लाडु खाय ॥ ६ ॥ दूध रढायो छै तिए। वार, भर वाटको धरचौ छोकै ममार। तड़के **ऊठि दांतण नहीं करस, मार गटा गट कलेवो** करस्र ॥ ७ ॥ सेठजी मनमें चिन्तवन करें, 'पेट विगती सामो धरै। मने मरयो जाणीने ढक दीयो, रांड़ वजर रो हीयो कीयो ॥ = ॥ सेठजी सतो सतो हंसै, या बैठी कलेवा कसै। उपर सुं वाजी त्राधी रात, संग न्यों इन नार री वात ॥६॥ ॥ दोहा ॥ कनै त्राय जब देखीयो, दांत में है थोड़ो सो माल ।

मुरदार किन कामरो, रहसी छाती साल ॥ १॥

कहि दुरस वात । करूं नारी पारख्या देखुं क्रा चले म्हारी साथ ॥२॥ सुख भर ढ़ोलीये पोढ़ीयो खांच्यो सास ऊंसास नारी ' मनमें जानीयो, काल कीयो भरतार ॥ ३ ॥ घरमें धन छे अति घगो, खवरं हुसी तिनवार। साधु सुसरा आवसी धन ले जासी बुहार ॥ ४॥ क्याने कंका करू रातने, निंद आंख्या री जाय। मर्ग्णे ंवालो मर गयो, रोवे मेरी वलाय॥५॥ (ढाल॰ ३ चौपीनी० ) काल गयो जागाी भरतार, हैलो न कीयो मूल लिगार। वासन कूसन भेला किया, रखे म्हारा जावे लुंटिया ॥ १ ॥ बैठी बैठी करे विचार, जितरे भूख तो लागी अपार। भूखा मरती ने नीन्द न आवे, क्युंहीक मूखरी जतन करावे ॥ ५ ॥ गरम रोटो फिर घि घालीयो, खुव **मसलने मैदा ज्यु' कीयो, चक चंक तो कीयो,** चुरमो, मांहि घालीयो घी सुरमो ॥ ३॥ सेठजी ने तड़के ले जासी, कांध्या वाला दोपहरा श्रासी।

म्यूषां मरती रोयो नहीं जासी, सोग लुगाई करसी महारी हांसी ॥ ४॥ कयुंहिक ठांसके भोजन करं, पछे ध्यायी धाई धमेड़ा धर्ठ कीणो कीणो स्याउं रोज, धिछेन राखूं रोट्यारो सोच ॥५॥ सासु सुसरा कहसो आय, तो ही न बेठुं भाणे

जाय, दिन सगलो देस्यूं त्रथणाय, सांक समै . लेस्यूं लाडु खाय ॥ ६ ॥ दूघ रढायो छै तिए। वार, भर वाटको धरचौ छोकै ममार। तडके ऊठि दांतण नहीं करसु, मार गटा गट कलेवो करस्र ॥ ७ ॥ सेठजी मनमें चिन्तवन करें, पेट बिगुती सामो धरै। मने मरयो जाणीने ढक दीयो, रांड़ वजर रो हीयो कीयो ॥ = ॥ सेठजी सतो सतो हंसे, या वैठी कलेवा कसे । ऊपर सुं वाजी ऋाधी रात. सुरा क्यों इन नार री वात ॥६॥ ॥ दोहा ॥ कनै त्राय जब देखीयो, दांत में छै थोड़ो सो माल ।

मुरदार किन कामरो, रहसी छाती साल ॥ १॥

कहि दुरस वात । करूं नारी पारख्यां देखुं कुन ंचले म्हारी साथ ॥२॥ सुख भर ढोलीये पोढ़ीयो खांच्यो सास ऊसास नारी मनमें जानीयो, काल कीयो भरतार ॥ ३ ॥ घरमें धन छे अति घणो, खबर हुसी तिनवार। साध सुसरा त्रावसी धन ले जासी बहार ॥४॥ क्याने कुंका करू रातने, निंद आंख्यां री जाय । मर्ग्णे वालो मर गयो, रोवे मेरी वलायं॥५॥ (ढाल॰ '३ चौपीनी०) काल गर्यो जाग्गी भरतार, हैली न कीयो मूल लिगार। वासन कुसन भेला किया, रखे म्हारा जावे लुंटिया ॥ १ ॥ बैठी बैठी करे विचार, जितरे भूख तो लागी अपार । भूखां मरती ने नीन्द न आवे, क्युं हीक भूखरी जतन करावे ॥ ५ ॥ गरम रोटो फिर घि घालीयो, खुव ं मसलने मैदा ज्युं कीयो, चक चक तो कीयो, चुरमा, मांहि घालीयो घी सुरमो ॥ ३॥ सेठजी ने तड़के ले जासी, कांध्या वाला दोपहरा ऋासी

भूखां मरती रोयो नहीं जासी, लोग लुगाई करसी महारी हांसी ॥ ४॥ क्युंहिक ठांसके भोजन करं, पछे ध्यायी धाई धमेड़ा धरं भीगो भीएो ल्याउं रोज, पीछेन राखें रोट्यारो सोच ॥५॥ सासु सुसरा कहसो ज्राय, तौ ही न चेंटुं भाखे

**ऊठि दांतण नहीं करसु, मार गटा गट कलेवो** करसु ॥ ७ ॥ सेठजी मनमें चिन्तवन करें, पेट विगृती सामो धरै । मने मरयो जाखीने ढक दीयो, रांड़ वजर रो हीयो कीयो ॥ 🖛 ॥ सेठजी सूतो सूतो हंसै, या वैठो कलेवा कसै। ऊपर सुं वाजी आधी रात, सुण ज्यौ इन नार री वात ॥६॥ ॥ दोहा ॥ कनै श्राय जब देखीयो, दांत में छैं थोड़ो सो माल । मुखारं किन कामरो, रहसी छाती साल ॥ १॥

जाय, दिन सगलो देस्यूं अथणाय, सांभ समे लेस्यूं नाडु खाय ॥ ६ ॥ दूध र**ढायो छै** तिण वार, भर वाटको धरचौ छोकै मभार। तड़के

( ढाल० ४) मेप लेवण, ने जावे नार, ले लोड़ीयो हाथ मभार, आतो दीसे कपटण नार, रिखे दांत दे सगला पाड़ ॥ १ ॥ रे रे तूं सु लचण नार, ले लोड़ी मेरा दांत न पाड़ । तूं तो कहती वल सुं लार, दोठो महे थारो हेज अपार ॥ २ ॥

#### ॥ दोहा ॥

सेठजी मनमें जांगीयो, धिग २ यो संसार। कोई किनरो तो सगो नहीं, लेसं संजम भार ॥१॥ . ( ढाल० ५ ) सेठजी मनमें ग्रसोही श्रा**ए**यो, इणरो काचो सग पण जाएयो। मने रातरो भूखोही राख्यो, खूव मलीदाकरिने चाख्यो ॥१॥ तिरिया चरित्र कोई विरला जाने, सुर नर पण्डित सह वखाने (ए ऋं।कड़ी०) धनतो तोने लागोही प्यारो, हुं तो तने लागोही खारो। थारो हीयो सराऊ लुगाई, दांत तोड़गाने तुं पत्थर क्याई ॥ ति० ॥ २ ॥ ऐसा थारा जो ृपरा-

क्रम जांगु तो हुं तने क्यों घरमें आणु । माय बापां रे भेलाई रेतो, लोकां में हुं तो जश लेतो ॥ तिंशा३॥ भलक २ नारी सनमुख जोवे भर २ श्रांख्या नारी रोवे, में अपराधन पापणि हरामी, जो अपराध चुमो जे स्वामी ॥ ति॰ ॥१॥ निर-मल थे हो चन्द समानो, तेज तुमारो दिन कर 'जाणो । कीड़ी 'पर कटकी नहीं कीजै, त्रियाने दोस न दीजै ति०॥ ५॥ साथ पर्गा थे कांई लेवो, थोड़ा दिन तो घरमे रेवो। तम विन मेरे जगमें न कोई आवो सुख विलसं। आपं। दोई ॥ ति॰ ॥६॥ विन दीपक मिन्दर नहीं सोभे, विन पत्नां परिवार न होवे । खाविन्द विन सोभे नहीं त्रिया, मने मत छोड़ो थाने छे किरिया ॥ ति० ॥ ७॥ वात तो अचरज वाली निकाली, मने तो आवे छे हांसी। अव थारे सुं घर वासो न थासी, तुं तो गले देवे मेरे फांसी ॥ ति॰ ॥॥॥ परदेशी नामे राजा भारी, तिणरे सूरी कन्ता नामें

नारी, मालक ने तिए हाथसुं मारचो, सूत्र में प्रभु त्राप उचारचो ॥ ति० ॥६॥ साधुजी नगरी माहें त्राया, वाणी सुनीने सहु हरपाया। हाथ जोड़ी ऊट्या सेठ तिवार, लिधो छै तिहां संजम भार ॥ ति० ॥ १० ॥ सम्वत अठारे वरस सैंतीसे, दिचण देश मभार । जोड करि हीरा चन्द सारी, सांभल ज्यो सगला नर नारी॥ ॥ति॰ ॥११॥ चतुर पुरुष ए चरित्र त्रियानो. सां-भल खोलो थे पट हीयानो। त्रिया खोटी को सङ्गत मति करज्यो, सतग्रुरु वचन हीया मांहे , धरज्यो ॥ ति० ॥ १२ ॥ कलजुग की नारी सब खोटी, कोई कपटि अनुरागी मोटी। काची ,सगाई कुटुम्बनी जागो, वीतराग नो धर्म ब-खाणो॥ ति०॥ १३॥

॥ इति श्री जुवान रास त्रिया चरित्र सम्पूर्णम् ॥

# ा। अथ-जीव। पेंतिसी री संजाय

# छिख्यते ॥

~<del>~@</del>%<del>@~~</del>

मोह मिथ्यातकी नींद में जीवा सतो काल अनंत, भव भव मांहे भट कीयो, जीवा ते सांभल विरतंत ॥ टेर ॥ जीवा तुं तो भोलो रे प्राणी, इम रुलीयो संसार ॥ १ ॥ अनंत जिन हुवा केवली जीवा ऊतकृष्टो ज्ञान अगाध, इस भव सं लेखो लियो, जीवा कुण वतावे थारी आद ॥ जी॰ ॥ २ ॥ पृथ्वी पासी अप्त में जीवा चौथी ्वाऊ काय, एक एक काया मध्ये जीवा काल . श्रसंख्याता जाय ॥ जी० ॥ ३ ॥ पंचमी काया वनस्वती जीवा साधारण प्रत्येक, साधारण मे तुं भम्यो जीवा ते सांभलो विवेक ॥ जी० ॥ १॥ सुई ग्रम निगोदमे जीवा श्रेणी श्रसंख्याती

जाण, त्रसंख्याता प्रतर एक श्रीण में जीवा, इम

गोला ऋसंख्याता प्रमाण ॥ जीवा० ॥ ५ ॥ एक एक गोले मध्ये, जीवा शरीर असंख्याता जाण, एक २ शरीर में जीवा, जीव अनंता प्रमाण ॥ जीवा०॥ ६॥ तिए। मांही केई जीवड़ा जीवा, मोच जावे धिग चाल, एक २ श्रीर खाली न हुवे जीवा, न हुवे अनंते काल ॥ जीवा० ॥ ७ ॥ एक २ अभवी संगे जीवा, भव अनंता होय, वर्ले विशेष तेहनी जीवा,जन्म मरण तुं जोय ॥जीवा० 💵 🗕 ॥ दोय घड़ी कची मध्यें जीवा, पेंप्ट सहेंस . सो पांच, छत्तिस अधिका जाएज्यो जीवा, ए कर्मा री ख़ांच ॥ जीवा० ॥ ६ ॥ छेदन' वेदन चेदना जीवा, नरके सही वहुं वार, तिए सेती निगोद में जीवा, अनंत गुणी विचार ॥ जीवा० ॥ १०॥ एकंद्री माहयसुं नीकली जीवा, ईद्री पाई दोय, तव पुन्याई तेहनी जीवा, तेथी अनंती होय ॥ जीवार्व ॥ १९ ॥ इस तेईन्द्री चोईन्द्री

जीव मां जीवा, सुणता श्रविरज वात ॥ जीवा० ॥ १२॥ जलचर् थलचर खेचर जीवा, उरपुर भुजपुर जात, शीत ताप त्रीपा सही जीवा; दुःख सहया दिन रात॥ जीवा०॥ १३॥ इम रङ् बड़ता जीवहा जीवा, पाम्यो नर अवतार, गर्भ-वासमें दुःख सहया जीवा, ते जायो कीरतार ॥ जीवा० ॥ १४ ॥ मस्तक तो हेठो हुवे जीवा, ऊपर रहे दोंहु पाय, आंख्यां आडी मुष्टी दोहुं जीवा, इम रहवां भिष्टारी भाखसी माय॥ जीवा० ॥ १५ ॥ वाप वीरज माता स्ट जीवा, इसड़ो ली-योथे त्राहार, भुल गयो जन्मया पद्ये जीवा. सेली करे अविचार ॥ जीवा० ॥ १६ ॥ ऊंट कोड सुई लाल करी जीवा, चांपे हं हं मांय, अठ ग्रणीः हुवे वेदना जीवा गर्भा वासा रे मं।य ॥ जीवा० ॥ १७॥ जन्मता हुवे कोड ग्रुणी जीवा, मरता कोडा कोड, जन्म मरण रे जीवने जीवा, जाणजो मोटी खोड ॥ जीवा० ॥ १८ ॥ देश आनार्ज

ऊपनो जीवा, इँदी हीग्री होय, श्राऊखो श्रोब्री हुवे जीवा, धर्म किसी विध होय ॥ जीवा॰ ॥ १६ ॥ कदाचित् नरं भव पामियो जीवा, **ऊत्तम क़ुल** श्रवतार, देही निरोगी पाय ने जीवा, युंइ खोयो जमवार ॥ जीवा० ॥ २० ॥ ठग फासीगर चोरटा जीवा, भीवर कसाई री न्यात, जपजीने मर जासी जीवा, एसी नर ही काई जात ॥ जीवाव ॥ २१ ॥ चवदेई राज लोक में जीवा, जन्म मरण री जोड़, वालाय मात्र जिती जीवा, खाली न राखी ठोड़ ॥ जीवा० ॥ २२ ॥ एहोज जीव राजा हुवो जीवा, हस्ती बांध्या वार, कवहीक पाप तर्गे ऊदे जीवा, न मिले अन्न ऊधार ॥ जीवा० ॥ २३,॥ इस संसार भमतो थको जीवा, पाम्यो समिकत सार, आदरी ने छिट-काय दिवी जीवा, गयो जमारो हार ॥ जीवा० ॥ २४ ॥ खोटा देवज सरदिया जीवा, लागो कुग्रह केंड, खोटा धर्मज श्रादरी जीवा, किधा

चीऊ गर्ति फेर ॥ जीबीठ ॥ २५ ॥ कबहीक जीव नर्क गयो जीवा, कवहीर्क हुवा देव, पाप पुन्य तर्णे ऊदय जीवा, लागी मिध्यात री टेव ॥ जीवा० ॥ २६ ॥ श्रोगां ने वले संपति जीवा मेर्रु जितरा **जीध, किया समक्त** विना<sup>्</sup>जीवा, थारो ए कारज नहीं सिद्ध ा जीवा० ।। २७॥ च्यार ज्ञान गमाय नें जीवा नर्क सातमी जाय, वबदे पूर्व रो भगयो पड़े निगोद रेमांय.॥ जीव(० ॥ २५ ॥ भगवत रो धर्म पायां पर्छे जीवा, युंही न जावे फोक, कदाचित प्रतर<sub>्</sub>हुवे जीवा, तोही थ्रथ पुद्दगत में मोच ॥ जीवा॰ ॥ २६ ॥ सुदम तें वादर प**णे जीवा, मिले वारंगणा** साथ, एक पुदुगल प्रापत तगी जीवा, भीगी घणी छे वात जीवा, टाली ब्रात्म दोप, न गया न जावसी जीवा, एक मूला रा (निगोदरा)मोच ॥जीवा० ॥ ३१ ॥ पाप ऋलोई ऋापणा जीवा ऋाश्रव रा

नाली रोक, जाय । अर्द्ध पदराल मध्ये जीवा, अनंत चोवीसी मोच ॥ जीवा॰ ॥ ३२ ॥ ए भाव सुणी करी जीवा, सर्खा आई नांय, आई ने यं ही गंया,जीवा, लंख चोरांसी मांयः॥ जीवा॰ ॥ ३३/॥ केइक ऊतम चेतीयाः जीवा, लिधो संजम भार, साचो धर्म सर्ज्ध ने जीवा, पहोंता मुक्त मकार ॥ जीवा । ॥ ३४ ॥ दान शियल तप भावना जीवा, अें सुं राखो प्रेम, कोइ कल्यामा ऊपने तेहने जीवा, पुज्य जेमलजी केह एम जीवा तूं तो भोलो रे प्राणी, इम रुलियो संसार ॥ ३५ ॥

॥ इति जीवा पेंतिसी री सजाय समाप्तम् ॥



॥ अथ समिकत-छक्कड लिख्यते ॥ 

समकितकी देखी बाहार ॥ मेरे प्यारे सम-कितकी ॥ टेर ॥ सद उपदेश सुणा सत्युरूका ॥ मिटा मिश्यात अन्ध-कार ॥ अन्धकार मेरे प्यारे ॥ सम० ॥ १ ॥ शुद्ध देवगुरू धर्म पेछ।एया खीया ज्ञान रस सार ॥ सार मेरे प्यारे ॥ सम**्** ॥ २ ॥ देव निरंजन गुरू निरलोभी ॥ धर्म दया में धार ॥ धार मेरे प्यारे ॥ सम० ॥ ३ ॥ सम्यक दर्शन ज्ञान चारित्र ॥ ऋाराध्या खेवा पार मेरे प्यारे ॥ सम । ॥ ४ ॥ कहेत केवल रिख दिल्ली भी देखी चांदनी चोकका वजार ॥ वजार मेरे प्यारे ॥ सम्।। ५ ॥ ॥ इति समकित-छंकड समाप्तम्॥

राजुल ऊभी विनवे रे पीया, सुराजो २ रे, नेम क्रॅवार, ग्राप पोते संजम बियो रे: वारी जाय चढ्या गीरनार अब घर आय जावो जादव नेमजी रे ॥ १ ॥ क़द कई दाख्या नहीं रे पीया, लिनो २ रे, संजम भार, विन स्रोवगण किम परहरो रे: वारी चुक वतावो भरतार॥ अव० ์॥ २ ॥ **ञ्रासा विलुधी हुँ रही रे** पीया, हॅस २ रही, मन मांय, दिन जावे पीया वर्षज्युं रे, वारी छोडोनी राज गुनार ॥ अव**० ॥ ३ ॥** भुखा तो भोजन चावै रे पीया. तिषया २ रे, चावै नीर, हुँ तो तुमको चावती रे, वारी सांभलो नेम कुँवार ॥ अव॰ ॥ ४ ॥ मेहलां तो वरसे मेवला

रे पीया, श्रामे २ रे, चमके विज्ञ, तुम रुसी ने, किम गया रे; वारी त्राई सावण री तीज ॥ अवन्॥ ५॥ सावण ऋायो साहवा रे पीया, गाज २ रेयो, गन गोर, बुंद लगे पीया वाय ज्युं रे, वारी जादव लियो वित चोर ॥ अव॰ ॥ ६ ॥ नेम जिएाद पाछा वल्या रेपीया, आयो २ रे. भादव मास, दादर पपईया वोलता रे. वारी पितम नहीं मुक्त पास ॥ ऋव० ॥ ७ ॥ नेेगो नींद आवे नहीं रे पीया, आयो २ रे, मास श्रासोज, नेमि मुक्त मुकी गया रे, वारी अव किम माण् मोज॥ अव०॥=॥ कातिक कंथ नई वावरो रे पीया. ऊभी २ रे, जोऊं वाट, महल पधारो सायवा रे, वारी सुनी हिंडोला खाट॥ अव ।। ह ॥ मिगसर वेरी आवियो रे पीया, देवण २, लागो दोष, ऊंडे पडवे पोढता रे, वारी सब गया पीया सुख ॥ अव ।। १०॥ नेमि जिएांद पाञ्चा वल्या रे फीया, ऋायो २ रे, पापी

पोस, तुम गिरवर रा वासीया रे, वारी अब छाडोनी पीया रोस ॥ अव• ॥ ११ ॥ माह

महीनो आवियो रे पीया, वाजे २ रे, शीतल वाय, सियाले री रेण ज्युं रे, वारी वालम आवे मुफ्त दाय ॥ अव॰ ॥ १२ ॥ ठंढ पड़े देही काँपे रे पीया, नहीं २, नगादल रो वीर, रातुँ काढुँ रोवती रे, वारी श्रासु भीजे चीर ॥ श्रव॰ ॥१३॥ फागुण महीनो फग फगे रे पीया, सबको २ रे, मन हर्षाय, हुँ फाग्रण केसुँ खेलुं रे, वारी वालम गयो वनवास ॥ अव० ॥ १४ ॥ चेत महीनो चमकीयो रे पीया, फुली २ रे, सब वनवास, फुली त्रिया कामणी रे, वारी कंथ पीया सुखदाय॥ **ऋव० ॥ १५ ॥ वैसाखा वेलु तपे रे पीया,**,दाजे, दाजे रे, तन सुख माल, कामनगारा कंथजी रे. वारी वेगे आय संभाजु ॥अव०॥१६॥जेठ तपे स्त त्र्याकरी रे पीया, पुछे २ सखी, जे वात, गेर ग्रुफा में विराजीया रे, वारी जादव नेमनाथ॥

श्रव ।। १७ ॥ वरजो सासुजीथांरा पुतने रे, पीया, वरजो २ वाईसा, थांहरो वीर, गेर युंफा में । वसी रेयारे, वारी घर घर मांगे निश्व ॥ अव०॥ १८॥ असाडा आञ्जी तरह रे पीया, लीनो २ रे, संजम भार, तीनसे परिवार सुं रे, वारी पोहता रे गढ गिरनार ॥ अव० ॥ १६ ॥ राजमती रंगे भरी रे पीया. लीनो २ रे, संजम भार, ५४ दिन पेहला गया रे, वारी पोहता रे मुक्त मकार ॥ अव० ॥ २० ॥ मुरधर देश मां श्रावीया रे पीया, नाम २ सखी, चन्द नाम. श्रावक सब समज़ वसे रे, वारी करे धर्म रो काम ॥ अव० ॥ २१ ॥

॥ इति श्री राजलजी रो वारे मासो समाप्तम् ॥



୍ଷ୍ମ ଓର୍ଷ ଅନ୍ତର୍ଶ ଅନ୍ତର ଅନ ଆଧାର ଅନ୍ତର ଅ

👝 चित्र कहे बम्हरायने, कछ दिखमाहें आणो पुरव भवरी प्रीतड़ी, तुमें मुल न जाणो हो ॥ बंधव बोल मानो हो ॥ १ ॥ कृतवारीरा सुत ज्यं, सांधोदे आणो हो ॥ जाती स्मरण ग्यान थी, पुरव भव जागो हो ॥ वं० ॥२॥ देस दसायण राजा घरे, पहेले भव दासो हो ॥ वीजे भव कालिंजरे, थया मृग, वन वासो हो॥ वं० ॥ ३ ॥ तीजे भव गंगा तटे, आपां हंसला हता हो॥ चौथे भव चंडाल रे, घर जन्म्या पुत्र हो॥ वं०॥ ४॥ चित्त संभुत दोनुं जणा, ग्रण बहुला पाया हो ॥ सर्गो आयो आपगे, तिग पंडित . पढाया हो ॥ वं० ॥५॥ राजा नगरी थी काढीया,

श्रापां मरणा मंडीया हो ॥ वन माहें गुरू उपदेश थीं, त्र्यापां घर छोडीया हो ॥ वं 🕬 ६ ॥ संजम ले तपसा करी, लब्ध धारी हुता हो ॥ गावां नगरां विचरता, हतनापुर पहुँ ता हो॥ वं० ॥७॥ निमुचं ब्राह्मण त्र्रोलख्या, नगरी थी कढाव्या हो ॥ कोप चढयाँ बैंहु जिएा, संथाराठाया हो ॥ वं ।। 🖹 ।। धुवो थें कीधो लब्ध थी, नगरी भय पाया हो ॥ चक्रवर्ति निज परिवार सुर त्रावि तुरंत खमाञ्या हो ॥ वं० ॥ ६ ॥ रत्नाराणी रायनी; आवि शीस नमायो हो।। पग पुँच्या केसा थकी, थारे ' मन भायां हो ॥ बंगा १०॥ नीयाणी तुमे कीयो, तपनी फल हारयो हो ॥ महे थांने वंधव वरजीयो, तुमे नाही चिचारयो हो ॥ वं०॥ ११॥ जलनी गुलनी विमाए में, भव पांच में थया हो ॥ तुमे तिहांथी चवी करी, कंवीलापुर आया हो ॥ वं० ॥ १२ ॥ हमे तिहांथी चवी करी, गाथा पती थया हो ॥ संजम भार लेई करी, तोसुं मिल्र्य ने स्राया हो ॥ वं० ॥ १३ ॥ चक्रवर्ति पदवी थें , लीवी,

ऋद्धि सगली पाइ हो ॥ किधो सोई पामियो, हिवे कमीयन कांइ हो ॥ बं० ॥ १४ ॥ समस्थ पदवी पामीया, हिवे जन्म सुधारो हो ॥ संसार ना सुख कारमा, विखीया रस निवारो हो॥ वं० ॥ १५ ॥ राय कहे सुगो साधुजी, कछु ऋौर वतावो हो ॥ ऋा ऋद्धि तो छोडो नहीं ॥ पछे थ्रें पीस्तासो हो ॥ वं० ॥ १६ ॥ थें श्राया म्हारा राज में, नर भव सुख माणो हो ॥ साध पणा माहीं छेकीसो, नित मांगने खाणो हो ॥ वं० ॥ १७ ॥ चित्त कहें सुणो रायजी, इसड़ी किम जाणे हो ॥ म्हे ऋद्धि तो छोड़ी घणी, गिण्ती कुंण श्राणे हो ॥ वं० ॥ १⊏ ॥ हुं श्रायो थाने केंग्ज़े, श्रा ऋदि तो तुमे त्यागो हो ॥ वैरागे मन वालने, धर्म मारग लागो हो ॥ वंशा १६॥ भिन्न भिन्न भाव कह्या घणा, नहीं आवे वैरागे

हो ॥ भारी करमा जीवड़ा, ते किए, विद जागे हो ॥ वं० ॥ २० ॥ नियाणो तुमे कियो, पट खंडज केरा हो ॥इए कर्णी सुंजाए जो, थारां नरके डेरा हो ॥ व० ॥ २१ ॥ पांचुं भव भेला किया, आपा दोनुं, भाई हो ॥ हिवे मिलणो छे दोहिलो जिम पर्वत राई हो ॥ वं० ॥ २२॥ ब्रह्मदत्त पहुंतो नर्क सप्तमी, चित्त मुक्ति मकारो हो ॥ कर जोड़ी कवियण कहे, आवागमण निवारो हो ॥ वं० ॥ २३ ॥



विकार कावणी किल्यते ७ विकार कावणी किल्यते ७

30

जिनवाणी सार सुणो चतुर नर 📙 जन्म सफ्ल कीजे । पायामेका भाग द्वान दे लावा ले लिजे ॥ देर ॥ जिन वाणी रस खाणी प्याला अमृत सम पीजे। अवसर आया हाथ विषय में चित नहीं दीजे ॥ सत गुरू तारण जाहज परिचा पेलीही करीजे॥ भेष देख मत भूलोके ग्रण श्रवगुण कों शोधीजे ॥ शुद्ध साधू नियंथ की सेवा प्रेम घरी कीजे॥ पाया॥ १॥ दान मूल छे दोय जिनोंका भेद सुणो भाई ॥ प्रथम श्रमय छे दान जीवको करूणा चित्त लाई॥ जो कोइ लुंटे प्राण दया कर उसको छोड़ाइ ॥ धर्म दलाली करो प्रभु सुत्र में फुरमाई ॥ त्रातम सम

छे काया जाणी रचक हो रीजे ॥ पाया ॥ २ ॥ वीजो दान सूत्र शुद्ध नियंथ भगी देवे ॥ पट कायाका पालन हारा बहुलो फल लेवे॥ चउदे प्रकारे वस्त सूजती श्रावक घर रेवे॥ जोग वन्या उत्तट भावे चित वित्तं पातरने सेवे ॥ विन्ती कर बार २ साधू भंगी नित्य दीजे ॥ पाया ॥ ३ ॥ इन सिवाय श्रीर दान ज्ञानको मोटो फर मायो ॥ धर्मे उपगरण श्रावकने दे लाभज क-मयो। दया ताणी जहां बृद्धी होवे उत्तम दर-सायो ॥ हिंसा दानको मार्ग भवीने परसन नहीं आयो ॥ अहमद नगरमं कही केवल रिख हित-धर सुर्गीजे ॥ पाया ॥ ४ ॥

🗳 इति दान अधिकार छावणी समाप्तम् 🐎





मुभे है चाव दुरशनका, निहारोगे तो क्या होगा, गही अवतो शुरण तेरी । उवारोगे तो क्या होगा॥ १॥ सुनो श्रीनाभिके नन्दा, परम सुख देन जगवन्दा मेरी विनती अपावनकी, विचारोगे तो क्या होगा ॥ २॥ फसामें कर्म्म के फन्दा मुक्ते तुम विन, छुड़ावे कौन, तुंहि दातार है जगमें चितारोगे तो क्या होगा 👊 ३ ॥ या भव सागर आथाही।में भकोरे दुख के निश्-दिन, मेरी है नाव अति भजरि, उतारोगे तो-क्या होगा ॥ ४ ॥ अवम उद्धारन पुरण के, सु-मति की सेज सुख दीजें, कुमतिके क्रपसे अब के निकारोगे तो क्या होगा 1। ५॥

काया की चेतन की शिलामण लावणी है

चिदानंद जग के सेलाणी। वसो हमारी नगरी जब तक है दाणा पाणी ॥ देर ॥ काया केती सुण्रे चेतन दो दिनका नाता । तेरी खिजमत में ऊभी रही हुं अब क्या फुरमाता॥ करो मजा दिन रात के ज़ोड़ी तेरी मेरी ख़ासी॥ मुजे छोड़,मृत जाणा रे चेतन लगा प्रेम फासी ॥ अरज करू करजोड़ लालजी में हु पटराणी ॥ वसो ॥ १॥ सुण् कान से राग छतीसी जीवड़ा सुख पावे । रह्या इस्कमे भीज के दुर्गत आगे दिखलावे। छोड़ो खोटा गाणा जो परभव में सुख चावे । येही, कान से सूणो वसन जिनवर

का मन भावे। मान हमारी वात के चेतन हु में अगवाणी ॥ वसो ॥ २ ॥ लगा नेण का ध्यान रूपको खड़ा २ देखे । नारी जोवन भराक नेतर वाण समा फेंके ॥ नहीं है तुज कुँ लाज के चेतन वड़ा २ पेखे ॥ देख तेरी वद<sup>्</sup>वोई<sub>ं</sub>के न्याती गोती में मेहें के ॥ जिनकी नीची द्रष्ठ के भगवंत स्त्राप समा जागी ॥ वसो ॥ ३-॥ स्र-त्तर मोतीया गुलाव केवड़ा। खस २ और हीना ॥ भाक वासना लेता के उसमें हो गया लीना नाक नमनु नहीं करता मुगरूरी में अकड़ाता॥ वह क्या फिरे । जगत में भमरा इस से दुख पाता ॥ में तेरी खिजमत में हुंगी सूगंधी धर्णी-याणी ॥वसो॥ ४ ॥ मुखसे चावे मालं के पटरस तुजको बहु भावे । कंद मूल मध् मांस खाय मर दुर्गत में जावे। पड़े मुदुर्गल की मार दुएको कहो कुण छोडा वे। खाय २ के जन्म गमाया पीछे पस्तावे ॥ में हूं. तेरी दासी रे चेतन । भज तूं

जिनवासी॥ वसो ॥ ५ ॥ कर सोले सिसमार के देही देव समी सोवे ॥ देख दरपण में मु-खड़ा मेरा चंद समा मोवे ॥ लगे अंतर फूलके श्रवला लटका कर जोवे ॥ चले निरखता चाल के मुर्ज सम और न को होवे॥ अवसर आयो हाथ के चेतन मतकर तुं हाणी ॥ वसी ॥ ६ ॥ कर सत गुरू संगत दूरगतका जड़ दे ताला। पांचु ईन्द्री कीजे वस में हो जग रचपाला ॥ वनास नदी गांव वडा में केवल रिख गावे। जेठ मास की सुद सात मी। सबके मन भावे॥ में तुजको समजाउ लालजी समत्ता चित्त ठाणी॥ वसो हमारी नगरी जब तक है दाखा पाखी ॥७॥





्रिश्च अपदेशी स्तवन लिख्यते हैं जिल्ला

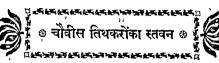
ंकोई चातुर विचारी ने चेतजो रे लाल n ए टेर n च्यार पेरको दिन बड़ो रेलाल, च्यार पेर की रात रे सुजान नर, दोय घड़ी करो आपं-गी रे लाल, परभव खरची लार रे सुजाग नर ॥ कोई चातुर० ॥ १ ॥ घड़ी २ आऊखो घटे रे लाल, कवले ऊभो काल रे सुजाग नर, परभव जावणो जीवने रे लाल, करो नी ऋपणी संभाल रे सजागा नर ॥ कोई चातुर० ॥ २ ॥ साध केवे नर सांभलो रे लाल, श्रेहलो जमारो मती हार रे सुजाण नर, खिणएक सूखां रे कारणेरे लाल, कुण सेसी जम मार रे सुजाण नर॥ कोई चातुर०॥ ३॥ राजा राणा थिर नहीं रे लाल.

वडा २ भोगल रे सुजाए नर, मुखां में वल घालतां रे लाल. ज्यानें ही ले गयो काल रे सजाण नर ॥ कोई चातुर० ॥ ४ ॥ खाट हिंडोले हिंडतो रे लाल, वे नर रेतां वारे पास रे सुजाण नर, मरणो कब हूं नहीं बंच्छता रे लाल, ज्याने ही ले गयो काल रे सुजाण नर॥ कोई चातुर० ॥ ५ ॥ मात पिता सुत कामणी रे लाल, तन धन दासी ने दास रे सुजाण नर, भोला नर समजे नहीं रे लाल, पड़ीया आंरी फास रे सुजास नर ॥ कोई चात्रर० ॥ ६ ॥ आ वाजी हटवाडा तागी रे लाल, मिल २ विछड़ जाय रे सुजाण नर, ईए भव में चेते नहीं रे लाल, परभव दुखीयो थाय रे,सुजास नर ॥ कोई चातुर० ॥ ७ ॥ राजा हं तो मोट को रे लाल,लाखांई फौजा लिवी लार रें सुजाण नर, पोल्यां तक पहुंच्यो नहीं रे लाल, विच में ही ले गयो काल रे सुजाए नर ॥ कोई चातुर०॥ = ॥ त्रागे नेजा फरहरे रे लाल. पडे

नगारां री ठोड़ रे सुजाणनर, एवा जोवो सुरमा रें लाल, ईएा काल त्र्यागे नहीं चाले जोर रे सुजागा नर ॥ कोई चातुर० ॥ ६ ॥ भरत बाह्र बल जाणीयो रे लाल, लाखां फौजां लार रे सुजाए। नर, काल थकी डरतां थकां रे लाल, त्याग दियो संसार रे सुजाग नर ॥ कोई चातुर०॥ १०॥ दान शियल तप भावना रे लाल, शिवपुर मार्ग च्यार रे सुजाण नर, ऋराधो सुध भाव सुं रे लाल, ज्युं उतरो भवपार रे सुजारा नर ॥ कोई चात्र विचारी ने चेत जो रे लाल ॥ ११ ॥

## 🛭 कवित्त 🕏

सास उसास लगे किम आवन, पाव पलक में जावन हारो; मात पिता त्रिया सुत बंधव, सर्व कहे कीनको नहीं सारो; दानव देव दसो हग पालन, सर्व चराचर कालको चारो, पानमल कहैं मन मान रे चेतन, आऊखो दुटा न संधन हारो॥



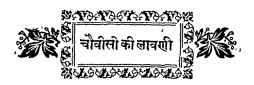
वनिता नगरी, नाभराय राजा, मोरादेवी राणी, जिण माता जन्म्या ऋषभदेव स्वामी ॥१॥ अजोध्या नगरी, जित सन्नु राजा, विजया देवी ' राणी, जिए माता जन्म्या अजितनाथ स्वामी ॥ २ ॥ सावथी नगरी, जथारथ राजा, सेन्या देवी राणी, जिए माता जन्म्या संभवनाथ स्वामी ॥ ३ ॥ अजोध्या नगरी, संवर राजा, सिद्धार्थ राणी, जिए माता जन्म्या अभिनन्दन स्वामी ॥ ४ ॥ कौशलपुर नगर, मेघरथ राजा, श्री मंगलादेवी राणी, जिए माता जन्म्या सुम-तिनाथ स्वामी ॥ ५ ॥ कोसम्बी नगरी, श्रीधर राजा, सुसीमादेवी राणी, जिल माता जन्म्या पदमप्रभु स्वामी ॥६॥ वनारसी नगरी पृतिष्टसेन राजा, पृथ्विदेवी राणी, जिल्माता जन्म्या सुपा-

र्वनाथ स्वामी ॥ ७ ॥ चन्द्रपुर नगरी, महासेत ं राजा, लिखमा देवी राणी जिर्ण माता जन्मा चन्द।प्रभु स्वामी ॥ = ॥ काकंदी नगरी, सुप्रीव राजा, रामादेवी राणी,जिए माता जन्म्या सुवि-धिनाथ स्वामी ॥ ६ ॥ भहिलपुर नगर, इढरथ राजा, नंदादेवी राणी, जिए माता जन्म्या शीतलनाथ स्वामी॥ १०॥ सिंहपुर नगरी विष्णुः सेन राजा, विष्ण देवी राणी, जिला माता जनम्या श्रेयांस स्वामी ॥ ११ ॥ चंपापुर नगरी, वसुसेन राजा, जयादेवी राणी, जिला माता जन्म्या वासपुज्य स्वामी ॥ १२ ॥ कंपिलपुर नगरी,कृती-भाग राजा, सामादेवी राणी, जिग्र माता जन्म्या विमलनाथ स्वामी ॥ १३ '॥ श्रजोध्यानगरी, सिवसेन राजा, सुजसा देवी राणी, जिए माता जनम्या अर्गातनाथ स्वामी ॥ १४ ॥ रख3ुरी नगरी, भांतुराजा, सुवत्ता देवी राणी, जिण माता जनम्या धर्मनाथ स्वामी ॥ १५ ॥ हस्तिनापुरी

नगरी, वासुसेन राजा, अचलादेवी रागी, जिग माता जन्म्या शांतीनाथ स्त्रांमी ॥ १६ ॥ गजपुर नगर, शूर राजा श्रीदेवी राणी, जिए माना जन्म्या कुंथं नाथ स्वामी ॥१७॥ नागपुर नगर, सुदर्शण राजा, देवी राणी, जिण माता जनम्या ऋरनाथ स्वामी ॥ १८ ॥ महिला नगरी, कुंभराजा, परभावती राणी, जिए माता जनम्या मङ्गीनाथ स्वामी ॥ १६ ॥ राजग्रही नगरी, सुमित राजा, पद्मावती राणी, जिण माता जन्म्या मुनीसुत्रत स्त्रामी ॥ २० ॥ मिथला नगरी, विजयसेन राजा, विपादेवी राणी, जिए माता जन्म्या नमीनाथ स्वामी ॥ २१ ॥ सौरीपुर नगर, समुद्र विजय राजा, सेवादेवी राणी, जिए माता जन्म्या रिट्रनेम स्वामी॥ २२॥ वर्णारमी नगरी, अश्व-सेन राजा, वामादेवी राखी, जिखंमाता जन्म्या पार्श्वनाथ स्वामी ॥ २३ ॥ खेत्रीकुंड नगरी,

सिद्धार्थ राजा, त्रसलादेवी रागी, जिग माता जन्म्या वृद्धमान स्वामी ॥ २८॥





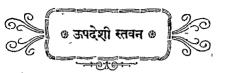
श्ररिहंत सिद्ध श्राचार्य उपाध्याय, साधु समरणा, तीर्थं कर रतनारी माला, सुमरण नित्य करणा ॥ समरीयें माला, मेरी जान समरीयें माला ॥ ज्युं कटे कर्म का जाला, ए जीवतणा रख वालो, ध्यान तीर्थं करका धरणा रे, ध्या० ॥ पांच पद चोवीश जिणंदका, नित्य लीजे सरणा, ॥ १ ॥ ए श्रांकणी ॥ श्रीऋपभ श्रजित समव श्रमिनंदन, श्रति श्रानंद करना ॥ सुमति पद्म सु चौधीसो की खावणी।

68

का फंदा, तम तजो जगतका धंदा, दीठा होये नयन अमितो ठरणा रे ॥ दीठा० ॥ पांचपद० ॥ ॥ २ ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस वासुपूज्य, हृदय मांहे धरणा ॥ विमल अनंत धर्मनाथ शांतिजी, दास रह' चरणा। जिनंद मोहे तारो, मेरी जान जिनंद मोहे तारो॥ संसार लगे मोहे खारो, वैराम्य लगे मोंहे प्यारो, में सदा दास चरणारो, नाथजी अब कृपा करणा रे ॥ नाथ० ॥ पांच पद ॰ ॥ ३ ॥ कुंथु अर मिल्ल मुनि सुत्रतजी, प्रभु तारण तरणा ॥ निम नेम पार्श्व महावीरजी, पाप परा हरणा॥ 'तरे भव्य प्राणी, मेरी जान तरे भव प्राणी ॥ संसार समुद्र जाणी, सुणो सूत्र

सिद्धांतको वाणी, पाप कर्मसें अब तो डरणा रे ॥ पाप० ॥ पांचपद० ॥ ४ ॥ इंग्याराजी गणधर नीस विहरमान, वांचा शुं मीटे मरणा ॥ अनंत

चोवीसीकुं नित नित वांदुं, दुरगति नहीं पड़न। ॥ मिरथा अंध मेटो, मेरो जान मिरथा अंध मेटो ॥ रहो धर्म ध्यान में शेंठो, जिनराज चरण नित्य भेटो ॥ दुख दारिद्र सव तो हरणा रे ॥ ॥ दुख० ॥ पांचपद० ॥ ५ ॥ जैनधर्म पाया विन प्राग्गी, पापशु पिंड भरणा ॥ नीठ नीठ मानव भव पायो, धर्मध्यान करणा ॥ करो शुद्ध करणी, मेरी जान करो शुद्ध कराणी, निरवाण तणी निस-रखी, तुम तजो पराइ परखी, एक चित्त धर्म-ध्यान करणा रे॥ एक०॥ पांचपद० ॥६॥ विहरमाण तीर्थंकर गर्णधर, मनमां शुद्ध कर्णा॥ पत पारिष कहे कल्याणी कीया तवन वरना॥ वरन ग्रन कीना मेरी जान वरन ग्रन कीना जैसा श्रमृत प्यासा पीना ॥ एक शरण धर्मका लीना, रिख जाजचंद गुगा कीना॥ करो नवत्तत्वका निरणा रे, करो॰ ॥ पांच पद चोवीस जिसांद-जी का नित्य सीजे शुरणा । **अधित**स्ट



लख चौरासी मांहे भमतां, काल अनंतो गमायो रे, कोईक पुगय संजोग करीने, दुर्जभ नर भव पायो रे ॥ १ ॥ चेतन चेतो रे, स्रो काल भव ब्रॅतर भटके लेसीरे ॥ ए टेक ॥ स्नारज चेत्र उत्तम कुल मिलियो, देह निरोगी पाइ रे, सुद्ध त्र्याचारी सद ग्रुरु मिलिया, उनमें कसर न कांड़ रे ॥ चेतन॰ ॥ ५ ॥ नरभव रत्न चिंतामण् सरिखो, जो हुवे सोई कीजे रे, मूर्ख विखीया रस रे माहीं एह जन्मज खोयो रे ॥ चेतन ॥ ३ ॥ वालपणो लड़का रे साथे, विरथा खेल गमायो रे, भर जोवन में अंधो हुय गयो, त्रिया संग लपटायो रे ॥ चे० ॥ ४ ॥ जोवन मटके भुः लें गर्व में, मन में बोहोत मगरूरी रे, देह तखो

तो खेह न लागरा दे, राखे फिकट सिंदुरी ॥ चि० ॥ ५ ॥ जोवन वित जरा कर लाग शिर पर धवला आया रे, नैंग तो दोऊँ भर लागा, कंपरा लागी काया रे ॥ चे०॥६॥ वासुदे वलमद्र मुरारी, चक्रवर्ति जैसा सूरारे, ईन्द्र-नरेन थर्गोद्र केहवावे, काल कर गया सब पुरारे ॥ चे ॥ ७ ॥ काल वली केहने नहीं छोडे, क्या राज क्या राणा रे, छिन मांहे ज्युं घाटी पकड़े चिड़ी व्युं शिंचाना रे ॥ चि०॥ = ॥ न्यार्त गोती सारन पुछे, सब मतलब के गरजी रे डोकरीयो इम मरणे वॅछे, करे राम सुं अर्जी रे ॥ चे० ॥ ६ ॥ एहवी जाण ने भवियय प्राशी, धर्म ध्यांन थें कीजो रे ; परभव में थे सुख पावोला, शिव रमगी ने वरसो रे ॥ चे० ॥ १०॥ सम्बत उगणीसे वर्ष अइतीसे, मास फाग्रण सुखकारी रे, श्रमरस्र में सोभागमलजी कहे, सुगा लिज़ो नर नारी रे ॥ चे० ॥ ११ ॥ पुज्य दोलतरामजी दीपता सरे, तस शिष्य श्राज्ञा कारी रे, उपदेशी झो स्तवन बनायो, ग्रह मुख त्राज्ञा धारी रे॥ चे०॥ १२॥



सुशीला होवे जहां नारी॥ उसी छुलकी महिमा भारी॥ टेर॥ पतिकी आज्ञा करे नहीं भंग, घर में नहीं मचावे जंग। पुरुष पर को न दिखावे अंग, लजा से स्वले अपना ढंग॥

**७ दोहा** ७

पिता तुल्य श्वसुर गिर्णे,श्वासु मात समान । चहिन वरावर गिर्णे नणद कों, पति को समभें प्राण । कुटुम्य पर रखे निगाह प्यारी ॥ उसी कुलकी महिमा भारी ॥ १ ॥ सासु बहु को न दासी जाने, यश कुल वर्ष्ट्र न हर्ष माने । बोले न कटु कभी नहीं ताने, शान्ति प्रिय शिचा दे छाने ॥

## दोहा

स्वधर्मिगी सहचारिगी, काता माने पति

खास । जिस ग्रहमें हो ऐसी वृत्ति, तहां सुख सम्पति वास । उच्चवतिव करण हारी ॥ उसी कुलकी महिमा भारी ॥ २ ॥ कुलटा होवे जो नारी, फिरे वह कुत्ती ज्यों मारी । पित दे घरसे निकारी, जन्म भर रहे वह दुखियारी ॥

ं दोहा ⊕

नात घुम्मा खावतां, वीते दिन श्रौर रात। श्रापयश फेले मुल्क में कोई, लोक कहे बद जात॥ ऐसी की संगति देवे टारी॥ उसी कुलकी महिमा भारी॥ ३॥ करे नहीं किसी पुरुष से हास्य, कभी नहीं रहे वह होय उदास । वेद्या का करती रहे, अभ्यास, पढे वह सीताका इतिहास ॥

## दोहा०

रावण ने सँकट दिया, वोला काम वचन । नेज धर्म छोड़ा नहीं उनने, रक्खा शील रल । जगत में वात हुई जारी ॥ उसी कुलकी महिमा भारी ॥ ४ ॥ फिर पद्मिणि का सुनो जिकर, शदशाह आया ले लश्कर । लड़ाई करी चित्ती-इगढ़ पर, सती मरी ऋश्नि वीच पड़कर ॥

## , 🦁 दोहा 🖲

ऐसी कई कामएयां, शील में रही खडीलां पुरू हीरालाल प्रसाद चौथमल, देवे शिचा तौल॥ उत्तम फट लेवे हृदय धारी॥ 'उसी छलकीः महिमा भारी॥ ५॥

**→**=�ৢ৺₹ति'*च*€=-



सुज्ञ दोष नहीं देना किस्कुं कर्म जिखा सो थावेगा, जो जिनवर का भजन करेगा सो भव २ सुख पावेगा ॥ टेर ॥ मनुष्य- जन्मे मुश्कल से पाया योंही इसको खोबेगा, सकृत करनी किया बिना चेतन, परभव मांहे रोवेगा, वार २ सतग्रह समजावे मोह नींद में सोवेगा, विन कमाई खाली हाथे दुक २ सामे जोवेगा, सकुत धर्म दान जो करता सो तेरे संग आवेगा ॥ जो० ॥ १ ॥ देवनती में देख देवता श्रोछी रिद्धि वाला भणी, भूर २ करके पिंजर होवे, नहीं सकृत की करणी, हाथ २ कर ऊमर गमाई पाप मांच बुद्ध फेली घर्णी, किंचित पुन्य से देवगती में पद्वी

अभोगी देवतणी, गज एरावण देवता होके इंद्र को सिर वेठावेगा ॥ जो० ॥ २॥ मनुष्यं भव-में वसदेव श्रीर चक्रवृत का पद मोटा, बड़े २ नरेन्द्र देवता लेते हैं जिनका श्रोटा, चऊदे रह श्रौर नवि निधान से किसि वस्तु का नहीं टोटा, कितने को तो अन्न नहीं मिलता पिखे को नहीं लोटा, जो चिएा जावे सो नहीं आवे करणी विन पछतावेगा ॥ जो० ॥ ३ ॥ तिर्यंच गति में देंखो अश्व गजकी पदवी पाया, सहश्र देवता सेवे जिनको. कोई जननी ऊनको जाया, केई. भुखे प्यासे वंधे खुटे केइक वोज उठा लाया, निगोदकी तो वेदन सुण के थरर कालजा थर्राया, इम जाणी धरो दया दिल में तो दुःख सह छट जावेगा ॥ जो० ॥ ४ ॥ नर्कगति में देख वेदना परमाधामी देते हैं, वैर वदला वांधा जिसका फल भुगत कर लेते हैं, इम कमेकी गत है दुष्कर केवल ज्ञानी केते हैं, दुक्तत से दुःख

सुक्रत से सुख सर्वही जीव जंत लेते हैं, देश, पंजाव के कसबे दसके में, केवलरिख पद गावेगा ॥ जो० ॥ ॥

क्रके इति स्टब्स



तजो रे पच्चपात भाई, सुधारा की जो है चाई ॥ देर ॥ लच्च चौरासी को भुगत्या, जन्म और मरण करी वीत्या, संग सुग्रुरु को नहीं पायो, जिन मार्ग में नहीं आयो ॥ दोहा ॥ समकित विन यो जीवड़ों, भम्यो अनंत संसार, तारण वालों को नहीं, सो हृदय लेवो विचार ॥ मिलत ॥ हार नर भव को जो जाई, समकित विन दुःख र्घणो पाई ॥ तजो० ॥१॥ काल अनंतो यों वीत्यो, धर्म विन रह गयो यों रीतो, देव श्रौर धर्म ग्रह चीनो, रत्न संग तेरे ये तीनो ॥ दोहा ॥ विन करणी पछतायगा, पड़ा ममता के मांय, जन्म जरा और मरण मिटावण, लगे जीह्या ही उपाय ॥ मिलत ॥ सोच हिरदे ध्यान लगाई. क्या प्रभु कहा सूत्र मांई ॥ तजो०॥ २॥ वाड़ा ममत करी भरीया, पापसे जरा नहीं डरिया, हर्पसे हिरदा गहवरिया, राग और द्वेष चित थरिया ॥ दोहा ॥ महिमा पुजा का लोलपी, करे न हित विचार, इंद्रादिक यो होइजी. वडो पुजायो बहुबार ॥ मिलत ॥ पृथ्वी पाणी के मांई, उपज्यो तेहि फिर जाई ॥ तजो० ॥ ३ ॥ मानसे निची गती पावे, क्यो वृथा ऊमर गमावे, सुगणा चित ठाम लावे, पच छोड़ शिव पंथ धावे ॥ 11 दोहा ॥ ऊगगीसे छप्पन भला, स्यालकोट के मांय, केवलरिख की विनती, सृण जो चित

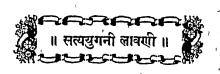
लगाय ॥ मिलत ॥ वैशाप सुद इग्यारस गाई, बार शुकर छे सुखदाई ॥ तजो ॥ ४ ॥

**अधित** 

(क्रियुग की लावणी ॥

तारक धर्म जिनेश्वर केरो, विरला नर धारे; पालंड मतनी पूजा होवे, मनुष्य जन्म हारे॥ हलाहल कलियुग चल आयो रे॥ह०॥कूडकपट मत पालंड करनें, जगने ठग खायो॥ ह०॥१॥ नगर प्रामें प्राम मलांखें राजा जम जैसा, वर्षा नहीं होवे मनमांनी, अल्प हुआ, पैसा॥ ह०॥ ॥ २॥ वूज गाज नहीं रही राजमें, कामेती अलिया; कहो किसीका पोरा देवे, चोर छटिया मिलिया॥ ह०॥ ३॥ भगड़े वेटो मात तात

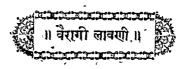
सें, नहीं वंधव मुख वोले; साला सेती गुंज 🗸 घणेरी, ग्रप्त वात खोले ॥ ह० ॥ ४ ॥ नारी कारण न्यारो होवे, मांगे सो लावे; वा नारी निज पतिनें छोडी, और पुरुष ध्यावे ॥ हु० ॥ ५ ॥ बृढेनें वेटी परणावे; लोभ दृष्टि जोवे; अर्ल्य दिनां में हुवे ज दुख्णी, निज़ पतिनें रोवे ॥ ह०॥ ६ ॥ मुखमें न धोला सिर पर धोला, परणीजण चावे; कुलवंती कोई रहे कारमें, और विगड़ जावे ॥ ह० ॥७॥ भला त्रादमी वह सिधावे, पापीनो पोरो, दुखिया रानी ऊमर मोटी, सुखी जिन्ने थोड़ो ॥ ह० ॥ = ॥ दादो वैठा पोतो चल जावे, नहीं सर्व सुखी पावे; निर्धन के वहु वेटा वेटी, धनवंत तरसावे ॥ ह० ॥ ६ ॥ मुर्थ धन जोवन स् ग्वें, छिनछिन श्राउ छीजे; रामचंद्र कहे हलाहल कलुमें, धर्म ध्यांन कीजे ॥ ह० ॥ १० ॥



हलाहल कलियुग मत जांगो रे ॥ ह० ॥ वंडे २ मुनिराज इसी में, तपसी ग्रुण खांनो ॥ टेर ॥ मारग चलता भंडो न दीसे, ए खरुं उन्मांनो: अमृत पीते मुवा न सुणियो, ज्हेर न रखे प्रांनो ॥ ह० ॥ १ ॥ एक अधिकाई हद सें जादा, विना धणी भूंभे; लाखां द्रव्य छोडी मुनि होवे, सिंघ परे गूंजे ॥ ह० ॥ २ ॥ दुजी अधिकाई सतयुग सेती, दुहिता दी जावे; नाके सल घाले नहीं तिल भर, नहीं ओग्रुण गावे 11 ह० ॥ ३ ॥ जुलो पंगु अंग हीखो अधो, रोगी कुष्टी बुढो; कुरुप बिधरादि पिता परणावे, धी न फेरे मंढो ॥ ह॰ ॥ ४ ॥ ऋग्नि तेज सरज प्रकाशा,

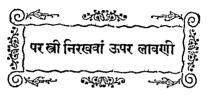
धरा निपजे धांनो; खांड गले पाले सुत माता. दाता देवे दांनो ॥ ह० ॥ ५ ॥ वचन प्रमासे लाखां रुपिये. देते च्यौपारी. वर्षे वर्षा नदियां चलती, पतिव्रता नारी ॥ ह० ॥ ६ ॥ भगवत वचन प्रकाश जगत में, मेटे अंधारी; महावत शुद्ध पाले सतज्जगसा, करे तपस्या भारी ॥ ह० ॥ ७ ॥ करे न हिंसा वदे न मृपा. दत्त ले ब्रह्मचारी; अकिंचन रंच नहीं है ममता, समता दिल घारी ॥ ह०॥ = ॥ सत पुरुषां रे नित ही सतज्ञा, करे कलियुग कांई, मुनिराम कहें आ बखत भली है, भजन करो भाई ॥ ह० ॥ ६ ॥ ... १३३१ति १६०





ं तुम भाग चंलो तो कहोनी प्यारें, 'त्रागे नहीं मिलती सेरी ॥ टेर ॥ एक रैन अंधिरी विजुली चमके जी, कैदी कैद में रहतेथे, सफी-लगिरी पोरायत सूते, वॅदीवांन एक कहते थे, संवहीं निकसो ऐ छै मारग, ऐ अवसर नहीं आर्णेका, बहोत अच्छा पिरा जरा लेटके, है इरादा जानेकां, जे निकस्या ते घरकं पोंचें, सूता ते जॅजीर जड़ा, कव हुवे मार्ग कव<sup>्</sup>वे निकसें, इन रीते जगवासी पड़ा, मत जांनो जग साचा, हे काचे से काचा, वीरतणा है वाचा, आते नहीं अवसर फेरी ॥ तुम<sup>्</sup>भा०:॥ १ ॥ जग जाल जगत का है अर्ति फंदाज़ी; मोह माया में नर नारी; मात पिता ऋरू बैन भार्या, अंत समय नहीं है थारी; रूप गर्व अरुं धन गर्वता, ऐ टोनुं

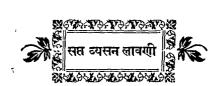
है दुखकारी ; तड़फ तड़फ नें माया जोड़ी, जीव थकी लागे प्यारी, या माया तेरी संग न चले, तातें सुकृत कर लेनी; जे कोई लेग्या इसक् लारे, उसका नाम कह देनी, देते सतगुरू हेला, तं मान मान रे गैला; दिलसें विचारे पैला, अरे विगड़ गई क्या मत तेरी ॥ भा०॥ र ॥ रूपवंत पर त्रीया देखी जी, बुरी निजर क्युं जोता है, शिर वदनामी दोजग होगी, क्यूं सुकृत कूं खोता है; हीर कनीसा नर भव पाया, इससें नहीं कोई और वडा; नाहक इसकूं क्यूं तूँ हारे, में केहताहुं खड़ा खड़ा; मुनिराम कहें दिल पाक रखोनी, अच्छा अवसर आय अड़ा, करणा है सो करलो प्यारे, ऐ घोड़ा मैदान पड़ा; सुराते हो तुम वंदा, क्यूं होते हो ऋंधा, पड़ा रहेगा धंया, तेरे पूठ पीछे लागा वैरी, तुम भाग चलो तो कहोनी प्यारे, आगे नहीं मिलती सेरी ॥३॥



चतुर पर नारि मत निरखो. श्रावण केरि रेन अंधेरी, वीजलीको चमको ॥ रावण मोटा राय कहावे, लंका गढ वंको ॥ पाप करीने नरक पोहोंचीयो दुःख पायो अधको ॥ चतुर० ॥ १ ॥ धातकी खंडको राय पद्मोत्तर, द्रौपदीने हरतो ॥ कृष्ण नरेशर करे ख़ुवारी, जब पुगय हवो हलको ॥ चतुर० ॥ २ ॥ कीचक राय महा दुःख पायो, भीमें सुं ऋधको ॥ नारि द्रौपदी नेहें विचारी, भव २ में भटक्यो ॥ चतुर० ॥ ३॥ परनारि को रंग पतंग है, भोडल को भलको॥ श्रोस वृंद जब लगे तावड़ा, ढलक जाय ढलको ॥ चतुर० ॥ ४ ॥ परनारी को स्नेह करतां,

जासी घर को ॥ दुजा देख कर करे ख़ुवारी, जब वन में भटक्यो ॥ चतुर० ॥ ५ ॥





संसारी लोको सात व्यसन छोडो भावसुं॥ सं० ॥ टेर ॥ जुवा खेलए। मांस मद्य छोर, वेश्या व्यसन शिकार, चोरी पर रमणी को रमवो, सातुं व्यसन निवार हो॥ सं०॥ १॥ जुवा खेलिया पांडवास रे, मंस भिखयो वकराय मिदरा पिवी जादवांस रे, जङ्यां मूल सें जाय हो॥ सं०॥ २॥ चारुदत्त वेश्याने सेवी, ब्रह्मदत्त छाखेट, सत्यघोष पर धन के कारण, पहुंतो नरकां थेड हो।। सं ।। ३ ॥ रावण राजा वडो अभिमांनी तीन खंड को सांमी, रामचन्द्रकी सीता हरतां, भयो नर्कको गामी हो ॥ सं ।। ४ ॥ सात व्यसन ए छोडदोस रे, है जीवन दुःखकार, रामचन्द्रकी आही सीख है, सातुं व्यसन निवार हो ॥ सं ।। ५ ॥



अरे मन चेत मेरा मतवाला, दुर्गत का जड़ दें ताला रे॥ मन ॥ टेर् ॥ मिथ्या मत जन्म गमायो, शुद्ध मार्गमें नहीं आयो, सतग्रह विन चहु दुःख पायो, इम काल अनंत वितायो रे॥ मन०॥ १॥ समिकत विन सुखी किम होवे,

विन ज्ञान आरम किम जोवे, मुढ विरथा जन्मा-रो खोवे, तेतो भव २ मांहे रोवे रे॥ मन०॥शा चारित्र तारे गत चारो, तप सेही होवे निस्तारो, शुद्ध भावसे खेवा पारो, जावे पंचमी गती मभा-रो रे ॥ मन० ॥ ३ ॥ दान दिया दरिद्र जावे. शील स ऊंची गत पावे, इम शिव सख हाथे श्रावे. त्रिलोकीनाथ ग्र**ण गावे रे ॥ मन**०॥ ४ ॥ ऊग्रापीसे छपन जाएो, महा वदी पंचम दिन ठाणो, पिरोजपुर में केवलरिख गाणो रे, जो चेतो सोई पुन्य वानो रे ॥ मन० ॥ ५ ॥

**अ**इति/क





विगट घट दुरगत का भारी, नीर ज्यां भरती कु-मती नारी, वरछी ऊन नैनो की मारी, दुव्या केई कामी संसारी॥ १॥ इनोकी हो रही खुआरी नित्य कोई सत धर्म धारी, प्रभु तुम परमारथ पाया, शरण अब जिन दास आया॥ २॥

**क्ष्म्याद्यत्र अस्त्र** 

जिनवाणीश्रवण सुणीजी । जिन मार्ग में श्राय। जीव श्रजीव जाएया विनाजी । किम जैनी नाम धराय ॥ भवीकजन हीये वीचारी रे जोय ॥ १ ॥ सुखी होय सहुको खपेजी। सुखकी न जासे वात ॥ पट काया हणता थकाजी । कहो किम सुखीया थात ॥ भ० ही०॥ २॥ चीरो: लागे श्रांगली जी तड़फ २ दुःख पाय ॥ छेदत भेदत जीवने जी । दया न ऋगों घटमांय ॥भ०॥ ही० ॥ ३ ॥ त्रस स्थावर जीवां तखाजी जूटे हरखी प्राण् ॥ समकिती नाम धराइयोजी । मिश्यातीरा ए लाग्।। भ०॥ ही०॥४॥ चीर फाड़ भडिता करेजी । कंद मूल सब खाय ॥ रात्री भोजन करया थकांजी । किए रीते जैनी थाय ॥ भ०॥ ही० ॥५॥ ञ्रण्गले पाणी पीवताजी । ञ्रण्गले नीरे न्हाय ॥ श्रग्गगले कपड़ा धोवगाजी। सावग् खार लगाय ॥ भ० ॥ ही० ॥६॥ पाणी ढोले दया विनाजी। वेवे मोरी खाल। त्रस जिव तिरामें मरेजी । चाले अज्ञानीरी चाल ॥ भ०॥ ही० ॥७॥ सुल्या धान वेचे सेखे जी । जंतर घरन।पीलाय ॥ रात दिवस आरम्भ करेजी। जरा दया नही

लाय ॥ भ० ॥ ही० ॥=॥ कुशी कुवाडा पावड़ाजी वेचे शस्त्र अजाण्॥ एक उदर रे कारणे जी करे नर्करी खाए॥ भ०॥ ही०॥ ६॥ शीखा मण देतां थकां जी। मनमें म लाज्यो रोस। श्रोषध तो कड़वी. पीयाजी। मिटे श्रातम रे दोष ॥ भ० ॥ ही० ॥ १० ॥ सुधमाव हिरदे धरे जी। मतकरो किंचित अकाज ॥ जीवांकी जतना करोजी सीजे वांछित काज ॥ भ० ॥ ही० ॥ ११ । सम्वत उगगीसे छपनेजी । कातीवद श्राठ्ठ जंबूमांय ॥ श्रनर्था दंडने छोडीयेजी । कहे केवल हित लाय ॥ भवि० ॥ हिये० ॥ १२ ॥



∯**इति**∯

#### 

सजन तेरे दिल कुं समभाना, सातवारकी करनी सुण कर तन मन हुलसाना ॥ स०॥ टेर ॥ १॥ अदीतवार कुं अति आदर से सुगुरुं पास जाणा, जिन आगम अमृत रस पीके समता घर त्राणा ॥ स० ॥ २ ॥ सोमवार कहे सद्ध किरिया कर समकित धन लाना, विकथा च्यार अलग परिहरके जिन पद ग्रुण गाना॥ स०॥ ३॥ मङ्गलवार ममत तजो तुम बरो धर्म ध्याना, जगत जाल में मत कोई ऊलको सुर्यो वात स्याना ॥ स० ॥४॥ कहे बुधवार विमल बुध करके छोडो श्रभिमाना, सुकरित दान दया दरशनमें करिले पहिचाना ॥ स० ॥५॥ गुरुवार कहे सुण

रे प्रांणी दुरलम नर भव पाना, करना होय सौं करलो प्यारे काल फिरे छाना ॥ स० ॥६॥ शुकर-बार कहे शील धरो तुम आत्म हर्पाना, परनारी जननी सम जाणी पामों शिवथाना ॥ स०॥७॥ थावरवार में थिर चित करके पढो अचल ज्ञाना, अवसर वीते फिर क्या होगा पीछे पछताना ॥ स० ॥६॥ सातवार की करनी एसी करिया सब सजना, कहत अवीर धरम चित चोखे मिथ्या-तको तजना ॥ स० ॥६॥

**৬**১ইনির্দে

७ स्तवन नेमिनाथजी का ७

वरसे माहरे नेम कुंवर विन जिवड़ो तरसें रे आज रंग वरसे रे। वीस लाख घुड़ला रे उपर जीए वनाथी करसां रे, तीस लाख हस्ती रे उपर

हौदा धरसो रे, श्राज रंग वरसे रे, श्राज रंग वरसे रे म्हारे नेम कुंवर विना जीवड़ो तरसे रे; आज रंग वरसे रे॥ १॥ सहस गोपींया ऊभी हाजर करे नेमजी सुँ अर्जी रे, हांकारो भर लियो नेमजी; विवाह जो करसी रे, झाज रंग वरसे रे ॥ २॥ छप्पन कोड जादव मिल आया दे नगारा चढसी रे, छतीस वाजा वाजे जान में: **जञ्जव करसी रे, ब्याज रंग वरसे रे॥३॥ द्वारका-**रा नाथ नेमजी सबी देवता तरसे रे, तोरण सें रथ घेरचो नेमजी; हिवड़ो खटके रे, आज रंग वरसे रे ॥ ४ ॥ वडे भाग सुँ जान बणाई; जुनागढ़ में आई रे, अजद रंगीला जानीया; केसरीया करस्यां रे, आज रंग वरसो रे॥ ५॥ सोवणी सुरत मोहनी मुरत, चांद पुनम केरो चमके रे, समुद्र विजयजी रो लाडलो, गिरनारां चढ गयो रे. ञ्राज रंग वरसे रे॥ ६॥ 🖚 इति



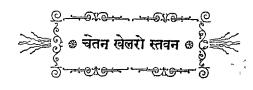
चिन्तामण स्वामी अर्ज हमारी सुन लीजिये ॥ चि० ॥अ०॥ तुम राजा हम प्रजा तुमारी निश् दिन करते सेवा, सुं निजर करके मुक्कं दीजे त्रविचल सुखका मेवा हो ॥चि०॥ अ० ॥ १॥ तुम शिव वासी हम जगवासी एही वड़ा ऋँधेरा, इसकुं त्राप विचारो मनमें कैसे होय निवेरा हो ॥ चि॰ ॥ अ॰ ॥ २ ॥ दीनानाथ दयाल कहावी जग जीवन जिन राया,ऐसा विर्धतम्हारासाहिब सवही के मन भाया हो ॥ चि०॥ अ०॥ ३॥ चरण कमल की सेवा चाहुं एही विनती मोरी, कहत अवीर कृपा जिनवर की लागी मुक्ति की ड़ोरी हो ॥ चि०॥ ฆ०॥ ४॥

र्≽#इति\्ॐ~

#### 🐼 जपदेशी 🐿

**张沙·张**华

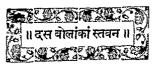
जिन त्रापकुं जोया नहीं,तन मन कुं खोजा नहीं, मन मेल कुं घोधा नहीं, अंघोल किये से क्या भया ॥ १ ॥ लालच करे दिल दामका. वासद करे वदनाम का, हृदे नहीं सुध राम का. हरी हर कहा तो क्या भया॥ २॥ कुंती हुवा धन मालका, धंधा करे जञ्जाल का, हृदा हुवा चएडाल का, काशी गया तो क्या भया ॥ ३ ॥ गोगा करे संसार का, जाणे कुञ्जड़ा वाजार का, आया तीर्थ करि द्वारिका, छापा लिया तो क्या भया ॥ २ ॥ जीवते पित्र कुं सुख नहीं, उनको जक ग्राशक नहीं, चएडाल में कुछ सक नहीं, तर्पण किया तो क्या भया ॥५॥ इस सांस में क्रब वास है, जिरा रामका परकाश है, सोही भला जिन खास है, ब्राह्मण भया तो क्या भया ॥६॥ **अ**३इतिस्क



चेतन खेल रे यो मोह कर्म संग ले ले वाजी रे ॥ चे० ॥ टेक ॥ चौरासी लच जीवां जोनी का चौगान में खेल रचाया रे, जीव दड़ी कर्मों का डंडा से डोटा खाया रे ॥ चे० ॥ १॥ कभी उछल गयो नर्क बीच में कभी तिर्यंचके मांई रे । कभी उछल गयो स्वर्ग बीच, फिर नर देह पाई रे॥ चे० ॥ २ ॥ कभी उछल गयो स्वर्ग दुजे में, नाटक का भागकारा रे, वहां से उछल पृथ्वी पानी में लिया अवतारा रे ॥ चे॰ ॥ ३ ॥ कभी हुत्रा मातंग कुल मांही, भाड़ ख़्व लगाया रे, कभी हुवा राजा राणा शिर छत्र धराया रे ॥ चे० ॥ ४ ॥ कभी हुवा ये कीड़ी

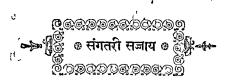
मकोड़ी, माकड़ और गजाई रे, कभी हुवा हाथी और घोड़े फौज सजाई रे। चे०। प्र।। ऐसे डोटा खाता २ काल अनंतो वित्यो रे, वैराग्य मांही वाणी सुन सत्युरु की कोई भवी चेत्यो रे। चे०।। ६।। कोई भारी कर्मा प्राणी डोटा खाया ने खासी रे, केई एक ही डोटा मांहीं शिव पुर जासी रे।। चे०।। ७।। ग्रणतर का साल विचमें, उदेपुर के मांही रे, मकर संक्रांति के दिन चौथमल जोड़ वणाई रे।। चे०।। ८।।

Mitalian



आज दिन फलीयो रे, थाने जोग वोल यो दस को मिलीयो रे॥ आ॰ टेक ॥ मनुष्य जन्म आर्य भूमि उत्तम कुलको योगो रे, दीर्घ

अ।यु ऋौर पूर्ण इन्द्रि शरीर निरोगो रे ॥ आ०॥: ॥ १ ॥ सतुगुरु कनक कामनी त्यागी त्राप तिरे पर तारे रे, तप चमा दया रस विना सूत्र उचारे रे ॥ आ० ॥ २ ॥ यें आठ वोल तो भवी अभवी केई जीवने पाया रे, नहीं श्रव्या, श्रध्या तो कुगुरु मिल भरमाया रे ॥ त्र्या० ॥ ३ ॥ **अब के श्रद्धा गा**ढ़ी राखी शुद्ध पराक्रम को फोड़ो रे, अल्प दिनों के मांही आठों कर्म को तोड़ो रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ यह इस बोलकी चीर मसालादार , पुराय से पाई रे, अनंत काल की भुख प्यास थारी देगा भगाई रे॥ श्रा०॥ ५॥ निर्धन को धनवान हुवे उयुं अवे आंख्या पाई रे, चन्द्रकान्त मोतीसे अधिक नर देह पाई रे॥ आ। ६॥ गुरु प्रसादे चौथमल कहै कीजे धर्म कमाई रे, ऊन्नीसे और सतर साल में जोड़ वर्णाई रे ॥ ञ्रा० ॥ ७ ॥



संगत करले रे साधु की संगत शिव सुखदाता रे ॥ सं० ॥ टेक ॥ प्रत्यच कल्प वृत्तुसा जुग में जाने पारस मिलीया रे, तुरंत होसी तीरणों थांरो ज्ञान के सुणीया रे ॥ सं०॥ १॥ कुटम्ब कवीला धन दौलत में मत ना कभी तुम राचो रे, विन मतलव विन कोई न पृछे जानो सगपण काचो रे ॥ सं० ॥ २ ॥ जुवावाज चोर लंपट और मद्य मांसका आहारी रे, इतनो की 'संगत मत कीजो सुन शिचा हमारी रे ॥ सं० ॥ ३ ॥ कुगुरु कनक कामनी भोगी, लोभी और **'घूतारा रे, अा**प डूबे केसै तुभे तारे, करो विचारा रे ॥ सं० ॥ ४ ॥ गौतमस्वामी पूछा कीधी देखो

भगवती मांई रे, दश वोल की होवे प्राप्ति सुग्रुरु संगत पाई रे॥ सं०॥ ५॥ कहे चौथमल ग्रुरु हमारा हीरालालजी ज्ञानी रे, चतुर हो तो समभे दिल में ऋति हित ऋगी रे॥ सं०॥६॥

**∞%ुं इति**ट्रे०**%**≻

भू क सेगो सेथांग का स्परंच क भू भू क्षणो सेथांग का स्परंच क भू

सुणों सुजान सत्य की यह कैसी बहार है, सत्य विना मनुष्य का जीना धिकार है ॥ टेक ॥ स्त्राना हुवा हरिचंद का, जल लेने कूंप पर, राणी भी खाई उस समय, पनघट पणीहार है ॥ सुणो० ॥१॥ पड़ी निघा राणीकी, अपने प्राणनाथ पर, तनमें-देख दूवले करती विचार हैं॥ सुणो० ॥२॥ आंखोमे ज्यान आ लगी, हाय क्या

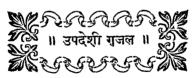
गजन हुना, गुल हुसन नह कहां गया, कहां यह दीदार है ॥ सुणो० ॥ ३ ॥ गुरु हीरालाल प्रसादे, चौथमल कहें सुणो अपना, हुने सो आपका करता निचार है ॥ सुणो० ॥ ४ ॥

**৽৽৻৻ৼ**বিহাত



श्री चौदीस जिनराज का जग मे आधार है, रटत प्रातः सायंकाल हो पल में पार है॥ ॥ टेक॥ ऋषभ अजित संभव सार, देवे तार है, अभिनन्दन सुमति पद्म, ग्रण अपार है॥ श्री०॥ १॥ सुपार्थ चन्द्रप्रभु, सुविध दातार है, शितल अंश वासुपूज्य, तारणहार है ॥ श्रीक ॥ २ ॥ विमल अनंत धर्मनाथ, धर्मधार है, शांति कुंथु अरनाथ अब निवार है ॥ श्रीक ॥ ३ ॥ मिस मुनिसुबत निम उदार है, अरिष्ट-नेमि पार्श्वनाथ, महावीर सार है ॥ श्रीक ॥ ४ ॥ वीस वेहरमान और ग्यारे गणधर है; चौथमल कर जोड़ करे नमस्कार है ॥ श्रीक ५ ॥

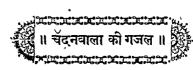
#### क्ष्या इतिस्था



लगाता दिल तूं किस पे हैं, जहां में कौन तेरा हैं, सभी मतलब के गर्जी हैं, क्यों कहता मेरा २ है ॥ ल० ॥ १ ॥ छिपे रहते थे महलो में, हो गल्तान एशो में ॥ दिखाते मुंह ना सूरज को, उसको भी कालने हेरा है ॥ ल० ॥ २ ॥ मिलके क्रमति वदस्वाहने, पिलादी शराव तुभे मोह की ॥ खबरना उसमें पड़ती है, कि यहां चन्द रोज डेरा है ॥ ल० ॥ ३ ॥ कहां तक यहां लुभावोगे, की आखिर-जाना तुमको वहां ॥ उठाके चरम तो देखों, हुवा शिर पर सबेरा है ॥ ल० ॥ ४ ॥ ग्रुरु हीरा-जानजी के परसाद चौथमल कहे जो चाही सुख ॥ दया की नाव पर चढ जा, यहां दरियाव गहरा है ॥ ल० ॥ ५ ॥

**अ}हति**स्क

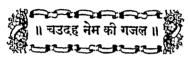




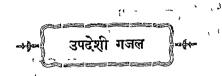
श्री वीर प्रभु उपकारी, तुम सुणी जो अर्ज हमारी ॥ टेक ॥ श्रेष्ठी धनदत्त के आई द्वारी, प्रभु घोर अभिवह धारी जी, चन्दनवाला कहे जिवारी ॥ तु० ॥ प्रभु उड़द वाकला लिरावो, मुज दुःख्यारिणी को तिरावो जी, मम विनती चारम्वारी ॥ तु० ॥ फिर प्रभु ने ध्यान लगाया नहीं ऋश्र नेत्रमें पाया जी, तब बीर फिरे त्तरकारी ॥ तु० ॥ ३ ॥ कहै चन्दनवाला पुकारी, देखो कर्म तणी गत भारी जी, नेत्राम्बु हुवा जव जहारी ॥ तु० ॥ ४ ॥ फिर वीर पारणो लीनो, जहां मिली सुर महोत्सव किनोजी, सती पामी है सुख अपारी ॥ तु॰ ॥ ५ ॥ चन्दनवाला सयम

पाके, गई मोच कर्म खपाके जी, वंदे चौथमल त्रिकारी ॥ तु० ॥ ६ ॥

**अइति**५६



यह श्रावक को श्राचारो, नित्य चौदह नियम चितारो ॥ टेक ॥ तुम सचित द्रव्य विचारो, मर्याद विग्य की धारो जी, तम्ब्रल पनी को टालो ॥ नि०॥ १ ॥ वस्त्र ऋौर फुलकी माला सजा असवारी रसालाजी, विग्य पाणी को करो सुमारो ॥ नि॰॥ २॥ ब्रह्मचर्य मर्याद दिसारी, स्तान भोजन की विधि न्यारी जी, यह चौदह भेद निहालो ॥ नि०॥ ३॥ उन्नीसे पेष्ठ के साल, उदियापुर सेखे काल जी, कहें चौथमल हितकारी ॥ नि०॥ ४॥ ध्या इति *स्था*व



इल्म पढ़ले ऋरे दिला, ईसका गरम वाजार है, श्रालिमों की हाजरी में कई खड़े मखार है ॥ टेक ॥ जिस समाज में लिखे पहे, उसका सितारा तेज हैं, जिस देशमें विद्या हन्नर वह देश ही गुलजार है ॥ इ०॥ १ ॥ दिवान, हाकिम, अफसरी, वकील, वैरिस्टर वने, वदौलत इस इल्म की दुनिया कहे हुशियार है ॥ इ०॥ ॥ २॥ इल्म से अकल वह, और अकल से जाने प्रभु, सत्य भूठ दोनों फैसले का वही तजरवे-दार है ॥ इ० ॥ ३ ॥ विन इल्म के इन्सान श्रौर, हैवान में क्या फर्क है, गौर कर देखो जरा, फ्र्ल इल्म की ही बहार हैं॥ इ०॥ ४॥ पढ़

पढालो इल्म को, खेलना खेलाना छोड़ दो, कहैं चौथमल मित्रो सुनो, नसीहत हमारी सार है ॥ ॥ इ० ॥ ५ ॥

**৽৺(হবি)**শ্রু



🍪 आषाढ़ 🐉

हे जा मरुदेवाजी, सोच करत हैं मन में। मेरा रिषम गया, क्यो वनमें॥

🎇 आंकड़ी 🎕

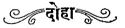
प्रथम महीनाजी लगा खासाड चौमासा, इन्दर वरसन की खासा। मरुदेवजी मनमें भई उदासा, प्रभु रिपभ गये वनवासा॥

## र्र्क्ष दोहा 🕸 👉 🐪

रिषभ प्रभु वनको गये, जगत सुधारन काज।
भरतादिक सो पुत्रको, बांट दिया सब राज॥
पुत्र तुन सबही जी, मगन होय रहे धन में।
मेरा रिषभ गया, क्यों वनमें॥१॥

# **अ**वण 🕞

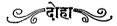
श्रावण महीना जी रिमिक्तम मेहला वरसे, मेरा पुत्र विना जी तरसे। भरतार्दिकजी सो पुत्रन के डरसे, मेरा नंद निकल गया घरसे॥



नगर अयोध्या यूं भुरे, कहां गये महाराज। देतउलंभा भरत को, मेरा पुत्र मिलावो आज॥ अजीतो मेरे सुत विनाजी, प्राण निकलसी छिनमें। मेरा रिपम गया, क्यों वनमें॥ २॥

#### **\* भादों** \*

भादों महीनाजी तज धन दौलत माया, अजी तो वो गये अकेली काया। भरतादिकजी तो मन में हरपाया, राजये विना कमाया पाया॥



नित नव नाटक होत हैं, कर रहें भोग विलास । सब मायाये रिषम की; वो छोड़ गया वनवास ॥ हेजी 'जगतारन जी, दुंखी होयगा तन में ।' मेरा रिषम गया क्यों वनमे ॥ ३ ॥

#### ्र ॐुआसोज ॐ

श्रासौज महीना जी सूरत की छवि लागी, 'पुत्र तो होय गये वैरागी। धन के लोभी जी उससे भये नीरागी, कभी खबर न ले वड भागी॥

## *्रि* दोहा

भरत कहे सुन मातजी, मत कर विथा विलाप। तीन लोक तारन तरन, आवेंगे प्रभु आप॥ इन्द्र पद सेवेंजी, नहीं रहें विघन में। मेरा रिषभ गया, क्यों वनमें॥ ४॥

### 🎇 कार्तिक 🎇

़ कार्तिक महीना जी कव वो रिषम घर श्रावे सोहे सूरत श्रान वतावे । नहीं कागजजी सुभ को पुत्र पठावे, यूं मेरा जीव वहुत दुख पावे ।

## 🏥 दोहा 🚉

भुरती निश दिन पुत्र को, रोरो खोई आंख उड़कर मिलती रिवभसे, जो देत विधाता पांख। मोर पपैया जी मगन जो रहते घन में मेरा रिवभ गया, क्यों वनमें ॥ ५ ॥

#### <sup>भ</sup>्रेडी मिगसर क्रिटे

ं मिगसर महीना जी' भरत वाहुवल भाई, श्रापस में करें लड़ाई। भरत यूं कहता जी मानो मेरी दुहाई, सब सेना चढ़ कर श्राई॥

#### **↔**ञ्ज दोहा 👺 🗲

वारा वरस लड़ते हुवे, इन्द्र रहे समकाय। चक्रवृति चिन्ता गहै, भये चन्द्रजसराय॥ जीत कारण जी, खड़े वहु वल रन में। मेरा रिषभ गया, क्यों वनमें॥ ६॥

## क्षु पोस 🎇

ं पोस का महीना जी पड़े ठंड का पाला, रुत ग्राया कठिन सियाला । कहां वह होगा रिपस जगत प्रतिपाला, में रटू रिपम की माला ॥

#### **्र्ञ दोहा** 😝

क्या कोई पर्वत की ओटमें, होगा मेरा नन्द। ठंड ताप की विपति से, सहे बहुत दुख वृन्द॥ भरत मेरे सुतका जी, नहीं फिकर तेरे मन में। मेरा रिषम गया, क्यों वन में॥ ७॥

#### ्रुञ्ञ माघ ध्रुर्ञ

ंमाघ का महीना जी किसे कहूं दुख मेरा, सब पुत्र विना ऋंधेरा। पुत्र घर आवो जी मैं देखुं मुख तेरा, कोई देवे रिपभ का वेरा॥

कि दोहां क्ष

इन्द्रादिक जाको नमें, रहे सदा कर जोड़ । राज रमन की संपदा, वो गया छिनक में छोड़ ॥ ऐसा निरमोही जी, पटका विरह दहन में । मेरा रिपम गया क्यो वनमें ॥ = ॥

### **संहि फागुण हिं**भ

फाग्रेण महीना जी नीर नयन में भरती, मैं सूने मन में फिरती। भरत यूं कहता जी सोच फिकर क्यों करती, रहे निश दिन मुक्तते लडती॥

#### **म**∰ दोहा ₹∰#

भरत विविध तर भांति से, कहता वात वनाय। वन पालक उद्यान के, देई वधाई त्र्राय॥ प्रभु पधारा जी, सेवत है मुनी जन में।

## 🏭 चेत 🏽

चैतका महीना जी हय गज स्थ सव त्यारी; सिएगारी सेना भारी। भरत कर जोड़ो जी मरुदेवी मनोहारी, चलो देखो पुत्र सुखकारी॥

## श्च दोहा 🍪

इन्द्र ध्वजा त्रागे यले, भामंडल रहें लार। चौसठ चवंर सुरपति करें,धुंधवी गगन मकारा ऐ सुत तेरा जी, विलसे सुख सूरी गन में। मेरा रिषम गया, क्यों वन में॥ १०॥

## 🎇 बेशाल 🎇 -

वैसाख महीना जी मरु देवी मन हरषे, जब रिपम प्रभु मुख निरखे। नैन पट उचाड़े जी बीत राग पद सरखे, चढ़े शुकूल ध्यान कूं परखे॥

# क्षी दोहा 🛞

गज उपर मुक्ति गई, श्रीमरुदेवी मात। पहिले शिवजननी दिया, ऐसे रिपम सुजात॥ जग सुल कारनजी, विचरे प्रभु मगनमें। मेरा रिपम गया, क्यों वनमें॥ ११॥

#### 🎇 जेठ 🛞

जेठ का महींना जी रुत गरमी की आई, मैं रिपम चरण जव जाई। दरश नित तेरा जी मुफ्त कूं है सुखदाई, सेवा प्रेम सदा मन भाई॥

### 🍔 दोहा 🎇

धर्म शील आधार से, कुशल सदा आनर्द । रिद्धसार जिन नाम से, रहे दुरती दुख दन्द ॥ हेजी मन सुध करजी, राखो जिन चरनन में। मेरा रिपभ गया, क्यों वनमे ॥ १२॥





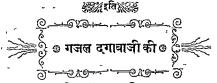
आदत तेरी गई विगड़, इस कोधके परताप से । श्रजीजों को द्वरा लगे, इस कोध के पर-ताप से ॥ टेर ॥ दुरमन से बढ़ कर है यही, मोहव्वत तुड़ावे मिनिट में । सर्व मुक्राफिक डरे तुमसे, कोध के परताप से ॥ १ ॥ सलवट पड़े मुंह पर तुरंत कम्पे मानिन्द जिन्दके। चश्म भी कैसे वने. इस क्रोध के परताप से ॥ २ ॥ जहर या फांसीको खा, पाणी में पड कई मर गये। वनत कर गये तर्क कई, इस क्रोध के परताप से ॥ ३॥ बाल बच्चो को भी माता क्रोध के वश फैंकदे । कुछ सूभता उसमें नहीं, इस कोध के परताप से ॥ २ ॥ चंडरद आचार्यकी, मिसाल

पर करिये निगाह। सर्प चंडकोसा हुवा इस कोध के परताप से ॥ ५ ॥ दिल भी कांबू नहीं रहे नुकसान कर रोता वही। धर्म कर्म भी नही गिने, इस कोध के परताप से ॥ ६ ॥ खुद जले परको जलावे विवेक की हानी करे। सूख जावे खून उसका, क्रोध के परताप से ॥ ७ ॥ जनके **बिये हॅसना बुरा, चिराग को** जैसे हवा। ज्यों इन्सान के हकमें समफ, इस क्रोध के परताप से ॥ 🗷 ॥ श्रौतानका फरजन्द यह श्रौर जाहिलो का दोस्त है। वदकार का चाचा लगे, इस क्रोध के परताप से ॥ ६ ॥ इवादत फाका कसी, सब लाक में देवे मिला। दोजल का मुंह देखेगा, इस क्रोध के परताप से॥ १०॥ चएडाल से वदतर यही, गुस्सा वडा हराम है। कहे चौथ-मल कर हो भला, इस क्रोध के परताप से ॥ ११ ॥

३३ - व्याप्त स्ट्रिक स्ट्रिक

सदा यहां रहना नहीं तूं, मान करना छोड दे । शहनशाह भी नहीं रहे तूं मान करना छोडदे ॥ टेर ॥ जैसे खिले हैं फूल गुल्शन में, अजीजों देखलो । त्र्राखिर तो वह क्रम्हलायगा, तूं मान करना छोडदे ॥ १ ॥ नूर से वे पूर थे, लाखों उठाते हुक्म को । सो खाक में वे मिल गये, तूं मान करना छोडदे ॥ २ ॥ परशु ने चत्री हने, शम्भूम ने मारा उसे । शम्भूम भी यहां नही रहा, तुं मान करना छोडदे ॥ ३ ॥ कंस जरा-सिंध को, श्रीकृष्ण ने मारा सही। फिर जर्ट, ने उनको हना, तूं मान,करना छोडदे ॥ ४ ।। रावण से इन्दर द्वा, लच्मण ने रावण को हना। न वह रहा न वह नहा, तूं मान करना

छोडदे ॥५॥ रव्यका हुक्म माना नहीं, अजाजिल काफिर वन गया। शैतान सव उसको कहे, तूं मान करना छोडदे॥ ६॥ गुरू के परसाद से कहे चौथमल प्यारे सुनो। आजिजी सव में बडी, तूं मान करना छोडदे॥ ७॥



जीना तुभे यहां च्यार दिन तूं दगा करना छोडदे। पाक रख दिल को सदा तूं दगा करना छोडदे॥ टेर ॥ दगा कहो या कपट जाल फरेव या तिरघट कहो। चीता चोर कवानवत्, तूं दगा करना छोडदे॥ १॥ चलते उठते देखते, बोलते हॅसते दगा। तोलने और नापने में, दगा करना छोडदे॥ २॥ माता कहीं बहनें कही, पर नार को छलता फिरे। क्यों जाल कर

जाहिल वने, तूं दगा करना छोडदे ॥ ३ ॥ मर्द की श्रीरत वने, श्रीरत का ना पुरुष हो। लख चोरासी योनि भुगते, दगा करना छोडदे ॥ ४॥ दगा से आ पोतना ने, ऋष्ण को लिया गोद में। नतीजा उसको मिला, तूं दगा करना छोडदे ॥ ५ ॥ कौरवों ने पांडवों से, दगा कर जूवा रमी । हार कौरवों की हुई, तूं दगा करना छोडदे ॥ ६ ॥ क्ररान पुरान में है मना, कानून में ज़िखी सजा। महावीर का फरमान है, तुं दगा करना छोडदे ॥ ७ ॥ शिकारी करके दगा, जीवों की हिंसा वह करे। मंजार श्रौर बुग कपट से हो, दगा करना छोडदे ॥ = ॥ इजत में ज्याता फरक, भरोसा कोई नहीं गिने। मित्रता भी टूट जाती, दगा करना छोडदे ॥६॥ क्या लाया लेजायगा, त् गौर कर इस पर जरा। चौथमल कहे सरल हो, तूं दगा करना छोडरे ॥ १० ॥ 🛮 अहिद्द

सवर नर को आती नहीं, इस लोभ के परताप से । लाखों मनुष्य मारे गये, इस लोभ के परताप से ॥ टेर ॥ पाप मा वालिद वडा. श्रीर ज़ल्म का सरताज है। वकील दोजख का वना. इस लोभ के परताप से ॥१॥ अगर शहनशाह वने, सर्व मुल्क ताबे में रहे। तो भी **ख्त्राहिश नहीं मिटे, इस लोभ के परताप से** ॥ २ ॥ जाल में पची पड़े, श्रौर मच्छी काटे से मरे। चोर जावे जेल भे, इस लोभ के परताप से ॥ ३ ॥ ख्वाव में देखा न उसकी. रोगी क्यो नहीं नीच हो। गुलामी उस की करे, इस लोभ

के परताप से ॥ ४ ॥ काका भतीजा भाई माई, वालिद या बेटा सज्जन । वीच कोर्ट के लड़े, इस लोभ के परताप से ॥ ५ ॥ शम्भूम चक्रवर्ती राजा, सेठ सागर की सुनो। दरियाव में दोनों मरे, इस लोभ के परताप से ॥ ६॥ जहां के कुल माल का, मालिक बने तो कुछ नहीं। प्यारी तज परदेश जा इस लोभ के परताप से ॥ ७ ॥ बाल वचे वेच दे, दुख दुर्गुणों की 🕆 खान है। सम्यक्त्र भी रहती नहीं, इस लोभ के परताप से ॥ = ॥ कहे चौथमल सत्युरू वचन, संतोष इसकी है द्वा। श्रीर नसीहत नही लगे, इस लोभ के परताप से ॥-६॥



जिस्ते शिक्षा के जिस्से कि जिस्से कि

प्रणत रहें अमराधि पति, सुरवर सेवें कोड़ । ता थी जिनवर वीरके, पद वंदोंकर जोड़॥ भातुरता दुख हू पड़े, शत्रु सङ्घटी पाय । राज द्वार मसाने में, साथ रहे सो भाय ॥ ज्ञान ग्रिमंत वैराख थी, दिचा लेवे जो कोय। दोपार जैन धर्म ने, तरे ते तारण होय ॥ साक्य भाषा बोले नहीं, जेह थी लागे पाय । त्रादेश उपदेश जाएया विना, करवो नहीं आलाप ॥ नारि होय चित्रामनी, नहीं रहें मुनिसय । दश्वैकालिक ऋष्टमें, उदर वीलाडी न्याय ॥ पासत्या कुट्रश्नी, कुलिगी अष्टाचार । गुरुजी-जागो बंनन करे, रुते अर्नत संसार ॥-

बड़े वचन पलटें नहीं, कहि निरवाहें धीर । कियो विभीषन लङ्क पति, पाय विजय रघुवीर ॥ शीलवन्त सबसे वडा, सब रतनों की खानि । तीन लोक की सम्प्रदा, रही शील में आनि ॥ ज्ञानी ध्यानी संयमी, दाता सुर अनेक। जपीया तपीया बहुत हैं, शीलवन्त कोई एक ॥ रवास रवास पे नाम भज, रवास न वृथा खोय। ना जाने इस श्वास का, श्रावन होय न होय ॥ धन जोवन यों जायगा, जा विधि उद्धत कपूर। नारायगा गोपाल भज, क्यों चाटे जग धर ॥ कारज अंच्छो अरु बुरो, कीजे वहुत विचार। विना विचारे करत ही, होत रार ग्रह हार ॥ जाको राखे सांड्यां, मारि सके नहिं कोय । वाल नं बंका कर सके, जो जग वैरी होय'॥ जैसी हो होतव्यता, तैसी ऊपजे बुद्ध । होमहार हृदय वसें, विसर जाय सब सुंद्ध ॥ अमृत भरे तन मन वचन<sub>-</sub>निशदिन जग उपकार ।~

पर गुण मानत मेरु सम, विरले जन संसार ॥ सब सुखं है सन्तोष में, धरिये मत सन्तोष । नेक न दुर्वल होते हैं, सर्प पवन के पोप ॥ शिव पदेवी तुम नाम में, फूल वीच ज्यों गन्ध । । पद पङ्कज के दरस सुँ सिथल होत सब वंध ॥ या संसार असार में, अभलभन डिरड एक ।

ंकोधं मार्न मायां करी; लोम लग्यो महिलार । वीतराग वाणी विना, किम पामे भव पार ॥ ं सजन हीरासें अधिक, मूल न जाको होत। कहूं परायो होत नहीं, दुःख में होत नुयोत ॥ सजन सुं अंतर नहीं, राखे कोई सुजान । ा सजन सें सुख होत है, यह निश्चय मन मान ॥ स्जन जगमें वहु नहीं, विरलो कहूं दिखात। तिहि पिछान् कीजें सुखद, जातें सब दु.ख जात ॥ सजान पर उपकार करि, लेत न कछ इह दाम । दित सदा जो चाहिये, समय सुं श्रावत काम ॥

सजन सम जगमें नहीं, अवर स को**इ** पुमान। ष्ट्राप बहुत दुःख देखिके, देत् और सु**ख जान** ॥ सज्जन् स्वभाव देखिकें, आप हुता समः होउ। सजनता सबतें अधिक, या सम और न कोउना सज्जन नाम धरायकें, भटकत अगुमें और। पै लुझन युत देखिके, संग कीजियें ठीर ॥ 👵 कौन काल को मिश्र है, देश पुरच क्या आए। को मैं मेरी शुक्ति क्या, नित्र इठ नर चित्र प्याय। पंडित पर ऊपदेश में, जगमें होत, अनेक 🏨 😘 चले आप सतमार्ग में सो लाखन में एक ॥ 🕆 नांहि देव पाखाणमें, दासमृतिका माहिं। 🐤 देव भाव मांही वसे, भाव मूल सब माहि ॥ 🛷 ृज्मा तुल्य कोई तप् नहीं, सुल सन्तोप समान। -नर्हि तृष्णाःसम् ब्यापि हुः; धर्म दयाःसम **त्रान्**॥ भगिनी सुतः अधिकारमें, कवहुं न दीजे, कामः। क्छु दिन बीते बादही, हीय महारिषु वाम ॥ 😙 उसज्यो धन अन्याय करि, दशहि वर्ष नहशायः।

सविहं सोखवें वर्ष हों, मूल सहित विनसाय।। किया में हैं छुश्ल तर, पाने कला सुजात । । द्रव्य सुभाषित कोहूं पूनि, संग्रत करि पहिचान ॥ सोरठ सोवान संबरेया, चट्या नगढ़ गिरनार । गङ्गाःन नाहाया गोमती, ग्यो जनारो हार ॥ सोरठ राग सुहामणी, मुखे न मेली जाय । ज्युं ज्युं रात गलन्तडी, त्युं युं मिठी थाय ॥ मुर्खता के दकन को, रच्यो विधाता मीन। .ज्ञानी सभा महॅ ग्रामरण, त्रव्रहि गुणको भौन॥ विद्या दान न ज्ञान तप, शील धर्म गुण हीन। विचरहिं ते नर रूप पशु, भुमि भार अति दीन ॥ जहां दया तहं धर्म है, ज्यां सोभ तहां पाप। जहां कोध तहं काल है, जहां जमा तहं आए।। जिवड़ा, जिनवर पुजीये, तार्से सम्पति होय । ्राजा नमें प्रजा नमें, वाल न वांका होय ॥ प्रभु को नाम अमोज हैं; जामे लगतः न मोल । नका बहोत दोदा नहीं, भर भर के मन सोल ।।

! ए जीव भूला फिरत है, समता के कल्लोल । 🏄 अश्वसेन के लाडलें, श्री पारस मुख से बोल 🗓 ा सुख ऊपना दुख गल गए, निकलङ्क भेये निखाण घर घरमें आनन्द भए, जब प्रगटी राग कल्यार्ण। नीकी मुरत पासकी, मो मन रही समाय एक जैसे मेंहदी पातकी, लाली लखीयन जाय**ा** 🧸 सांच,वरोवर तप नहीं, भुठ वरोवर पाप 🏳 🔄 जाके हृदय सांच है, ताके हृदय आप ॥ 🗽 । भुठ वात नहीं वोलीये, जब लगी पार वसाय। **अहो कवीरा, सांच**्राहु आवागमन नसाय ॥ कुटिल कर लोभी जु नर, करें न संगति ताहि।

क्टिल कूर लोभी जु नर, करें न संगति ताहि। च्छिष वशिष्ठ धेनु हरी, विश्वामित्र जु चाहि॥ विरले नर पंडित ग्रंनी, विरले बुफनहार।

दुख खराडन विरत्ने पुरप, ते उत्तम संसार ॥ सव वन भ्रामोदित करे, त्यों सपूत ग्रण रास ॥

सव वन भ्रामादित कर, त्या सपूत गुण रास । । नहीं नीचो पाताल तल, ऊंचो मेरु लिगार । । झुख में स्मरण सव करें, दुखमें करे न कोय ।

जो सुखमें समुरण करे तो, दुखः काहे को होय। 🕩 भावैःजावो बादरी, भावैःजावहु गर्या । 🗁 🕬 कहैं कवीर सुनो भाई साधी, सबतें बड़ी द्या॥ **परमें भुखा पड़े रहे, दस फाके हो जाय**ों जेवर तुलसी भैया वर्त्धुके, कबहु न मांगन जाय ॥ तीत लोक के पति प्रभु, परमात्म परमेस । 🍈 🕫 मन वच तन ते नमत हूं मेटो कठिन कलेस ॥ शुभ कर्मन के ऊदय में, यह तिय चित सब ठौर। अस्त<sup>्</sup>भये तीनों <sup>न</sup>नहीं, ज्यों मुक्ता विन<sup>्</sup>डोर ॥ • जो जाके मन भावतो, ताको तासे काम । 🙃 कमल न चाहत चांदनी, विकसते परसत् धाम ॥ सुत बोही पितु भक्तं जो, जो पाले पितु सोय । मित्र वही विश्वास जिंह नारी सो सुख होया। मुर्ख नर से`दूर तुम, सदा ≀रहो` मतिमानी ं∾ विन देखे कटक सरिस, वहे हृदय कु वानु ना पांच वर्ष सुत लाड करे, दशं लीे ताड़न देहु । ु वर्ष सोलवें लागते, कर सुत्र मित्र हु सने ॥ 🤫

रुपाभयो योवन भयो, कुर्लहु में अनुकृत्वी 🔠

विन विद्या सोमे नहीं, गर्न्य हीने ज्यों कूंबा। 🕉 पर निन्दां विन दुष्ट नर, कवेंहूं नहिं सुख पायो। त्यागी काक जिमि सर्व एत, विद्या जित सुहायं # तन को योगी सब करें, मन की बिरला कीमें 1 सहजे सब सिधि पहचे, जो मर्न योगी होय ॥ ह कहा भरोसो देह को, विनसी जाय खिन सांहि रवांस २ सुमिरन करो, झौर ज़तन कंठु नाहिं 🕸 सजन जिल कवह न घरत, दुर्जन जन के बोल। पाहन मारे आमको, तक फंब देत अमोल ॥ करम तरम नारी नृपति, नर नीचो हथिग्रार। तलसी परखत रहव नित, इनहि न पलंटत बार गा सज़न सुणीयो कान दे, यह आश्रम के जीत्र म नीवी नज्जाने जो पुरुष्त, करे काम वह नीच ॥ विद्यावन्त सपूत वह, पुत्र एकही होत । 🐃 कुल भासत नर श्रेष्ट से, ज्यों शशि निशा बदोत। शुभ तस्त्रर क्यो एकही<sub>ं</sub> फुल्बो फल्बो सुवास । थापारी ऊद्यम करे, गहरो दिध नहीं धार ॥ वनमें सुखसे हरिए। जिमि, तृर्ण भोजन भलजान देहु हेमें यह दीन वच, भाखन नहिं मन त्रान ॥ मुर्ख शिष्य उपदेश करि, दारा दुष्ट वसाय । वैरी को विश्वास करि, पंडित हूं दुख पाय ॥ भयं लजा ऋरु लोक गतिः चतुराई दातार । जिसमें नहीं है पांच गुर्गा, संग न कीजे यार ॥ े काम भेज चाकर परंख, बन्धु दुख मे काम। मित्र परख आपद पड़े, वे भव छीन लख वाम ॥ सींग नखनके पशु नदी, शास्त्र हाथ जिही होय। नारी जन अरु राज कुल, मत विश्वास हुं कोय ॥ इस चौसर चेता नहीं, पशु ज्यो पाली देहें। राम नाम जाना नहीं, अन्त परी मुख खेह ॥ , मांगन मरण समान है, मत कोई मांगो भीख । मांगन ते मरना भला, यह संतग्रह की सीखँ॥ ज्यों नयन में पूतली, त्यो खालिक घट माहि। मूर्ख नर जाने नहीं, बाहर ढूंढन जाहि॥

कस्तूरि कुएडल वसै, मृग ढूंढ़े वन मांहि । 😁 ऐसे घट घट ब्रह्म है, दुनिया जाने नांहिं ॥ 🖰 चतुराई चुल्हे परी, यम गहि ज्ञानहि खाय । 😘 तलसी प्रेम न राम वद, सब जर मूल नशाय ॥ ज्ञान घटावै मान पद, ज्ञानहि देय बढ़ाय । 🖖 रहिस मुक्ति पावै यती, कामी रहत लपटाय ॥ पतित्रता को सुख घना, जाके पति है एक । मन मैलो व्यभिचारिगी, जाके खसम अनेक ॥ पतिव्रता पतिको भुजै, और न अन्य सुहाय । 🕠 सिंह-वर्चा जो लंघना, तो भी घाम न खाय ॥ तव लगि हमतें सब बड़े, जब लग हैं कुछ चाह । चाह रहित कहको ऋधिक, पाय पर्म पद थाई ॥ गये पलट आवे नहीं, सो कर मन पहचान । त्राज जोई सोई कालहि है, तुज़सी भर्म न मान्॥ कविरा जो दिन आज है, सो दिन नांही काल। चेत सके तो चेतिये, मीच परी है ख्याल ॥ मेरा संगी कोई नहीं, सबै स्वारथी लोय।

सुन परतीति नं ऊपजे, जीव विश्वास न होय ॥ कविरा ऐसा संसार है, जैसा सैमल फूल। दिन दश के व्योहार में, मूठें रंग न मूल ॥ बिरह्य फ़र्लें न आप को, नदी न अचने नीर। परोपकार के कारणे, सन्तन धरो शरीर ॥ जाके ऊर वर वासना, भई भास कछ आन। जुलसी ताहि विडम्बना, केहि विधि कथहि प्रमान॥ बड़े विवेकी तजत है, सम्पति सुत पितु मात्। कन्थाः श्रीर कोपीन हुं , हमसे तजो न जात ॥ समदृष्टि तव जानिये, शीतन समता होय । सव जीवन की ग्रातमा, लखे एकसी सोय ॥ समदृष्टि सतगुरु किया, भरम किया सब दूर । दुजा कोई दीखे नहीं, राम रहा भरपूर ॥ पानी केरा बुदबुदा, अस मानुप की ज़ात । देखते ही छीप जायगा, ज्यों तारा प्रभात ॥ ्रकविरा पानी होजका, देखत गया विलाय 👝 ऐसे जिवरा जायगा, दिन दम डीली साय॥-

सातों शब्दज वाजते, घर २ होते राग । ते मन्दिर ख़ाली परे, बैठन लागे कार्ग ॥ क परदा रहती पद्मनी, करती कुलकी कान । छड़ी जु पहुंची कालकी, डेरा हुवा मैदान ॥ साथी हमरे चली गये, हम भी चालनहार । कागद में वाक़ी रही, तातें लागी वार 🕦 ऊंचा महल चिनाइया, सुवरन कली बुलाय ते मन्दिर खाली परे, रहे मसाना जाय ॥ क्षुलमल खासा पहरते, खाते नागर पान । टेढे होकर चालते, करते बहुत ग्रमान ॥ 🕜 महलन मांही पोढते, अतर अंग लगाय । ते सुपने दीसे नहीं, देखत गये विलाय ॥ कविरा सुपने रैन को, उघरि श्राये नैन । जीव परा वहु लुट में, जागूं तो लेन न देन

यन तन कांचा कुम्भ है, मोंहि किया रहवा सौनिर्छनियनसे अधिक, एक पुत्र सु विचा एक चंद्र तमको हरे, तारा नहीं हजार ॥ कविरा नैन निहारिया, नहीं पत्तक की आस ॥ तुलसी जग में आइके, कर लीजे दो काम । देवें,को टुकड़ा भलो, लेवे को हरि नामरें॥के प्रेम २ सब कोई कहे, प्रेम न चीन्हे कोय। 🗸 आठ पहर भीना रहे, प्रेम कहावे सोय **॥** लौ सागी<sup>,</sup>जवं जानीये, छुटि न कवहू<sup>\*</sup>, जाय । जीवन लौ लागी रहे; मुवा माहि समाय,॥ 🕡 भन पची तब लगि ऊड़े, विषय वासर्ना मांहिं। हान वाज की भप्रद में, जब लगि श्राया नांहि॥ मनके बहुते रङ्ग हैं,∕छिन⁻२ मध्ये होय । एक रहूँ में जो रहे, ऐसा, विरला कोय ॥ जेती लहर समुद्र की, तेती मन की दौरि। सहजे हीरा ऊपजे, जो मन आवे ठौरि॥ मन क्रे मते न चालिये, मन का मता अनेक।। जो मन पर असवार है, ते साधू कोई एक ॥ः गोधन गजधन वाजिधन, ऋौर रतनधन खानि। जब ऋावे सन्तोप धन, सब धन धूरि समान ॥

ज्ञान गरींबी ग्रुण धर्म, नर्म बचन निरमीप 🖂 तुलसी क्वड़ ने छाडिये, शील संत्यः सन्तोष॥ नारि निरिष न देखिये, निरिख न कीजें दौरी / देखत ही तें विष चढें, मन आवे कछु और 🏴 सर्व सोना की सुन्दरी, आवे बास सुवास 1 😘 जो जननी हो ञ्रापनी, तौहु न बैंटे पास ॥ कामिनी काली नागिनी, तीन लोक मंभारि है नाम-सनेही ऊबरा, विषिया खारे भारि॥ 🐠 .त्र्यविनाशी विचधार तिन, कुल कंचन ऋरु नार। जो कोई इन ते बच चले, सोई उत्तरे पार ॥ काम कोध मद लोभ की, जब लग घट में खाति। कहा मुर्ख कहां पंडिता, दोनों एक समान ॥३० रामहिं थोरा जानिके, दुनियां आगे दीन । 🧦 जीवन को राजा कहे, माया के ऋाधींन ॥ 🍻 🖰 तुहो रीभत वयों नहीं, कहा रिभावत और । तेरेही बानन्दः सेऽचिन्तामणि सव ठौर ॥ 😘 'बांघे सोहीं भोगवे, कर्म शुभा शुभ भाव 🗠

फल निर्जरा होत है, यह संमाध चित्र चात्र ॥ पुर्व हीए को न मीले, भली वस्तु का जोग्ः। जब द्रान्त पकान लगे, तब काग कंठ होय रोग ॥ चिड़ी कमेड़ी कागला, रात चुगगा नहीं ,जाय। नर देह धारी मानवी, रात पड्या क्यों खाय ॥ भांधो जीमण रातरो, करे अधर्मी जीव । जीतव ऋाणे छो कार, दे नरकारी नीव ॥ पाखंडी पूजा करे, पंडित नहीं पहचान । गोरस तो घर २ विके, दारु विके दुकान ॥ गुरु लोभी चेला लालची, दोनुं खेले दाव। ्दोनुं डूबे बापड़े, बैठ परथर की नाय ॥ , , , एक एक के पीछे चले, रस्ता न कोई बूभता। अन्धे फसे सब घोर में,कहां तक पुकारे सूजता॥ दीवी पण जागी नहीं, रीते चूले फ्ंक। गुरु विचारा क्या करें, चेले,माहि चूके ॥ दिधा गाली एक है, पल्रट्या गाल अनेक । जो गाली देवे नहीं, तो रहे एक की एक ॥

सीधी साहाही मोच दे, उलटी दुर्गत देत । अचर तीन को ओलखो, दोय लघु गुरू एक॥ जैसी जिस पास वस्त है, वैसी दे दिखलाय 🞼 वांका बुरा न मानीय, वो लेन कहां से जायना गाली खमे में गुण घणा, गाली दिये में दोष-। **ऊसको मिलेगी नार्रकी, उसको मिलेगी मोज** ॥ बुरा २ सबको कहुं, बुरा न दीसे कोय । 🕡 – जो घर सोधं आपणो; तो मुक्त से बुरा न कोय ॥ ञ्रापा वहां ही ञ्रापदा, चिन्ता जहां ही सोग 🖰 ज्ञान विना यह ने मिटे, जालिम मोटो रोग ॥ वचन रत्न मुख कोटड़ीं, होट कपाट जड़ाय। पेरायत वतीस है, रखे परवश पड़ जाय ॥ इर्या भाषा एषणा, स्रोलखजो स्राचार । ग्रुणवत साध् देखकर, बंदो वारंवार 🗓 🗸 विरले नर परिडत गुनी, विरले बुक्तनहार ।= दुख खराडन विरत्ने पुरुष, ते ऊतम संसार ॥ तुलसीं<sup>(</sup>साथी विपत के, विद्या विनय विवेक ।

साहस सुकृत सत्यवत, राम भरोसे एक ॥ ं नीच संग सम जानीवो, सुनि लखि तुलसीदास। ढील देत महि गिर परत, खैंचत चढत अकाश। एक घरी आधी घरी, आधी सो भी आध । कविरा संगति साधु की, कटे कोटि अपराध ॥ कविरा संगति साधु की, नित प्रति कीजे जाय'। दुर्मति दूर वहावसी, देसी सुमति वताय ॥ जडताई मित की हरत, पाप निवारत श्रंग। कीरति सत्य प्रसन्नता, देत सदा सत्संग ॥ ' सबसे ऊँचे सुकविजन, जानत रसको सोत । जिनके यशकी देह को, जरा मरण नहीं होत॥ स्वारथ के सब ही सगे; विन स्वारथ कोई नाहिं। सरस वृत्त पंत्ती वसे, निरस भये उडि जाहिं॥ विना कहेर्ह्र सत्यपुरुष, परकी पुरे आसी। कौन कहत हैं स्रंकों, घर घर करत प्रकाश ॥ विद्या मित्र विदेश में, घरमें नारि मित्र 🗀 रोगहिं श्रीवध मित्र हैं, मरे धर्म है मित्र ॥

जो पूरे एक वर्ष भर, मौनधार नित खातं। ़ अुग कोट़िन के सहत तक, स्वर्ग मांहिं पुजि जात ॥ लेन देन धन अन्नके, विद्या पहने माहिं। भोजन सभा विवाह में, तजे लाज सुख ताहिं॥ एक एक जल बूंद के, परत घटहु भरि जाय। सब विद्या धन धर्मको, कारण यही कहाय ॥ जो सवही को देत है, दाता कहिये सोय। जलथर वरसत समविषम, थल न विचारत कीय॥ कबिरा तृष्णा पापनि, तासों प्रोति न जोरि । - पैंड पैंड पाछे परे, लागे मोटी खोरि ॥ भले बुरे गुरु जन वचन, लोपत कबहुं न धीर। राज काज को छांडि के, चले विपिन रघुवीर ॥ मान धनी नर नीच पै, जाचे नाहीं जाय । कर्बहुं न मांगे स्वार पे, वरु भुखो मृगराय ॥ निवल जान कीजे नहीं, कवहुं वैर विषाद । जीते क्छु शोभा नहीं हारे निन्दावाद ॥ निन्दक एकड़ मति मिले, पापी मिले हजार।

<sup>्</sup>एक निन्दक के सीस पर, हजार पाप को भार॥ उत्तम पर कारज करे, अपनो काज विसार । पुरे अन्न जहान को, ता पति भिचा धार ॥ असृत भरे तनमन वचन, निशदिन जग उपकार। पर ग्रुण मानत मेरु सम, विरत्ने जन संसार ॥ स्त आज्ञाकारी जिनहिं, अनुगामिनि तिय जान। विभव् अलप संतोषतेहि, सुरपुर रहां पिछान॥ ते सुत जे पितु भक्तिरत, हित कारक पितु होय। जेहि विश्वास सोइ मित्रवर, सुख दायक तिय सोय कारज हनत परीच में, प्रिय वच मिलत विशेष। तेहि मित्रन कूं दूर तज, विष घट पय मुख पेष॥ नहि विश्वास कुमित्रकर, कीजिय मित्तहु कौन। कहिह मित्तं कहु कोपकरि, गोपहुं सब दुखं भौन।। कहा होय तेहि धेनु जो, दुध न गाभिन होय। कौन अर्थ वहि सुत भये, परिडत भक्त न जोय॥ भूपति औं परिष्डत वचन, अंगे कन्या को दान। एके एके बार ये, तीनो होतं समान ॥

भोजन विष है विनु पचे, शास्त्र विना अभ्यास। सभा गरल सम रङ्गहि, बृढहि तस्नि पास ॥ त्रालस तं विद्या नशें, धन त्रौरन के हाथ। . अल्प बीज से खत अरु, दल दलपति विनु साथ॥ सुनिके जानै धर्मको, सुनि दुर्वधि तजि देत । सुनके पावत ज्ञान हु, सुनै मोचपद लेत्॥ अर्थ नाश मन ताप अरु, दूर चरित घर मांहि। वंचनता अपमान विज, सुघर प्रकाशित नांहि ॥ दृष्टि शोधि पग धरिय मग, दीजिय जल पट शाधि। शास्त्र शोधि वोलिये वचन. करिय काज मन शोधि॥ दान शक्ति प्रिय बोलवो, धीरज उचित विचार । ये गुण सीखे ना मिले, स्वाभाविक हैं चार ॥ मूर्ज़ता ऋरू तरुणता, है दोउ दुख दाय। पर घर वसिवो कष्ट अति, नीति कहत अस गाय॥ चातुरता सुत कं सुपितु, सिख्वत वारहिवार । नितिवृत द्विधवंत को, पूजत सब संसार ॥ तात मात अरि तुल्य ते, सुत न पढावत नीच।

सभा मध्य शोभतनसो, जिमि वक हंसन वीच॥ पाप दृष्टि दुर्जन दुरा, चारी दुर्वस जोय । जेहिं नरसो मैत्री करत, अवस नष्ट सोइ होय॥ खलहु सर्प इन दहुनमें, भला सर्प खल नाहिं। सर्प दसत है कालमें, खलज़न पद्पदमाहिं॥ मर्यादा सागर तजै, प्रलय होनके काल। उत साधू छोडे नहीं, सदा आपनी चाल ॥ मूर्खको तजि दीजिये, प्रगट द्विपद पशु जान । वचन श्ल्यते वेधहीं, श्रंगहिं काट समान ॥ आपद हित धन राखिये, धनिहिं आपदा कौना। संचितह निश जात है, जो लुच्मी करू गौन ॥ जहां न ब्रादर जीविका, नहिं प्रिय वन्धु निवास। नहिं विद्या जेहि देश मे, वसहु न दिन इकवास॥ धनिक वेदवित्र भृप ऋरू, नदी वैद्य पुनि सोय । वसहु नाहिं इक दिवस तहें, जह यह पंचन होय॥ दान दच्छता लाज भय, यात्रा लोगन जान । पांच नहीं जह पिषिये, तहां न वसहु सुजान ॥

काज चलाए पर खचर, बन्धु परख दुख होय। मित्र परिलयतु विपति में, विभव विनाशित जोय। सत्य मधुर भांखे वचन, और चतुर शुचि होय पति प्यारी औं पतिवता, तिया जानिये सोय। दया रहित धर्महिं तजे, औ गुरू विद्या हीन। कांध मुखी तिय प्रीति वितु,वान्धव तजै प्रवीन हौं केहिको का शक्ति मम, कौन काल अरु देश लाभ खर्च को मित्रको, चिंता करे हमेश ॥ राजृतिया श्रौ गुरूतिया, मित्रतियाहु जान । निजमाता श्री सासु ये, पांची मातु समान ॥ पूजि जात है अमनसे, द्विज योगी औ भूप। भ्रमण किये नारी नसे, ऐसी नीति अनुप ॥ बृद्ध संमय जो मरू तिया,वन्धु हाथ धन जाय। पराधीन भोजन मिले, ऋहै तीन दुखदाय॥ ़ धर्म शील युगा नाहिं जेहि, नहिं विद्यातप दान। ्रेमनुज रूप भुवि भार ते, विचरत मृगकरि जान॥

*ૡઉજ્ઞી* 



- जवतें जन्म लेत, तवहि तें श्रायु घटे। माई तो कहत, मेरो बडो होत जात है ॥ श्राज और काल और दिन २ होत और। दौरचो २ फिरत, खेलत और खात है ॥ वालपन वीत्यो जंब यौवन लाग्यो हैं। सुन्दर कहत, ऐसे देखत ही बुक्तिगया। तेल घटि गये, जैसे दीपक बुभात है ॥ १ ॥ मीठी २ वात कही, तोस्युं लपटायगी। संकट पड़ेगा जब तेरी नहीं कोई तब; ं वक्त की वेला कोई काम नहीं आयगो ॥ े सुन्दर कहत तुं तो याही ते विचार देख ; तेरे यह किये हैं कर्म, तूं ही फल पायगो ॥ २ ॥



जैसे पंकज पत्र पर, जल चंचल ढरि जात । त्योही चंचल प्राण हु, तज जैहे निज गात॥ तिज जैहें निज गात, वात यह नीके जानत। तोहू छांडि विंगेक, नृपन की सेवा ठानत ॥ निज गुण करत वखाण, निलजता उघरी ऐसे । भुल गयी ज्ञत ज्ञान, मृह अज्ञानी जैसे ॥ १ ॥ दौलत पाय न कीजिये सपने में अभिमान। चञ्चज जल दिन चारको ठाऊँ न रहत निदान॥ ठाऊँ न रहत निदान, जियत जगमें यश लीजे। मीठे वचन सुनाय, विनय सबही की कीजे ॥ कह गिरधर कविराय, छो यह सब घट दौलत। पाहुन निशी दिन चारि, रहन मबही के दौलत ॥२॥

रहनो सदा इकन्त को, पुनि भजनो भगवन्त। कथन श्रवण श्रवण श्रव्हों ते को, यही मेतो है सन्त॥ यही मेतो हैं सन्त, तस्वको चितवन करनो। प्रत्यक ब्रह्म श्रभिन्न, सदा डर अन्तर धरनो॥ कह "गिरधर" कविराय, वचन दुर्जन को सहनो। तज के जन समुदाय, देश निर्जन में रहनो॥ ३॥

ब्रहता पाणी निर्मलां, पड़ा गन्ध सो होय । स्यों साधु रमता भलां, दाग न लागे कोय ॥ दाग,न लागे कोयं, जगत से रहे अलहदा । राग हे प युग प्रेत, न चित को करे विच्छेदा ॥ कह "गिरिधर" कविरायं, शीत उपणादिक सहता। होय न कह आसक्त, येथा गृहा जल वहतां ॥॥॥







गुरु विन ज्ञान नहिं, गुरु विन ध्यान नहिं; ग्ररु विन आतम विचार न लहुत है।। गुरु विन प्रेम नहिं, गुरु विन<sup>्</sup>नेम नहिं; गुरु विन शीलहु, संतोष न गहतु है ॥ ग्रुरु बिन प्यास नहिं, बुद्धिको प्रकाश नहिं; भ्रमहको नाश नहिं, संशय रहतु है ॥ गुरु विन वाट नहिं कौडी विन हाट नहिं; सुंदर प्रगट लोक, वेद यों कहतु है ॥ १ ॥ पढेके न बैठो पास, अच्चर न वांचि सके; बिनही पढ़ेते कैसे, आवत है फारसी ॥ जौहरीके मिले चिन, परिख न जाने कोई;

हांथ नग लिये रहें, संशय न टारसी॥ वैदहु न मिल्यो कोउ, वृटीको बताइ- देत: भेद बित पाये वाके, श्रीवध है चारसी ॥ सुन्दर कहत मुख, रंचहु न देख्यो जाइ; ः ग्रह विन ज्ञान जैसे, अँधेरेमें आरसी ॥ २॥ . वेर वेर कह्यो तोहिं, सावधान क्यूं न होइ; ममताकी मौत शिर, काहेको धरत है।। मेरो धन मेरो धाम, मेरे सुत मेरी वाम: ं मेरे पशु मेरो घाम, भूल्योही फिरतु है ॥ त तो भयो बाबरो, बिकाय गइ बुद्धि तेरी; ऐसो अन्ध कूप गेह, तामें तू परतु है ॥ ,, सुन्दर कहत तोहिं, नेकहू न त्रावे लाज, काजको विगारके, ऋकाज क्यो करतु है ॥ ३॥ मेरो देह मेरो गेह, मेरो परिवार सब; मेरो धन माल में तो, बहुविधि भारो हूं ॥ मेरे सब सेवक हुकुम, कोऊ मेटे नाहिं; मेरी युवतिको मती, ऋधिक पियारी हूं ॥

मेरो वंश ऊ'चो, मेरे वाप दादा ऐसे भये: करत वडाई में तो, जगत उजारो हुं॥ सुन्दर कहत मेरो मेरो, करि जानै शठः सोई नहिं जाने में तो, कालहीको चारो हुँ ॥४॥ 🕐 भूठो धन भूठो धाम, भूठो सुख भूठो काम; क्तूठी देह भूठो नाम, धरिके भुलायो है ॥ भूदो तात भूठो मात, भूदे सुत. दारा भात; भुठो हित मानि मानि, भूठो मान लायो है ॥ भुठो जैन भुठो दैन, भुठो सुख बोले बैन; ं कृदे कृदें करें फैन, कृदहीकूं घायो है।। मृठहीमें एतो भयो, मृठहीमें पचि गयाः सुंदर कहत साच, कबहूं न श्राया है।। ५॥ 一資源有所經





कौन तेरे मात तात कौन सुत दारा भ्रात, कौन तेरे न्याती मिले. सब ही स्वार्थी । अर्थके ख़टाउ हैं, जी धनके वटाऊ, होय तो वटाय लेवें, मिलके पनार्थी ॥ तेरी पति कौन वृजे, स्वार्थ के मांही पुजे, भव २ मांदी उलजे कोई न पर<sup>्</sup> मार्थी। चैतन्य विचार चित, एक लो है तही नित, उलट चलत ञ्रापो त्रापही त्रकार्थी ॥ १ ॥ ं पंतुमं घन घोर घीरे नभमें, पत्तमें रस क्रूप दिखा-वत है, पलमें धनवान अनाथ वने, पलमें सुख कर दुःख आवत है। पलमें जीना मरना पलमें, पलमें खेल रचावत है, पलकी पलमें पलकी पलमें, कुछसे कुछ रूप बनावत है ॥ २ ॥

वातिह से दशरथ मरे, अरु वातिह राम फिरे वन जाई । वातही से हरिचन्द्र सहे दुख़, वातिह राज्य दियो मुनिराई ॥ रे मन; वात विचारी सदा, बहु वातकी गात में राख सचाई। बात ठिकान नहीं जिनकी, तिन वाप ठिकान न जानेहु भाई॥ ३॥

छांडके संसार छार, छार से विहार करे,

साया को निवारी, फिर माया दिलधारी है, पिछ्जातो धोया कीच, फिर कीच वीच रहे, दोनो पंथ खोये, वात वर्णी सो विगाड़ी है, साधू कह-लाय, नारि निरखत लोभाय और कंचन की करें चहाय, प्रभुता पसारी है, लिनी है फकोरी, फिर अमीरी की आस करे, कायको धिकार, शिरकी पगड़ी उतारी है ॥ ४॥ पुत्र कलत्र सुमित्र चरित्र, धरा धन धाम है

वन्धनजीको । वारहिं वार विषे फल खात, अघात न जात सुधारस फीको ॥ आन अौसान तजो अभिमान, कही सुन नाम भजो सिय पीको । पाय परमपद हाथ सों जात, गई सो गई अब

राख रहीको ॥ ५ ॥

े पितु धीरज श्रो जननी जु, मन नियह श्रात सहोदर है। सुत सत्य दया भगीनी यहणी, शुभ शन्ति हू सेव में तत्पर है॥ सुख सेज सजी धरणी दिशी श्रम्बर, ज्ञान सुधा शुभ श्राहर है। जिव योगिनके जू कुटम्बिय हैं, कहूं मीत तिन्हें किन्ह को डर है॥ ६॥

माया जोरि जोरि, नर राखत जतन करि। कहत है एक दिन, मेरे काम आइ है। तोहि तो मरत कछ, वेर नहिं लागे शठ। देखत हिं देखत ववृला, सो विलाइ है।। धन तो धरयो ही रहे, चलत न कोड़ी गहै। रीते हाथन से जैसो आयो, तैसो जाइ है।। करिले सुछत, यह वेरिया न आवे फोरि। "सुन्टर" कहत, नर पुनि पछिताइ है।। ७॥

वैरी घर मांहि तेरे,जानत सनेही मेरे । दारा सुत वित्त तेरे, खोसि-खोंसि खांयंगे ॥ श्रोरहु कुटुम्बी लोग, लूटें चहु श्रोरहो ते । मीठी बात् कहि, तोसूं लपटायेंगे । सङ्घट परेगो नव, कोई नहीं तेरो तब। अन्तही कठिन, वाकी वेर उठि जायेंगे। "सुन्दर" कहत, तातें भूठो ही प्रपञ्च सव । स्वपनकी नाईं यह देखत विलायमें ॥¤॥ -घरी-घरी घटत, छीजत जात छिन-छिन। भीजत ही गरिजात, माटी को सो ढेल है। मुक्ति के द्वार आई, सावधान क्यूं न होई ॥ वेर-वेर चढत न, तिया को सो तेल हैं। करि ले सुक्रत, हरि भजले ऋखराड नर ॥ याही मे ऋन्तर पड़े, यामें ब्रह्ममेल है। मनुष्य-जनम यह,जीत भावै हार ऋव। "सुन्दर" कहत यामें जूञ्राको सो खेल हैं ॥<॥ करत-करत धन्ध, केंछु न जाने अन्ध्।

श्रावत निकट दिन, श्रागले चपाकदे ॥ जैसे घाज तीतर कुं, दावत है अचानक। जैसे वक .मछरी कुं, बीबत लपाकदे ॥ जैसे मिचिकाकी घात, मकरी करत आय। जैसे सांप मूसक कुं,

। मसत गपाक दे ॥ चेत रे अचेत नर, सुन्दर

संभार राम। ऐसे तोहिं काल आय, लेइगो टपाक दे॥ १०॥

मेरो देह, मेरो गेह, मेरो परिवार सव । मेरो

धन-माल, में तो वहुविधि भारो हूं॥ मेरे सब सेवक, हुकम कोउ मेटे नाहिं। मेरी युवतीको में तो अधिक पियारो हूं॥ मेरो वंश ऊंचो, मेरे वाप-दादा ऐसे भये। करत वडाई, में तों जगत-उजारो हूं॥ सुन्दर कहत मेरो मेरो करि जाने शठ। ऐसे नाहिं जाने, में तो कालहीं को चारो हूं॥ ११॥

्रवेत भये हैं ॥ तूं ममता अजहूं नहिं छांडत । मौतहु आई सन्देश दये है ॥ आजु कि काल चलें ऊठी मूर्ख। तेरेहि देखत केते गये है ॥ सुन्दर क्युं नहिं राम सॅभारत। या जगमें कह

सन्त सदा उपदेश वतावत । केश सर्वे शिर

कौन रहे हैं ॥ १२॥

मात पिता युवती सुत वान्धव । लागत है सब कुं श्रित प्यारो ॥ लोक कुटुम्ब खरो हित राखत होय नहीं हमते कहुं न्यारो ॥ देह स्नेह तहां लग जानहु। बोलत हे मुख शब्द ऊचारो ॥ सुन्दर चेतन शक्ति गई जव। वेगि कहें घर वार निकारो ॥१३।

रूप भलो तवही लग दिसत। जी लग बोलत चालत आगे॥ पिवत खात सुनै और देखत। सोई रहे उठिके पुनि जागे॥ मात पित भइया मिलि बैठत। प्यार करे युवती गल लागे॥ सुन्दर चेतन शक्ति गई जब। देखत ताहि सबै डर भागे॥ १४॥

कामिनी को अङ्ग अति, मिलन मह अशुद्ध। रोम २ मिलन, मिलन सब द्वार है। हाड मांस मिला मेद, चामसूं लपेट राखै ठौर २ रक्त के, भरेई भंडार है॥ मूबह पुरीष

आंत, एकमेक मिल रही। और ही ऊदर मांहि विविध विकार है॥ सुन्दर कहत, नारि नष्ट शिख निंचरूप । ताहि जो सरावे, सो तो बड़ोई गंवार है ॥ १५ ॥

काम ही न कोध जाके, लोभ ही न मोह ताके। मद ही न मत्सर, न कोज न निकारो है। दुख ही न सुख माने, पाप ही न पुराय जाने। हर्प न शोक आने, देह ही ते न्यारो है। निन्दा न प्रशंसा करे, राग ही न द्वेप धरै। खेन ही न देन जाके, कुछ न पसारो है। सु-न्दर कहत, ताकी अगम अगाध गति। ऐस कोऊ साधु, सो तोरामजी कुंध्यारो है।। १६॥

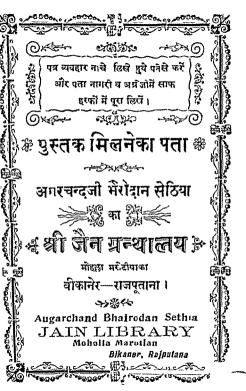
भूकि । श्री जय जिनेंद्राय नमः ॥ १९४० - १९४० व्यक्तिस्थ ।

' ञ्रादि नमुं च्रिषभादिको, द्वितीय नमुं ग्रुरुपाय, तृतीय शारदा मात को, स्मरण करुं हरखाय॥ १॥ श्राद्ध स्तय उपयोगीये, रच्यो भव्य सुखटाय। बहुसूत्रे संग्रह कीयो, पत्तपात तजि भाय ॥२॥ रवि शसि जवलों जगतमें, रहत सदा करि तेज,। तवलों जैन समाज नित,रखहं यंथपर हेज॥३॥ कालिकट से प्रसिद्ध करुं, पर निज हित काज। रुची सहित याको पढत, पावत सुखनो साज ॥१॥ अल्प वुद्धिमें वाल हूं, विद्धन् सुं अरदास। लिखा वही देखा यथा, मत कीजे मुज हास ॥५॥ 🖰 सूत्रार्थ जागुं नहीं, जिन वागी अनुसार । भूल चुक दृष्टि पड़े, लीजे आप सुधार ॥ ६ ॥ श्रोसवंस कल सेठीया, विक्रमपुर घर खास। पानमल नित वीनवे, पूरण करिय हुं आस ॥७॥ उगिणसेय ग्रणीयासिये, शुक्क पर्च नभमास। जैन धर्म प्रशाद करि, संग्रह कीयो उल्लास ॥=॥ वेर वेर विनती यही, रिखये यांपर ध्यान।" सफलात्मा मेरी तभी, समभूं मे बहुमान ॥ ६॥

६६ शुभं भवतुः रेङ्क

# ॥ अन्तिम मङ्गल श्लोक॥ शिवमस्तु सर्व जगतः परिहिता निरता भवंतु भुतगणाः दोष प्ररायान्त्र नाशं सर्वत्र सखी भवतु लोकः॥ ॥ इति श्रावक स्तवन सज्जाय सब्रह ब्रन्थ समाप्तम्॥ ॥ दोहा ॥ पिंगलगए। जाणु नहीं, अल्पमती अनुसार ; रची ऋर्पण करूं जेप्टने, पंडित लीजो सुधार। ॥ श्रीरस्तु ॥

शान्ति! शान्ति!! शान्ति !!! सेवंभंते सेवंभंते गौतम वोले सही. श्रीमहावीर के वचनामें कुछ सन्देह नहीं। जैसा ढिखा हुवा प्रन्थ, पुस्तक, पानेमें देख्या, वाच्या, तथा सज्जनसे धासा, सुख्या वैसा ही अल्प वृद्धिके अनुसार लिखा है, तत्व केवली गम्य, अक्षर, कानो, मात, अनुस्वार, हस्व, दीर्घ, पद आगी पिछो, ओछो अधिको, जिनवाणो विपरीत अशुद्ध पणे हिख्यो होय तथा कोई तरहकी छपाने में ज्ञानादिक की विराधना कीनी होय, जाणते अजाणते कोई दोप लायो होय तो मन व बन काया करी मिथ्या दृश्कृत देत हुँ n विनित ॥ भैरोदान तत्पुत्र पानमल सेठिया । ।विकस्तवन सजाय संग्रह प्रन्थ



प्रस्तक मिलने का प्रमान उद्देकण सोर्
पानमल उद्देकण सोर्
पि नं० १००० पुराना चिनावजार
पि पोस्ट वकस नं० २५५ कलकर
पारका पता—
"सेठिया" कलकत्ता।
"सेठिया" कलकत्ता।
"सेठिया" कलकत्ता।
"पेठिया" कलकत्ता। *02023333333333333333333333* Teller Address-Post Box 255 CALCUTTA Telegraphic Address-'SETHIA" CALCUTTA 06000666666666666666











विषय			्वच्छ ।
र्मगर्लाचरण	1		ર
दोहा	1	4	२
शातीनाथजीका छ द			३ से ८
त्रभाती राग शिखामण पद			९ से १०
उपदेशी पद			१० से ११
मन समजानेका पद	1		११ से १२
चित्त समाधिके दश बोल की समाय			१३ से १४
धर्म जहाज की समाय			१५
पाच इन्द्रीके गुण की लावणी		•	१६ से १७
दया की लावणी	3		१८ से २१
राजुलजी को नारह मासीयो	١		રર સ <u>ે</u> રદ

विषय	पृष्ठ
सातवार को स्तवन	२७ से २८
नव घाटीको स्तवन	२८ से ३०
पाचमी जीव उपदेशकी लावखी	३१ से ३२
शुद्धदेव खरूप स्तवन	३३
मुनी सिज्भाय	३४ से ३८
पुज्य श्री श्री १००८ श्रीलालजी महाराज को स्तवन	३८ से ३९
नेम राजुलकी लावणी	४० से ४१
सुमृती कुमतीकी लावग्णी	<b>કર સે ક</b> ર
मुल मन् भमराकी सकाय	<b>४४ से ४</b> ५
धी सीता सतीकी सभाय	४६ से ४०
श्राउदोकी सकाय	४८ से ४९
,उपदेशी समाय	४९ से ५०
,बुढेको <b>रा</b> स	५१ से ६८
चेतन चे तोरो की समाय	६९ से ७०
ृद दण मुनीकी समाय	७२ से ७२
समाय (रे जीव जिन घर्म कीजिये)	७३ से ७४
ृशालिभद्रजीकी समाय	७४ से ८०
चपदेशी स्तवन (मेरा पापी जीवडा )	८० से ८१
स्तवन (श्रावक ऐसारे )	८२ से ८३
कर्म छत्तीसी	८४ से ८९

विषय	ফুন্ত
पाप छत्तीसी	९० से ९४
<b>क्रकाबत्तीसी</b>	९५ से ९९
पाच त्रारेकी सभाय	१०० से १०१
उपदेशी लावग्री (वार २ में क्या तुज बोलु )	१०२ से १०३
उपदेशी लावणी (माल खरीदो मिले जो नफा )	१०४
लावर्णी	१०५ से १०६
'उपदेशी दाल	१०७
हितोपदेश सकाय	१०८ से १०५
स्त्री शिचा गजल	१०५ से ११०
गजल	१९१
हितोपदेश गजल	११२
मनकी गजल	११३ से ११४
उपदेशी गजल	११५ से १२०
परनारीकी गजल	१२० से,१२१
कुव्यसन की गजल	१२२ से १२३
रात्रि भोजन निपेधकी गजरा	१२३ से १२४
भजन	१२५ से १२६
जिन धर्म प्रशसा दोहा	१२७
शिचाके बोदे	१२८
चार जगह शिचा होनेक दोई	१२५

'उपदेशी। नोहा **फु**गडलिया मनहर छन्ड इन्द्रप छन्द द्धपय फवित्त सबैया उपदेशी दोहा

**ૄ**ૡ૦

१५६

१५७ से १५८





### मंगल-श्लोक ।

प्रर्हन्तो भगवंत इन्द्रमहिताः सिद्धाश्चसिद्धिस्थिताः प्राचार्या जिनशासनोन्नतिकरा पृड्या उपाध्यायकाः भी सिद्धान्त सुपाठका मुनिवरा रत्नत्रयाराधकाः चिते परमेष्टिनः प्रतिदिनं । कुर्वन्तु वो मंगत्नम् ॥

## ॥ दोहा ॥ प्रभुनामें सुख संपजे, ऋापट जावे दूर।

श्रप्टिसिद्धि नविनिधि मिले, कर्म्म हुवे चकचूर ॥१॥ श्रादिदेव श्ररिहंतजी, भयमंजन भगवंत ।

केवल कमला धारजे, पायो भव जल अंत ॥२॥ तास चरणमें शिरधरी, प्रणमुं परम उल्लास। गुरुगिरवा ज्ञान निधि, सफल करो मम आस॥३॥ श्रांति सुधारस जल भरा, कांती वपु ग्रणवान। श्रात्म ज्ञानकी ज्योतिसे, लगी तान गुलतान ॥४॥ ऐसा गुरुपद कमलमें, परिमल रहो पुराय। ज्ञान-सुवासकी गरजसे, मन मधुकर लपटाय ॥५॥ नित्य नित्य नृतन नेहसे, नमन करूं गुरुराय। कुपा करो मम ऊपर, कारज सबही थाय ॥६॥ अरिहंत ज्ञान अनंत हैं, जाको न लहिये पार । किचित् बुद्धि साधने, करूं हूं तास विस्तार॥७॥

# श्रीशांतिनाथजीका छंद

### ॥ खंद-दोहा ॥

जिन केसरपे शांतिनाथ धणी तिण्कुं कुशल गुरू क्या डररे, भूतरु परीत मसाण में तूं कुंडल में पग जाय धरेरे ॥ जिन केसर पे॰ १॥ जंगल और पहाड़नमे तूं ओघट घाट किया कररे ॥ जिन केसर पे॰ २ ॥ संको मती तरवारनसे रण भारतमे ठहरया कररे ॥ जिन केसर पे॰ ३ ॥

### ॥ दोहा ॥

शांतीनाथ प्रभु शांतीके टाता विघन हरख अंतरजामी, सुख संपतीने लीला लञ्जमी, मन चंछित पूरण स्वामी ॥१॥



सोलहमा जिनजी शांतीनाथ शाता कारी-जी, थांहरी दरसण्री वलीहारी, थांहरी महीमा जगतमें भारीजी ॥ सोलहमां० १॥ श्री हत्थिन।पर अश्वसेन राया, रागी अचलादे रा जायाजी ॥ सोलहमां०२॥ प्रभु सर्वार्थसिद्ध चर्वी श्रायाजी माता चउदे सुपना पायाजी ॥ सोल-हमां० ३॥ ञ्रागे हुतो हत्थिनापुर मांही मीरगीरो रोग गमायोजी ॥ सोलहमां० ४ ॥ थयो शांती सदा सुखदायो, प्रभुजी जयजेकार वर्तायोजी ॥ सोलहमां० ५ ॥ प्रभु भादव वद सातम आया, जेठ वढी तेरस जायाजी ॥ सोलहमां० ६॥ माता पिता नाम दीधो शांती कुंवर प्रसिद्धो जी ॥ सोलहमां० ७॥ प्रमुजी कूंवर पर्गो रह्या सरू, वर्ष सहेस पचीस हजारोजी ॥ सोल-

हमां० ॥ पीछे हुवा मडलीक राया, सेंहस पचीस वर्ष थायाजी ॥ सोलहमां० ६ ॥ प्रभुजी पूरव पुन्याइ करी भारी, चक्रवर्त्ति नी पढवी धारी जी ॥ सोलहमां० १० ॥ लख चौरासी गज रथ घोडा, पेटल छिनु करोडोजी ॥ सोलहमां० ११॥ छव खंडकेरा राजा इसा राजा मोटा सहेस वती-सोजी ॥ सोलहमां० १२ ॥ छोटा राजा छत्तीस हजारो, सगले करे नमस्कारोजी ॥ सोलहमां० १३ ॥ एक लाखने वाणमें हजारो, ज्यांरा राणी रो परवारोजी ॥सोलहमां० १४॥दिन दिन हरकस जोडो, बेटा हुवा डेढ़ करोडोजी ॥ सोलहमां० १५॥ एक दिवसरो रसोड़ो धान सीजे मरा च्यार करोडोजी ॥ सोलहमा० १६॥ पहले पोहर मांहे वावे, दुजे पोहर मांहे पावेजी॥ ॥ सोलहमां० १७॥ तीजे पोहर मांहे पकावे, चोथे पोहरमाहे जीमेजी ॥सोलहमां० १८॥ दस लाख मण लूण, इणसुं नहीं लागे उणोजी

॥ सोलहमां १६ ॥ वहो तर मण हिंगरो भगारो, निनाणुं मण् सौ वेसवारोजी॥ सोलहमां० २०॥ श्रसी लाख मण जाणी जियांरे घृत रो परमाणी जी ॥ सोलहमां० २१ ॥ ऋौर मसाला सारा जिग्र रो घगो छै विस्तारोजी ॥ सोलहमां० २२॥ पांखी भरनरा पखालीया वहोत्तर हजार चाल्याजी ॥ सोजहमां० २३ ॥ सोजह सहेंस रहोंरी ख़ान, वीससहेंस सोने रूपे री जाणोंजी ॥ सोबहमां० २४॥ चवदे रत छै भंडारो, देव सेवेपचीस हजारो जी ॥ सोलहमां० २५ ॥ ज्यारे घरमें छै नव निध्यानो, धन रो किम स्रावे मानोजी ॥ सोलहमां० २६ ॥ इसढ़ी रिद्ध प्रभु पाइ, पण चगमे छटकाइजी ॥ सोलहमां० २७॥ प्रभुजी त्र्यांगो मन जोर वैरागो, सहेंस जगां सुं होया त्यारोजी ॥ सोलहमां० २⊏॥ वर्षी दान दियो सारो, भुरतो मेल्यो परिवारोजी॥ सोल-हमां॰ २६॥ जेठ बदी चवदस लीनी टिचा,

श्रीशांतिनाथजी का छंद्। किनी छव काया नी रचा जी॥ सोलहमां० ३० ॥ एक मास में केवल पायो सारो, प्रसुजी तुरंत कियो उपगारो जी ॥ सोलहमां० ३१॥ वासठ सेंहस ऋणगारो, ऋारज्यां नेवासीहजारो जी।। सोलहमां० ३२॥ एक लाख ने नुवे हजारो, श्रावक सेंठा व्रतधारीजी ॥ सोलहमां० ३३ ॥ तीन' लाख ने तेणमे हजारो श्रावका नो परवारोजी॥ सोलहमां० ३४**॥ केव**ली तीन सौ च्यार हजारो. ज्यांने म्हारो नमस्का-रोजी ॥ सोलहमां० ३५ ॥ प्रभुजी च्यारू इ तीर्थ तारचा, भव जीवांना कारज सार्याजी ॥ सोल-हमां० ३६ ॥ नव सौ साधु सुं संथारो किधो, नेठ वदी तेरस सोघोजी ॥ सोलहमां० ३७ ॥ **य**भुजी जिन मार्गने उजवाल्यो मिथ्या मतने गाल्योजी ॥ सोलहमां० ३८ ॥ हु तो जिन मारग ताचो जाणुं, पाखडी देव हृदय नहीं ऋणुंजी ॥ सोलहर्मा० ३६ ॥ पाखडी देव आप आगे,

हुँ प्रभाती राग-शिखामण-पद्ः इत्राह्म

प्रातः समय तुम ऊठ भविक जन। श्रातम कारज करीयेरे ॥ टेर ॥ दुझभ लाधो मनुष्य जमारो । सूधी श्रद्धा धरीये रे ॥ देव निरंजन गुरू निरलोभी। धर्म दया मे आदरीये रे॥ प्रा०॥ १॥ सामाचिक शुद्ध मन से करता। अश्रभ कर्म दल हरीये रे ॥ नितका चवदे नेम चीतारो सम्बर मारग वरीयेरे ॥ प्रा० २ ॥ कथा सुगांता कथन न कीजे। प्रमादे नहीं अनुस-रीये रे ॥ मुनि श्राया शुद्ध भाव धरीने ॥ प्रती-जाभी जग तरीये रे ॥ प्रा०३ ॥ पन्नरे कर्माडान तजी जे। पापसे पिड नहीं भरीये रे॥ साजी सावू लोहो धावडी। जैपार यह परहरिये रे ॥ प्रा० ४ ॥ वचन सावद्य विषय मत वोलो ॥



चित्त समाधि होवे दश बोलां। भाख्यो श्री जिनराजरे प्राखी ॥ पुन करीने पामे चेतन । यह नर भवमें साजरे प्राणी ॥ समकित १ ॥ धर्म उपदेश सुणे जिनवरको । पामे चित्त हज्जासरे प्राणी॥ समकित रत प्रगटे घटमें। . श्रनुभव रस कस खासरे प्राणी ॥ वि०२॥ देव अपूर्व रिद्धि वेके। देखी चित्त हर-खायरे प्राणी॥ आगारी अणगारी करणी। कीधाना फल पायरे प्राणी ॥ चि०३॥ सुपना साचा सुखना दाता । देखे पिछली रातरे प्राणी॥ जागे तुरन्त निन्द्रा नहीं लेवे । पामे फल साचा-तरे प्राणी ॥ चि० ४ ॥ जातीस्मरण ज्ञान लेडने । पुर्व भवांतर जागरे प्रागी । उत्कृष्टा

हढ धार रे॥ क्या० २॥ संतोषी जग में सुख पावे। डवे लोभी अपार रे॥ ले गयो न ले जावे कोई । क्यों लोभावेगी वार रे॥ क्या॰ ३॥ कर कर ममता वहु धन जोड्यो। छोड़ चल्यो परवार रे ॥ उसका मालिक हुवे दुसरे । खावे ञ्चाप ञ्चारो मार रे ॥ क्या० ४ ॥ चक्रवृत पट खंड रिद्ध पाइ। उपना नर्क मक्तार रे॥ इम केवल मनको समजावे॥ करनाल यामे सुख-

यह निश्चय कर समता पकड़ो । धीरज कों

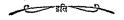
कार रे ॥ क्या० ५ ॥

निश्चे होते। अग होगी न होगहार रे।

### . ७०००००००००००००००००० % धर्म जहाज की सभाय %

ॐ यम जहाज का सन्ताय ॐ जिक्कक्षकक्षकक्षकक्रके

तो उन ब्याठ लंगर दुःखदाइ। शिवपुर जावरा जहाज वर्णाइ ॥ ऋां० ॥ जन्म मेरेरा के जलमें देखो। संजम रूपी जहाज तिराइ॥ सतग्ररू ज्यारा खेवण वाला। भवी जीवाको लीया बैठाइ ॥ तो० १ ॥ पंच महावृत पंच रंग न्यारा। दृढ मन स्थापके धजा उडाइ॥ ज्ञान रूपणी डोरी लगी है ॥ शुक्क ध्यानसे ऊंची चढाइ ॥ तो० ॥ पंच सुमत ले पंच जिन बैठा । पंचमी गतको <u>ह</u>वारे उमाइ ॥ द्वादशवाला द्वादश तांड ॥ मूर्ख देखके रह्या मुरजाइ ॥ तो० ३ ॥ उज्वल भावकी पवन लगी जव । छिनमें पहोची द्वीपके मांइ॥ केवल रिख कर जोड वीनवे। ज्ञान दुरवीन सुं मुगत वताइ ॥ तो० ४ ॥



थ्र श्रीजैन स्तवन विलास।

चे० ५॥ अवध ज्ञानना भेद असंख्या। अवधी र्शन संगरे प्राणी॥ देखंता बुद्ध जगे चेतन 

विसे लग देखे॥ सन्नी तेणा ए नाणरे प्राणी॥

नन पर्यव का भेद दोय छे। रूज़ विपूल तस नामरे प्राणी ॥ ए उपज्या चित्त ठामे झावे । ग्रण

तगो ए ठाम रे प्राणी ॥ चि० ७ ॥ केवल ज्ञान ने केवल दर्शण । पाम्या पद निरवाण रे प्रोणी ॥

जन्म जरा श्रौर मरण मिटावे । सिद्धपुर सुख श्रहीं ठाग्ररे प्राग्री ॥ ⊏ चि०॥ पंडित मरग्

करे जे-प्राणी । उत्तम करणी साध रे प्राणी ॥ आवागमन रा दुःखसे छटे। इम कह्यो जिन-

इगसटका । वैशाख वद नव मंगलवार रे प्राणी॥ स्यालकोट में कहे केवल रिख। दश बोले जै

राज रे प्राणी ॥ चि० ६॥ सम्वत उगणीसे

जैकार रे प्राग्री ॥ चि० १०॥

समता राखो सब भाइ॥ ग्रह गीतार्थका चरण भेटके सफल करो अपणी काय ॥ लख० २॥ रसना रटो जिनवरके नामको ॥ अशुद्ध शब्द मत उच्चारो ॥ खान पानमें विचार रक्खो । त्तजो अभन्न कंद्र मूल आहारो॥ पंखी राते नहीं चुग्गा लेवे मनुष्य होके क्यो धारो॥ रसना वस पड मर गड़ मच्छी कंठ छिदा कंट दुखकारो ॥ श्रभच भोजन रात जीमना हे भाई ऋती दुःखदाइ ॥ लख०३॥ यह काया है कल्यमृत सम कर ले अब सुकृत प्यारे॥ तप जप संजम जो चनी त्रावे सो चल से तेरे लारे ॥ पाय का भाग देवो टानमें ये ही लच्मी का है सारे ॥ लख० ४॥



श्रीजैन स्तवन विलास। १६ 👺 पांच इन्द्रीके गुरा को लावगाी 🎏 चित्त लगाकर सुणो चतुर नर नरभव मुश-कलसे पाया॥ लख चौरासी भमता भमता चिन्तामिं हाथे आया ॥टेर॥ सत ग्रुरुकेरी वाणी सुएकर कान पवित्र करो जिया ॥ विषय राग का संग निवारो अही इश्कके वश मुया॥ नेत्र जीव दया को पाया। नीचा नेत्रजिनोने कीया॥ उत्तम जिनको कहे लोग में। इन भव परभव **सुर्वो हुया ॥ परनारी है दुःखकी खा**ग्र । रावग्र, मर दुर्गत पाया ॥ लख० १॥ नाक नमन कर देव निरंजन । येही पदार्थ जगमांइ । सुगंध वासनाकों तज देना। श्रली लिपट, मुवा पंकज जाड ॥ फूल अत्तरकी गंधमें मोह्या॥ नहीं

सार कह्या जिनराइ । सुगंध दुर्गन्ध दोनु आये

श्रहंकारे ॥ तप जप करना लावा लेता । तुभको शुद्ध नहीं क्यारे॥ जब बोले पार्श्वकुवरजी। नाग नागणी क्यो जारे॥ द०३॥ लकड फाड़ जले सर्प काडी। दिया श्रवण जब नवकारे॥ इन्द्र इन्द्राणीका पद देके। आप लीया संजम भारे ॥ खमे परिसह केवल पाये । तारी जगती रे संसारे ॥ पार्श्वप्रभु विख्यात जगतमें । नाम जप्पा खेवा पारे ॥ द० ४ ॥ चोबीसमे जिनरान दया काज । मुनिवर अपगो उगारे ॥ अवनीत शिष्य गोसाला वचाया । तेज् लेस्यासे त्यारे ॥ श्रीर बहु नर नारी तारे वरताये मंगला चारे। सासन संख्कारी ए वरते। नाम लिया होय निस्तारे ॥ द० ५ ॥ देव परीचा कारण आये मेघरथ राजा दयाले ॥ रुप परेवो करी तत-खेवे। वेठौ गोदी मकारे॥ पारधी मांगे अच ञ्चापगो। राजा मास निज दियो त्यारे ॥ शांतीनाथ हुये शांतीके दाता । षट पदवी तणा-



द्या जगतमें है अति सुन्दर । सुण लीजो सब नरनारे ॥ जिन पुरुषोंने द्या जो पाली शास्त्रमें है विस्तारे ॥ टेर ॥ धर्म रुचीजीने टया के खातर । कडवा तुम्व किया त्राहारे ॥ सर्वार्थ सिद्धमें जाय विराजे हो रहे जयजयकारे॥तेंतीस सागरका आयुष्य पाये। हो गये एका अव-तारे ॥ मानुष्य भवका लावा लेके गये जो मुक्ती मकारे ॥ द० १॥ मेमीनाथ वावीस में जिनवर । कृष्ण वासदेव ले लारे। छप्पन कोड जादव सवी ग्राये। जान सजी ख़ब तैयारे ॥ तोरण श्राये पशु छुड़ाये। तज राजुल गये गिरनारे॥ सती सगाते मुक्त सिधाइ अप्टकर्म बंधेन टारे॥ द० २ ॥ पार्श्वप्रभुजी कवरपणुमें खेलत गये गामके वारे॥ देख तापसको पूछ्या लागे। वोले तपसी भंडारे ॥ अमर पडो वजायो मुलकमे । फेल्यो यशको विस्तारे ॥ चायिक समिकतो तिर्थंकर पद उपराज्या तेहिज वारे ॥ आवती सर्पखी पद्मनाभ जिन होजासी शिवमभारे ॥द्यां०१०॥ साधु करे संथारा जगमें जीव टया कारण प्यारे ॥ द्या जे पाले धन नरनारे सफल जिनो का अवतारे ॥ ट्यां० ११ ॥

📶 इति दयाकी लावणी समाप्तम् 🧰



जे धारे ॥ द० ६॥ परदेशी राजा ऋती पापी केसी समण कीयो उपगारे ॥ उपदेश सुणाई पाप छड़ाइ। तेरे वेलासे दीयो तारे ॥ चमा करी सुर्याभदेव हुये। एक भवसे करे खेवा पारे ॥ गौतमस्वामी कीनी पृञ्जा रायप्रसेखी अधीकारे ॥ द० ७ ॥ मेतारज मुनी गया गोचरी ॥ सोवनकार दीयो आहार । सोवन जब कुकड़ले चुगीया नहीं बोल्या तब अगागारे॥ सोवनकारने दीया परिसहा। जमातणा मुनी भंडारे ॥ कर्म खपाया मुगत सिधाया सफल कीया जिन अवतारे ॥ दया० = ॥ मेघ भुनीश्वर गजके भवमें सुशल्यो दीनो उवारे ॥ संसार परत कर नरभव मांही॥ श्रे खिक घर लीयो भवतारे ॥ श्राठ श्रंतेवर परगी परहर तज्या राज और भंडारे॥ कर प्रभु सेवा खर्गका मेवा। चाखिलया जिन तत्काले ॥ दया० ६॥ राज-पहीको राजा श्रेणिक माहामंडलिक भरे

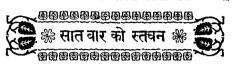
मीयांकी टाढी वले स देखो, लोक तापवा जाय ; हाय किम जगत हंसायोजी ॥ राखो० २ ॥ **ञ्रासोज ञ्राशा सवी गमाईजी, स्यृं** श्राई दिल मायो; भाई सह विलखा किया से जी, दु.ख सहियो नहीं जायो , जनम डवोयो नाहक मेरो जी, सिवयां हास्य करायो, कांई करूं महें वीनती, काई सुणाऊं कूक, मुंक गयो सुक्त नाथजी स कांई, जैसे वीडी थूक, चूक कोई नाथ वतावोजी ॥ राखो० ३ ॥ कातीमें कागल नहीं स जी, समाचार पिए नायो ; मास वरस .ब्राशा कढे स जी, ब्राशा जन्म विहायो; ब्राशा विन वासा किसा स जी, अमने प्रभू वता-यो ; दीसे वाहिर निर्मला, माही कठिन कठोर ; जपरं <del>लाली भिल रही स</del> देखो, जैसे भाडी वोर, श्रोर कांई फंद लगायो जी ॥ राखो० ४॥ भ्रगसरसें सी चमकियो स जी, कंत गयो किम छोड, पशु पची भेला रहे स जी, क्या मुक्तमें थी खोड; झौर न चाहुं कतनें स जी, नेम मुभो



श्याम क्यूं मुजकूं छोडीजी, राखो प्रतिज्ञा राजुल नारकी ; महाराज नेमजी, राखो प्रतिज्ञा अवला नारकी ॥ टेर ॥ श्राव**ण मन भावन गयो** सजी, नैंना नीर वरसायोः जान वनावी ऋावियो स जी, तोरनसें फिर जायो; कुंन भरमायो भूठ न वोलंजी, भूठो कलंक लगायो; सकल सखी तुम सांभलो, धरू केम मन धीर; कुंण सुर्णे किणनें कह स म्हारे, नैंगां वरसें नीर, पीर कुंग देखे पराईजी ॥ राखो० १ ॥ भादमें जाद्र किम कर रूठोजी, भूठो दोष लगायो, हीयो भरायो बोल न श्रायोजी, नैंनां नीर कर लायो; पशु वनके शिर दोप देईने', कीयो दुशमनको चायो; लावो पतियां नाथकी, केम गये छिटकाय;

श्रीर पुरुप मुभा भ्रात है, श्रथवा वाप समान; कांइ भ्रांत छै नाथके स सखी, सो जाखे भगवान, प्राण कहो किस विध खखुंजी ॥ रा० 🗆 ॥ चैती फुली फुटरी स जी, तरू विलंबी बेल, याग वगीचा फुलीया स जी जाई जुई चपेल; हुं मुरक्षी प्रीतम विना स जी, ज्यं दीपक विन तेल: हेल करी मुक्त नाथजी, तोरन सुं फिर जाय; मनमे त्रावे एहवी स हूं, मरूं कटारी खाय; हाय मुक्त जलो जवांनीजी ॥ रा० ६ ॥ वैशाख मास छै त्राकरो स जी, वाजेकाल दुकाल, चंदन चरचे पद्मिनी स जी, पखो हाथमे काल; घाले शीतल वायरो स जी, करें शीतमल् ख्याल; मन की सब मनमें रही, कही कठा लग जाय; तोरन सृं फिरजांवतां स सखी, टीधो टाग लगाय; दाय किम हुं नहीं आइजी ॥ रा० १०॥ जेंड मास सखी आवियो स जी, धूप पड़े असरांत, दूजो तप विरह तणो स जी, सखी पवन मत

शिर मौड़, एक बेर कंत आवजो, करको मनकी बात; निजरांका मेला करो स में, चलूं तुमारी साथ नाथ एक वैर पधारोजी ॥ राखो० ५ ॥ पोष मासकी वैरन रजनी, काटी कटे न कोय; कुंग मुभ राखे रोवती स जी, रही श्रंसुवन मुख धोय; सार न पूछी पाछली स जी ऐसी रीस क्यूं होय; कुंग ही त्यारो माहरो, कंत दियो भर-माय; घाल्यो विछोहो पापिये स जी, जिल्लो मुख हुवो श्याह, दाह क्यूं हीये लगायोजी ॥ रा०६॥ माघ मास सखी **त्रावियो स** जी, लावो कंत ममाय; देऊं बधाई तेहने स जी, पुंजूं तेहना पाय; जाय मनावो नेमने स जी, दूजी न मेरे चाय कंत कंत करती फिरूं हेरूं जिसकी वाट; फेरूं माला तेह्नी स मेरे, किए विध मिटे उचाट; घाट मुभ्त थई पुन्याईजी ॥ रा० ७ ॥ फाग्रुण वाजे वायरो स जी, वृच पत्ते दिये खोय; दूजे मासमें आविया स जी, पाछा हरिया होय; हुं फल्ं किण ऋाशसूं स जी, कह दो सखियां मोय;



रविवार दिन भोली दुनिया, मनुष्य जमारो पायजी ॥ छत्र कायारी आरम्भ करता, गयो जमारो हारजी ॥ सुगो भवियग महावीरजीरी वाणी, सत पुरपारी अमृत वाणी ॥१॥ सोमवार रे सता मुरख, मनमत वाली नीदजी॥ काल सिराणे आण खडो, जिम तोरण आयो बींद-जी ॥ सुर्गो० २ ॥ मगलवार रे मगलाचार, टया धर्मसं प्रेमजी ॥ समायिक प्रतिकमणो करतां, लाहों ल्या नित नेमजी ॥ सु०३ ॥ ब्रुधवार रे वली अवस्था, बुढापो दु.ख दायजी ॥ चैठे खाट पोलके उपरे.पड्यो करे विलापजी॥ सुर्गो० ४॥ ब्रहस्पतवार रे विखो पडियो, कोइ न मेटख हारजी ॥ मात पितारी करो वदगी, जिम उतरो भवपारजी ॥ सुर्गो० ५ ॥ शुक्रवार रेे शुक्राचार,

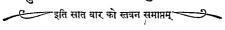
श्रीजैन स्तवन विलास । २६ घाल, क्यूं ऋाये थे परणवा स जी, कीधो वालक ख्याल, दुख पाऊं जाऊं कहां, कीधी खोटी कंत ; मांगी न त्र्यावे मोतडी स सखी, दुख जांगों भगवंत , दत सव लोक दिखावेजी॥ ॥ रा० ११ ॥ त्र्याषाढ त्र्याश्चा करलीयो स जी, विध विध करी उपाब , क्यूं रूठो छै सांवरो स जी, रही छूं मनाय मनाय , इस मास नहीं श्रावसी स तो, देसूं घर छिटकाय , राम मुनी वंदना करे, धरे चरनमें शीश, राजमति संयम

लीयो स जी, जाय मिली जगदीश , शीश तुम सदा नमावो जी ॥ रा० १२ ॥ चमालीस उग-ग्रीसको स जी, मिगसर शुकरवार , तीज चौथ सुद भेली तिथ छै, जसरासर सुखकार , बारह मासीयो जोडियो स जी, लागी थोडी वार, वृज्डी चंदजी गुरुतगो, वरते सटा प्रताप , रामचन्द्र शिष्य तेहनो स जी, जोडकरी धर छाप , जाप, तुम प्रभुनो करोजी ॥ रा० १३ ॥

इति राजुलजी को बारहमासीयो समाप्तम्

ते किम जावो हार ॥ १ ॥ धन दोलत रिद्ध संपदा पाई, पाम्यो भोग रसाल ॥ मोह माया मांहे फ़ल रेह्यो, जीवा नही लिनी सुरत संभाल ॥ नहीं लिवी सुरत सभाल, जोवाजी नहीं लिवी सुरत संभाल ॥ दु०२ ॥ काया तो थांरी कारमी दिसे, दिसे जिन धर्म सार ॥ आऊखो जातां वार न लागे, चेतो क्यंनी गवार ॥ चेतो क्युंनी गवार, जीवाजी चेतो क्युंनी गवार ॥ दु॰ ३॥ योवन वय मांहे धन्धो लागो, लागो हे रमगीरे लार ॥ धन कमाय ने दोलत जोड़ी, नहीं किनो धर्म लिगार॥ नहीं किनो धर्म लिगार, जीवाजी नहीं किनो धर्म लिगार ॥ दु० ८ ॥ जरा आवे ने यौवन जावे, जावे इन्द्रिया विकार ॥ धर्म किया विन हाथ घसोला, परभव खासो मार ॥ परभव खासो मार, जीवाजी पर-भव खासो मार ॥ दु० ५ ॥ हाथां में कड़ा ने कानामें मोती, गले सोवन की माल ॥ धर्म

जासी शिवपुर मांयजी ॥ अनंत सुखामें डेरो दियो, ज्यांरो हुजासी खेवो पारजी ॥ सु० ६ ॥ थावरवार रे थिरचा हुसी. हुं धनवंत नारजी ॥ सेर सेर सोनो पहरती मोत्यां मरती भारजी ॥ सु० ७ ॥ ए सातुंवार सदा सिमरीजे, आ सद-गुरूकी सीखजी ॥ ए सातुंवार नित नित सम-रीयां, हुजासी खेवो पारजी ॥ सुखो० = ॥

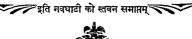


्राया के स्तवन विख्यते व्याप्त के स्तवन विख्यते व्याप्त के स्तवन विख्यते व्याप्त के स्तवन विख्यते व्याप्त के स

नव घाटी मांहे भटकत आयो, पाम्यो नर भव सार ॥ जेहने वंछे देवता, जीवा ते किम जावो हार ॥ ते किम जावो हार, जीवाजी ते किम जावो हार ॥ दुलभ तो मानव भव पायो, विश्विति स्थापित स्था

खबर नहीं श्रा जुगमे पलकी रे॥खबर०॥ सकृत करनां होय तो कर ले, कौन जाने कलकी ॥ ए आंकगी ॥ या टोस्ती हे जगवास की, काया मंडल की ॥ काया० ॥ सास उसास समर ले साहेब, श्रायु घटे पत्तकी ॥ वबर० १ ॥ तारा मंडल रवी चंद्रमा, सब हे चलने की ॥ सब० ॥ दिवस च्यारका चमत्कार ज्युं, वीज-लिया भलकी ॥ खबर० २ ॥ कूड कपट कर माया जोडी, करि वातां छल की ॥ करि०॥ पाप की पोटली बांधी सिर पर, कैसे होय हलकी ॥ खबर०३॥ या जुग है सुपनेकी माया, जैसी बुंट जलकी ॥ जैसी० ॥ विणसंतां तो बार न लागे, दुनीयां जाये खलकी ॥ खबर०

किया वीना एह जीवाजी, ऋाभरण छे सहु-भार ॥ त्राभरण छे सहुभार, जीवाजी ऋाभरण छे सहुभार ॥ दु० ६ ॥ ए **म**ग है सब स्वार्थ केरा, तेरो नहीं रे लिगार ॥ वार वार सतग्ररू समभावे, ख्यो तुमे संजम भार ॥ ल्यो तुमे संजम भार, जीवाजी ल्यो तुमे संजम भार॥ हु० ७॥ संजम लेईने कर्म खपावो, पामो केवल ज्ञान ॥ निरमल हयने मोच सीधावो, त्रो छै साचो ज्ञान जीवाजो श्रो छै साचो ज्ञान ॥दु० =॥ संवत ऋठारे ने वरस गुरवाशी, हरकेन सिंघजी उल्लास ॥ चेत बद् सातम सायपुर में, किनो ज्ञान प्रकाश, किनो ज्ञान प्रकाश, जीवाजी किनो ज्ञान प्रकाश ॥ दूलभ तो० ६ ॥





्राह्म स्थान स्था

**9ुद्ध जन पन्च पात तज देखो, साचो देव** कौन है इनमें (ए टेर) ब्रह्मा दंड कमंडल धारी, खांत श्रांत वश सुर नारीनमे, मृग छाला माला, मुंजी युत विषया शक्त निवास निलममें ॥ ॥ बुद्ध जन० १॥ विष्णु चक्र धर मदन बांगा षश्, लजा तज रमत। गोपीन में, कोधानस ज्वाजल महान पुन इनके, होत प्रचंड श्ररियम में ॥ बुद्ध जन० २ ॥ शम्भु खटवा ग्रंग सहित पुन गिरजा भोग मगन निश दिनमें, इसा कपाल न्याल भृषण युत रूंड माल, तम भस्म मलीनमें ॥ बुद्ध जन०३॥ श्री श्ररिहंत परम वैरागी, टोप न लेश प्रवेश न इनमें, भागचंद इनको खरूप लग्ब कहो, श्रव पुज पर्गा है किनमें ॥ वृष्ट जन०॥ है किनमें ॥ वृष्ठाणपनः ..

३ ॥ मात तात सुत वंधव वाई, सव जुग मत-लब की ॥ सब० ॥ काया माया नार हवेली, ए तेरी कवकी ॥ खबर० ५ ॥ मन मावत चंत्रल हस्ती, मस्ती हे वलकी ॥ मस्ती०॥ सतग्रह श्रंक्रश धरो सीस पर, चल मारग सतकी ॥ खबर० ६ ॥ जब लग हंसा रहे देहमें, खुशियां मंगल की ॥ ख़ुशि०॥ हंसा छोड चल्या जव देही, मटीष्त्रं जंगलकी ॥ खबर० ७ ॥ टया धरम साहेव को समरन, ए वातां सतको ॥ ए वातां० ॥ राग द्वेष उपजे नहीं जिनकुं, विनती श्रखमल की 🕕 खबर० 🖘 ॥ 👵

💸 🖓 ८ इति पाचमो जीव उपटेश की लावणी समाप्तम् : 🖟 💝





## मुनी सिन्साय लिख्यते



दिचा दोहीली आदरीजी, काम भोग फल छंड । सकल पाप दुख पग पगेजी, वेरागे रंग मंड ॥ मुनीसर धन धन ते ऋणगार ॥ भोग तजी जोग आदरेजी, तेहनी हुं वितहार ॥ मुञ् १॥ ए टेर ॥ मन वाले भुलो चुकतो जी, न करे ढील लिगार। जाएी न को जग तेहनेजी, कुए हुं कुण ते नार,॥ मु०२॥ करे आतापना **ब्राकरीजी, कोमल न करे टेह। राग द्वेप तज** पाडूवाजी, जिम सुख पामे अछेह ॥ मु०३॥ अभि कुंड जल ते पडेजी, अगंध नकुल साप। वस्यो न वर्छ विप वलीजी, तिम कुल अपनो चग ॥ मु० ४ ॥ धिग धिग तुं जश वांछतोजी, वांछे बम्यो ब्राहार । जीवाथी मरणो भलोजी, निरत्जज न जाजे लीगार ॥मु० ५ ॥ नारी ,सारी



धर्म मंगल महिमा नीलो, धर्म समो नहीं कोय, धर्में तुठे देवता, धर्में शिव सुख होय॥ **४० १ ॥ जीव द्या नित पालीये, संजम** सतरे प्रकार, वारे भेदे तप तपे, धर्म तसो ए सार॥ **ध० २ ॥ जिम तस्वरने फूलड़े, भमरो** रस ले जाय, तिम संतोपे श्रात्मा, जिम फुलने पीड़ा नहीं थाय ॥ घ० ३॥ इए विध विचरे गोचरी, वेहरे शुद्ध ऋाहार, ऊंच नीच मज्फम कुले, धन धन ते ऋगागार ॥ घ० ४ ॥ मुनीवर मधुकर समकह्या, नहीं तृष्णा नहीं लोभ, लाघो भाड़ों दे ञ्चात्मा, ञ्रम् लाच्यां संतोप ॥ घ० ५ ॥ श्रध्ययन पहेलो दुम्मपुष्फीए रूडा अर्थ विचार, पुन्य कंतश शिष्य जेतसी, धर्मेजय जयकार ॥ ध० ६॥ इति भुनी सिन्माये दाल पहेली समाप्तम्

दे, एहवा पींड न ले, कृतकड जाणीयेए, सामो नहीं श्राणीयेए ॥३॥ लेवे न राइभति, न जीमे ग्रहीने पति, रायपिंड न आदरेए, सिज्भातर परिहरेए ॥४॥ राखे न सानिध राय, दानसाला नवि जाय, वाय न वींभाणीए, राग न रींभागोए ॥५॥ चोवा चन्दन चंपेल, तन न लगावे तेल, जोवे नहीं आरसीए, ते ग्रह तार-सीए ॥६॥ खेले न पासा सार, ते किम बोले मार, छत्र नवि शिर धरेए, ब्रह्मिंगति हरेए ॥७॥ माचा खाट पलंग, तजे चिकित्सा अंग, जती नवी पगतलेए, जीव दया पलेए॥ = ॥ श्रादरे तीन रत्न, छोड़े तीन रत्न, कोड कोड मोलनाए, अग्नि जल अंगनाए ॥ ६ ॥ मूल आदा कंद मूल, सचित्त वीजा फल फूल, तजे जिम सेलड़िए, लूग पूपण वड़िए ॥१०॥ घमन विरेचन कर्म, करि न गमावे धर्म, दांते दांतण घसीए, न लगावे मसीए॥ ११॥ पहिरे न हीर

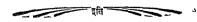
पारकी जी, देख देख मत भूलं। वाय भकोल्या तर पड़ेजी, अथिर हुइस डोलाडोल ॥ मु० ६ ॥ जिम हाथी अंकुश वसेजी, थिर ठाम आवे तेम। राजमती सती बुक्तीयोजी, ठाम आयो रहनेम॥ मु० ७॥ अध्ययन सामन्न पुक्तीयेजी, षीजे पह विचार। पुन्य कलस शिष्य जैतसीजी, प्रणमे सुत्र सुखकार॥ मु० ६॥

🎢 हिन मुनी सिज्माय ढाल दुजी समाप्तर्म् 🦟



मिसूधा साधु नियंथ, साधे मुगतिनो पंथ, अमतम संवरत्योए, संवर आदरचोए॥१॥ दोपण टालेंदीख, तेहने एहवी सीख, वीर जिनवर कहेंप, मुनीवर सरहहेए॥२॥ उदेसिक आदि

दिचा चोमालीसमें धारी, मुजने तारजो जी० ॥१॥ प्रथम हुकंम मुनी अवतारी, और शिवलाल उदेचन्द भारी। चोथा चोथमलजी गुण्धारी, श्रवतो किर्ती पसरी थांरी, मुजने तारजो जी म्हारा०॥ २॥ श्रापतो पंचम पाट वीराजो. बैठ सभामें सिंह ज्युं गाजो। अचारज पदवी पर छाजो, करुणा सागर क्रपा सिन्धु मुजने तार-जो जी म्हारा० ॥३॥ म्हेतो दरसण कर सुख पाया, म्हेतो वाणी सुणी हर्पाया ( म्हेतो हर्प हर्ष हर्पाया, त्रापरे चरणा शीश नमाया, मुंज ने ।।।।। अव तो मालव देश पधारो, और मेवाड़ देशने तारो । म्हारी वीनतड़ी अवधारो, म्हेतो सदा दास चरणारो, मुजने० ॥५॥ म्हेतो शहर जोधाणे श्राया, सम्वत सीतरमें सुख पाया । काती सुद पुनम ग्रुण गाया, केने ज़ोध-करण चरणारो चाकर, मुजने० ॥६॥



न चीर, शोभा न करे श्रीर, पीठ नहीं मांज-गोए, आंखें नहीं आंजगोए ॥१२॥ सूत्रोंमा वावन वोल, वर्जे साधु अमोल, तप किया करेए, पोंहचे शिवपुरीए॥१३॥ नामेए खुडियार, अध्ययन तीजो सार, अर्थ अनेक छे ए, जेतसी मुनी रुचेए ॥१४॥

-निर्देश्हित मुनी सिग्भाय ढाल तीजी सम्पूर्णम्

म्हारा पुन्य परम उपगारी मुजने तारजोजी, श्री श्रीलाल मुनी परवारी पार उतारजोजी ॥ एटरे ॥ जन्म्या टोंक नगर मंभारी, ज्यांरी ज्यांटकवर महतारी। पिता चुन्नीलाल अवतारी, सती वश किया अपने दमकु ॥ सती राजुल० ॥ ने० २ ॥ साज शिवपुर का सव सजीया, कर्म से खुव किया कजिया ॥ मेरे शिरपती शामसूजा, नेम विन और नहीं हुजा ॥ आभुपण गाते मुज खुचता, जगत का भोग नहीं रूचता ॥ जगत जन जीता है जिनकुं ॥ स० ३ ॥ नेम गिरनारी हुआ ध्यानी, वात तेरी सव जुग मांहे जाणी ॥ जाप तेरा जपतांपार पावे, अलख जिणदास ख्याल गावें ॥ मुक्त पद दीजे प्रभु हमकुं ॥ स० ४ ॥

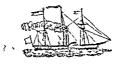




फिकर लगी अब मेरे तनमें, निगना नेम गया वनमें ॥ वात किस ञ्रागे कहु सजनी, पिया विन देही कुं तजाणी ॥ पीया पर्वतमें दुःख खमता, महल मेंदिर मुज नहीं गमता ॥ शाम में खड़ी खाय गमकुं, सती राजुल कहती है तुमकं ॥ नेम विन गुणा, सजन विन गुणा, प्रीतम विन ग्रुणा-तजी हमकुं ॥ सती० ॥ ए त्रांकणी ॥ १ ॥ सती रथ सजम पर बैठी, भर-मणा श्रन्तरकी मेटी ॥ सती सब सोना तज देती, जगतमें राखी- नहीं रेती ॥ सती जग भीचे चमा खाता, सती मन आस मुक्त सेती॥

टाली ॥ मु० ॥ मेरी अनत कालकी प्रीत, पलक नहीं पाली ॥ तुं सुमती को सिरटार, सुणावे मोय गाली ॥ सु० ॥ में टोनुंड तेरी नार, गोरी एक काली ॥ मुजकुं दुरी ठेल, सुमती को तेडे ॥ सु० च०३ ॥ अब कुमती को ललचायो, रती नहीं डिगीयो ॥ र० ॥ सुणी सुत्र की सीख, सेठो होय लगियो ॥ चेतन दुर कुमतिके, सेज से भगीयो ॥ से० ॥ जिनराज वचन को ज्ञान, हिया में जगीयो ॥ जिनटास कुमत को चात, खोटो मत खेड़े ॥ खो० च०॥

्रुः हि€। इति कुमती सुमती की लायणी समापम को**ं** स्



तुं क्रमत कलेसण नार लगी किम केड़े ॥ ल॰ ॥ चल सरक खड़ी रहे दुर, तुजे कुण छेड़े ॥ ए आंकणी ॥ तें सुमता के भरमाय, मुजे किम छोड़ी ॥ मु० ॥ मेरे घ्रनंत काल की प्रीत, पलक में तोड़ी ॥ तुज विन सुनी मेरी सेज, कहुं कर जोड़ी ॥ क० ॥ उठ चलो हमारे सग, सुखी रहा पोडी ॥ इम फ़ुर भुर कुमता नार, आंखआंसु रेडे ॥आं० च० १॥ तेरी नरक नीगोद की सेज, थकी में रूठो ॥ थ० ॥ में सेव्या श्री जिनराज, संग तेरो छटो॥ तेरी मुर्ख माने वात, हिया को फुटो ॥ हि० ॥ में सेजे होगयो दुर, तेरा डर तूटो ॥ अब हुर खड़ी कर वात, आव मत नेड़ी ॥ आ०

च०२॥ तुं सुमता के भरमाय, मुजे किम

भु० ५ ॥ धन्धो करीरे धन जोड़ीयो, लाखा उपर कोड ॥ मरण्री वेला मानवी, लीयो कंदोलो तोड ॥ भु० ६ ॥ लखंपती छत्रपती सहु गये, गये लाख वे लाख ॥ गर्व करता रे गोखे वे-सता, जल वल होय गइ राख ॥ भु० ७ ॥ म्हारो म्हारो कर रह्यो, थांरो नहीं रे लिगार ॥ कुंग्य थांरो तुं केहनो, जोवो हियड़े विचार ॥ भु० = ॥ मेमद कहे समजो सहु, सांभल ले जोरे साथ ॥ आपणो लाभ उवारियो, लेखो साहिव हाथ ॥ भु० ६ ॥

निर्देश इति भुल मन भमरा की समाय समाप्तम 👯







मुलो मन भमरा कांड भम्यो, भम्यो दिवस ने रात ॥ माया रो लोभी प्राणीयो, मरने दुरगत जाय ॥ भु० १॥ केहना छोरा केहना वाछरा, केहना माय ने वाप ॥ श्रो प्राणी जासी एकलो, साथे पुन्यने पाप ॥ भु०२॥ **त्राशा तो डुंगर जेवड़ी, मर**गो पगल्यारे हेट ॥ धन संची सची कांइ करो, करो जीन-जीरी भेट ॥ भु०३॥ उत्तट नदी मारग चालतां, जावुं पेलेरे पार ॥ आगल नहीं हाट वाणियो, सांवल लीजेरे लार ॥ भु० ४ ॥ मुर्ख कहे धन म्हारो, ते धन खरचे न खाय ॥ वस्र विना जाय पोढीयो, लखपती लकडारे मांय ॥

रे ॥ सु० ॥ घी० ॥४॥ राघव विन वंछचो हुवे रे लाल, सुपनामें नर कोय रे॥सु०॥ तो मुक्त ऋग्नि प्रजालजो रे लाल, नहीं तरपाणी होय रे ॥सू०॥ धी० ॥ इम कही पेठी आगमे रे लाल, तुरन्त थयो अप्रि नीर रे ॥सु०॥ जार्णे द्रह जलसुं भरचो रे जाल, एह सती सिरदार रे ॥ सु०॥ धीज करीने उतरी रे लाल, साख भरे ससार रे॥ सु०॥ धी०॥७॥ जगमें जस जेहनो घणो रे लाल, अविचल शील सुहाय रे॥ सु०॥ कहे जिन हुएँ सती तणा रे लाल, नित नित प्रणमुं पाय रे ॥ सुजान सीता धीज करे मोटी सती रे लाख ॥=॥

**्र**ुक् ु}्रिट्डित सीता सतीकी सभाय समाप्तमः १६९००%



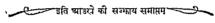






जल जलती मिलती घणीरे लाल, भालो भाल विचार रे ॥ सुजाण सीता ॥ जाणे केसु फुलियोरे लाल, राता खेर अंगार रे॥ सुजाए सीता॥ धीज करे मोटी सतीरे लाल ॥१॥ शील तणे परमाण रे, सुजाण सीता ॥ लच्मण राम तिहां खडारे लाल, मिलिया राणो राणरे ॥ सुजाण सीता ॥ धी० २॥ स्नान करी निरमल जल से रे लाल, पावक पासे आयरे ॥स्०॥ उभी जाणे देवांगना रे लाल, विमणो रूप देखाय रे ॥सु०॥ धी० ॥ ३ ॥ -नरनारी मिलीया घणारे लाल, उमा बहु ऋकुलाय रे ॥ सु० ॥ भस्म होसी इए आगमें रे लाल, राम करे आवाय

खोय गमावे रे ॥चे० वृ०॥ हीरो हाथ तो आयो रे ॥ आं० ६ ॥ तन धन यौवन छिनमें रे छीजे, क्कृठो ग्रमांन न कीजे रे ॥ चे० क्कृ० ॥ ऐ जुग सुपनो रे ॥ ओछी० ७ ॥ भटक भटक तूं तो धनकूं रे भटके, ज्ञानसूं मन नहीं, हटके रे ॥ चे० ॥ मुनिराम दरसावे रे ॥ ओछी०॥ = ।





पार न पायो गुरू ज्ञानको, भलो वतायो भार्ग जैनको ॥ पा० ॥ टेर ॥ टान सुपात्र मुनिकूं टीजो, पायो शालिभद्र फल दानको ॥ पा० १॥ शील रतन जतन करि ख्येलो, ज्यूं



सटक सटक थारी उमर जावे, बुढापो नैंड़ो, ष्ट्रावे रे चेतन भोला, धर्म तूं कर **ले** रे; स्रोछी उमरका, श्रादमी रे तूं तो, खरची तो ले ले रे॥ टेर १॥ सटक सटक थारी श्वासा रे जावे, जांगो अंजन उडियो, श्रावे रे ॥चे ०॥ कवी तार ज्यूं तूटे रे ॥ ऋोछी० २ ॥ ऋायु पत्थर तेरा कोयला होय, अंजन रात दिन, दोय रे ॥चे०॥ गुरू सीटी पुकारे रे॥ श्रोछी०३॥ पंचदश पनरा बीस पचीसां, तीस चालीस पचासा रे ॥ चेंं।। इस्टेसण जांगो रे ॥ श्रोछी॰ ४ ॥ टिकट उत्तम त्रामका सेना, हुस्यांरी पूरीसें, रैना रे ॥ चे०।। नहीं ब्हादे पर रहना रे ॥ स्रो० ५ ॥ घड़ी घड़ी जावे सो पाछी रे नावे, वृथा क्यूं उत्नी रात तिर्यते % 
 विक

 विक

दोहा--दयाज माता वीनऊं, गराधर लागूं पाय । वर्द्ध मान चौवोसमा,वांदु शीश नमाय ॥१॥ कॅन्याने जमाइ तणो, पइसो न लीजै कोय ।चूढाने परणावतां, गुण बृढारा जोय ॥ २ ( ढाल० १ ) इस पुर कंवल कोई न लेसी ( एदेशी० ) परदेशां सुं एक सेठज आयो. धन कमायने बहुलो लायो, निरधनरे घर वेटी जाई, कुल कुटुम्ब ने तारण आई ॥ १॥ वर्ष इम्यार में वेटी थाई, माय वाप जव हर्प सवाई। तिन सेठसं कीवि सगाई, माय वाप फिर वांटे वधाई ॥२॥ रुपया नवसे आकरा लीधा, वहेरा फिर पाछा दीधा। करी सगाई ने लीया दाम, कन्या वेची पुरी हाम ॥ ३॥ सखरे लगन सावो थपवावे, घर सारु विल जान बुलावे, वींद वीट रो आयो

सुधरे थांरो मांनखो॥ पा० २॥ तप विना नहीं मोच्च मिलत हैं, नष्ट करें कर्म वितानको॥ पा० ३॥ देखो भाव शिरोमण शुद्ध परणांमे, मरू देव्या भरत राजानको ॥ पा० ४॥ जीव अजीव पुन्य पाप वतायो, कीयो आश्रव संवर पिछानको॥ पा० ५॥ निर्जरा वंध किय मोच दिखायो, शासन वतायो वर्धमानको॥ पा० ६॥ रामचन्द्र कहें सतगुरू सचा, नाश करयोरे अज्ञानको॥ पा० ७॥

इति उपरेशो सन्माय ममाप्तम् चिक्

दुख हुं सहु, सोकरो सहु तुं कार । साठ वरसां रो मिलीयो डोकरो, क्यों कर काढुं जमवार ॥ ६ सां० ॥ वृढ़ो तो माता बैठो रहें, वालक पण मर जाय। उगारी कैवत तो ना कोइ करे: इस्रुरी निन्दा लोकां में थाय ॥ ७सां० ॥ घोवला **ञ्राया ने केस पड गया गुगला, गया जवाडा** वेस । गरदन तो माता डिग डिग करे. आंख्यां गइ मांहे पैस ॥ = सां॰ दोहाः—सेठजी श्रायो परगावा.ले साथे परिवार । ञ्रागल वोले जांगड्या, गावे गीत रसाल ॥१॥ त्रायने उतरचा वागमे, हुई जीमनरी रींक। सखी सहेली मन चिन्तवे, चालो देखनने बीन्द ॥ २ ॥ नांक भारे लाला पड़े, नहीं छै आख्यामे जोस। कर्म पातला वीन्टगी तणा, किनने टीजे दोष ॥ ३ ॥ ढाल०३ (चौपइनी) वुढो वीन्द पराणीजन आवे, घोडे चढीयो नाड़ हलावे। दाढ़ी मुखारे कलप लगावे, आगला दांत निजर नही आवे र्थर श्रीजैन स्तवन विलास । जो भाई, तीजो भोजग चौथो नाई ॥

(ढाल०२) महलां चैठी रागी कमला (एदेशी०) चेटी कहे माता तुमे सांभ सुनज्यो म्हारी वात। रुपयांरो लालच थे देखें

देस्यो म्हने बूढ़ारे हाथ ॥ १ ॥ सांभल है । माता, अवला वेटी रो जोरज को नहीं० ॥ । करायो हे माता म्हारी, मुगता गिसायो द

आतो खरची थोड़ा कालरी, क्युं 🐙 चर थारो काम ॥ २ सां० ॥ माल ले मोटीयार बापजी, मरोड़ राखे मोरी माय । रूपयां

बापजा, मराड़ राख मारा माय। रूपया लालच हुवे घगो, तो परदेसां क्युं नहीं हैं ॥ ३ सां॰ ॥ मोटी हुवे घरमें डावड़ी, अवर नड़ीयो भरतार। उनरो तो जीवड़ो रहे हैं मोटो होय जासी दिन चार ॥४ सां० ॥ इस्

माटा हाय जासा । दन चार ॥४ साठ ॥ २ व बरसां री माता हावड़ी, साठ बरसां री फास । उग्ररो तो जीवड़ो रहे सोच में, नि रंडापारी श्रास-॥ ५ सां०॥ सासु सुसरा जावो घिरत ने वाटी, थांने देखने नित में कूटूँ छाती ॥ १ ॥ तूं तो वोले मूढा माहे सुं झांटो, थारा पाडुंली चोफरा चारं दांनो तूंतो रहें रहे रे बढ़ा कांड़ी, थारा शिर सुं फोड़ुंली हांड़ी ॥ २॥ ढाल० ६॥ वीर सुनो मोरी वीनती० ( एदेशी० ) साध नगरीमे त्रावीया, हु दरशन नवी जायो जी। आठ पहर दिन रात रो, महने धर्म नवी सुहायो जी ॥ १ ॥ पाप उद्दे तुं नारी मिली० ॥ के मैं तलाव फोड़ावीया, के में वाग लगायाजी, आठ पहर दिन रातरा, काचा फल तोड़ीने खाया जी ॥ २ पा० ॥ माखी इली ने श्रवसीया, बट गिड़ोबी घायो जी। ऊंदर विज्ञी सुं मरावीया, विलामे ऊनाः पाणी रेडायो जी ॥ ३ पा० ॥ ( दोहा ) हाथ जोड़ी नारी कहें सांभल कन्त विचार । पूरव पाप मैं किया तुं मिलीयो भरतार,॥ १॥ ( ढाल० ६ ) हिव राखी पटमावती ( एदेशी०.) के में साध सन्तावीया;

॥ १ ॥ देखें आयने लोक लुगाई, हीरासीवेटीने चाख लगाई, बीन्दगी वरने देखगा आई, वरने देखी मुरछा गति पाई ॥२॥ कन्याने हथलेवो दिरायो, वीन्द्रणी वेह सुं भचेड़ो खायो । देखी वरने क्रुटे छाती, भलो लायो छे वाह वाह भंड़ो हाथी ॥ ३ ॥ सेठ परणी ने घर ले जावे, लोक **जुगांई देखन आवे। सेठजी कीवी थे सखरी** कमाई, बहु गुणवन्ती आई लुगाई ॥ ४॥ दोहा:-वलतो सेठजी इम कहे, सांभल सुल-चणी नारमध्यरमें धन छे ऋति घणा, लाहो लो इणवार १ ॥ ए मन्दिर ए मालीया, सुख भोगवो संसार। पूरव पुराय पूरो कीयो, मो सरीखो मिलीयो भरतार ॥ २॥ कामन अन बोली रही, मनमें आणी राग। थां सरीखी जोड़ी मिली, फूटो म्हारो भाग ३॥ (ढाल० ४) पास जिनेसर पुरण आसा (एदेशी) में तो मुगती माया खाटी, थे तो खावो घीने बाटी, चुल्हा में

र्।। लांबी कॅ।चली ने रातो। वेश, भूंडो दीससी थारो वेश । नहीं डहं लि हु करती भाइ, हुंतो परणी जदरी राँड़ ॥ ३ ॥ कूडा खेख खिख्या करतार, तूं तो जोडी नहीं छें भरतार। पिता साइना दोसो आप, में पुरव ले भर्व क़ीयो पाप ॥ १८ ॥ सेठजी आ । सुग्री सही, रांडु बात म्हाने इसडी कही। कलहे-कारी कजीयेरो मूल, धोला मांहे पड़सी महारे पूड़ ॥ ५ ॥ छाती मांहे धमीड़ो लीयो, परणने कामज खोटो कियो। दुखड़ो कहुं किन आगे जाय, नहीं दीसे घरे वाप ने माय ॥ ६ ॥ दोहाः नात सुणी नारी तणी, ऊठी मनमें **फ़ाल । बुढ़ापारों परणवो, हुवो जमारो** खराव ॥ १॥ (ढाल = जत्तनी छे०) सेट सासुरे पासे ष्ट्रायो, माहे मुजरो कहिवायो। पाछी साम् ष्प्राशीस केहवाई, दीधी तिहां गादी. विछोई ॥१॥ सेठ सासुने त्र्रोलुम्भो कहावे, थांरी बेटीनें

के मैं महा सतीयां सन्ताई । के मैं कुड़ा कलङ्क दीया, के मैं विरोध घलाई ॥ १ वात सुनो कन्त

पाछली० कन्द मूल मैं खाया घना, घरमें दव दीधा। सूंस लोया वीतरागना, कुड़ा कोलज कीधा ॥ २ वा० ॥ के मैं श्रंडाफोड्या घर्णा, माला पंलीना गिराया। केई लीला रुंख वढाईया, वनमें दव लगाया ॥ ३ वा० ॥ कामन टुंमन में कीया, काचा गर्भ गलाया, के जीवाणी ढोल्या घणा, बाल विद्योडा दिराया ॥ ४ वा० ॥ धर्म नेम कीधो नहीं, बहुलो पाप कमायो । पाछला पापरे उदै, बृढो वर मै पायो ॥ वा० ५ ॥ (ढाल ७ जन्ननी देशीमे ) धनीज बोले छै ,कर जोड़, हुं थारा माथारो-मोड़ । शिखर वन्ध देहरो, ज्युं थारा शिर रो सेहरो । भृखाने भोजन आधार, जीसो नारी ने भरतार ॥१॥ पहरो स्रोड़ो सब श्वंगार, मुख उजलो सुहागगा नार। म्हने मत कररे तुं भांड़, मो मूवा होय जासी रांड ॥

दे धको देने नाखी खाडमें रे, म्हारा गिगाया थे दाम ॥ १ ॥ ( पुरीतो न पड़सी हो बेट्यांरा दाम सुं०) थांरी तो बेची बाबा हुं विक गईरे, हुंतो अवला गाय। डर नहीं राख्यो तुमे लोकी-करोरे; हीयो कठोर छै मोरी माय ॥ २ पुरी० ॥ रूपीया मीठा कदे नहीं आंगाज्यों जी, जैसो सोमल जहर । इस भव हूं हुं थांरी डीकरी जी, काट्यो प्रवला भव बैर ॥ ३ प्री० ॥ रोट्यां तो खावो दिन दश गल गलीजी, माथे मुंजनी पाग, महै म्हारे पुठा सीधावसांजी, मत धरो हवे मन वैराग ॥ ४ पूरी० ॥ (ढाल १०) मह-ला में बैठी राखी कमलावती एदेशी०) घाप कहें बेटी सुनो, बोलो नी बोल विचार। दोरी तो पाली महें मोटी करी, दुख देख्या तिखवार॥ १॥ गुण गावो हे बेटी बापरा० ॥ वारे वर्षा रो हुं वर लावतो, वह परदेशां उठ जाय । सासु ने सुसर दगधावता, कुढ़नो करती थांरी

समभावो ॥ वोले मूढ़ा मांहे सुं बांकी, म्हाने कहेरे बुढ़ा डाकी ॥ २॥ विना बुलाई पीहर-जावे, मन माने तो घरमें आवे। दिन चढ़ीयां अवेरी ऊठे, अग्रा सोमो अनाज कुटे ॥३॥ के तो रांधे खीच ऋलुगो, के धोबो भर घाले लुएो। रोट्यां पुरसती करे तडका भड़का, पाछो बोलुं तो मोडे कड़का ॥ ४ ॥ पाणी मांग्रु तो पटके सोटो, पाछो बोलुं तो ले टौड़े सोटो। साता कहे सुन हे बेटी, इसड़ी किम हुवे तुं भेठी ॥ ५ ॥ माता हुं थारा घरमें ब्राई, तें तो रुपैया सुं चितलाई। तें तो सङ्का राखी नहीं कांई, म्हने बढ़ाने परणाई ॥ ६ ॥ म्हारा मनसे घणो आईनो, परा तें तो आएयो दादारी साईनो । पीवें होको ने बोलीने हरडु, जाएँ जूत्यां इरारे घरडुं हे ७ ॥ ( डांस ६ कर्म परीचा करण कुमर चल्यीरे एदेशी) बेटी कहें पिताजी सांभलोरे, कीधो खोटो थे काम। म्हने

कपडा ते पहेरती, रहती लोकारे दास । कपड़ा ग्हीरेरे तुं सोमती, माजी म्हारे परसाद ॥ २ वे० ॥ पगमें न हुन्ती पोलड़ी, नहीं हु ती विछी-या पास । तौडा घड़ाया थे वाजणा, मैं परी थारी आसः॥ ३ वे०॥ तरकारी ने थे तरसता, नहीं कोई घाल तो राव। अब वावाजी जीमे रबड़ीं ते तो महारे परताब ॥ ४ वे० ॥ छाछ मांगन थे जावता, नहीं कोई घालतो छाछ। **अव धोली दुजे वारगो, माता म्हारे परसाद** ॥ प्रचे ।। भाई वाप विलखा हु ता, रहता लोकारे दास । अव मरोड में मावे नहीं, म्हारा रुपीया रो गुजास ॥ ६ वे० ॥ ( ढाल०: ११ जत्तनी देशी॰ ) बुढ्ला ने 'रीसज आवे, इसने लात्यां सं घमकावै । देखे आण लोक लगाई, नोरी तो निची धुन लगाई॥ १॥ बुरा होइ-ज्यो घररा नाई; तिनसुं इसड़ी कीधी सगाई। प्रवासव कीया पाप, इंग्राव्यर दीधी माय ने

माय ॥ २ गु० ॥ भूख गई ए वेटी धारा तन तणी, हसकर पुजी सुंगीर । पाछला पुराय उदै करी, आ मिलीयो छै थाने जोड़ ॥ ३ गु०॥ जो घरमें धन है अति घणो, इण धन<sup>्</sup>ने लागो लाय । आघो पाछो देख्यो नहीं, दीनो जन नम गमाय ॥ ४ गु० ॥ इसड़ो वेटी तुं क्युं कहे, धनसुं पुरी होसी तेरी हुंस, रुपयां री लालच मैं देख्या नहीं, वाई थारे गलांरो सृंस ॥५ ग्र०॥ मनमें, तो हुंस होती घणी. कर दीधी नी-रास । इन्दुं न्यूं पिता दुख देखसुं, त्युं त्युं देसुं दुरास ॥ ६ गु० ॥ । दोहाः माय कहे वेटी सुनो, बोलो बोल विचार । बाबा साहमी तुं बोलती, लाज नहीं छे लिगार ॥ १॥ ( ढाल १र कर सन ्छुटेरे . प्राणीयां ःएदेशी० ः) म्हारा रुपीयां माजी लेइने, घाल्या छै पेटी मांही, आगे भुखज काढता । अव रोट्यां ताजी खाय ॥ १ ॥ वेटी कहे माता सांभलो० ॥ फाटा

वर नही लायो, हीरा रेगल पत्थर लगायो। **भोरां रे बर साहमी जोऊं, उठी सबेरे माजी** ' ने रोऊं ॥ ६ ॥ ( ढाल० १२ सुग्रुण सोभागी हो साहिब म्हारा एदेशी०) हाथ जोड़ी ने हुं कहुं कन्त ने, सांभल चतुर सुजान। सोभागी०। संसार दीसे छै सह कारीमो, सुनो धर्मनी वाण ॥ सो० काज सुधारो हो श्रीतम परलोक नो०॥ १॥ सामायक प्रतिक-मणो पोसो श्रादरो, नव तत्व सुं लावो प्रेम। सो०। श्रावक रा व्रत पालो मन सुधे, ची-सारो चौनदह नेम ॥ सो० २ का०॥ शील वत त्रापां दे।तुं ऋादरां, थे ते। ऊमर पाई भरपूर ॥ सो० ॥ हीयो तो सरावो हो प्रीतम म्हारो, तस्या वय में सूर ॥ सो० ३ का०॥ पृथ्वी पाणी तेऊ कायमे, बाऊ वनस्पति माय । सो०। नर्क नीगोदे हो श्रापां उपन्या, बार श्रनन्ती श्राय ॥ सो० ४ का० ॥ मरण सिराणे हो

६२

वाप ॥ २॥ मैं तो खोटी करी कमाई, जारे बुढ़ा लाऐ छाई। म्हारी जोड़ी रा मांगन आ-वता, फिर फिर ने पाछा जावता ॥ ३ ॥ तुं भागमें कठा सुं त्रायो, तोसुं हथलेवो जु-ड़ायो। कन्त वाणी सुनी तिसुलो चढ़ायो, आंख्या में पिए लाली लायो ॥ ४ ॥ नीकल रे तुं म्हारे घरसुं वाहर, फिर परणसुंजी दुजी नार। थें तो अकल कठे गमाई, तुं तो ल्यावे खे दूजी लुगाई ॥ ५ ॥ थारी साठी में बुद्ध नाठी, हुंतो आगली कुटूं छाती, महे थाने दोनुं मिल-कर रोस्यां, थारा मृहा सांमो क्यों कर जोस्यां ॥ ६ ॥ बाबा रुपयां सुंचित लायो, श्रापरा कुलने कालो लगायो। जब श्रे रुपया पूरा पड़ जासी, वावाजी कॉई भाठा खासी॥७॥ रूपीयां सेती:खोलो:भरीयो, परमेश्वर सुं नहीं डरीयो। बाबा ऋगिला भवरो दीसे नाई, म्हारा जनमं ने चाख लगाई ॥ 🗕 ॥ जोड़ी रो

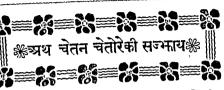
लीया, साल्या छे छाति माहोजी। एक दुखरे चेटी माय तगो, जनम ऊरण नवी थायो जी ॥ ३ मा०॥ (ढाल० यत्तरी) वेटी चेना कहें सुण चाई, चिन्ता मत कर तुं वाई, वावल रुपीया रो चित ल्यावे, नरे बृढ़ा ने परमावे ॥ म्हारा चावल आगे जोर न हाले, बेटी रो कहा। न चाले । वावो कोट्याने परणावे, वेटी नाकां सल नहीं लावे॥ बाबे चोरंग्या नें दीधा, बेटी कारो कुरा नहीं कीषा। वलनी चोले छोटी चाई. चीन्ता किया गरज न कांई॥ सखी सहेल्यां हथाई जोड़े, म्हने देखी मुह मचकौड़े । चर-नो नाम लीया हुं लाजुं, सखी सहेल्यां में चोल न गार्जुं॥ ( ढाल॰ जगत गुरु त्रि॰) चीरो कहे वेनड सुनो हे, एकज म्हारी वात । मात पिता हलकि कहता जि, लाजे घ्यापिश जात ॥ (हे वेनड़ मनरो रीस निवार०) श्रापां दोनुं उपनारे, मातारे ,गरभज ग्राय । माता प्रीतम श्रावीयो, तीन पीछे पड़ी विर माय। सो० ममता मृको हो इन संसारनी, काम भोग हो छटकाय ॥ सो० ५ का०-॥ (ढाल० १३ सुख कारण भवियन समरो श्री नवकार एदेशी०) माता कहे सुन बेटी, मत करो इयां सो बाद। इयांरा हुकम में रहिने, चलवो दिनने रात ॥१॥

इयारा हुकम म राहन; चलवा दिनन रात ॥१॥ चालक ने परनीयो, सो तो करगयो काल । बूहा ने परनियो, हालरियो हुलराय ,॥,२ ॥ माजी सुग्रज्यो, धरज्यो मनमें राग । थांरो तो कुछ

नहीं विगड्यो, बेटीरा पत्ला भाग ॥ २ ॥ (ढाल० १४ अरणकारी छैं) नंव महीना लग भार हुं मुई, दुंख देख्या तिण्वारंजी । तातो शीलो बेटी खायने, गर्भ कियो प्रतिपाल जी॥ २ ॥ मां सुं बेटी उरण को नहीं सील, बोदरी तोने नीसरी, पड़दे सेई सुवाय, जी

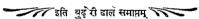
<sup>-</sup>त्र्यहिलै जनम वीरा खोऊ' रे। थे सगलां एको मतो कीयो, किए किएने वीरा रोऊ'रे ॥ स्वा० ६॥ ( ढाल० काया री वाडी कारमी एदेशी०) भाभी कहे नखदल सुनो, एकज म्हारी बात । बृढारे लारे जावता, हुकम करे दिन रात ॥ नणदल वाई सांभलो नित नवा वस्त्र पहरो, नित नवला करो शृंगार, कमी नहीं किण्वातरी, लोपे नहीं थांरी कार॥नं० २॥ सौ वर्ष पुरा हुसि, रहसि थाहरो राज। धन माल रहसी मोकलो, बैठी व्योर ज्यौँ व्याज॥ न०३॥ ( ढाल० वैराखी मुनी बाह्मणि एदेशी०) नणदल कहे भाभि सुनो, मोने मत करो भांड, हो थाहरि जागा रो कोई नहीं, मोने चाह ॥ (हो भाभि करम तिश प्रापत पाइये) वलट हुवे जे दुवला, कांधो न नाखे कोई हो। कन्या मुखिथ ना कहै, वर लावो म्हारे जोइ हो ॥ भा० २॥ कोई जिमे

दुख देख्या घणाजी, कह्या कठा लग जाय ॥ हे वे० २ ॥ लोकांने कह्या सुख्यारे, मत तोडी जे तान, हुं भाई तुं वहनडी रे, म्हारी कह्यो तुं मान हे ।। वे० ३ ॥ (ढाल०) चेनड़ कहे वीरा सांभलो, बोलो बोल विचारो रे। जे बहनड हुंती नहीं, तो रहता अकन कवारी रे ॥ (स्वारथ रातो वीरा सो सगा० १) श्रेही मां उही वाप जी, तुही बड़ो मांहरो भाई रे, खावण नें मिली रोटड़ी, ऋाख्यां गुदी पाछे ब्राई रे ॥ खा० २ ॥ भाभी मुंड़े बोले नहीं, देखी मुह मचकोड़े रे। हाव भाव जठे हो रह्या, ऊलटी काड़े म्हारी खोड्या रे॥ खा०३॥ नणदोई जीमन आवीयो, मुंहै पड़े लालो रे । लुगाईयां ने भेली करे, देखो बाईरो भरतारो रे ॥स्वा४॥ हुं वालक म्हारी त्रवस्था, भर जोवन में सारोरे। स्पीयांरो लालच देखीयो, किम काटुं जमवारोरे ॥ स्वा० ५ ॥ मनुष जनम मै पाइयो,



चेतन चेतोरे दशवोल जगतमें मुश्कल मिली यारे चेतन चेतो रे ॥टेर॥ चतुर गतिमें गैद दड़ी, जिम गोता वहुला खायारे। दुलर्भ लाधो मनुष्य जमारो, गुरु समजावे रे॥ चेतन ॥१॥ आरम्भ परिव्रह मांही खुतो, साघुजीना गुण तूं भुल्योरे । तन धन जोवन मांहे रच्यो, गर्भमें फुल्योरे ॥ चेतन ॥ २ ॥ स्वार्थ केरा ए प्यारा, सवही के , मन भावे रे। निज केरी तो कर्म कमाई, ते संग जावे रे ॥ चतन ॥ ३ ॥ घेवर चोरया घरका खांघा, कुटांगो कदोइ रे । आपगा किया आप भोगवे, इम लो जोइरे ॥ चेतन ॥ ४ ॥ धन जबु जब सुख वेदता, छती रिद्ध छिटकाइ रे। करणी कर गंजसुकुमाल मुनीश्वर, मुक्ति पाई

लाडुवा, कोई लुखा वाकस खाय हो, पेलाश मुख देखने, मुर्ख भारे मन मांही हो ॥ भा० ३॥ ( ढाल० जत्तीनी छै ) वेटी थारा माथा रो मोड़ो, तो ने इन विन किसड़ि ठोडो, इन सहागण पणा सुं धाई, सामाइक करस्रं सदाई ॥ १॥ नव तत्व सदा मन धरसुं, तेपस्या ने पोसो करसुं। घर सारु दानज देसुं, मन मान्यो कारज करसुं ॥ २ ॥ सम्बत् अठार छत्तीसो त्राणी. मोगसर विल मास वखाणी। चन्द फकीर ए वखाणी, सुनज्यो कलजुग नीसाणी॥३॥









गोचरी हं वारी, न मिले सुजतो आहार हु वारी लाल ॥ मूल न लिजे श्रमुजतो हु वारी पिजर हुय गयो गातरे हूं वारी लाल ॥ इं०॥ २॥ हरी पुछे श्री नेमने हुंवारी, मुनिवर सहेंस अठारों हं वारी लाल ॥ उरकृष्टो कुण एहमें हुं वारी, मुजने कहो किरताररे हुं वारी लाल ॥ ढं ।। ३ ॥ ढढण अधिको टाखीयो हु वारी, श्रीमुख नेम जिएांदरे हु वारी लाल ॥ कृष्ण उमाद्यो वांदवा ह वारी, धन जादव कुलचन्द रे हुं वारी लाल ॥ ढं० ॥ ४ ॥ गलियारे मुनिवर मिल्या हु वारी, वांच कृष्ण नरेसरे हू वारी जाल ॥ कोइक गाथापती देखने हु वारी, उपनो भाव विशेष रे हूं वारी लाल ॥ डढरा० ॥ ५ ॥ मुज घर आवो साधुजी हू वारी, वहिरो मोदिक सार रे हं वारी लाल ॥ वेहेरीने पाछा फिरचा ह वारी, आया प्रभुजीने पासरे हूं वारी लाल ॥ ढं० ॥ ६ ॥ मुज लभधे मोदक मिल्या

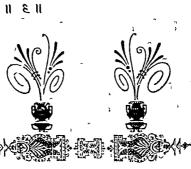
रे ॥ चेतन ॥ ५ ॥ धर्म जहाज निरञ्जन गुरुजी चढाया, सुकृत जो जो रे। अविचल सुखारी सेल दिखावे, फिर क्यों चुके रे ॥ चेतन ॥ ६ ॥ काम भोग पुद्गल तृष्णा से, ममता भाव मिटावो रे। मगन कहे धन मोटा मुनीश्वर, इम फर-मावे रे ॥ चेतन चेतोरे दश बोल जगतमें मुश्कल मिलीया रे ॥ ७ ॥

्रिःश्किश्ची:इति चेतन चेतरीकी सञ्भाय सम्पूर्णम्**श्रीर्स्** 

ढंढण मुनीकी सज्भाय लिख्यते क्रिक्यते क्रिक्यते क्रिक्टिंग स्वजीने वन्द्रणा हु:वारी, उत्कृष्टो

ढढँग रिखजीने चन्दगा हूं वारी, उत्कृष्टा ऋगगार रे हूं वारी लाल ॥ ऋवियह कीधी एहवो हूं वारी, लभधे लेशु ऋाहार रे हु वारी लाल ॥ ढं०॥ १॥ दिन प्रते जावे 🎇 रे जीव जिन धर्म कीजिये 🖇 जीव जिन धर्म किजीये, धर्मता चार प्रकार ॥ ान शील तप भावना, जग मांहे ए तसार ॥ रे॰ १॥ वर्ष दिवसने पारगो. ो त्रादेसर त्राहार ॥ इन्ट्ररस प्रतिलाभियो ी श्रे अंस कुमार रे० २ ॥ गजभव सशीलो खीयो, कीधी करुणा सार॥ श्रीणिक नृप ांपा पोल उघाडीयो, चालगी काढ्यो नीर ॥ ाती ए सुभद्रा जस थयो, तिण्रो शोत्न सधीर ॥ रे० ४ ॥ तपकरी काया राोखवी, ऋरस निरस ो **फ्राहार ॥ वीर जिएांट बखाणियो, धन** भन्नो प्रणगार ॥ रे॰ ५ ॥ अनत भावना भावतां, परता निर्मल ध्यान ॥ भरत आरिसा भवनमें · ७२ श्रीजैन स्तवन विलास।

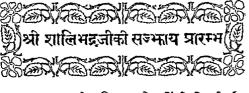
हुं वारी, मुजने कहो किरपालरे हूं वारी लाल ॥ लभध नहीं ह्रो वच्छ ताह्यरी हूं वारी,. श्रीपति लभध निहालरे हुं वारी लाल ॥ ढं०॥ ७॥ तो मुजने कलपे नहीं हुंवारी, चाल्या परठण ठोररे हुं वारी लाल ॥ इन्द्र निहाले जायने हुं वारी ॥ चूरया करम कठोररे हु वारी लाल ॥ ढं० ॥ हा त्र्याई सुधी भावना हु<sup>ँ</sup>वारी, उपनो केवल<sup>्ह्</sup>ान रे हुंवारी लाल॥ डंडण रिख मुक्ते गया हुं वारी, कहे जिनहर्ष सुजागारे हुं वारी लाल ॥ ६॥



से संसार ॥ सो० ॥ २ ॥ गोभद्रशेठ तिहां पूरवे जी रे, नित नित नवला रे भोग ॥करे सुभद्रा **ओवारणा जी रे, सेव कर बहु लोग ॥ सो०** ॥३॥ एक दिन श्रे णिक राजियों जी रें, जोवा आव्यो रे रूप ॥ शंग देखी सकीमलां जी रे, थयो मन हरपित सूप ॥ सोनाशा बच्छ वैरागी चिंतवे जी रे, मुज शिर श्रे णिक राय ॥ प्रव पुरायमें निव कियां जी रे, तप आदरश माय ॥ सो० ॥५॥ इसे अवसरें श्रीजिनवरू जो रे, भाव्या नयरी उद्यान ॥ शालिभद्र मन ऊज म्यो जी रे, वांद्या प्रभुजीना पाय ॥ सो० ॥ ६ ॥ वीरतगी वागी सुगी जी रे, वृठो मेह अकाल, एकेक दिन परिहरें जी रें, जिम जल छंडे पाल ॥ सो० ॥७॥ माता देखी टलवले जी रे. माछलडी विण नीर॥ नारी सघली पाये पडे जी रे, मम छडो साहस धीर ॥ सो०॥ 🕳 ॥ वहुअर सचली वीनवे जी रे, सांभल सासु

पाया केवल ज्ञान ॥ रे० ६ ॥ एह धर्म सुरतरू समो, एहनी सीतल छांय ॥ समय सुंदर कहें सेवतां, मोच तणा फल पाय ॥ रे० ७ ॥

∰क्रिक्टें जीव जिन घर्म कीजियेकी सम्माय सम्पूर्णम्ब्र्युं∰क्रि



॥ प्रथम गोवालिया तसे भवें जी रे, दीर्घु मुनिवर दान ॥ नयरी राज रही अवतरयो जी रे, रूपें मयस समान ॥ सोभागी रे ॥ शालि-भद्र भोगी रे होय ॥ १ ॥ ए आंकसी ॥ बत्रीश लक्षस सुसे भरयो जी रे, परस्यो बत्रीश नार ॥ माससने भवें देवनां जी रे, सुख विल

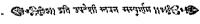
जो रे, गेला ऊठ अवीह ॥ सो० १५॥ काल : आहेड़ी नित भमें जी रे, पूंठे म जोईश वाट ॥ नारी बन्धन दोरडी जी रे, धव धव छंडे निराश ॥ सो० १६ ॥ जिम धीवर निम 🔻 🖷 । छुलो जी रे, धीवरें नाख्यो रे जाल ॥ पुरुष पड़ी जिम माछलो जी रे, तिमहि अचिंत्यो काल ॥ सो० १७॥ जोवन भर विहु निसरचा र्जी रे, पहोता वीरजीनी पास ॥ दीचा लीधी रूग्रहो जी रें.पाले मन उल्लास ॥ सो०॥ १८ मास खमणने पारणे जी रे, पृछे श्री जिनराज ॥ अमने शुद्धज गोचरी जी रे, लाभ देशे कुण आज ॥ सो० १६ ॥ माता हाथें पारएं जी रे, आशे तुमने रे आज॥ वीर वचन निश्चय करी जी रे, ब्राट्या नगरी मांज ॥सो० २०॥ घरे ब्राट्या निव श्रोलख्या जी रे, फरिया नगरी मफार॥ मारग जातां महिया रड़ी जी रे। सामी मंति तेशि वार ॥ सो० ॥ मुनि देखी मन उल्लस्यं

श्रीजैन स्तवन विलास 🖰 🧬 9Ę , वेचार ॥ सर छांडी पालें चड्यो जी रे, हंसलो कडण हार ॥ सो० । ६ ॥ इ**ण** अवसर तिर्हा गवतां₃जी रो, धना शिर ऋांसु पड़ंत ॥ कवण दुःख तुमः सांभल्युं जी रे, ऊंचुं जोइ कहत । सो० ॥ १००॥ चन्द्रमुखी सृगतोचनी जी रें , वोलावी भरतार ॥ बंधव वात में सांभली जी र<sup>े</sup>, नारीनो परिहार ॥ सो**ं**॥ ′११ धनो भगो सुण गेलड़ी जी रे, शालिभद्र,पुरो गमार ॥ जो मन **छाएयं छंडवा जी**री, विलंब<sub>े</sub>न कीजे लगार ॥ सो०१२॥ कर जोड़ी कहे कामिनी जी रे, वंधव समो नहीं कोय॥ कहेतां वातज सोहली जी रे, मूकतां दोहली होय ॥ सो० १३ ॥ जारे जा ते इम कह्यो जी रे, तो में छांडी रे ब्राठ॥ पिउड़ामे हसतां कहाूं जी रे, कुण्शुं करशुं वात ॥ सो०१४॥ इसो वचने धनो निसरचो जी रे, जासी पचायग सिंह॥ जइ सालाने साद करची

साधु वांटी करी जी रे, पुत्र जोवे निज मात ॥ सो० ॥ २८ ॥ जोई सघली परपदा जी री, नवि दीठा दोय अग्गार ॥कर जोड़ी करे विनति जी रे, मांखे श्रीजिनराज ॥ सो० ॥ **२६ ॥ वेंमारगिरि** जाइ चड्या जी रे, मुनि दर्शन ऊमंग ॥ सह परिवारें परवरचा जी रें; पहोता गिरिव-रश्च ग ॥ सो० ॥ ३० ॥ दोय मुनि अणसण उच्चरी जी रे, भीले ध्यान मभार॥ मृनि देखी विजला थया जी रे, नयणें नीर श्रपार ॥ सो०॥ ३१॥ गदगद शब्दें बोलती जी रे, मली बन्नीशे नार ॥ पिउड़ा बोलो बोलड़ा जी रे, जिस सुख पामे चित्त ॥ सो०॥ ३२ ॥ अमे तो अवगुणे भरचां जी रे, तूं सही गुण भं-ड़ार ॥ मुनिवर ध्यान चूका नहीं जी रे, तेहने, पचर्ने लगार ॥ सो० ॥ ३३ ॥ वीरा नयर्गे नि-हालीयें जी रे, जिम मन थाये प्रमोद ॥ नयग उघाडी जाेड्रयें जी रे, माता पामे मोद ॥

जी रे, विकलित थड़ तस देह ॥ मस्तक गो-रस सूजतो जी रे, पड़िलाभ्यो धरि नेह। सो०॥ २२॥ मुनिवर वोहोरी चालीया जी रे त्र्याच्या श्रीजिनपास ॥ मुनि संश्य जइ पृहियो जी रे, माय न दीधुं दान ॥ सो० ॥ २३ ॥ वीर कहे तुमें साभलो जी रे, गोरस वोहोरचे रे जेह ॥ मारग मली महियारड़ी जी रे, पूर जन्म माय एह ॥ सो ॥ २४ ॥ पुरव भव जिन मुखें लही जी रे, एकत्र भावे रे दोय ॥ आहा करी मुनि धारियो जीरे, अर्यासण शुद्धज होय । सो० ॥ २५ ॥ जिन आदेश लही करी जी रें, चढिया गिरि वैभार ॥ शिला ऊपर जइ करी जी रे, दोय मुनि श्रगसिण धार ॥ सो०॥ २६॥ माता भद्रा संचरथां जी र**े,** साथें बहु परिवार ॥ अंतेउर पुत्रज तसो जी रे, लीधी

सघलो साथ ॥ सो०॥ २७॥ समय सर्गो अ।वी करी जी रे, वांद्या वीर जगतात ॥ सक्त २ ॥ गुणका प्राहक कोड नहीं, अवगुणका माहक हेर । खोटे खरेका परख नहीं है.. एही. बड़ा अंधेर रे॥ मे० ३॥ इस जगमे कोई नहीं तेरा, तुं भी किसीका नांही। अपनी वाजी हारी तेने, गोलमालके मांही रे॥ मे० ४॥ चेत सके तो चेत मुसाफर, अभी तो कुछ नही विगड़ा। खरची पल्ले बांधी प्यारे, मिट कर्म-का अगड़ा रे॥ मे० ५॥ लोभ लहरकी नहर कहरमें, सव टुनिया दुःख पावे। सीधा रास्ताः दीसे नांही, उजड़ मार्ग जावे रे॥ मे० ६॥ श्री सुमतिनाथ जिनराज प्रमुका, मेने लिया शरणा । इन्द्र चन्ट्रका कहे अबीरा,ध्यान प्रभ का करणा रे॥ मे० ७॥





सो०॥ ३४॥ शालिभद्र माता मोहने जी रे, पोहोता अमर विमान॥ महाविदेहे सीजशे, जी रे, पामी केवलज्ञान॥ सो०॥ ३५॥ धनो धर्मी मुक्ते गयो जी रे, पामी शुक्क ध्यान॥

जे,नर नारी गावशे जी रे, समयसुँदरनी वाण ॥ सो० ॥ ३६ ॥

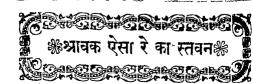
इति श्री शालभद्रजी की सन्भाय सम्पूर्णम 👉

मेरा पाणी जीवड़ा क्यों न भजे जिनराजरे ॥ एटेर ॥ क्या ले आया क्या ले जायगा, सो मूर्ख नहीं बुक्ते। बांधे आया खोले जायगा, इंह सुमकुं नहीं सुजे रे ॥ मे० १॥ बीतराग तो देव न जाएयां, सूर्धा साध न मान्या। केवली भाषत धर्म न धारबो, फिरे तुं खांचा ताए। रे ॥ मे० घात थापण मृषा नहीं करे बुराई रे, ॥ श्रा०॥ ५ ॥ रात्रि भोजन त्याग आवश्यक, सायंकाल को करता रे, स्तवन सजाय वस्तु स्वरूप, ध्यान उर धरता रे ॥ श्रा० ॥ ६ ॥ गुरू पधार्या मयुर मेघवत्. प्रसन्न मन हो जावे रे, दुग्धमे घृत फुल गन्ध, ज्यं चरणां चित्तलावे रे, ॥ श्रा० ॥ ७॥ परोपकारी पर गुराधाही, देवे चारे तीर्थ ने साता रे, वह श्रावक कर सात आठ भव, मक्ति पाता रे॥ श्रा० ॥ ८॥ सम्वत उन्नीसे छीयोत्तर अलवरमें जट आया रे. ग्ररू प्रसादे चौथमल, श्रावक ग्रण गाया रे. ॥ अ॥ ०॥ ६॥









श्रावक ऐसा रे २ जांका हृदय स्फटिक

रत्न हो जैसा रे ॥ श्रा० ॥ टेर ॥ सम्यकत रत्न जतनकर राखे, जिन वेशामें राचे रे, बारह वतका धारी, साज सुर को नहीं वंच्छे रे ॥श्रा०१॥ प्रातःकाल प्रमाद टाल, करे सामायिक शुङ भावे रे, पंच परमेष्टी स्मरण कर, ब्रावश्यक ठावे रे ॥ श्रा० ॥ २॥ स्तुति संगत्न किया वाट, फेर मनोरथ नेम चितारे रे, दिवस उदय श्राज्ञा दे ग्ररूने, त्याग वधारे रे॥ श्रा० ॥ ३॥ श्रवण करे गुरू मुखसे सूत्र, विनयवंत हुल-साई रे, भागों बैठ कर भावे भावना, चित वित सुखदाई रे,॥ श्रा०॥ ४॥ कपट तजी नीति युक्त श्रावक जी करे कमाई रे, विश्वास-

स्त्री नो ऋवतारजी, तप करता माया पण कि-थी, कर्में न गीणी कारजी ॥ ६ ॥ गोसाले सं-गम ग्वांजें, कीथा उपसर्ग घोर जी, महावीर-जी ने चीस पड़ावी, कर्म सुं कीसा जोरजी ॥ งแ साठ सहस स्रुतने समकाले, लागे सवलो दुःखजी, सगरराय थयो मुर्खागति, कर्मनी नाशे स्खजी ॥ = ॥ वित संभूमि अति सुख मोग्र-वतो, पट खंड लील विलासजी, सातमी । नरक मांहे ले नाख्यो, कर्मनो किसी विश्वास जी ॥ E ॥ ब्रह्मदत्तः ने श्रांधो किधो, दीधा दुःख अ-पारजी, क्ररमति क्ररमति पडची प्रकारे, सा-तमी नरक मभार जी ॥ १०॥ इन्द्र वख्यान्यो रूप अनोपम, ते विनट्यो तत्कालजी, सात से वर्ष सही अति वेदना, सनतक्रमार कराल जी ॥ ११ ॥ कृष्णे कुण अवस्था पामी, दीठो द्वारका दाहजी, माता पिता पंण काढ़ी न सक्या, आप रह्यो वन मांहिजी ॥ १२ ॥ राखो रावण

कर्म थकी छूटे नहीं प्राणी, कर्म सकल हु:ख ख़ानजी, कर्म तगो वशी पडचो सहु, कर्म करे ते प्रमाणजी ॥ १ ॥ तीर्थंकर चक्रवर्ती अतुली वल, वासुदेव वलदेवजी, ते पण कर्म विटंच्या कहीए, कर्म सबल नित मेवजी॥ श मुक्ति भणी उट्या ते मृनीवर, ते परे चुका के इजी, सतीयां मांही पड्या दुःख बहुला, मत को पाप करे इजी ॥ ३ कुण कुण जीव वीटंट्या कर्मे, तेह तणा कहुं नामजी, कर्म विपाक घणा अति कडवा, धर्म करो अभिरामजी ॥ ४॥ **ब्रादी**श्वर ब्राहार न पाम्यो, वर्ष सीम कहवाइ जी, खाता पीता दान दियंता, मत करो को अंतराय जी॥ ५॥ मल्लीनाथ तीर्थंकर पांम्यो,

संम्बधःजी ॥१८॥ कृष्ण पिताने गुरू नेमीसर, द्वारिका रिख समृद्धी जी, ढंढण ऋषी ज्ञाहार न पाम्यो, पर्व कर्म, प्रसिद्ध जी ॥ २०॥ आद्र-क्रमार महंत मुनीश्वर, व्रत ,लीधो वैराग जी, श्रीमती नारी संगाते खबध्यो, एश्रे कर्म विपा-क जी ॥ २१ ॥ सैलक नाम अञ्चारज मोटो, राज पिंड थयो रुद्धजी, मद्य पान करी रहे सुतो, नहीं पडकमणो सुधजी ॥ २२ ॥ कमल प्रभ उत् सुत्र थकी थयो, सावद्या चारज्ज जी, तीर्थंकर ढलमे लग मारचा, ए देख्यो अचरज जी ॥ २३ ॥ नंद्खेण श्रीणिक नो वेटो, महा-बीर नो शिष्य जी, बारह वर्ष वेश्या सुं लुब-धो. कर्मनी बात श्रत्तख्य जी ॥ २४ ॥ भगवंत नो भागोज जमांली, वीर सुं किथी घेढ़जी, तीर्थंकरना वचन उथाप्या, हुवो जमाल सुर हेड़ जी ॥ २५ ॥ रजा साध विरोध ,उपन्यो, विगाठो पोढ़ श्रीर जो, भुव अनंत भमी दुःख

सबलः कहातो, हनव यह कीधाः दासः जी, त्रचमण लंकागढ़ लुटाणो, दश**िशर** देखा तास जी ॥ १३ ॥ दशरथ राय दियो देसोटो, राम रह्यो वनवास जी, वली वियोग पडयो सीताने, त्र्राठे पहर उदास जी॥ १४॥ चिर प्रतिपाल्यो चारित्र छोडी, लीधो व धव राजजी, कंडरीकने कर्म विट ट्यो, कोइ न : सर्यो काज जी। १९५॥ कोग्रीक कठी पंजर मांही दिथी, श्रोणीक अपणो आप जी, नरक गयो नाडी मारंतो, प्रगट्यो हिंसा पावजी ॥ १६॥ जसु अठारे सुकट वंध राजा, सेवकरे कर जोड़ जी, कोगीक थी वीहप्तो राय चेड़ो, कुप पड़यो बल छोड़ जी॥ १७॥ लुबध्यो मुंज मृखवली सुं, उज्जेगी-सुं रायजी, भीख मंगावी शुली दिघो, कुरनाट राय कहाय जीवा १८ ॥ *चा* चना पांच से साधुने देतो, जोंगी वटा थयो यंथ जी, अनारज देशःसुं∘ मंगल उपन्यो,∵जोगी ;वट

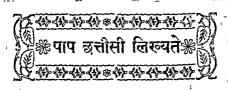
टी, बासपुज्य भी सुमती प्रसादे, लोक सुखी सहु कीय जी ॥ ३३ ॥ श्री जिनचन्द्र सूरी श्री जिनचन्द्र सूरी श्री जिनचन्द्र सूरी श्री जिनचन्द्र सूरी श्री जिन संघसूर, गच्छपति ग्रुग्य भरपूर जी, सिंधु जेसलमेरी श्रावक, खरतर गच्छ पंडुरजी ॥ ३४ ॥ सकलचन्ट सटग्रुरू सुपसाये, सोलेसह अद्र सिष्ट जी, कर्म छत्तीसी में किथी, पोप तथी सुट छठजी ॥ ३४ ॥ कर्म छत्तीसी कान सुणीने, करदो चृत पच्छाग्य जी, समय सुंदर कहे सिव सुखलय से, धर्म तथी प्रमाग्यजी ॥३६॥



ಇಇ सहती, दोष देख्याड़ो नीर जी ॥ २६ ॥ सीह सना घर्षुं समभावी, तोही न मुंक्या साल जी रूपीराय रूल्यो भवमांहे, भुंडे व्यांु हवाल जी ॥ २७ ॥ लख भव सीम<sup>ँ</sup> रूली, वली लखण क्कवचने वोल्या एम जी, तीर्थंकर पर पीड़ न जाणी, महे थने वारीयो केमजो ॥ २७ ॥ . मुड जाण मुकी वनमांहे, सुकुमालीका स्वरूप जी, सारथवाह घर घरणी कीधी, कर्मनी अकंल स्वरूप जी॥ २=॥ रोहीग्गी साध भग्गी वेह-राव्यो, कड़वो तुंबो तेड़ जी, भव अनंत भमी

चोगती में, कर्म न मृंके केड़जी॥ ३०॥ इस मृगांक खेखा मृगावती, समतानीक नी नारजी, कष्ट पड़ी कमलारति, सुंदर कहता न आवे पार जो ॥ ३१ ॥ कर्म विपाक सुग्री इस कड़वा, जीव करें जिन धर्म जी, जीव अच्छे कर्म तूं जी त्यो, पण हीच जीत्यो कर्म जी॥ ३२॥ श्री मुलतान नगर मृल नायक, पार्वनाथ जित्राय

भोगवीयां छुट, सथल वंध वांध्या जिके ते तो पर्गा भोगवीयां छुट ॥ ७॥ पृथ्वी,पाग्री अप्रना, वाय वनस्पति जीव, तेहनो आरंभ तूं करे,स्वाद लीधो सदीव ॥ = ॥ आधो बोलो बोबड़ो, मृगा पुत्र ज्युं देख, आंगो पांगे तेहने, मारे लोहनी मेख ॥ ६ ॥ बोले नहीं ते वापड़ो, पिए पीड़ा होय, तेहवी तिथैंकर कहे, श्राचारंगे जोय॥१०॥ आदो मूलो आद देय, कंदमूल विचित्र, अनंत जीव मृल अयमें, पनवना सूत्र ॥ ११ ॥ जीवने खाद मारचा जिहा. तेह मारसे तुक्त, भव मांहे भमता थका, थासे जिहां तिहां मुफ ॥ १२॥ जीभे फुठ बोल्या घणा, दीधा कुड़ा कलंक, गल जीभी थासे गले, हुसे मुंहड़ो त्रीवंक ॥ १३ ॥ पर धन चोरे लुटीयां, पारचो धसको पेट, भुखो भमें संसारमें, निर्धन थको नेठ ॥ १४ ॥ परली नी देह भोगवी, तुच्छ स्वाद त्ं लेयसी, नरके ताती पुतली, आलिं-



पाप त्र्यालोये तूं ञ्यापणा. शुद्ध ज्यातम शाख, श्राक्षोयां छुटीये, भगवंतने इन परीभाख ॥ १॥ साल हीये थी काइजे, जिम किथा तेम, दुःख देखोस नहीं तर घणा, रूपी लिखमना जेम ॥ २ ॥ वृद्ध गीतार्थ गुरू मिले, ज्ञात्मा शुद्ध कीध, तो आलोयन लिजीए, नहीं तर स्यृं लीध ॥ ३ ॥ अोछो अधिको दे जिको, पारका ले पाप, लेनहार छुटे नहीं, सामी लागे संताप ॥ ४ ॥ किथा तिमको कह नहीं, जीभ लड़थड़े फठ, कांटो भांगे ऋांग्रली, खोत्रीजे ष्ठांगुठ ॥ ५ ॥ गडर प्रवाही तुं मूकजे, दुपम काल दुरंत, आत्म साख आलोयजे, छेद अंथ कहंत ॥ ६ ॥ कर्म निकाचित्त जे किया, ते तो

वैरी विष दे मारीया, गले फासी टीध, ते तु-जने पर्गाः मारसेः, मुकसे वैर लीध ॥ २४ ॥ कोउ अंगीठी तें करी, थाप्यो सिगड़ी कुंड़, राते दीवो राखीयो, पापे भरचो पिंड ॥ २५ ॥ माथी विद्योड़ा बाछड़ा, नीरी नहीं चारी, ऊनाले तरसा मुवा, किथी नहीं ज सार ॥ २६॥ माय वापने मान्या नहीं, सेठ सुं असंतोप, धर्मनो उपगार नवि धरचो, उसं कर्ले किम होय ॥२७॥ श्रांधो तुंटो पांगलो, कोड़ीयो जार चोर, मर्म फीटी जाना बोल तूं, कह्या बचन प्रमाण कठोर ॥ २८ ॥ मद्यने मांस अभन्न जे, खाधा हुंसे हुंस, मिच्छामी दुक्कड़ं देइने, पछे लेजे सुंस ॥ २६॥ समायक पोसा किया, लीधा साधुना वेष, पिए। संवेग धरचो नहीं, कहीं किसी सुं तूं करेइस ॥ ३० ॥ सुत्र प्रकण समभतां, कह्यो विपरीत कोय, जन तन छै मत जु जुइ, सुनता श्रम होय ॥ ३१ ॥ वचन तिके वीतरागना, ते

घन देयसी ॥ १५ ॥ परियह मेलो ऋति घर्णो, इच्छा जेम आकाश, काज सरे नहीं तेहवा,

उतराध्ययन प्रकाश ॥ १६ ॥ घाणी घरटी ऊं ख़ली, जीव जंतु पाड़ीश, खाम तूं नहीं तर नर्कमें, घाणी मांही पीलीस ॥ १७ ॥ छाना श्रकारज करी पचे, गर्भ नाख्या पाह, परमाहामी तेह तुने, नित नाखसे फाड़ ॥ १८ ॥ गोधा ना नाक वीधीया, खसी किधा वलद, आरंभी उ-छाड़ीया, राते हुवे शब्द ॥ १६ ॥ वाला काढ्या टांकता, माकड़ खाटला कट, रेच लड़ क्रमी पीड़ीया, गलनो गयो विछुट ॥ २०॥ राग द्वेष पाम्या नहीं, जहां जीवो तहां सीम, अनंतान षंधी ते थेया, कही करीस तूं केम ॥ २१ ॥ तड़ तड़ता नाख्या तावड़े, सुल्या धान जुवार, तड़-फ तड़फ ते मुवा, उया न गइ लिगार ॥ २२ ॥ अनगल, पाणी लगड़ा, धोया नदीय तलाव, जीव सघार कीधो घर्णो, साव परेस प्रभाव ॥२३॥



तुम सुणिये रे लोको कका वत्तीसी हिरदे धारिये ॥ तु० ॥ टेर ॥ कका क्रिया कीजीये स रे, किया विना स्यूं ज्ञान; ज्ञान विना किया नहीं स रे, तार्ते डोप प्रधान रे ॥ तु० ॥ १ ॥ खक्खा खिलवत छोड़िये स रे, खिलवतमें नही सार, खिलवन खोवे जोगनें स रे, औरही विध-ना नार रे॥ तु०॥ २॥ गग्गा गर्व न कीजिये स रे. गर्व कीयां लख जाय, गर्व करी रावण गल्यो स रे, और दुर्योधन राय रे ॥ त० ३ ॥ घग्घा घटमें ज्ञानणो सरे, कर लो प्यारे लोक: घोर तपस्या कीजिये स रे, मिटे कर्मका रोग रे॥ तु०॥॥ ४॥ःच्या चरचा ज्ञानकी सरे. कर लो शास्त्र प्रमांणः चुगली चोरी छोडिये

तो सहीज साच, भगवती अंगे जोयजो, वीरनी एह वाच ॥ ३२ ॥ कर्मादान पन्नरे कह्या, वली पाप ऋहार, जिन जिन थे सह खाम जो, संसार संभार ॥ ३३ ॥ इस भव, परभव एहवा, किथा, होवे जे पाप, नाम कहीने खाम जो, करजो पछताप॥३४॥ खरचो कोइ.लागसे नहीं, देह ने नहीं दुःख, मत वैरागे खाम जो, करजो पञ्चताप ॥ ३५ ॥ सम्बत सोल अठाग्वे, अह-मदपुर मांय, समय सुंदर कहमें करी, श्रालो-यन उछाह ॥ ३६ ॥



नर मूड गिवार रे ॥ तु०॥ १२॥ तत्ता तत्व पिछां शिये स रे नरूं ए पणो दिन चारः थोडा दिनकी चानिए। स रें, छेवट घोर अंधार रे ॥ ॥ तु० ॥ १३ ॥ थस्था थिर रहणा नहीं सरे, यौवन धन परिवार; आखिर एक दिन जांवणो स रे, चल्यो जाय संसार रे॥ तु० ॥ १४ ॥ दहा दिलमें राखीये सरे, दया दान दिन रात: दगो न कीजे केहसुं स रे, धर्म हारकी बात रे ॥ तु० ॥ १५ ॥ धद्धा धर्म हो कीजिये स रे, मनमे धी-रज राख, ऋतु ऋायां फल नीपजे स रे; धर्म विनासव खाख रे ॥ तु० ॥ १६ ॥ नन्नाः नर भव डोहिलो स रे, ताते करो सुधार; खरची वांधी उजली सरे, जिल सं वेड़ा पार रे ॥ तु० ॥ १७ ॥ पप्पा पंडित पारखा सरे, शकेः करतो पाप, पाप करे हैं प्राणियों स रे, भुगते आपो खापरे ॥ तु**० ॥ १**८ ॥ फफा फकीरी क्रादेरी सरि, चुलिये खांडे धार; लालचमे फिसयो फिरे

स रे, जिए सूं होय कल्याण ॥ तुर्०॥ प्रा छच्छा छल नहीं कीजिये सरे, मेटो मनकी छोल; छः कार्यानें त्रोलखो स रे, जांगो त्रातम तोल रे ॥ तु० ॥ ६ ॥ जजा जसही लीजिये स रे, र्जस सम नहीं छै धन्न; जी जी करतां वोलियो स रे, उज्जल रखो मन्न रेगा तुरुगा छगा भभा भुठ न वोलिये स रे, भूठ महा दुःखं दार्यः भूठ विगाड़े पैठनें स रे, पत पंचामें जाय रे ॥ तुना 🗆 ॥ टहा टेक न छोड़ियें स रे, धर्म तणी नित मेव; टही तृटे मांहिली सरे, ऐसा सद्गुरू सेव रे ॥ तु० ॥ ६ ॥ ठट्टा ठोठ न होजिये सरे, तज दो ठट्टा रोल, ठींभर पर्णो थे ब्रादरो सरे श्रोछो न वोलो <mark>बोल रे</mark> ॥ तु० ॥ १० ॥ डड्डा डर ही राखीये स रे, भगवंत भप संसार: डर ही बिगाड़े अर्थनें सरे, सो डर वेग निवार रे॥ तु०॥ ११ ॥ ढढा ढील न कीजिये सन्रे, जिस सूं होय-र्सुभारः काज विगाड़े होत सूं सरे, ते

वंदो गुणि जन देखनें मर्र, रखो वडेकी कांग रें ॥ तु० ॥ २६ ॥ शरशा शंका न की जिये सरे, जिन वचनां के मांय; शील वत शुद्ध पालजो सरे, जो तुम तिरवा चाहरे ॥ तु० ॥ २७ ॥ पप्षा खुव पिछांगीय सरे, स्यादवाद मत सार; खाली वाद न कीजिये सरे, बोलो शास्त्र के लार रे तु०॥ २८ ॥ सस्सा सत्य ही भाखको सरे, सृत्र समो नहीं धर्म, सृत्र विरूद्ध जे भाखही सरे, जिगारे बोहला कर्मरे॥ तु०॥ २६॥ हहा हासो त्यागिये सरं, हास्यथकी विष वाद, कौरव पांडव वीगड्या स रो. नहीं हांसीमें रवाद रे॥ तु०॥ ३०॥ ह्यं लखावे जिखगो भेजो, ररे विना सब कोय, उलट पलट अच्चर वर्ष बोले, वर्षा संकर ते होय रे ॥ तु०॥ ३१॥ च चमा तुम कीजियो सरे, चमा करे गुणवतः मुनि राम कहे छैं ककावचीसी; शीख चलो इस पंथ रे ॥ तु० ॥ ३२ ॥ • ज्याकारका ॥ इति कका वत्तीसी सन्पूर्णम् ॥ ज्याकारका

स रे, धिक् ताको जमवार रे ॥ तु० ॥ १६ ॥ विष्वा बुध जेहनी खरी स रे, इस्स भवमें जस लेह; परभव सुधरे जेह थी स रे, ज्यूं शाख सुधारे मेह रे ॥ तु० ॥ २० ॥ भभ्भा भमतो क्यूं

धार महुर ॥ तु०॥ २०॥ भभ्भा समता क्यू फिरे सरे, विन कारज पर गेह; भजन करी भगवंतरो सरे, जिग्रासूं सुधरे देह रे॥ तु०॥ ,२१॥ सम्मा मर्म न माखिये सरे. हुवे अर्नथ

२१ ॥ सम्मा मर्म न भोखिये स रे. हुवे अर्नथ् किखवार; मात पिताने मानिये स रे और करो ,पगोर रे ॥ तु०॥ २२॥ यथ्या यारी रिवये स रे,परमेश्वरके साथ; पार उतरे छिनभर मांहे,

सर, परमेश्वरके साथ; पार उतर छिनभर माह, दूजी खाली वात रे॥ तु०॥ २३॥ ररा रोस निवारिये सरो, उपजे भली रसांगा; रोस थकी तप खोय है सरो; कोड़ प्रवकी जांग रे॥ तु०

॥ २८॥ लक्षा लालच छोड़िय स रे, सब सरखी नहीं ठोर; ऋति लालच नहीं ऋर्थ रो सरे, लीन अलीन छै और रे॥ तु०॥ २५॥ वन्ना बाद न कीजिय स रे, बाद कियां हुवे हाणः माई रे ॥ चे०॥ ५॥ पाडोसी दुखदाइ मि-लियो, नितको जंग नचावे रे: जो पाडोसी आहो मिलीयो, तो तोटो न्यापरमें जावे रे॥ चे ।। ६ ॥ लेगायत तो आय संतावे, देगायंत नहीं देवे रे: और छांनी मार लगी वह तेरी, सो किए। आगे कहवे रे॥ चे० ७॥ धर्म करे जो दुखमी आरं, जेहनी अधिक चड़ाई रे; मनि राम कहै छै धर्म करोनी, वखत पांवणी ग्राह रे ।; चे० ॥ ८ ॥ →

निर्देश इति पाच प्रारे की समाय सम्पूर्णम् ॥ 😘

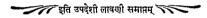




ं उत्तम कुल मानव भव पायो, वली निरोगी

काया रें; लंबो आयु इंद्रिय निर्मल, आचारी गुरू पाया रे; चेतन अबके चेत, दुःखमिये आरे में जनम लीधोरे ॥ चे०॥ १॥ पंचम **आरे दुःख घणेरा, कहतां पार ही आवे** रे; काया निरोगी तो धन नांही, धन तो पुत्र ही चावे रे॥ चे०॥२॥ पुत्र हुवो तो हुवो हुःख कारी, अथवा पढियो नांही रें; जो पढ़ियो सं-गत भृंडी, वह न मिली मन चायी र**े**॥ चें<sup>ठी ॥</sup> ३ ।। वह जमंती <sup>1</sup> तो पोतो नांही, पोती वहू दुःख भारी रें; पुत्री वर्तो नहीं मन गमतो, आ पिए। चिंता न्यारी रे ॥ चे०॥ ४ ॥ नारी सुपातर मर गइ पेली, दुजी आइ दुःखदाड रेः, श्रीर सुख तो मिल गये सारे, दुखदाई दुवो

माई, घर भी फूट नौकर वदले, वदले सिपाही; मला वा० ॥ परनारीसें प्रीति करीनें. फतें किसने पाई; छिनमें लिछमण मार लियो है, नर्क बोच हेरा; भला न० ॥ वा० ॥ २ ॥ किसके मात, पिता सुत बंधू, किसके परिवारा, भला कि० ॥ किसकी नारी किसके वचे, फूटा संसारा, विन मंतलव सब खारा लग्गे, मतलबसे प्यारा, भला मु० ॥ पुन्य पाप दो संग चलेगा, और नहीं लारा, रामचंद्र कहे सद्युरु सचे, करते उज-वेरा, भला क० ॥ वा० ३ ॥





वार वार मैं क्या तुज बोलं, मांन कहा रोरा; चतुर नर मांन कह्या मेरा: सब स्वार्थके मिले मुसाफिर, नहीं कोई तेरा ॥ टेर ॥ एक दिन ऐसे जादव होते, सुर पाये परता; ॥ भला सु०॥ हेमपुरी सुर छिनमें कीधी, नहीं किसे डरता; तीन खंडके भोक्ता होके, पुन्य पिछा फिरता: ॥ भला पु० ॥ एक दिवस श्री आंखां देखे, जादव सब जरता; जरा न लागो जोर कृष्णाको, विन पानी मरता: ॥ भला वि० ॥ धन दोलत कोइ संग न चली, खमा खमा कग्ताः अपन कोड् जादवंको मालिकः एक न पयो लेरां।। भला ए०॥ वा०॥१॥ एक दिन रावण राज करत हो, वलवंत जगमांही; भला व०॥ लाख जिसके वेटे कहिये, सब्वा लख

ं अस्त्र अस् अस्त्र अस्त

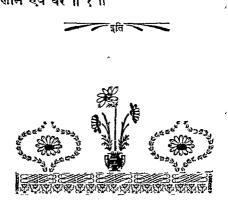
सुन हे गोरी अग मरोरी, तूं कालामे ऐव धरे, काला हिरगा जंगल चरगा, वे भी छल वल चहात करे, काला नाग वंबी पर खेले, उसके खाया तुरत मरे, काली घटा अंवर पर गाजे चरस्यां दुनियां पेट भरे, काला हस्ती राजाके सोभे, वे फीजां सिनगार धरे, काली ढाल गै-डेकी होती, उनसें जोधा खुद लड़े, काली तो करतुरी कहिये, श्रौगुन ऊपर गुन्न करें, कालो सुरमो नयनां सोभे, उसकी विंदली सुरंग धरे, काला तवापर रोटी पक्के, उससे तेरा पेट भरे, काली कीकी त्र्यांवमें सोभे, उससे सब जग सूक्त परे, कालाही केश बहुत सा सोमे, उनसे तहणी चित्त हरे, कालाही पारस काली स्याही. जिए लिखियां सब साख भरे, एक काली तल-

्रिप्रश्नेष्ठ स्ट्रेस्ट्रिक्ट्रेस्ट्रिक्ट्रेस्ट्रे

माल खरीदो मिले जो नण्हा, घरका करलो संभारा; मृल पूंजीकों रख लो सेंठी, तूं छै चलता विनजारा ॥ टेर ॥ जो जो वस्तू नफा न देगा, पोठ खालि कर दो सारा, भूल-चुक मत करो खरीदी, विवेक मित्र रखियो लारा ॥ मा० ॥ १ ॥ जो जो वस्तु नफा तोय देगा, उनकूं संयह कर प्यारा, दूर दिशा<sup>वर</sup> माल चढेगा, रस्तेमें वह वट पारा ॥ मा०॥ २॥ एकाएक तुं जासी दिशावर, संग न आसी परिवारा, विदा हुतेकू विदा न देसी, खोस लेसी कपड़ा थारा माना ।। ३॥ थारो एक न दीसे अंगतू,तूं पिण सबसें है न्यारा, मुनि राम कहें तूं रट जिनवरकूं, ज्यूं वेगा हुवे बेडा पारा ॥ मा० ४॥ स्मारम्बरम्बरम्बरम्बर्भ द्वे ॥ उपदेशी ढाल ॥ द्वे स्मारम्बरम्बरम्बरम्बर

वार वार सत ग्रह समभावे, सीख हीया-मांही धारो रे ॥ टेर ॥ नर भव पाय आय उत्तम कुलमें, पामीने मत हारो रे ॥ हां रे पा० २॥ वार०॥ १ ॥ अलप आऊँखा माटे प्रांगी, बांधो मती पापनो भारो रे, वांधे हॅसकर भुगतवो दोरो, चेते क्यूं न गिवाँ रो रे ॥ हां० वा० ॥२॥ सह क्रटंव विटेब कह्यों जिन, जिनवर वच उर धारो रे. अत समै चेतन एक तारे नहीं चल-सी थारे लारो रे ॥ हां वा० ॥ ३ ॥ काम भोग विपाक सरीखा, चण सुख दुःख ऋपारो रे, इम जाणीने कोई चेतन चेतो, आ छै वहती वारो रे ॥ हां० वा० ॥ ४ ॥ रामचद्र कहे गुरु प्रसादे, आगमनें अधिकारो रे, पांचे शीलसातम हर-साले, वडो धर्म न पगारो रे ॥ हां० वा० ॥ प्रेडी १०६ श्रीजैंन स्तवन विलास ।

वारही होती, उससे दुश्मन वहोत हरे, एक काली कोकिल भी होती, टहुका सुनकर दिझ ठरे, एक काली मंमाई होती, उन खायां तो प्रांग धरे, सुग्ग गोरी नालत की मारी, क्यूं का लामें ऐव धरे॥ १॥

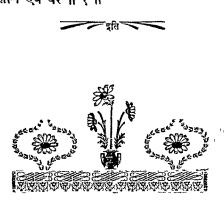


स्यर्थस्य स्थानिक ।। स स्थानिक ।। स्थानिक ।।

वार वार सत ग्रह समभावे, सीख हीया-मांही धारो रे ॥ टेर ॥ नर भव पाय श्राय उत्तम कुलमें, पामीने मत हारों रे ॥ हां रे पा० २॥ वार०॥ १॥ ञ्रलप ञ्राऊला माट प्रांगी, वांधो मती पापनो भारो रे, वांधे हॅसकर भुगतवो दोरो, चेते क्यूं न गिवाँ रो रे ॥ हां० वा० ॥२॥ सह कुटुंव विटेव कहाँ। जिन, जिनवर वच उर धारो रे, अत समै चेतन एक तारे नहीं चल-सी थारे लारो रे ॥ हां वा० ॥ ३ ॥ काम भोग विपाक सरीला, च्या सुख दुःख ऋपारो रे, इम जाग़ीने कोई चेतन चेतो, आ छै वहती वारो रे ॥ हां० वा० ॥ ४ ॥ रामचंद्र कहे गुरु प्रसादे, आगमनें अधिकारो रे, पाचे शीलसातम हर-साले, वडो धर्म न पगारो रे ॥ हां० वा०॥ ५ 🚓 ॥ इति ॥ 😤

श्रोजैंन स्तवन विलास ।

वारही होती, उससे दुश्मन वहोत हरे, एक काली कोकिल भी होती, टहुका सुनकर दिल्ल ठरे, एक काली मंमाई होती, उन खायां तो श्रांण धरे, सुण गोरी नालत की मारी, क्यूं का लामें ऐव धरे ॥ १॥



पर, नहीं खंडन कोई ठौर, मुनि राम कहें जिन धर्म सरीखो, हुवो न होसी और रे ॥ सु०॥ ६॥ ॐ\*ॐ।। इति ॥०%%\*ॐ

सदा जो धर्मपर रहती वही कुलवत है नारी ॥ उल्ल'घे न कभी त्राज्ञा, लगे वह कथको प्यारी ॥ टेर ॥ पढ़ो विद्या प्रेम धरके, वनो नव-तत्व की ज्ञाना। छुड़ावो विनय कर पतिसे, जो हो कुचाल बदकारी ॥ १॥ कोई पर पुरुषके त्रागे. लगा ताली नहीं हंसना । वाप भाई उसे समभो, इसी में बात है भारी॥ २॥ भोपा श्रादि अधम जाति को, अपना नहीं बताओं हाथ। भवानी भेरू नहीं मानो, पशुकी घात जहां जारी ॥ ३ ॥ श्रमुर श्रामु की लजाको, विसारी न कभी हरगिज। पढे इतिहास सीताका, जो साच वातकी थाप जिसीमें, फुठतणो नहीं रंच. किसी जीवकं दुख नहीं देखा, तजणा सव परपंच रे ॥ सुणियो सव प्यारे, जैन धर्म नहीं छोडसा ॥ सु० टेर ॥ १ ॥ कष्ट त्राये पिस भूठ न कहना, क्रूठ पापका मूल, पर तृख जिखनें लिया उठाई, कीया जमारा घुल हो ॥ सु०॥ २॥ नारी सारी द्वार नरकको, स्वर्ग अर्गला जांन, धनकूं धूल गिगी तज निसरो, धन अन-रथकी खान हो॥ स०॥ ३॥ ए उपदेश जिसी धर्ममें, समजो चतुर सुजांगा, पर निंदा स्र महिमा नांही, नहीं छै खांचाताण हो ॥ सु॰ ॥ ४ ॥ भाई जमाई पुत्र कमाई, फेट शरीरे लागे, पूर्व कमाई धर्म सहाई, मिष्ट धर्म फल ष्ट्रागे हो ॥ सु० ॥ ५ ॥ विरुद्धाभास नही पूर्वा-

कुरस्थापण प्राप्त ।। ५८ है १८ ॥ गयन ॥ ६८ है वित्रवेशकात्रवात्रवात्रवात्रवात्रवात्रवा

अर्ज पर हक्म श्री महावीर चढ़ा दोगे ती क्या होगा। मुभो शिवमहल के अन्दर बुलालो-गे तौ क्या होगा॥ सिवा तेरे सुने गा कौन मुफ्ते दीनकी ऋरजी। मुफे वद फेल के फन-से छुड़ा दोगे तो क्या होगा॥ अर्ज॥ १॥ जगह वहांपर न खाली क्या या तकदीर ही ऐसी ॥ न माल्म क्या सबव शक है मिटा दोगे तौ क्या होगा ॥ २ ॥ पड़ी है नाव भव जलमें चले जहां मोहकी सरसर ॥ तौ करके महर-वानी अब तिरादोगे तौ क्या होगा ॥३॥ जो है तेरी मदद मुभपर तौ दुशमन कुछ नहीं करता ॥ भरोसा ही तुम्हारा है निभालोगे तौ क्या होगा ॥ ४ ग्रुरु हीरालाल है ग्रुणवत दि-खाया रास्ता वहां का। खड़ा है चौथमल यहां पर बुलालोगे तौ क्या होगा ॥ ५ ॥ इति ॥

१०' श्रीजेन स्तवन विलास।

हुई कैसी धर्म धारी ॥ ४ ॥ करें जो काम कोई घरमें तो पहिले सोचले दिलमें । संपमें संपदा जाने, समक्त कर हकमें हितकारी ॥ ५ ॥ कहें सुनि चौथमल वहिनों, तुम्हारे ग्रेणोंकी माला। अपरे कृटिला कुलचणी की, हुई है बहुत ही खारी ॥ ६ ॥

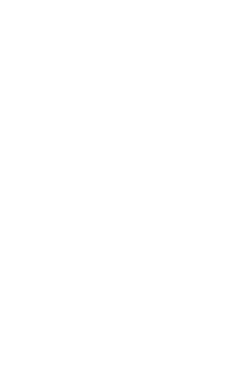


्राच्यास्यास्य स्थापना क्ष्याः क्ष्याः स्थापना क्ष्याः क्ष्याः स्थापना क्षयः स्थापना क्ष्याः स्थापना क्षयः स्थापना स्थापना क्षयः स्थापना क्षयः स्थापना स्थापना

मन चंचल की गत भागी, जो छिन्न में कोस हजार है ॥ टेर ॥ मन काम और मन भोग में, कभी खुशी और कभी शोक में। मन ससार और योगमें, नहीं इसकी लहर का पार है।। वायु से अधिक करारी, सन चंचल की गति भारी॥१॥मन सेठ और चौर है. मन निर्वल मन सीत जौर है। पलक पलक मे मन ऋौर है, इस मन के हारे हार है। मन जीते जीत हो सारी. मन चंचल की गत भारी ॥ २ ॥ मन विलायत फूांस में जावे, जा-पान रूस सर्विया फिर फिर आवें। दिल्लीका शहनशाह बनजावे, इस मनके मते अपार है ॥ कोई बीर रखे मन वारी, मन चचल की गृति भारी ॥ ३ ॥ मन सुधार विगाड़ करावे, तंदृल मच्छ को नरक पठावे। भरनेसर केवल पट

## 👸 ॥ हितोपदेश गजन्य।

तुमें जीना अगर दिन चार भलपन क्यों नहीं करता। खड़ी है मौत ये सरपे अरे त् क्यों नहीं डरता॥ अरे जाती है जिंदगानी जैसे वर्शात का पानी। खवर तुमाको नहीं प्रानी भरोसा किसपै है करता ॥ तुर्भा० ॥ १ ॥ मस्त हैं ऐस अश्रात में बना चातुर तू कसरत में। पहन पोशाक सज गहना शैल करनेको तूं जाता ॥ तुर्भे०॥ २॥ हाथ लकड़ी घड़ी लटका टेडा साफा रचा मुंहको । घूमता तूं गरूरी में नजर असमान है धरता ॥ तुमे० ॥ ३॥ तर्ककर जहां को जाना वहां है मुल्क बीगाना। नहीं कोई यार साथी है जो कर्ता है वही भरता। चुभे० ॥ ४ ॥ साल उन्नीसे पेंसट किया उदेंपुर में चौमासा। दिया उपदेश जीवों को दया की नाव से तरता ॥ ५ ॥ इति ॥



पावे, यह रावण हरी परनार है।। ब्रह्मदत्त के किया सुवारी, मन चंचल की गत भारी ॥ ४। इन नव ले थहे कन्या प्यारी, चृहा पुत्र यह भक्षारी। तरिया बहन देखे महतारी, शत्र् लित्र निहार है॥ मन दे विच पडदा डारी मन चंचलकी गति भागी ॥५॥ श्रवन औ मन न अमल में लावे, ज्ञान ध्यान सहजे वर जावे। मन फौरन कावू में आवे, फिर तो मोच तैयार है ॥ जब बोले सब विलहारी, मन चंचल की गति भारी ॥ ६॥ ग्रुरु हीरालाल सट सुख दाई, चोथमल जोड़ कर गाई। चोमा सो पालनपुर मांईं, उन्नीसे वहोत्तर हितका है ॥ सुनना सब नर श्रीर नारी, मन चंचल की गति भारी ॥ ७ ॥

<sup>►•2 =</sup> इति मन की गजल सम्पूर्णम्<del>र्य</del>



मुशाफिर यहां से खरची लेले लार मुशा-फिर यहांसे ॥ टेर ॥ यो संसार है शहेर पुरानो जिसका महाराजा मुख्दयार ॥ मु॰ १ ॥ पाप अठारे यह है लूटारे तुं इनसे रहियो होश्यार ॥ मुशा ॥ २ ॥ राणा अौर राजा छत्रपति केई गया है हाथ पसार ॥ मुशा ॥ ३ ॥ पांच कोश को वान्धे जापतो परभव की वम न वार ॥ ॥ ४ ॥ नये शहर में जाना तुमको वहां नानी दादीका हार।मुशा०॥ ५ ॥ मनुष्य न्कान है जिस मे नाना विध ा। ज्ञान दर्शन चारित्र तपस्या ्॥ मुश्रा० ७॥ सुकृत जिस पर होजा ऋसवार ि धर्मसुखडी दानादिक

## ११६ श्रीजन स्तवन विलास।

्राचिश्राम् । स्टान्स्या मजल्रुः । १९३८ च्या मजल्रुः । १९३७ च्या स्टान्स्या स्टान्स्य

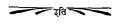
मेरा तो धर्म कहने का, भला उपदेश देने का। मान चाहै तु मत माने, हुएन तेरा ना रहनेका ॥ अरे जाती है जिंदगानी, जैसे वर-सातका पानी ॥ जरा तो चेत 'ग्रिभमानी, भरोसा क्या है जीने का ॥ मेरा ॥ १ ॥ छोड़टे जुल्मका करना, जरा आफतसे तौ डरना ॥ नेह दिलोजानसे करना, सामां यह साथ लेनेका ॥ मेरा २ ॥ इखावे मत किसीका दिख, तजो श्रव रातका खाना ॥ नशा खोरी जिनाकारी, त्यागकर मंश छीने का ॥ मेरा ॥ ३ ॥ मुसा-फिरखाने में रहकर, अरे वन्दे भजन तौ कर ॥ कहें यो चौथमल तुमसे, यही है रास्ता वहां का ॥ ४ ॥

्रिक्ष्य उपदेशी गजल भूर्

मुशाफिर यहां से खरची लेले लार मुशा-फिर यहांसे ॥ टेर ॥ यो ससार हैं शहेर पुरानो जिसका महाराजा मुखस्यार ॥ मु० १ ॥ पाप श्रठारे यह है लूटारे तूं इनसे रहियो होशियार ॥ मुशा ॥ २॥ शाणा और राजा छत्रपति केई गया है हाथ पसार ॥ मुशा ॥ २ ॥ पांच कोश को बान्धे जापतो परभव की वृम न वार ॥ मशा॥ ४॥ नये शहर में जाना तुभको वहां नहीं नानी दादीका द्वार । मुशा० ॥ ५ ॥ मनुष्य जन्म की अजब दुकान है जिस मे नाना विध व्योहार ॥ मुशा० ६॥ ज्ञान दर्शन चारित्र तपस्या यह लीजो रत्न संग चार ॥ मुश्रा० ७ ॥ सकृत घोडो जीए यत्ना को जिस पर होजा असवार ॥मुशा०=॥ दश विध यति धर्म सुखडी दानादिक

्रिक्ष उपदेशी गजन ।

दुनियां से चलना है तुभी, चाहै त्राज चल या कल । अन मोल वस्त हाथसे जाता है, पल पे पल ॥ त्राता है स्वास, जिसमें प्रभू रटना हो तो रट ॥ चेत उमदा ऋ।ई, ये वहार की फसल ॥ दु०॥ १॥ हुआ दिवाना ऐश में, आखिर का डर नहीं । सिर पर तेरे, हमेशां घुमता 👯 श्रजल ॥ दु० ॥ २ ॥ नेकी वदी सामान को, उठा के पीठ पै। ख़ुद को ही चलना होगा, बड़ी दूर की मंजल ॥ दु० ॥ ३ ॥ आवै कफे दस्त जूं जाती है जिन्दगी। वदकार की वदी में, गई शुखीने की फसल ॥ दु० ॥ ४ ॥ कहे चौथ-मल, गुरु वकील ञ्चागाई दें तुभौ। करले ञ्चपील जीव श्रौर हाथमें मिसल ॥५॥



लोकों में जाती, परनारके परसंग से ॥ ३ ॥ चार से सत्तारावे कानृन में लिखा उप्का। सजा हाकिम से मिले, परनार के परसंग से ॥ ४ ॥ जैन सूत्र में मना, मनुसमृति देखलो। करान वाएवल में लिखा परनार के परसंग से ॥ ५ ॥ रावण कीचक मारेगए, डौपदी सीताके वास्ते। मणीरथ मर नरके गया, परनार के परसंग से ॥ ६ ॥ जहर बुक्ती तलवार से, अब न मुलजि-म वदकार ने'। हजरत ऋलि पे वहार की, पर-नार के परसंग से॥ ७॥ कर्चे को कता काटता, करल नर नर को करे। पल में मोहब्बत ट्टती, परनार के परसंग से ॥ = ॥ किस लिये पैदा हुआ, अए वेहया कुच्छ सोच तृं। कहैं चौथमल अब सबर कर, परनार के परसंग से॥६॥

**一种的影響等** 

क्छटार ॥ ६ ॥ शिव पुर पाटण वीच पधारो जहां पावोगा सुख अपार ॥ सुशा० ॥ १०॥ गुरु हीरालाल प्रशादे चौथमल कहे छै तुम्हे लक्षकार ॥ मुशा ॥ ११ ॥ उन्नीसे सीतर टोंक शहर मे आया छह ठाणा सेपेकाल ॥ मुशा१२॥



लाखो कामी पिट चुके परनार के पर-संगसे, मुनिराज कहे सब बचो परनार के परसंग से ॥ टेर ॥ दीपक कि लोह उपरे, पड़ पतग मरना सही। ऐसे कामी कटमरे, परनार के परसग से ॥ १॥ परनार का जो हुस्न मानुं, श्रिप्त का कूगृड सा। तन धन सब को होमते, परनार के परसंग से ॥ २॥ भूंठे निवाले पे लोभानां, इन्सान को लाजिम नहीं। - रात्रि भोजन निषेध की गजल । १२३

चुरावे, यहां भी हाकिम दे सजा। आराम वो पाता नहीं, कुव्यसनके परसंग से ॥ ६ ॥ इश्क चुरा परनार का, दिलमें जग तो गौर कर । कुच्छ नका मिलता नहीं, कुव्यसनके परसग से ॥ ७ ॥ गञ्जा चड़स चराडु अफीम, भग तमाखु छोड दे। चौथमल कहे नहीं भला, कुव्यसन के परसंग से ॥ = ॥

> ুখাঁকও •}}বৃদ্ধ বুদ্ধা শূঁচ্⊀ জ্যাদ্ধত

जुवा खेलन मांस मद, वैश्या व्यसन शिकार। चोरी पर रमनी रमन, सातो पाप निवार॥

रात्रि भोजन निषेधकी गजल हैं हिल्लाहर्केट किट किट किट किट तजो तुम रातका खाना इसमें तो पाप

भारी हैं ॥ कहें सत पुरूप यों तुमसे मानो शिजा

्ष्रिक्रः स्थानिक स्यानिक स्थानिक स्थानिक स्थानिक स्थानिक स्थानिक स्थानिक स्थानिक स्य

लाखों व्यसनी भरगए, कुव्यसन के पर-संग से । ऋए ऋजिजों वाज आञ्रो, कुव्यसन के परसंग से ॥ टेर ॥प्रथम जूवा है वुरा, ईजत धन रहता कहां। महाराज नल वनवास गए, कुव्यसन के परसंग से ॥१॥ मांस भन्नण जो करे, उस के दया रहती नहीं। मनुसपृति मैं जिखा, कुव्यसन के परसंग से ॥ २ ॥ शराव यह खराव है, इन्सानको पागल करे । जादवोंका क्या हुन्ना, कुब्यसन के परसंग से ॥ ३ ॥ रंडी वाजी है मना, तुम से सुत उसके हुवे। दामाद की, गिनती करो, कुव्यसनके परसंगसे '॥ ४ ॥ जीव सताना नहीं किसीका क्यों करल कर कातील वने। दोजख का मिजमान हो। कुव्यसन के परसंग से ॥ ५ ॥ माल जो पारका



मूख छोड वृथा अभिमान ॥ टेर॥ औसर बीत चल्यो है तेरो, तूं दो दिन का महमान । भूप अनेक भये पृथ्वी पर, रूप तेज बलवान ॥ कौन बच्यो या काल बली से, मिट गयो नाम निशान ॥ १ ॥ घवल घाम घन गज रथ सैना, नारी चन्द्र समान । अन्त समय सबही को तजके, जाय बसे शमसान ॥ २ ॥ तज सतसंग भ्रमत विषयन मे, जा विध मर्घट खान । चगा भर बैठ सुमरिन किनो, जासों होत कल्याने ॥३॥

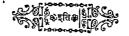


हमारी है। अगर जो रात को खाते उनके खाने ही के अन्दर। पड़े परदार कई जीव जिनों की जात न्यारी है।। तजो०॥ १॥ है अधा रातका भोजन धर्मीको खाना <sup>नहि</sup> लाजिम। पची भी रातके अंदर चुगा देते निवारी हैं॥ तजो० २॥ जलोधर जिससे होता है मक्खीसे वमन होता है। कोड़ मकडीसे होता है यही दुनियांमें जहारी है ॥ तजो० ३ ॥ विच्छू गर कोई खावे तौ शरमें दर्द उसके हो। होय नुकसान रातमे बहुत खाना यह अविचारी है ॥ तजो० ४॥ छोडदे रातका खाना तू वारह मासके अंदर । महीने छै की हो तपस्या वडी ञाराम कारी है ॥ तजो ५ ॥ सम्बत् उन्नीसे उन्हत्तर किया रतलाम चौमा-सा। ग्रह होरालाल के परसाट चौथमल कहै पुकारी ॥ ६ ॥

जिन धर्म प्रशंसा दोहा । जिन धर्म प्रशंसा दोहा इये अनादि अज्ञान सों, जग जीवन के नैन। सव मत मूठी धृल की, अजन है मत जैन ॥ मूल नदी के तिरन को, और जतन कहु हैन। ू सब मत घाट कुघाट हैं, राजघाट हें जैन ॥ तीन भवनमें भर रहे, थावर जगम जीव। सव मत भचक देखिये, रचक जैन सदीव॥ इस अपार भव जलिंघ में,निंह निंह और इलाज। पावन वाहन धर्म सव, जिनवर घर्म जहाज ॥ मिथ्यामत के मद छके, सब मतवाले लोय। सब मतवाले जानिये, जिन मत मत्त न होय॥ चाम चत्तु सों सब मती, चितवत करत नवेर। ज्ञान नैन सो जैन ही, जीवत इतनो फेर। दोय पन्न जिन मत विषे, नय निश्चय व्यवहार तिन विन लहे न हस यह, श्विन सरवर भी पार इस असार संसार में, और न सरन उपार जन्म जन्म हजो हमें, जिनवर धर्म सहार



तुम देखो रे लोगों, इस दुनीया का तमाशा ॥ टेर ॥ न कोई आता न कोइ जाता, यही जगत का नाता। कौन किसी की बहन भानजी, कौन किसी का श्राता॥१॥ देह तलक तिरियाका नाता, पौली तक का माता। मरघट तकके लोग वराती, हंस अकेला जाता ॥ २ ॥ लट्टा पहने बुक भी पहने, पहने मल-मल खासा । शाल दुशाले सवही ऋोद्रे, अन्त खाकमें वासा ॥ ३॥ कौड़ी कौड़ी माया जोड़ी जोड़े पांच पचासा। कहत लहरचन्द सुनो भाइयो, संग चले नहीं मासा॥ ४॥



## 

इस दुनियां में होत है, चार जगह पर ज्ञान। जो नर निश्चय याद रखे, तो छुट जग बंधान ॥ 'प्रथम ज्ञान सुन देह मे, महा रोग जो होय। श्रवके जीता मैं बच्ं तो, लेहूँ ब्रह्म को टोय ॥ दुजा विपत कालमें, होत ज्ञान तस्काल । दैव जोग सुख उपजे, जेसे भूले वाल ॥ जगह तीसरी जान की, कथा सुनी जब कान। उठकर के घरपर चले, सभी ज्ञान विधान ॥ चौथा ज्ञान रमसानमे, होत विकट वेराग । जो नर निश्चवं याद रखे, खुलजा उनके भाग ॥ ज्ञान भुमीमे जब खडे, जबतक रहता ज्ञान । जगह हरी तब जान हरे, श्रीर जगह पर ध्यान ॥

## जिन धर्म प्रशंसा दोहा इये अनादि अज्ञानं सों, जग जीवन के नैन।

सब मत मूठी धूल की, अंजन है मत जैन॥ मृल नदी के तिरन को, और जंतन कड़्र हैन। सब मत घाट क्रघाट है, राजघाट है जैन॥ तीन भवनमें भर रहे, थावर जंगम जीव। सब मत भचक देखिये, रच्चक जैन सदीव॥ इस अपार भव जलिध में,नहिं नहिं श्रीर इलाज पावन वाहन धर्म संब, जिनवर धर्म जंहाज ॥ मिध्यामत के मद छके, सब मतवाले लोय। सब मतवाले जानिये, जिन मत मत्त न होय॥

चामचच सों सब मती, चितवत करत नवेर। ज्ञान नैन सों जैन ही, जीवत इतनो फेर ॥ दोय पच जिन मत विषे, नय निश्चय व्यवहार।

तिन विन लहें न हंस यह, शिव सरवर भी पार ॥ इस असार संसार मे, और न सरन उपाय।

जन्म जन्म हुजो हमें, जिनवर धर्म सहाय॥

काम क्रोध मद् लोभ की, जब लग मनमें खान। का परिडत का मूरपे, दोनो एक समान ॥ तुलसी मीठे वचन तें, सुख उपजत चहुं श्रोर। वशीकरण यह मत्र है, परिहर वचन कठोर ॥ मुखे विछुटा वोलडा, धुना छुटा तीर। श्वतरीया पानी न चढ़े, नरा पहाड़ां नीर ॥ 🛮 म्रति हासी ढासी सगत, नृप वेश्या विश्वास । अस्थिरवासी योगी यति, निर्**चय होत** विनाश ॥ योनो तूं भलो न कर सके, बुरे पंथ मत जाय । **∯प्रमृत फल चाखे नहीं, विपफल काहेको खाय** ॥ ा वा भतीजा भागाजा, भूमीया भोपाल । रिता भभा छोड़ कर, तव कीजे ब्यवहार ॥ । ।न देके तन राखीए, तन दे रखीए लाज । निराज जीव धन दिजीए, एक धर्म के काज॥ <sup>11</sup>न्हां जाया कहां उपन्या, कहां लड़ाया लाड़ । किया जाने क्या होय सी, कहां पड़ेगी हाड़ ॥ र्वक्षुता से प्रभुता मिले, प्रभुता से प्रभु दुर ।

पप सुं परचो नहीं, ददो रह्यो दूर। लले सुं लागी रह्यो, ननो रह्यो हजूर ॥ पांचे भुल्यो च्यारे चुक्यो, त्रिहंन जागी नाम ,जग ढढ़ेरो फेरीयो, श्रावक म्हारो नाम ॥ 🕠 वरष दिनां की गांठ को, उच्छव गाय वजार मुर्ख नर समभे नहीं, वरष गांठ को जाय ॥ गो धन गज धन रहा धन, कंचन खान सुजान जब ऋावे संतोष धन, सब धन धृल समान । को सुख दुख देत है, देत कर्म भक भोर

उरजे सुरजे आप ही, धजा पवन के जोर ॥ शीलवंत सबसे बड़ा, सब रहाे की खान तीन लोक की सम्पदा, रही शील में आन ॥

मन दाता मन लालची, मन राजा मन रं जो यह मन हरसों मिले, तो हरि मिले निःशं।

पल पखवाडा घडी महीना, पोहर होय छव मास। जिसको लाला कल कहे, ताको कोन हवाल ॥ प्रन्य चीरा जब होत है, उदय होवत है पाप। दाभ्ते वनकी लाकडी, पर जलती आपी आप ॥ ।पाप छिपाया ना छिपे, छिपे तो मोटा भाग । दावी दुवी ना रहे, रूड लपेटी आग ॥ तुलसी कवहुं न किजीए, वनिक पुत्र विश्वास । धीरप देदे धन हरे, रहे दास को दास॥ आवत ही सवही भली, तुम न आवो च्यार । भुख बुढापो आपदा, चढे खेत की हार॥ विपती बरोबर सुख नहीं, जो थोडे दिन होय। इष्ट मित्र और वन्धु सव, जान पडे सव कोय॥ दान दीन को दीजीए, मिटै दरीड़ की पीर। भ्योपधि ताको दीजीए, जाके रोग शरीर ॥ -पर को अवगुरा देखिये, अपनो दृष्टि न होय। करें उजेरो टीप पे, तरे अधेरो जोय ॥ होप भरी न उचारिये, जदपि यथारथ बात ।

जो लघुना धारण करे, प्रभुता नहीं है दुर॥ लाज जगतमें दोयवात की, चोरी श्रौर श्रन्याय। इसको सेवन करने वाले, क्षेवल दुर्गति पाय ॥ भला भला नहीं विसरे, निगुण न त्रावे चित्त। अध सिखी विद्या दुहै, ज्यों परदेशी मीत ॥ त्रागे घघा पीछे घंघा, जहां देखो तहां घंघा है। घंघा मांहे धर्म को साधे, सो साहेवका वंदा है। I विद्या धन वह आंतरो, जो राज सभा बुलाय। एकनका मुख हरियत भये, एकन का कुमलाय ॥ चिंता चिता का एक रस, इसमें अतर एह। चिता जलावे भृतक जन, चिंता जीवत देह ॥ जब लग जिसका पुन्य का, पुछा नहीं करार। तव लग उसको माफ है, अवगुन करो हजार ॥ उत्तम प्रीत दसांक ज्यों, मध्यम नव का लेख। अधम प्रीत कुल अष्ट है, गुनाकार कर देख ॥ नानक नाने होय रहो, जैसी नानी दुव,। 🗇 **प**ड़े वड़े सव जांयगे, दुव रहेगी खुवता

जव तक पैसा पास रहेगा, मीठी बात सुनावेगी । कंगालीकी यार हालतमें, जुता मार निकालेगी॥ चिंता डाकन मन वसी, चूट चूट लोही खाय। रती रती संचरे, तोला तोला जाय ॥ लाज घटे तेरे कुल तगी, घटे तुम्हारो ज्ञान। श्रायुष्य ने चेतन घटे, घटे जगत में मान ॥ श्रार्त्त ध्यान वना रहे दिलमे, धर्म ध्यान नहीं सुजे फिरता धिरता गली गलीमे, प्रथम भावकी वुजे मनके मते न चालीये, मनका मता अनेक। जो मन पट श्रसवार है, ते साधु कोइ एक॥ मन पंछी जब लग उडे, विषय वासना माहि। ज्ञान-वाज की भापट में, तव लग त्राया नांही॥ राधा वरके कर वसे, पांचो अचर एह। श्राद अन्तर को दुर कर, वचे सो हम को दे। श्चर्ड अंक नृप पोल को, अरू कागटको तात। श्रिक अन पूर पास कर सो तुम हमको टिजीए, खुशी होय ज्युं गात ॥

१३४

कहे अन्ध को आन्धरो, माने बुरो सतरात॥ वै इन्द्री वै कर्म हैं, वहीं बुद्धि वही ठौर। धन विहीन नर चएाही में, होत ऋौर तें ऋौर॥ पहले पोहर सब कोइ जागे, दुजे पोहरमें भोगी।" तीजे पोहर तस कर जागे, चौथे पोहरमें जोगी॥ समय पाय चोरी करे, चोर ऋषेरी रात। दिन न डरे चोरी करे, सो बनिये की जात।। **ऊच नीच नहीं देखीये, ऋर्थ सिद्धि जहां होय**। श्रपनी गरज जान के, जा जरूर सब कोय॥ जाया जाया सब को कहो, आया कहे न कोय। जाया नाम जन्म का, रहना किस विध होय 🎚 ईंगत और आकार से, जान लेत सब भेट। तासें बात दूरे नहीं, ज्यों दाइ से पेट ॥ गइ वस्तु सोचे नहीं, ऋागमन चिंता नाय। वर्त्त मान वर्ते सदा, सो ज्ञाता जग मांय ॥ घर में भुखा पड़ रहें, दस फाके हो जाय। तुलसी भैया बंधु के, कबहु न मांगन जाय॥

इहां कुल जाति न जोड़ये, गुन जोड़ये तांह ॥ होर कहें कीजे नहीं, अग मिलता सुं संग। दीवाके मनमे नहीं, पड़ी पड़ी मरे पत्रा ॥ चुरा चुरा सब तुज को कहे, तू भला कर मान । बृरा मीठा होत है, सभी वने पकान ॥ नव तस्व जाणि नहीं, रचा न करी छव काय। सूना घरनो पावनो. ज्युं ऋावे ज्युं जाय ॥ ज्ञान गरीबी ग्ररू वचन, नरम वचन निर्दोप । पता कबहु न छोडीये, श्रद्धा शील सतीप ॥ स्वार्थ को सब दौड़ते, श्वान ऋरू कीट पतंग । परमार्थ को धावते, सो ही नर नर सिंघ ॥ चच चौरासी भोगके, पायो ते नर अङ्ग । श्रवके बाजी जीत ले, मत करे रग मे भंग॥ चडो भयो तो क्या भयो, सबसे बड़ो खज़र। चेठन कुं छाया नहीं फल चाहे तो दूर॥ समय पाय फल देत हैं, जप औषधी दान। तनक न जल्डी किजीए हटय रिवये ज्ञान ॥

जाके पंचम वर्ग को, अज़र दो नहीं अंती 'ताते काम न को सरे, कहता है मतिवंत∄ (धन) जो समदृष्टी जीवड़ा, करे कुटव प्रतिपालः। 🦩 श्रंतर घट न्यारो रहे, ज्यों घाय खिलावे वाल ॥ लच खन्डी सोना तगी. लच वर्ष दे दान। सामायिक तूल्ये नहीं. भाख्यो श्री भगवान ॥ वरत विचारत ध्यावते, मन पावे विश्राम । रस खाद सुख उपजे, श्रनुमव याको नाम ॥ अनुभव चिंतोमनी रत, अनुभव है रस कूप। श्रतुसव मारग मोच को, श्रतुभव मोच सहप। स्त्री पीहर नर सांस रे, ए थोड़ो तिम मीठो । मुनीवर चोमासा पछे, कियां न गमे दीठो ॥ तिम अंति परिचय किये, कौड सुत शोभा न पामे

वासी जेम प्रयाग, लोग कुवे जल नहावे ॥ मधु भारथ कस्तुरीयां, पान पदार्थ जोय । इहां कुल जाती न परखीये, गुगा ऋथें जे होय ॥ नदी नरीदां तपसीयां, वर कामनि कमलांह ।

पीछे ज्यों मधु मच्छिका, हाथ मले पछताय ॥ दया दिलमे राखीये, तूं क्यों निरदय होय। सांइ के सब जीव है, कीरी कुझर दोय ॥ जितना प्रोम हराम से, उतना हरि से होय। चला जाय मोच को, पला न पकड़ कोय ॥ नारि नसावै तीन सुख, जेहि नर पासे होय। भक्ति मुक्ति श्ररू ज्ञान में, पैठ सके न कोय॥ निवल जानि कीजे नहीं, कबहूं वैर विवाद। जीते कछू शोभा नहीं, हारे निन्दा वाद ॥ धन अरु जीवन को गर्व , कबहूँ करिये नाहिँ। देखत ही मिट जात है, ज्यो वादर की छाहिँ॥ सेवक सोई जानिये, रहे विपति में सग। तन-छाया ज्यो धूप में, रहे विपति में संग ॥ तन सराय मन पाहरू, मनसा उतरी आय। को काह़ को है नहीं, सब देखा ठोक बजाय ॥ "कविरा" रसरी पांव में, कहॅ सोवे सुख चैन। श्वास नकारा कूँच का, वाजत है दिन रैन ॥

पूर्व तपस्या जो करी, जां सूं वन गयो भाग्य। करी तपस्या नहीं कछु, वोही रह्यो निर भाग्य ॥ आलस से डरते रहो, सबी विगाड़े काम। श्रालस के मारे मरे, भजे न जिनवर का नाम॥ कठिन समय कलि काल को, कठिन ज्ञानको पंथा कठिन त्रालस को त्यागनो, कठिन वाचनो प्र'थ। कठिन सरल हो जात है, जो गुरू होय कृपाल। दु.खिया को सुखिया करे, पत्त में मालो माल ॥ बस्त अमोलक पाय के, मत हो मित्र अचेत। गफ़लत में मत रहो रात दिन, काल भपटा देत॥ तूं जाने में वड़ा चतुर हूं, मेरे सिवा नहीं श्रीर। जेंन धर्मका मर्म नहीं पायो, रह्यो होर को होर॥ दया सरीखो पुन्य नहीं, ऋहिंसा परमो धर्म । सर्व मत और सर्व यन्थ में, यही धर्मका मर्म ॥ राजा जोगी अग्नि जल, इनकी उल्टी रीत । डरते रहियो परसराम, ये थोड़ी पार्ले प्रीत ॥ खाये न खर्चे सूम धन, चोर सब लें जाय ।

सुन्दर तृष्णा ना घटै, दिन दिन नृतन भाइ ॥ सुन्दर देह पड़ी रही, निकसी गये जब प्रान । सव कोऊ यो कहत हैं, अब ले जाहु मशान॥ भाइ बन्धु सुत नाती गोती, कुटम्बधन बहु तेरा। देखत २ छांड चलेगो, होय जंगल विच डेरा॥ सुन्दर मानुप देहकी, महिमा कहिये काहि। जाको बछे देवता, तु क्यों खोवे ताहि॥ संदर वचन क्रवचन में, रात दिवसको फेर । सुवचन सदा प्रकाशमय, कुवचन सदा अधिर॥ कह लहरचन्द सुनो तुम, जो ऋरिहंतके गुणगावे। लुच चौरासीकी फासी कटेगी, अन्त परमपट पावे॥



इस ऋौंसर चेता नहीं; पशु ज्यों पाली देह। राम नाम जाना नहीं, अन्त परी मुख खेह॥ सुमिरन से मन लाइये, जैसे दोप पतङ्ग । प्रान तजे छिन एक में, जरत न मोरे अङ्ग ॥ तिपया तप क्यों छांडियो, इहां पत्तक नहिं सोग। र्वासा जगत सराय का, सभी मुसाफिर लोग ॥ कम खाना श्रीर कम वोलना अक्रमन्दी है। वहुत खाना ऋौर वहुन घोलना वेवकूफी है ॥ सब की समें विनाश में, उपजत मति विपरीत। र्घपति मारचो लंकपति, जो हर खेगयो सीत ॥ मंति फिर जांच विपत्ति में, राव रंक इक रीति। हेम हिरन पाछे गये, राम गंवाइ सीत ॥ धैर्यवान नहीं धैर्य तजि, यद्पि दुःख विकराल । जैसे नोचौ श्रप्ति मुख, ऊंची निकसत ज्वाल ॥ मनसा वाचा कर्मगा, सब ही सूं निर्दाप। चमा दया जिनके हृद्य, लिये सत्य संतोष ॥ ्र पल छीजे देह यह, घटत घटत घटि जाइ।

देना है सो दीजिये सत पात्रको दान।
फिर मोको मिलसी नहीं सत्य वचन मेरो मान॥
सत्य वचन मेरो मान श्राय कर पीछौ जावे।
फेर कौन विश्वास लौट घर थारे त्रावे॥
कहते सेनृ मानले है सो कहना।
सतपात्र कृं दान दीजिये है सो देना॥ ३॥

पैसा नहीं था पासमें, सदा रहे थे दीन। देव योग पैसो बन्यो, नहीं दान कछ कीन॥ नहीं दान कछ कीन्ह, भयो धन, मदसे अन्धो। लियो न हरिको नाम, कियो नित घरको धन्धो॥ कहते "सैनु व्यास" उत्तद भया, जैसा तैसा। सदा रहे थे दीन, पासमे नहीं था पैसा॥ १॥

मायाके मदमें भयो, करे गर्वकी वात । दिनों चारकी चांटनी, फेर श्रन्धेरी रात ॥ फेर श्रन्धेरी रात, कोई नहीं मुखसे वोले ।



संगत को फल लागसी सब कर्मन के बीच। ज्ञानी संग ज्ञानी मिले वने नीच संग नीच ॥ वने नीच संग नीच पलट जावे बुद्धि चटसे। संगत को फल देख होत है भँवरो लट सें॥ कहते सेनं वचन मेरो है सत्य को। सब कर्मन के बीच लागसी फल संगत को ॥१॥

जब तक मृत्यु दूर है कर तूं पर उपकार । जब तक देह निरोग है उत्तम ज्ञान विचार ॥ उत्तम ज्ञान विचार पास मृत्यु श्रावे । होवे चित्त ञ्रानन्द तूं मनमें नही पञ्जतावे ॥ कहते सैनू भजन कर ले तब तक। कर तूं पर उपकार दूर है मृत्यु जब तक ॥ २ ॥ समिकत पान सुधार के, चुना चारित्र लाय। करणी का कत्था करो, वीडी लेय बनाय॥ वीड़ी लेय वनाय, सुपारी तपस्या कीजे॥ कहे मगन ऋषि राय, पाप की काटो स्याई। संक्या पीक निकाल, ज्ञान मुख लाली छाई॥=॥

सत्यते प्रतीन होय, जाकी सब देशन मे।
सत्यते सचाई, और सत्यते भलाई है॥
सत्यही से सुख पावे, यश आ धर्म बढे।
सत्यही ते लेवा देवा, सत्य ते वडाई है॥
सिध्लाल होय आदर बहुत, पाते मुक्ति होत।
अन्त माहिं, पुग्य फल दाई हे॥
सत्य विना मानुष के, दरजा रहत नाहिं।
याते चतुरनने, सुसत्य उपजाई हे॥ ६॥

हाथी चचल होय, भपट मेढान दिखावे। राजा चचल होय, मुलक को सर कर लावे॥ होय दरिद्री, दीन जगतमें भ्रमत डोले। कहते ज्ञानी लोक आस वो अमर कायाके। करें गर्वकी वात, भयो मदमां मायाके॥ ५॥

करके निश्चय भोगसी सब कर्मन को भोग। विन भोगे छूटे नहीं, कटें न तन को रोग॥ कटें न तनको रोग वैद्य घर बहुत ही आवे। कर ले कोटि उपाय औषधी सागी न पावे॥ कहते शास्त्रोंमे समक्ष ले हृदय घरके। सब कर्मन को भोगभोगसी निश्चय करके॥६॥

दान तड़ाके दीजिये करो न पलकी देर।
तुरत फुरत पहुंचाइये मुखसे कहो न फेर॥
मुखसे कहो न फेर फेरमें फेर हो जावे।
कोटि विश्व पड़ जाये दान करने नहीं पावे॥
कहते बुद्धिवान देवो तुम प्रेम बढ़ा के।
करो न पलकी देर दीजिये दान तड़ाके॥

्राष्ट्रभ्यस्य अन्य हैं श्री मनहर इन्द हैं;क मेक्टरस्टरस्टरस्य

चन्दनके पास कई नीम, आदि वृत्त रहत । उसीकी सुगन्धि पाय, चन्दन होय जात है ॥ ऐसे ही गुरू के संग, मूह मित चेलो वसे। चन्दन की सुगन्धि नाई, वोही ज्ञान पात है ॥ जैसे काष्ट लोष्ट हुं की, जल में तिराय देत। सेनू गुरूदेव संग शिष्य, तिर जात है ॥ १॥

मृर्ख की चाल देखी, चाल को कुचाल चाले। ज्ञानी हूं कि चाल, सब जन मन मानी हैं॥ सुच्छ विद्या पाय कर, सबसे विवाद ठाने। सुच्छ धन पाय कर, भयी अभिमानी हैं॥ सुच्छ वल पाय कर, सबही कुं दुःख देत। ज्ञानी मत जान, पृरो ही अज्ञानी हे॥ २॥ पिरिडत चंचल होय, सभा को उत्तर दे आहें घोड़ा चंचल होय, सवारे युद्ध जितावे॥ ये चारों चंचल भले सो, राजा पिरिडत गजतु वैताल कहें सुनो विक्रम. सो एक चंचल नारी वु विता विचारे जो करे, सो पीछे पछतात। काम विगाडे आपनो, जग में होत हंसाय।

काम विगाड आपनो, जग में होत हंसाय। जग में होत हंसाय, चित्त में चैन न णवे। खान पान लन्मान, राग रंग मन ही न आवे कह गिरधर कविराय, दु:ख कछु टरत ना टरे खटत है जीव मांय. कियो जो विना विचारे॥१



पुत्र हैं, दासी वो दास सवी आज्ञाकारी। जच्मी भइ बहु भाग के कारण, तासूं चट्ट्यो विगयां असवारी॥ सो गाड़ी घोड़ा चट्ट्यो देख्यो, वाह वाह रे पुराय तेरी वलीहारी॥१॥

ं जो दश वीस पचास भये शत, होई हजार सु लाख मंगेगी ॥ कोटि अरव्य खरव्य असं-ख्यं, ,धरापित होने की चाह जगेगी ॥ खर्ग पताल कु राज करों,, तृपणा अधिकी अति । आग लगेगी ॥ सुन्दर एक संतोप विना शठ, तेरि तो भूख कभी न भगेगी ॥ २ ॥



ज्ञानी धन पाय कर, निर्धन की सहाय करे। ज्ञानी विद्या दान कर, भयो अति दानी है॥ ज्ञानी वल पाय कर, दुर्वल को दुःख हरे। प्राणी तू विचार देख, वही सच्चो ज्ञानी है॥३॥



पूर्व पाप किया था घगा, ताको लाभ अठे अब दृष्टी में आयो। देह में रोग रहे निश्चि वासर, बुद्धि से हीन दारिद्र भी छायो॥ पुत्र दारा को सुख मिल्यो, पांचों वात को आज पतो हम पायो। याको विचार करें मन भीतर पाप अरू पुन्य को भेद दिखायो॥ पुष्य प्रताप पाही नर देही, निरोग रहें कछु रोग न भारी। सो निज रूप वन्यो अति, सुन्दर, रूप-वती पतिवता है नारी॥ बुद्धि समुद्र पिता जैसे



चिंता जाले शरीर वन, दावा नलकी आग। प्रगट धुंवा दिखे नहीं, उरू अंदर धुधकाय ॥ उरु श्रंदर घुधकाय, जले ज्युं काचकी भट्टी। जल गया लोहु मांस, रह गई हाडकी टही ॥ कह गिरधर कविराय, सुनो हो मेरे मिता। वो नर कैसे जीवत, जाय मन व्यापत चिंता ॥१। श्रंक विलोम लिख्यो मथुरा, मध्य घटाय भज्यो ' सुखमें। ताइ - मुनीस निश बासर, कौन गिने तन मानपर्मे ॥ वैजुलाल वर्ण जुग चार्, असार कहें सो रहे दुखमें । ऐसो पदार्थ पाय भजे नहीं, ऋंक घटो सो पड़ो मुखमें ॥ २ ॥

्र श्रपने ग्रन दुध दिये जलको, तिनकी जलमे फुनी प्रीति कलाइ । दुधके दाहको दुर कराय, जल श्रपनी देह जलाइ ॥ नीर वीद्योवी १५०

## ्री %त्रप्प**र**्ष

कुसमें, मीठो अन्न, उदक मोठो उनाले ।

मोठो लवन रसोइये, वस्त्र मीठो सीयाले ॥ भोठो प्रेम ध्यार, बात-मीठी केंद्र दिठी। मीठी दुतनी वात, महा मीठी अंगीठी ॥ मीठी जीयजे गरज हुवे, मीठो रस तन्त्री तर्णो। कील कहे सगला ही पहें, सुत संगम मीठी घणी॥१। प्रथम पांडव भूप, खेली ज़ूझा सब खोयो। मांस खाय वकराय, पाय विपता बहु रोयो। विन जाने मद्पान जोग, जादोंगन दुज्भे। चारुदत्त दुःख सहे, वेश्या व्यसन श्ररुजमे ॥ नृप बहोद्रत झालेट सों, द्विज शिवभृति भद-त्तरति। पर रमनि राचि रावण गयो, सातो सेवत कौन गति॥ २॥।



केसे कर केतकी, कनेर एक ही जाय, भार्य दुध श्राक दुध श्रंतेर घनेरो है। पीली होय हलदी, प्रा रीस कर कचन की, कहा कार्य वानी, कहा कोयल की टेर हैं। कहा भारा तेज भारो, कहां श्रागीयो विचारी, कहां पूनों को उजार, कहा श्रमावस श्रधेर है। पच्छ छोड़ पार की निहार देख विके कर, जैन वैन श्रन्य

चेतन रूप अनुप अमुर्ती, सिद्ध सदा पद मेरो। मोह महान्म आत्म अंगी कीयो पर-स्थ महातम येरो। ज्ञान केला उपजी खंब मोही, कहु गुण आगम नाटक केरो। जासु प्रसाट साथी शीव मारग, वेगा मिटे घटवास सबेरो॥ २॥

चैन इतनो ही फेर है।। १॥

खीर सहे नहीं, उफन आवत है अकुलाइ। सैन मिले फुनी चैन लहों, निन ऐसी धर्मसी श्रीती अलाइ॥३॥

जंगनमें, मंगनमें, ससुरके अंगनमें, रहयन तीय रंगनमें रस वरपाये हैं। गावनमें, वजा-वनमें, पढन पढावनमें, रीम्मन रीमांवनमें धुन दरसाये हैं॥ ज्ञान नाम खेबेमें, दान मान देवे में, सत्य वात कहवेमें तत्व परकाहाए हैं। आही-रनमे, व्यवहारमें, विचारमें, कृष्ण कहे चातुर-को इतरी ठौर जजावो न चाहीए ॥ ॥ वार वार कह्यो ताहि सावधान वयों न होत,

ममताकी पोट शिर काहे कूं धरत है। मेरी धन मेरो धाम मेरो सुत मेरो वाप, मेरे पशु मेरे याम भूतो यों फिंग्तु हैं ॥ तु तो भयो वावरी विकाय गई बुद्धि तेरी, ऐसो अन्धकूर गह तामें तू परत है। सुन्दर कहत तोहिंने कहू न अवै लाज, काजको विगारके अकाज क्यों करत है।।॥ जाय नरभव निफल है ॥ मिलके मिलापी जन, पूंछत कुशल मेरी। ऐसी यों दशा में, मित्र काह की कुशल है ॥

काहेको बोलत बोल बुरे नर, नाहक क्यों जस धर्म गमावें। कोमल बैन चवें किन ऐन, लगें कछु हैं न सबें मन भावें॥ तालु छिदें रसना न भिदें, न घटें कछु छक दरिद्र न छावे। जीभ कहें जिय हानि नहीं, तुफजी स्व जीवन को सुख पावे॥

जो धन लाभ लिलाट लिख्यो, निज पुराय पटार्थ के अनुसारें। सो मिल है कछ फर नही, मरु देशके ढेर सुमेर सिधारें॥ घाट न वाढ कही वह होय, कहा कर आवत सोच विचारे॥ कूप किधों भव सागर में, नर गागर आन मिलें जल सारें॥

इति मनेया समाप्रम्

मात मिले, स्रुत भ्रात मिले, पुनि तात मिले मन वंछित पाइ; राज मिले, गज वाज मिले, युवती सुख दाइ; लोक मिले, परलोक मिले, सब थोक मिले बैकुंठ सिधाई; सुंदर सव सुख आन मिले, पण संत समागम दुर्लभ भाइ; ॥ ३ ॥

तिलमें तेल दूधमें घृत है, दारुमांहिं पावक पहिचान ॥ पुष्प<sup>े</sup>मांहिं ज्यूं प्रगट वासना, ईख माहिं रस कहत बखान ॥ पोसति माहिं श्रफीम निरंतर, वनस्पती में शहद प्रमान।

संदर भिन्न मिल्यो पुनि दोसत, देह माहिं यूं ञ्चातम जान ॥ ४ ॥

जोई छिन कटै सोई, ऋायु में अवश्य घटै। वृंद वृंद वीते जैसे, श्रंजुलीको जल है॥ देह नित छीन होय, नैन तेज हीन होय। जोवन मलीन होय, छीन होत वल है। दुकै जरा नेरी तके, अंतक अहेरी आवे। परभव नजदीक

अः दोहा अः ॥ श्रो जय जिनेदाय नमः॥ हैं भिक्षा अस्ति । हिंद

त्रादि नमुं चरपभादिको, हितीय नमुं गुरुपाय, तृतीय शारदा मातको, स्मरण करुं हरखाय॥१॥ स्तवन विलास उपयोगीये,रच्यो भव्य सुखदाय। वहसूत्रे संब्रह कीयो, पचपात तजि भाय॥२॥ रवि शसि जवलों जगतमे, रहत सदा करि तेज। तवलों जैन समाज नित,रखहु प्र'थ पर हेज॥३॥ कलकत्तासे प्रसिद्ध करुं. पर निज हित काज। रुची सहित याको पढत, पावत सुखनो साज॥४॥ अल्प बुद्धि में वाल हूं, विद्वान् सुं अरदास। लिखा वही देखा यथा, मत कीजे मुज हासा।५॥ सूत्रार्थ जागुं नहीं, जिन वाग्री अनुसार। भूल चुक दृष्टि पड़े, लीजे आप सुधार ॥ ६॥



## कर्म गति टारी नहीं टरे ॥ ए टेर ॥

गुरु विमिष्ट से पडित झानी, रूचि रुचि लगन घरे। मीता-हरण मरण दशारथ को, विषक्षमें विण्त परे ॥कर्म ॥११/ पिता वचन पलटे सो पापी, सो प्रहलाट करे। जिनकी रचा कारण तुम प्रभु, नरसिंह हप घरे ॥कर्म॥२॥

पाएडव जनके छाप मार्खी, तिन पर विपत परे। दुर्योधन को मान घटायों, यदुकुल नाश करें ||कर्म||३॥ सीन लोक इस विपतके वशमें, विपता वश ना परे।

स्रुत्यस याको शोच न कीजे, होनी तो होके रहे ॥कर्म॥४॥



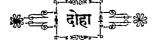




उपसर्गाः चयंयांति, छिंचते विद्यवह्ययः। मन्नः प्रसन्नतामेति, पृज्यमाने जिनेश्वरे ॥१॥ सर्व मङ्गलं माङ्गल्यं, सर्व कल्याण कारणं। प्रधानं सर्व धर्माणं, जैन जयतु शासन॥२॥ मङ्गलं भगवान् वीरो, मङ्गलं गौतम प्रभुः।

मङ्गलं स्थूल भद्रायाः,जैनोधम्मोंस्तु मङ्गलं॥३ 🛬 ॥ इति भी जैन स्वत विलाम मन्य समाप्तम ॥ 😤

न्ह्रः ॥ इति श्री जन स्तवत विताम मन्य समाप्तम ॥ ॐॐॐः। भवतु॰ॐॐ



विंगलगण जाणु नहीं, अरूपमती अनुसार। रची अर्पण करूं जेप्टने, पंडित लीजी सुधार॥

रची अपंग करूँ जप्टने,पंडित लॉजी सुधार॥ \_\_\_\_∰॥ श्रीरस्तु ॥∜ञ्.

NAMES OF THE PARTY OF THE PARTY

श्रोसवंस कुल सेठीया, वीकानेर घर खास। लहरचन्द नित वीनवे, पूरण करियहुं श्रास ॥७॥ उगिणिसेय ग्रणीयासिये, कृष्ण पच नभ मास। जेन धर्म प्रशाद करि, संग्रह कीयो उल्जास॥८॥ वेर वेर विनती यही, रिलये यांपर ध्यान। सफलारमा मेरी तभी, समभुं में बहुमान॥६॥

🚝 शुभं भवतुः 📚



अ पुस्तक मिलनेका पता— पानमल ऊटैकर्ण सेठिया।

नं० १०**८ पुराना चिनावाजार** प्रीट,

<sub>चिट्टीका पता</sub> पोस्ट वक्स नं० २५५ कलकत्ता।

<sub>तारका पता—</sub> "सेठिया" कलकत्ता ।

FAIN STAWAN BIBAS?

Panmull Oodeyruvn Sethia

CORAL & PEARL MERCHANTS
Office—108, Old China Bazar Street,

CALCUTTA

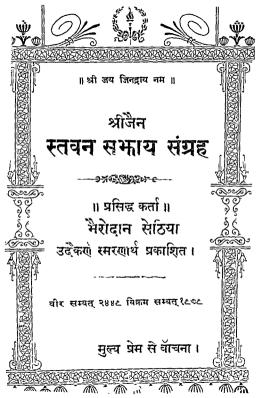
Letter Address—Post Box 255, CALCUTTA

Letter Address—Post Box 255, CALCUTA

\*\*Celegraphic Address—\*\*SETHIA\*\*\*

\*\*CHIMACA FFA

<u>iledekkarkeretarkarkarkarkar</u> शानित !!! शानित !!! शानित !!! सेवंभते सेवंभते गौतम वोले सही, श्रीमहाबीरके बचनामें कुछ सन्देह नहीं। जैसा लिखा हुवा यन्य, पुस्तक, पानेमे देख्या, बांच्या, तथा सज्जनोसे वारया, सुएया वैसा ही ऋस्प वृद्धिके ऋनुसार लिए। है, तत्व केवली गम्य श्रहर, कानो, मात, अनुर्खार, हस्व, दीघं, श्रोछो, श्रधिको, श्रागो पाछो, जिरावाणी विपरीत, श्रशुद्ध पर्णे लिंख्यो होय तथा कोइ तरहकी छपाने मे ज्ञानादिककी विराधना कोनी होय, जाएते, अजाराते, कोइ दोप लाग्यो होय तो मन,वचन,काया,करी मिथ्या द्वष्क्रत,देवहुं । भैरोदानजी तत्पुत्र लहरचन्द सेठिया । S118 8110 ्रेशुभं भवतु∰﴾⟨**⟨**००



ShriðainStawanBilasSangrah Augarehand Bhairedan JAIN LIBRARY. MOHOLLA MAROTIAN. BIKANER. RATPUTANA Augarchand Bhairodang JAIN NATIONAL SEMINARY. MOHOLLA MAROTIAN. BIKANER RAJPUTANA. **♣AND**♣ Augarchand Shairodan ayîn nationati gibiz inzlilalê THANTHARA KI GOWAD, NEAR MOHOLLA MAROTIAN. BIKANER, RAJPUTANA ତ୍ରତ୍ତତ୍ତତ୍ତତ୍ତ ତତ୍ତତ୍ତତ୍ତତ୍ତ



विषय पृष्ट श्रीनचकार मन्त्र दोहा ( शासनपति श्री चीरजिन ર સેં ઇ

तिष्युत्ती पाठ समायक-इरियावहीवाकी पाटी

तस्सउत्तरी री पाटी ७ से ६ लोगस्स की पारी

0 Ł

श्रीनमुत्यूण की पाडी समायक पाइने री पाटी समायक री चिधि २०से ११

६से ७ नमायक लेगेकी पारी

श्रीपाच परमेष्टीने चन्दणा सर्वेया १२से १५ श्रीगुरुदेव रो सरीयो रक्षसे १५ श्रीचौत्रिश जिनपर को स्तपन १५ से १६

श्रीनवकार मन्त्र को स्त्यन १३ में १८ श्रीगणधर को स्त्रन १८ से १६



## 💵 शुद्धि-पत्र ॥

## हेडिंग छोडकर पक्ति ( श्रोली ) गिग्णीजे ।

वृष्ट _	पक्ति	वशुद्धि	शुद्धि
٦Š	१३	स्याद	स्याद्
3	१६	अरवीद	अरविद
ક	१	स्याद	स्याद्
ន	€9	मध्रपण	मत्थेण
ų	£	ठाणाउ ठाण	राणाउठाण
£	१०	तित्थयरे जिणे	तित्थय रे जिणे
8	ч	सक्रय	मक्त्रय
१३	५ तथा १३ फेत है		कहत है
१३	१६	मारतृ	मारत
१४	५ तथा १३ केत है		कहत है
9 64	2	वभाइ	<b>युक्ताइ</b>
१५	५ तथा १३ फेतह		कहत है
१७	१८	प्रति यूभव्या	प्रतिदूभया
१६	१६	सद्री	सुदरी
<b>२</b> १	१	जाणी	जाणे



(ंग)

भविक 结 भवक प्रति प्रीति ζĖ लासी विलासी 26 E9 था माता 03 १६ पवाता दाजी दीजी 03 १६

नोट—इनके अतिरिक्त और भी अगुडियाँ हैं, हस्व दीर्घ अनु-स्वार वगैरह जो तुरन्त समफ में आ जावे वैसी अगुद्धियाँ नही निकाली हैं, सो सुशजन गुद्ध करके पढ़ें, और अगुद्ध लिखा देख कर क्षमा करें।





#### (ख)

२१	ų,	वाधो	वाधी
રષ્ટ	ន	अङ्	अद्
২৪	Ę	विष्ण	विष्णु
ર્ષ	१	जि <b>न</b>	गेन
२५	۷	पनात ,	पसात
২৩	१३	कोजे	कीजे.
२६	१६	कोढ र्र	कोढ
₹१	Ġ	वाधे	वधे •
३२	8	पाश्य	पार्श्व
32	१८	पारर्श्व	पार्श्व
33	ន	धरर्णद्र	घणेंद्र
₹ દ્વ	u,	सिद्ध तीर्थ	तीर्थ सिद्धा
કક	¥	विसलपुर	<b>्विसा</b> ळापुर
છષ	२	जाणी	जाणु
છષ	ર	मेरे	मेरो
કદ	۵	<b>उत्तभ</b>	उतम
€.9	ঽ	स्च्यो	रच्यो
૭૬	१	पराण्या	परएया
9८	۷	डरियामाणी	डरियामणी
૮५	६-६०	भाओ तक रहा	भाया तक रहा है
		सुरज विच डवफे	जीव चिंडे परकाल
		लेसी चमकाणारे	सीचाणा रे
s</td <td>१२</td> <td>अनभच</td> <td>अनुभव</td>	१२	अनभच	अनुभव



#### ॥ त्र्रथ श्रीनवकार मन्त्र प्रारम्भः॥

॥ समो अरिहंतासं॥ समो सिन्धासं॥ समो अपितासं॥ समो अपितासं॥ समो उवन्मायासं॥ समो जोएसव्यस्तास्य ॥ समो जोएसव्यस्तास्य ॥ समो पंच समुक्कारो॥ सव्य पाव प्यसाससी॥ मंगलासं च सव्येसिं॥ पटमं हवड़ मंगलं॥ इति नमस्कारः॥ १ ॥ (पर ९ सप्तार यह अक्षर ७ स्ता अक्षर ६१ मर्व अक्षर ६८)

॥ श्रीगौतमाय नमः ॥



यह पुस्तक यत्न से रक्खे

जयगा से वाचे

कानो मत अनुस्वार हत्व दीर्घ अशुद्ध टुटी

भाषा में लिख्यो हुयो विद्वान कृपा कर सुधार

लेवे प्रशिद्ध कर्त्ता की यही नम्र विनंती है।

सम्यक्रत्त्व साधनथकी मिटे तिमिरं सविदन्द ॥६॥ समकित भेट जिन बचनमें भेट पर्याय विशेष। पिरामुख्य दोय प्रकार है ताको भेद ऋलेख ॥१०॥ निश्चय ग्रह ब्यवहार नय ए डोनुं परिमाण। द्धि मथने घृत काढ़वा ते तो न्याय पिछास ॥११॥ देव धर्म गुरु आस्ता तजे कुदेव कुधर्म। ए व्यवहार सम्यक्त कही वाह्य धर्मनो मर्म ॥१२॥ निश्चय सम्यक्त नो सही कारणुळे व्यवहार । ए समकित अराधता निश्चय पण अवधार॥१३॥ निश्चय सम्यक् जीवने पर परिगाति रस त्याग । निज स्वभावमे रमण्ता शिवसुखनो ए भाग॥१८॥ चेहुं सम्यक्ततदलहे समभे नव तस्व ज्ञान। नय निचेष परिमाण सुंस्याद बाद परिमाण॥१५॥ इव्य चेत्र इसही तसा काल भाव विज्ञान। सामान्य विशेष समभते होय नयारमकज्ञान ॥१६॥ चर्म जिन चौबीसमा प्रणमु पद ऋरविंद । ·वर्ते पंचम काल में शासन जस सुख कट ॥१७॥ जिन वाणीना भेदनो मत करजो कोई हांस।

१) डोहा ॥

शासनपति श्री वीर जिन त्रिभुवन दीपक जागा। भवउद्धी तारण तरण वाह्या सम भगवान ॥१॥ चरण कमल युग तेहना, वंदे इन्ट्नरेन्द । चन्द नरेन्द फनीन्द तसु सेवे सुरनर वृन्द ॥२॥ तासु कृपा से उद्धरचा जीव ग्रसंख्य सुज्ञान । लहीशिवपद्भवउद्धितरिञ्जजरत्रमरसुखथान॥३॥ तसु मुखर्थी वाणी खरि जिम श्रावण वरसात।

श्रनन्त नयात्मकज्ञानथी मविजन दुःखमिटात ॥**४॥** ते वाणी सद्युरु मुखे जे भवि हृद्य धरन्त ।

स्वपर भेद विज्ञान रस ऋनुभव ज्ञान लईत ॥५॥ उत्तम नर भव पायकर शुद्ध सामग्री पाय ।

जो न सुर्गे जिन बचन रस ऋफल जमारो जाय॥६॥ ते.माटे भवि जीवकृं अवश्य इचित एकाज । जिनवागीप्रथमहीश्रवग्रत्रमुक्रमज्ञानसमाज॥७॥ जिनवाणी के श्रवण बिन शुद्ध सम्यक् न होय।

सम्यक्विनश्रात्मानंदरसचारित्रगुणनहिंजोय॥=॥ , शुद्धसम्यक् साधन विना करणी फल शुभ वंद,।

### ॥ ऋथ इरियावहीयाकी पाटी लिख्यते॥

----

**ﷺ इच्छाकारेण सदिसह भगवन् इरियावहियं** पड़िकमामि, इच्छं इच्छामि, पड़िकमिउं इरियाव-हियाए, विराहणाए, गमणागमणे पाणकमणे, बीयक्रमणे,हरियक्रमणे श्रोसाउत्तिंग पणग दग मही मकडा संताणा संकमणे जे मे जीवा विराहिया. एगिंदिया, चेइंदिया, ते इदिया, चउरिंदिया. पंचिंदिया, अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघहिया, परियाविया, किलामिया, उद्दिवया, ठाणाउ ठाण संकामिया, जीवियाउ, ववरोविया, तस्त मिच्छामि दुक्कडं ।।ਵਰਿਸ 11 8 11

॥ त्र्यथ तस्सउत्तरीनी पाटी विख्यते॥

तस्स उत्तरी करणेणं, पायच्छित्त करणेणं-विसोही करणेणं, विसन्नीकरणेणं, पावागं शब्दार्थ—वाहरा (जहाज) चरस्यकमल (पग)

युग (दोय) नरेन्द (राजा) फनीन्द (नागकुमार
देव) वृन्द (बहुत) उद्धारचा (निस्तार किया)
शिवपद (मुक्ति) भव उद्धि (संसार समुद्र)
नयात्मक (सातनययुक्त आत्म ज्ञानसे भरी हुई)
विज्ञान (जानपना) लहंत (लिया) दरश (देखना)

तिमिर (अन्धकार) सिव दन्द (सव दुःख) मर्म (सार) आराधता (साधता) अवधार (जानना) परपरिणति (परस्वभाव) तदलहे (याने जवपावें) ———

॥ श्रथ तिक्खुत्तोरी पाटी लिख्यते ॥

——

तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेमि बंदामि

णमंसामि सकारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं

देवयं चेइयं॥ पञ्जुवासामि मथएण वंदामि

H '8,11.

उसभमजियं च वदे, संभव मभिग्रंदणं च सुमइं च ॥ पउमप्पहं सुपासं, जिगां च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहि च पुण्फदंत, सीञ्रल सिज्जस वासुपुरजं च ॥ विमल मर्गातं च जिएं, धम्मं संतिं च वंडामि ॥३॥ कुंथुं ऋरं च मिल्लं वंदे मणिसञ्चयं निम जिएं च ॥ वंदामि रिट्टनेसिं, पासं तह, वद्धमागा च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विदृयरयमला, पहीण जरमरणा ॥ चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय चदिय महिया, जे ए लोगस्त उत्तमा सिद्धा ॥ श्रारुग बोहिलाभं, समाहिवर मुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयास-यरा॥ सागर वर गभीरा, सिद्धा सिद्धि मम दिसंतु ॥ ७ ॥ इति ॥

(पद २८ सपडा २८ गुरू २७ लघु २३१ सर्व अहर, २५८)

कम्मार्ग गिग्घायणट्टाए. ठामि काउस्सग्गं, श्री
†श्रव्य उसिएणं, नीसिएणं, वासिएणं,
छीएगं, जंभाइएगं, उद्दुएगं, वायिनसगेणं,
भमिलए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं श्रंगसंचालेहिं,
सुहुमेहिं खेल संचालेहिं, सुहुमेहिं दिद्विसंचालेहिं,
एवमाइएहिं श्रागारेहिं, श्रभग्गो, श्रविराहिश्रो,
हुज मे काउस्सग्गो, जाव श्ररिहंतागं, भगवंतागं,
गमुकारेगं, नपारेमि, ताव कायं ठागोगं, मोगोगं,
भागोगं, श्रप्पागं, वोसिरामि ।।१॥ ॥ इति॥

**\$--**

## ॥ त्र्रथ लोगस्सकी पाटी लिख्यते॥

लोगस्स उज्जोयगरे, धम्म तित्थयरे जिसे ॥ ऋरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥

🕸 नोट — उपरके टोनो स्त्रोके पद ३२ सपदा ८ गुरू अन्नर

२४ लघु श्रद्धर १७५ सर्वे श्रद्धर १९९।

† तोट - पद २८ सपटा ५ गुरू १३ लघु १२७ सर्व अत्तर १४० ।

वरचाउरंतचक्कवहीणं; (दिवोताणं सरणगइपइट्टा)
अप्पिडहय वरनाणं दंसणधराणं, विश्वह छउमाणं; जिणाणं जावयाणं, तिलाणं तारयाणं,
बुद्धाणं वोहयाणं, मुत्ताणं मोयगाणं; सव्वन्नूणं,
सव्वदरिसीणं, सिव मयज मरुअमणंत मवस्य
मव्वावाह मपुणरावित्ति सिद्धिगइ नामधेयं
ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं जि अभयाणं।
॥ इति॥

(पद ३३ सपदा ९ गुरू २९ लघु २३३ सर्व श्रदार २६२ ) ॥ अथ्य सामायिक पारवाकी पाटी लिख्यते ॥

नवमा सामियक वतना पंच अइयारा जाणीयवा नसमायरियवा तंजहा ते आलोउं मण्डुप्पणिहाणे वय डुप्पणिहाणे काय दुप्पणि हाणे सामाइयस्स अकरण्याए, सामाइयस्स अण्बुठियस्स करण्याए तस्स मिच्छामी दुक्कड़ं सामायिकने विषे दस मनना दस वच-नना वारे कायाना ए वत्तीस दोप माहेलो कोई दोपलागो होयतो मिच्छामि दुक्कड़ं, आहार 1 ३३

त्यक लेवसकी पाटी लिख्यते॥ —>->=>>>

करेमि भंते सामाइयं, सावड्जं जोगं पच्च-क्खामि, जावनियमं मुहूर्तक पड्जुवासामि, दुविहं, तिविहेणं, नकरेमि न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा, तस्सभंते, पड़िक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥ ॥ अथ श्री नमुत्थुणंकी पाटी लिख्यते॥

नमुत्थुणं ऋरिहंताणं, भगवंताणं, ऋाइगराणं तित्थगराणं, सयंसंबुद्धाणं, पुरिसुत्तमाणं, पुरि-ससीहाणं, पुरिसवर पुंडरीयाणं, पुरिसवर गंध-इत्थीणं; लोगतमाणं, लोगनाहाणं, लोगहियाणं, लोगपईवाणं, लोगपज्मोयगराणं; ऋभयद्याणं, चक्खुद्याणं, मग्गद्याणं, सरण्द्याणं, (जीव-

दयाण् ) वोहिदयाण् ; धम्मदयाण् , धम्मदे-सियाण् , धम्मनायगाण् , धम्मसारहीण्, धम्म-

क्ष नोट —जितनी समाधिक करनी होवे उतना मुहूर्त<sup>े</sup> वोलाणा त्रथा<u>र्</u>था होय तो लारलो काल मिलाय ने बोलाणो । (१) "डरियावहिया" की पाटी "जीवियाश्चो ववरोनिया" पर्यंत मनमें गुणनी ''(१) नमो श्ररिहताण्"मनमेकहकर काउस्सग्गपाडनो पछ्ने "(१) लोगस्म" की पाटी प्रगट कहरणी, पछ्ने "(१) करेमिभते" की पाटी ''जाव नियम'' सुधी कहीने त्रागल सुहूँत्त घालाा हुवे तिक घालगा, पछ "पञ्जुवासामि" से लेकर "अप्पाण वोसिरामि" सुधी पाठ कहराो, पछे नीचे बैठकर डावो गोडो ऊभो राख दोन हाथ जोड़ कर "नमुत्थुण" की पाटी दोय वार कहणी, दुजे नमु-त्थरारे अन्तमें जहा ठारा सपत्तारा श्रावे उस्र स्थान पर "ठारा सपविउ' कामस्स एमो जिएाए जि श्रभयाए" ऐमा बोलएा, पछे त्र्यासण माथे वैसीनें, समायिकका काल पूरा ना हुये जहा तक झान ध्यान करना या सिराा हुवा झान याव करना या नया चोल-चाल थोकडा सीखना या चितारना इसी तरहसे धर्म सम्बन्धी ज्ञान ध्यान करके समायिकका काल पूरा करना ।

गुरु महाराज विराजता होने पास बैठा हुये तो गुरु महाराजके सन्मुख बैठे पुठ देवे नहीं, सज्जाय बदात्य वाणी फुरमावता हुवे तो इसमें उपयोग रक्खें।

समायिक रा भन्ड उपगरण निर्धिकार मान रहित रखे, चित-रामाटि रहित स्थानक में समायिक करें समायिक में समायिक रा दोष दाले। १ सुर्हुत्त ४८ मिण्टका सममो।

॥ इति सामायिक लेनेकी विधि समाप्तम् ॥

संज्ञा, भय संज्ञा, मिहूण संज्ञा, परिग्गह
संज्ञा ए चार संज्ञा माहेली कोई संज्ञा करी
होय तो मिच्छामि दुकड़ं। स्त्री कथा, राज
कथा, भक्तकथा, देशकथा ए माहेली कोई
कथा करी होयतो मिच्छामि दुकड़ं। सामायिक
समकाएगां, फासियं, पालियं, सोहियं, तिरियं,
कित्तियं, आराहियं, आग्राए अग्रुपालियं न
भवइ तस्समिच्छामि दुकड़ं॥ ॥ इति॥

## ॥ त्र्रथ समायिक लेनेकी विधि॥

- AND SECTION

पहला स्थानक (जागा) बैठको पुजागी मुह्दपती जीवे 'फेर जागा जतनासे पुजे फेर बैठको (श्रासन) पुज कर विद्यावे। श्रासण छोडके पूर्व तथा उत्तर दिशाकी तरफ मुह करके दो हाथ जोडके पच श्रद्ध नमाय ३ वस्त विधियुक्त तिक्खुताके पाटसे वदणा नमस्कार करके श्रीमहाबीर स्वामीजी की तथा श्रपणे धर्माचार्य (गुरुटेव) की श्राहा मागके "इरियाबहिया" की पाटी

"जीनियाउ ववरोविया तस्त मिच्छामि दुक्कड" सुधी भएानी, पछे "तम्सउत्तरी" की पाटी भए। कर काउम्मया करनो, काउस्सगामे, श्वतिसे चोतीसधार, पेंतीस वाणी उचार, समजावे नरनार, पर उपगारी हैं; श्रारे सुंदराकार, सूरजसो भलकार, गुण हैं अनंत सार, दोप परिहारी हैं; केतहें तिलोकरील, मन, वच, काय करी; जुली जुली वारंवार, वंदणा हमारी हैं।

श्रीसद्ध भगवन्तन
सकत करम टाल, वश्कर लीयो काल,
मुक्तिमें रह्या माल, श्रातमाकुं तारो है;
देखत सकल भाव, हुवा है जगतराव,
सदाहि चायिक भाव, भ्ये श्रविकारी है;
श्रचल श्रटल रूप, श्रावे नहिं भवकूप,
श्रानुप सरुप उप, ऐसी सिद्ध धारी है;
केतहै तिलोकरीख, वतावो ए वास प्रभु,
सदाहि उगंते सूर, वन्दगा हमारी है।

ग्रण है इतीस पूर, धारत धरम ऊर, मारत करम करू, सुमति विचारी है:

#### ॥ त्र्रथ सामायिक पारनेकी विधि ॥

सामायिक पाडती वरात "१ इरियाविहया" की पाटी "तस्स उत्तरीं" की पाटी कह कर काउस्सग्ग करनो, काउस्सग्गमे हाथ पैर मुढ शरीर वगैरह हलाएा चलाएा नहीं, श्रपने शरीरको स्थिर रखना काउस्सग्ग मध्ये "१ लोगस्स" की पाटी मनमें कहणी, "एमो श्र्यरिहताएं" कह कर काउस्मग्ग पारनो, फेर १ लोगस्सरी पाटी प्रगट कहणी, पद्धे डावो गोडो उभो राखके दोनु हाथ जोड़ कर दोय नमुखुएकी पाटी दोयवार बोलाएी, पद्धे नबमी सामायिक पारनेकी पाटी "न भवह तस्स मिच्छामि दुफड" सुधी कह कर सीन वरात नवकार मन्त्र गुएके सामायिक ठिकाएं करना।

।। इति सामायिक पारनेकी विधि समाप्तम्।।

# पंच परमेष्टी वन्दरा।

श्रीश्ररिहत देवने ।

नमुं श्री अरिहंत करमाको कीयो अंत, हुवासो केवल वंत, करुणा भंडारी है; जयणा करे छुऊं काय, सावद्य न वोले वाय, वक्ताइ कपाय लाय, किरिया भडारी हैं; ज्ञान भणो श्राठुं जाम, लेवे भगवन्त नाम, धर्मको करे काम, ममताको मारी हैं, केत हैं तिलोकरीख, कर्माको टाले विख, ऐसा मुनिराज ताकुं, वंदणा हमारी हैं।

%' :-श्री गुरु देवने । जैसे कपड़ाको थान, दरजी बेतत आगा, खंड खंड करे जाण, देत सो सुधारी है; काठके ज्युं सूत्रधार, हेमको कसे सुनार, माटीके जॉ कुंभकार, पात्र करे स्यारी है ; धरती के कीरसाण, लोह के लुहार जाण, सीलवाटो सीला आण, घाट घडे भारी है ; केत हैं तिलोकरील, सुधारे ज्यूं गुरु शोप, ग्रुरु उपकारी, नित लीजे वलिहारी है : ग्रुरु मित्र गुरुमात, ग्रुरु सगा गुरुतात, गुरु मृप गुरु भ्रात, गुरु हितकारी है ; गुरु रवि गुरु चन्द्र, गुरुपति गुरु इन्द्र, 🧸 ्र गुरु देव, दे आनंद, गुरु पद भारी है ;

शुद्ध सो आचारवंत, सुंदर है रूपकंत, भिष्णिया सबी सिद्धांत, वांचणी सुप्यारी हैं; अधिक मधुर वेण, कोई नही लोपे केण, सकल जीवांका सेण, किरत अपारी हैं; केत है तिलोक रीख, हितकारी देत सिख, ऐसा आचारज ताकूं, वंदणा हमारी हैं।

श्री उपाध्यायजीने।
पढत अगीआरं अंग, कर्मास्ं करे जंग,
पाखराडीको मान भग, करण हुंस्यारी हैं;
चउदे पूर्वधार, जायात आगम सार,
भवियोके सुखकार, श्रमता निवारी हैं;
पढावे भविक जर्या, स्थिर कर देत मन,
तप करी तावे तन, ममता निवारी हैं;
केत हैं तिलोकरीख, ज्ञान भानु परतिख,
ऐसे उपाध्याय ताकूं, वंद्या हमारी हैं।

श्री साघुजीने।

श्रादरी संजम भार, करणी करे अपार, सुमति गुतिथार विकथा निवारी है;

॥ अथ श्री नवकार मंत्र स्तवन लिख्यते ॥ प्रथम श्री अरिहंत देवा ज्यांरी चौसठ इन्द्र करे सेवा ॥ मारग ज्यांरो शुद्ध खरो, श्री नवकार मंत्र जीरो ध्यान धरो ॥१॥ चोतीस अतिशय वेतीस वाणी, प्रभू सघलारे मनरी जाणी ॥ कर जोडी ज्यांस विनती करो॥ श्री०॥शा भव जीवाने भगवंत तारे, पछे आप मुगत मांहे पाउधारे॥ सकल तीर्थंकरनो एकसिरो ॥ श्री० ॥ ३ ॥ पनरे भेढे सिद्ध सीधा, ज्या श्रष्ट करमाने खयकीधा ॥ शिवरमणीने वेग वरो ॥ श्री० ॥ ४ ॥ चौदेड राजरे उपर सही, जठे जनम जरा कोई मरण नहीं ॥ ज्यारी भजन कियां भव सायर तिरो ॥ श्री० ॥५॥ तीजे पद श्राचारज जाणी, जिण्री वज्ञभ लागे अमृत वाणी ॥ तन मनसूं ज्यांरी सेवाकरो ॥ श्री० ॥६॥ संघ माहे सोवे स्वामी, जिके मोच तणा हुय रह्या कामी ॥ ज्यांने पूज्यां म्हारो पाप भरो ॥ श्री०॥ ७॥ उपायायजीरी वृद्धि भारी, ज्या प्रतिवृक्त्ज्या वहु नरनारी ॥

गुरु देत ज्ञान ध्यान, गुरु देत सनमान, गुरु देत मोच थान, सदा उपकारी है, केत है तिलोकरीख, भली भली दीनी सिख, पल पल गुरुजीको, बदगा हमारी है ॥

॥ श्रथ चोविश जिनवरका स्तवन लिख्यते ॥

राग प्रभाती ॥ प्रात उठी चोविश जिनवर को, स्मरण कीजे भाव धरी ॥ प्रो० ॥ ऋषभ श्रजित संभव श्रभिनन्दन, सुमति कुमति सब दूर हरी ॥ पद्म सुपास चदा प्रभू ध्यायो, पुष्प दंत हराया कर्म ऋरी॥ प्रा०॥१॥ शीतल जिन श्रे यांस वासु पुज्य, विमल विमल बुद्धि देत खरी॥ अनन्त धर्म श्री शांति जिनेश्वर, हरियो रोग असाध्य मरी ॥ प्रा०॥ २ ॥ कुंथुं श्रर मिल मुनिसुवराजी,नमी नेमि शिव रमणी वरी ॥ पार्श्वनाथ बर्द्ध मान जिनेश्वर, केवल लह्यो भव श्रोघ तरी ॥ त्रा० ॥ ३ ॥ तुम सम नहीं कोई तारक दुजो, इस निश्चय मन मांहें धरी॥ तिलोकरिख कहें जिम तिम करिने, मुक्ति देवो श्री प्रभू म्हेर करी॥ प्रा०॥शा इति ॥ गण्धर चोथो व्यक्त उदार ॥शासनपित सुधम्मां सार, मंडित नामे छट्टो धार ॥ २ ॥ मौर्यपुत्र ते सातमो जेंह, अकपित अप्रमगुणगेह ॥ मुनित्रर मांहे जे परधान, अचलन्त्रात नत्रमो ए नाम ॥ ३॥ नाम थकी होय कंडी कल्याण दशमो मेतारज अविरल वाण ॥ एकादशमो प्रमार्स कहेवाय, सुखसपित जस नामे थाय॥ ४॥ गाया वीर तला गण्धार, गुण्मिण रयण तला मंडार ॥ उत्तमविजय गुरुनो शिष्य, रक्षविजय बंदे निश्दिश् ॥ ५ ॥ इति ॥

अथ श्री सोल सतीनो छंद।

आदिनाथ आदि जिनवर वंदी, सफल मनो-रथ कीजिए॥ प्रभाते उठी मंगलीक कामे, सोल सतीना नाम लीजीए॥१॥ वालकुमारो जगहितकारी, ब्रह्मी भरतनी वेनडिए॥ घट घट ट्यापक अच्चर रूपे, सोल सितमां जे वडिए॥शा बाह वल भगिनी सतीय शिरोमणी, संदरी नामे सूत्र ऋरथ जे करेसखरो॥श्री०॥ = ॥ गुग्एपंच वीसे करी दीवे, ज्यांसूं पाखरडी कोई नहीं जीवे॥ दूर कियो ज्यां पाप परो ॥ श्री० ॥ ६ ॥ ,पंचमें पद साधृ जीने पूजो, यां सरीखो निजर न ऋावे दुजो मिटाय देवे ते जनम जरो ॥ श्री०॥ १०॥ जो आत्मारा सुख चात्रो तो थे पांच पदांजीरा गुण गावो क्रोड भवांरा करम हरो ॥ श्री० ॥११॥ पृज्य जेमलजीरे प्रसादे जोडी, छुणतां तुटे करमारी कोडी ॥ जीव छ कायारा जतन करो ॥ श्री० ॥ १२ ॥ सहेर वीकानेर चंड मासो रिखरायचंदजी इम भाषे॥ मुक्ति चाहो तो धरमकरो ॥ श्री० ॥ १३ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीगण्धर स्तवन प्रारम्भः॥ = चोपाईनी देशी ॥

्षकादश गणधरनां नाम, प्रह उठीने करू प्रणाम ॥ इन्द्रभृति पहेलो ते जाण, अग्निभृति वी जो गुणखान् ॥ १ ॥ वायुभृति त्रीजो जग सार,



चरपभ सुताए ॥ अंक स्वरूपी त्रिभुवन मांहे, जेह अनोपम गुण जुताए ॥ ३ ॥ चंदनवाला वालप-खेथी, शीयल रंती शुद्ध श्राविकाए ॥ उडदना वा-कुला वीर प्रतिलाभ्या, केवल लही व्रत भाविका-ए ॥ ४ ॥ उम्रसेन धुवा धारिगी नंदनी, राजेम-ती नेम वल्जभा ए ॥ जोवन वेशे कामने जीत्यो, संजम लेइ देव दुल्लभाए ॥ ५ ॥ पंच भरतारी पंडिव नारी, द्रुपद तनया वखाणीए ॥ एकसो ञ्रा-ठे चीर पुराणा, शोयल महिमा तस जाणीये ए॥ ६ ॥ दशरथ नृपनी नारी निरुपम, कौशल्या कुल चंद्रिकाए ॥ शीयल सलूगी राम जनेता, पुगय तसी प्रसालिकाए ॥ ७ ॥ कौसंविक ठामे संता-निक नामे, राज्य करे रंग राजियो ए ॥ तस घर घरणी मृगावती सती, सुर भुवने जश गाजीयो ए ॥ = ॥ सुलशा साची शीयले न काची, राची नहीं विषयारसे ए॥ मुखडूं जोतां पाप पताए, नाम लेता मन उल्लेसे ए॥ ८॥ राम रघुवंशी तेहनी कामिनी, जनकसुता सीतासतीए॥ जग

पेख ञ्रति पो माने देखो ए जग जोवा अमर ञानं श्री इन्द्रभृती पाये प्रशामं प्रभातं ॥१॥

यज्ञ नज देव समोसरण पेठा इन्ड्रभूति आणे आमर्प सेंठा यज्ञ तज देव कहां जातं श्री इन्ड्रभृती पाये प्रणम् प्रभातं ॥५॥

एतले देव हुं दुभी नाद वाजे यो इन्द्र जा लियो कोण गाजे अभी जाय कर हाथ हटातं श्री इन्द्रमृति पाये प्रणमुं प्रभातं ॥६॥

मान गजारूढ थई गौतम चाल्या पांचसौ शिष्य सव संग हाल्या शिष्य विरुटावली इसी मुख वधातंश्री इन्द्रभृति पाये अरामू प्रभात ॥७॥

सिंहासन जिन राज राजे समीसरण कल्प धजा डंड छाजे मानुसेण देख गौतम बोलानं श्री इन्डमृति पाये प्रणमुं प्रभातं ॥=॥

गिरह गण में जेम दीपक इन्द्र चंदा जेम जिएंद समोसरण सोहे छत्र त्रिय चवर हरि करत हाथं श्रीइन्द्रमूति पाये प्रणम, प्रभात ॥६॥ समोसरण सोपान जाय चढ़िया सुर वातां जे नरं भणशे, ते लेशे सुख संपदा ए॥ १०॥ इति॥

> ं ॥ श्री गौतम रासो लिख्यते ॥

्र ॥ दोहा ॥

वीर नमृं शाशन राधणीं तासे चरण चित लाय श्री गौतम ग्रुण गावसूं तन मनध्यान लगाय ॥

मगधदेश गुःवरगांवजाणो तास वसु भूति

मां मई वखाए तेनी कूल जातं गौतम विख्यातं

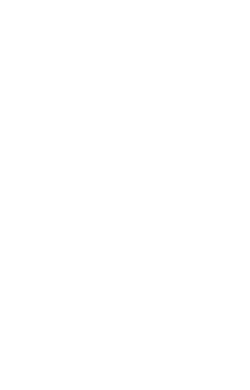
श्री इन्द्रभृति पाये प्रणम् प्रभातं ॥१॥

सकल वेद विद्या में पारगामी तेने पंडिता नमे शीश नामी एकदा गौतम होमं रचातं श्री

नम शाश नामा एकदा गातम हाम रचात आ इन्डभूति पाये प्रणमूं प्रभातं ॥शा

तिहां प्रभु वीर विचरंत श्राया भवीजन देख वहु हरष पाया सुर इन्द्रादि समोसरण

रचातं श्री इन्डम्ति पाये प्रसामुं प्रभातं ॥३॥ देवना विमास रस कंत स्त्रावे गीतम मन



सह चित्र मंडिया गौतम प्रभु पेख आश्चर्य पातं श्री इन्द्रभृति पाये प्रणमृं प्रभातं ॥१०॥

मदन कुण मात प्रभुरूप आगे इन्द्रपाल रया अरध भागे अहो अट्भुत रूप अघातं श्री

इन्द्रभृति पाये प्रणम् प्रभातं ॥११॥

ब्रह्मा विष्णा महेश माया यह तो कोई होय जिनदेव राया गौतम बोले इसी मुख वधातं

श्री इन्डमृति पाये प्रणमृं प्रभातं ॥१२॥ परछंद संदेहनो सद उत्तर दीनो गौतम सहु शिऱ्य चरण लीनो अग्नि मृत ऋ।दि सब

समजातं श्री इन्डम्ती पाये प्रणम्' प्रभातं ॥१३॥ प्रभु त्रिपदी गौतम ने सुणाया तामें चौटह

पूरव रचाया गौतम स्वामी तला जस जग छातं श्री इन्द्रभृति पाये प्रणमूं प्रभातं ॥१४॥ सुन्दराकार सत हाथ देही दीपे जाणे सुर

नरा तला रूप जीते प्रश्न पूछ ज्ञान संग राखे भरातं श्री इन्डभृती पाये प्रणम् प्रभातं॥१५॥

चौ नाम चौदह पूर्व धार धीरा लिध भंडार

राल विटारण हाथ हटे, गजलोल जहां गज कुंभ घटै॥ भृगराज महा भय भ्रान्ति मिटे॥ रसना जिन नायक जेह रटै।। = ॥ किंग्तो चहुं केर फ़ुंकार कणी॥ धरर्लेंद्र धसे धर रीस घणी ॥ भय त्रास न ज्यापे तेह त्तर्णा ॥ घरतां चित पार्श्वनाथ घर्णा ॥६॥ कफ कुप्ट जलोट्र रोग क्रसें॥ गड गुंवड देह ऋनेक यसै॥ विन भेपज व्याधि सव विनसै; वामा सुत पार्श्व जो स्तवसे ॥ १० ॥ धरणीद्र धराधिप सुर ध्यायो ॥ प्रभू पार्श्व, २ करपायो ॥ छवि रूप अनोपम जुग छायो ॥ जननी धन्य वामा सुत जायो ॥ ११ ॥ करतां जिन जाप संनाप कटे, दुख दारित्र दोहग सोहघर्ट ॥ हट छोड़ जहां रिप जोर हुटै॥ पदमावती पार्श्व जहा प्रगटै ॥ १२॥ (३० नमो पार्श्वनाथाय॥ धरणीड पदमावती सहिताय ॥ विपहर कुल्यंग मंगलाय ॥ ॐ हीं श्रीं चिन्तामणि पार्श्वनाथाय ॥ मम मनोरथ पुरय स्वाहाः )॥ मंत्राचर गाथा गूड पडयो॥

जपतां प्रभु पार्श्व नाम यदा ॥ १ ॥ जल अनल मतंगज भग जावे ॥ श्रिर चोर निकट पण निहं त्रावे ॥ सिंह सर्प रोग न सतावे ॥ धन्य धन्य प्रभु पार्व जिन घ्यावे ॥२॥ मच्छ कच्छ मगर जल मंहि भ्रमे ॥ वडवानल नीर अधाह गमे ॥ प्रह-वण वैठा नर पार पमे ॥ नित्य प्रमु पार्श्व जिनंद नमे ॥ ३ ॥ विकराल दावानल विश्व दहें ॥ यह वस्ती धन यास आकाश मंहे॥ तुम नाम लिया उपशानि न लंहे॥ वन नीर सरोवर जेम वहैं ॥४॥ भरतोमद लोल

कत्तोल करे ॥ श्रमरा गुंजारव भर गेस भरे ॥ किर दुष्ट भयंकर दूरि करे, श्रीपार्श्व नाथजीको समरे ॥५॥ छाना छल छिद्र विनाय छले ॥ यश वात सुगी मन मंहि जले ॥ ते पिशुन पड़ नित्य पाय तले ॥ जपतां प्रभु वेरी जाय टले ॥ ६ ॥ धन देखि निशाचर कोढ़ धसे ॥ मुक्त मंदिर पैशक देन सुखे ॥ अति उच्छव तास आवास अखे ॥ परमेश्वर पार्श्व जास पखे ॥७॥ अस

#### अय श्री सिद्ध भगवंतरी स्तुति ।

#### ( इरि गीत कद)

तुमे तरण तारण दुःख निवारण, भदिक जीव आराधनं : श्री नामिनंदन जगत वंदन, श्री त्र्यादिनाथ निरंजनं॥१॥ जगत भूपण विगत दूपण, प्रणव प्राणि निरूपकं, ध्यान रूपं अनप उपमं, नमो सिद्ध निरंजनं ॥२॥ गगन मंडल मुक्ति पद्म', सर्व ऊर्ध्व निवासिनं, ज्ञान ज्योति श्रनंत राजे, नमो० ॥३॥ श्रज्ञान निद्रा विगत वेदन, दलित मोह निरायुकं, नामगोत्र न श्रंत-रायं, नमो० ॥४॥ विकट कोधा मान योद्धा, माया लोभ विसर्जनं, राग होप विमुद्रित अंकर, नमो० ॥५॥ विमल केवल ज्ञान लोचन, ध्यान शक्क समीरितं; योगिना यति गम्य रूपं, नमो० ॥६॥ योग्यमुद्रा समोसरण मुट्टा, पृरिपल्यंकासनं: सर्व दिशि तेजरूपं, नमो० ॥७॥ स्व समय सम-कित दृष्टि जिनकी, सोही योग अयोगिकं, देश

महातम तेज बढ्यो॥ श्री पार्श्वजिन स्तबन

जिए पढयो ॥ १३ ॥ तीर्थपती पार्श्व नाथ तिलो ॥ भएतां जस वास निवास फलो ॥ मिए मंत्र सकोमल होय मिलो ॥ अमचि प्रभु पार्श्व आश फलो ॥ १४ ॥ लुंका गच्छ नायक लाभ लिए ॥ हित चेम करए गुरुनाम हिये ॥ दीन २ गच्छनायक सुख दीये ॥ कीरति प्रभु पार्श्व मुख



कोय ; धर्म थकी नमे देवता, धर्मे शिव सुख होय ॥ ४० १ ॥ जीवदया नित्य पालीये. संयम सतरे प्रकार ; वारा भेदे नव तपे, धर्म तगो ए सार ॥४० २॥ जिम तहवरने फूलड़े भमरो रस लेवा जाय , तिम संतोषे त्रातमा, फूले पीड़ा न थाय ॥ घ०३॥ इगाविघ जावे गौचरी. वेहरे सूजतो श्राहार ; उंच नीचं मध्यम कुले, धन्य धन्य ते अग्रगार ॥ ध० ४ ॥ मुनिवर मधु-कर सम कह्या, नहीं तृष्णा नहीं लोभ. लाध्यो भाड़ो दिये देहने, अगुलाध्यां संतोष ॥ घ० ५ ॥ **अ**घ्ययन पहले दुम्मपुप्फिए, सखरा अर्थ विचार: पुरायकलश-शिष्य जेतसी, धर्मे जय जयकार ॥४० ६॥ इति समाप्तम्॥

कुज्यसन मारग माथेरे धिक्-धिक्-ये देशी।

श्री जिन अजित नमो जयकारी; तू देवनको देवजी; 'जयश्जू' राजाने 'विजया' राणीको-- ( ३६ )

नामां लीन होवे, नमो० ॥दा जगत जनके दास दासी, तास आस निरासनं; चन्दरे परमानन्द रूपे, नमो ॥६॥ चंद्रसूर्य दीप मणि की, च्योतिये न उलंघितं, ते ज्योतिथि

कोइ अपर ज्योति, नमो० ॥१०॥ सिद्ध तीर्थ अतीर्थ सिद्धा, भेद पंचदशादिकं; सर्व कर्म विमुक्तचेतन, नमो० ॥११॥ एक मांहि अनेक राजे, अनेकमांही एकिकं, एक अनेककी नांहि संख्या, नमो० ॥१२॥ अजर अमर अलख अनंत, निराकार निरंजनं, परब्रह्म ज्ञान अनंत लोचन, नमो० ॥१३॥ ऋतुल्य सुखकी लहरमें प्रभु, लीन रहे निरंतरं; धर्मध्यानथी सिद्ध दर्शन, नमो० ॥१२॥ ध्यान धूपं मनो पुष्पं, पचेन्द्रिय हुताशनं; चमा जाप संतोष पूजा, पूजो देव निरंजनं; नमो सिद्ध निरंजनं;॥ १५॥ इति ॥

> ॥ अथ स्तवन ॥ धम्मो मंगल महिमा निलो, धर्म समो नहीं

विमल जिनेश्वर सेविये, थारी वृद्धि निर्म ल हो जाय रे, जीवा । विषय विकार विसारन, तूं मोहनी कर्म खपाय रे जीवा । विमल जिनेश्वर सेविए ॥टेर॥ १॥ सुच्म साधारण पणे, प्रत्येक वनस्पित मांय रे; जीवा। छोदन भेदन तें सही, मरमर उपज्यो तिए काय रे॥ जीवा विमल् ॥ २ ॥ काल अनंत तिहां गम्यो, तहना दु.ख श्रागमथी संभाल रे, जीवा। पृथ्वी अप्प तंउ वायमें, रह्यो ऋसंख्यातो काल रे ॥ जीवा विमल० ॥ ३ ॥ एकेद्री सुं वेइंद्री थयो, पुन्याई अनंती वृद्ध रे, जीवा। संनी पंचेंद्री लगे पुराय वव्या, अनंत अनंतां प्रसिद्ध रे॥ जीवा। विमल॰ ॥४॥देव नरक तिर्यंचमें, ऋथवा माग्रस भव नीचरे; जीवा ! दीनपर्णो दुख भोगिया, इरापरे चारों गति वीच रे॥ जीवा। विमलं ॥ ५॥ तम जात तुं मेवजी श्री जिन अजित नमो जय-कारी ॥ (टेर) ॥१॥ टूजा देव अनेरा जगमें, ते मुफ दायन आवे जी; तह-मन्ने तह-चित्ते हमने, तूं हिज अधिक सुहावे जी ॥ श्री० ॥ २ ॥ सेव्या देव घणा भव भवमें, तो विण गरज न सारी जी: अवके श्री जिनराज मिल्यो तूं, पूरण पर उपकारी जी ॥ श्री० ॥ ३ ॥ त्रिभुवनमें यश उज्ज्ञल तेरो, फैल रह्यो जग जागो जी; वन्दनीक पूजनीक सकल को, आगम एम वखागोजी ॥ श्री०॥ ४ ॥तुं जगजीवन त्र्यंतरजामी, प्रास अधार पियारो जी; सव विधि लायक संत सहायक, भक्त वत्सल बृध थारो जी ॥ श्री० ॥५॥ अप्र सिद्धि नवनिधिको दाता, तो सम और न कोई जी, वधै तेज सेवक को दिनदिन, जयत तेथ जय होवे जी ॥ श्री० ॥ ६ ॥ श्रमंत ज्ञान दर्शन संपत्ति, लेईश भयो अविकारी जी, अवि-चल भक्ति, विनयचन्द कूं द्यो तो जागा रिभ-ी जी॥श्री०॥७॥

खियो जिनधर्म सार के; निवर्त्त नरक निगो-टथी, एवो अनुमह करो परिम्रह्म के ॥ श्री े ॥ शा साधपणो नहि संप्रद्यो, श्रावक व्रत न कियां श्रंगीकार के, अ।दर्या तो न आराधियां. तेहथी रुलियो हुं अनंत संसार के ॥ श्री०॥ ५॥ अव समकित व्रत आदर्या, तदिष आराधिक उतरूं पार के; जन्म जीतब्य सफलो हुवे, इस पर विनवुं वार ईजार के ॥ श्री० ॥ द्वा 'सुमित' नराधिप तुम पिता, धनधन श्री पद्मा-वती माय के, नसु सुत त्रिभुवन तिलक तूं, वंदत विनयचंद' शीस नमाय के ॥ श्री० ॥७॥ ॥ श्री महाबीर स्वामी जिन स्तवन ॥

(श्री नवकार जपो मन रंगे-ए देशी)
धनधन जनक 'सिडार्थ' राजा, धन 'त्रिसलादे'
मात रे प्राणी, ज्यां सुत जायो गोद खिलायो;
वृधमान विरयात रे प्राणी श्री महावीर नमो

अवके उत्तम कुल मिल्यो, भेट्या उत्तम गुरु साध रे; जीवा! सुग जिन वचन स्नेह सूं, समिकत दृत्ति शुद्ध आराध रे ॥ जीवा। विमल० ॥ ६ ॥ पृथ्वीपति 'कृतिभान' को सामा' रागीको कुमार रे; जीवा। 'विनयचंद' कहे ते प्रभु, शिर सेहरो हियड़ारो हार रे ॥ जीवा, विमल०॥॥॥

## (चेतरे चेतरे मानवी-ए देशी)

श्री मुनि सुझत साहिवा, दीन दयाल देवांतणा देव के ,तारण तरण प्रभुतो भणी,उज्बल-चिच समरू नित्यमेव के ॥श्री०॥टेर ॥१॥ हूं अपराधी अनादिको, जन्म जन्म गुना किया भरपूर के; लूटिया प्राण छकायना, सेविया पाप अठारे कूर के॥श्री मुनि०॥ रं॥ पूर्व्व अशुभ कर्त्त व्यता,

तेहने प्रभु तुम न विचारके; अधम उधारण विरद छें,शरण आयो अव की जिये सारके॥श्री० किञ्चित् पुरुष प्रभावधी, इंग भव ओल-

## अथ धन्नाजी रो सन्भाय लिख्यते ।

धन्नाजी रिख मन चिंतवे, तप करतां तृटी हम तर्गा कायके॥ श्री वीर जिनंदजी ने पृछने, आज्ञा लेई संथारो देसूं ठायके॥१॥ धन करणी हो धन राज री; धन करणी हो मुनी राज री॥ ॥ए ऋांकर्णा॥ प्रह उठीने वांचा श्री वीरने, श्रीमुख श्राज्ञा दिवी फरमाय के ॥ विमलगिरी, थिवरां साथे, चाल्या समसत साध खमाय के ॥ धन ॥ ॥ २ ॥ ठायो संथारो एक मासनो, थेवर आया प्रभुजी रे पास के ॥ भंड उपगरण स्वामी सांभलो, गोतम पूछे वे कर जोड़के ॥ धन करणी हो धन-राज री, धन करली हो मुनिराज री ॥ ३ ॥ तव त्तिपया मुनिवर बहु आकरा, कहो स्वामी वासी कहां जाय लीध के ॥ सागर तेतीसरे आउल , नव महीनामें स्वारथ सिद्ध पोंहच के ॥४० ॥४॥ खेत्र महाविदेह मांहे सीजसी, विस्तार नवमां अह रे मांहि के ॥ शिवसुख शिव पटवी ले े

नागी, शासन जेहनो जाग रे प्रागी; प्रवचन सार विचार हियामें,कीजे ऋर्थ प्रमाण रे प्रोगी ॥ श्रीमहा० ॥ २ ॥ सूत्र विनय त्राचार तपस्या,चार प्रकार समाध रे प्राणी; ते करीय भवसागर तरी ए,ग्रात्म भाव त्राराध रे प्राणी॥ श्री महा० ॥३॥ ड्यूं कंचन तिहं काल कहीजे, भूषण नाम अनेक रे प्राणी; त्यूं जग नाम चराचर जोती, हे चेतन गुण एक रे प्राणी ॥ श्री महा ० ॥ ४ ॥ अपणो आप विवे थिर आतम, सोहुं हंस कहा-य रे प्राणी; केवल ब्रह्म पदारथ परचय, पुद्गल भरम मिटाय रे प्राग्री॥ श्री महा०॥ ५॥ शब्द रूप रस गंधन जामे,ना स्पर्श तप छांह रे ; प्राणी तिमिर उद्योत प्रभा कुछ नाहीं, आतम अनुभव मांहिरे प्राणी ॥श्रीमहा० ॥ ६॥ सुख दुख जीवन मरण अवस्था, ए दस प्राण संगात रे प्राणी; इण्थी भिन्न 'विनयचंद' रहिए, ज्यों जलमें जलजात रे प्राणी ॥ श्री ॥ ७ ॥

खांडेरी घार, वाइस परिसह सहणा डोहिला, माई मेरे कालजर, नहीं जागों वार तेवार, वया जान अम्बा किस विध आवशी, आजा दीनी हो, संजम लीनो हो, २ श्री श्री नेमजी रे पास काउसगा करवा मृति वन मे गया, सोमल बाह्मण हो, २ दिठा गजसकमाल, कोप करीयो ए मुनिवर ऊपरे, वेर विशेषे हो, २ वांधी माटीनी पाल, खेर अङ्गारा मस्तक मुकिया, मुनि समता आणी हो, २ ध्यायो निर्मलध्यान, कर्मनिका-चित पिछला चय किया, पाम्या पाम्या हो पान्या केवल ज्ञान, कर्म खर्वाई मुनि मोर्चे गया, ये गुणागाया हो, २ सरवर नगर मभार,कर जोड़ी रतनचंद्र भगे॥ इति॥

॥ अथ महावीर खामीको पारखो लिख्यते ॥

सोहा ।

त्री श्रस्ति श्वनतगुण, श्वतिशय पृरण गात ॥ ज्ञानी ध्वानी सुनी सयसी, कहिए उत्तस पात ॥ १॥ श्रासकरणजी मुनि ग्रुण गाय के ॥घ०॥५॥ सम्बत् श्रठारसे ग्रुण सठे, वैसाख वदपत्त रे मांहि के ॥ विसलपुरमें ग्रुण गाईया; पूज्य रायचंदजी रे प्रसाद के ॥ घ०॥ ६॥ श्रोछोजी इधको मैं

कह्यो, तो मुफ मिच्छामि दुक्कड़ होय के ॥ बुद्धिसारू गुण गाईया, सूत्र रे अनुसारे जोड़ के । घ० ॥ ७ । ॥ इति धन्नाजी री सड़काय समाप्तम् ॥

्रात अन्याजा रा राज्याय समान्यस्य — ०१०---

**अय गजसुकमालजी को स्तवन**।

श्री जिन श्राया हो सीरठ देश मकार, द्वारा पुरी नगरी भली, श्री जिन भेटचा हों, २ कॅवर गजसुखमाल, वांगी सुगी ने कंवर वैरा-गियो, माई में भेटियाए, २ तारंग तरगरी जहाज अमीए साधारी वागी में सुगी, माई में जाग्यो-ए, २ ये संसार असार, स्वार्थिया जुन में सह,

अनुमत दीजे हो, २ लेसुं सजम भार,वचन संभा-े परव भवतणा, वचा तं तो भोलोरे, २ संजम मुक्त आश् ॥ पच मास गिएतां थकांजी, पूरण थयो चोमास ॥ जग० ॥६॥ सामग्री सव ग्रहार नीजी, सेजे हुई तैयार ॥ प्रभुनो मारग पेखतो जी, बैठो घररे बार ॥ज०॥७॥ घरे ऋषि जे पाइणाजी, नोत्या एकण वार॥प्रभुजी क्यूं नहीं पधारसीजी, मैं विनंती करी वारम्वार ॥ जगत० ॥=॥ पञ्चे हुं करस्रं पारगोजी,स्वामीने प्रतिलाभ, होय मनोरथ एहवाजी, ज्युं वरसाले आभ ॥ ज० ॥६॥ त्रवसर उठ्या प्रभु गोचरीजी, श्री सिद्धा रथ पूत ॥ विसालापुरमे श्रावियाजी, पूरण घरे पहुंत॥ ज०॥ १०॥ मिथ्यात्वी जागो नहींजी, जगमें सुरतरु एह ॥ दासी प्रते इम कहेजी, काई क भिचा डेय ॥ ज० ॥ ११ ॥ चादु भरने वाकलाजी, आणी प्रभुने टीध ॥ निरागी लेई करीजो, स्त्रामीजी, पारगो कीघ ॥ ज० ॥ १२ ॥ ढेव वजावे ट्रंटुवीजी, वोले वेकर जोड ॥ हेम वर्षा तिहां हुईजी, साढी वारे कोड ॥ ज० १३॥ धन धन टासी तूं सहीजी, धन तेरी अवतार

पात्र तणी अनुमोदना, कर तो जीरण सेठ॥ श्रावक जची गति लही, नवग्रहीवेगने हेठ॥२॥ दस चोमासा वीरजी, विचरत सजभ वास॥ विसालापुरे श्राविया, इग्यारमे चीमाम॥३॥

### ढ़ाल ।

चोनासो इग्यारमेजी, विचरंत संयम धीर ॥ विसालापुरमें ऋावियाजो, स्वामी श्री महावीर ॥

जगत गुरु त्रसला नंदन वीर ॥१॥ ए आङ्काणी॥
भले भले भेट्या जिनराज सखीरी,मेरो भाग अनो
पम सार ॥ मेरो चोक पुराऊ आज ॥जगत०॥२॥
वलदेवनो छे देहरोजी, तिहा प्रभु काउसग्ग
लीध ॥ पचखाणे चौमासनोजी, खामी ए तप
कीध ॥ ज० ॥ ३ ॥ जीरण सेठ तिहां वसेजी,
पाले आवक धर्म ॥ आकारे करी ओलख्याजी,
जाएयो धर्मनो मर्म ॥ जग० ॥ ४ ॥ आज ए छे
उपवासियाजी, खामी श्री महावीर ॥ काले कर
सी प्रभु पारणोजी, हुंसही कर देसूं दान॥ज०

। ५ ॥ सदा सेठ इम चिंतवेजी, सफल होशी

पुर्ण्यवंतने जसवन्त ॥ कहे केवली आज ए छेजी, जीरण सेठ महंत ॥ ज० ॥ २२ ॥ राय कहे कीरण कारणेजी, जीरण सेठ महंत ॥ दान दियो श्री वीरनेजी पुरसा ते जसवंत ॥ ज० २५ ॥ राय प्रते कहे केवलीजी, पूरण दीधो दान ॥ हेम वर्षा तिहां हुईजी, और नहीं परमाण ॥ ज० ॥२४ ॥ देवलोक जिएा बारमेजी, जीरण घाल्यो वंध ॥ अनदिधा दीयो फल्योजी, उत्तम फल संवन्य ॥ ज ।। २५ ॥ एक घडी सर दुन्दुभीजी, जो नई सुणतो कान ॥ तो जीरण लेतो सहीजी, उत्तम केवल ज्ञान ॥ ज० ॥ २६ ॥ राय जीरण वधा-वियोजी, अधिको मान सनमान ॥ मुख्य नगरमे थापियोजी, जोवो पुरुष प्रमाए ॥ ज० ॥ २७ ॥ दान देवे सुपात्रनेजी, ते नहीं निष्फल होय॥ पात्र ताणी अनुमोटनाजी, जीरण सेठफल जोय ॥ जग०॥ २८॥ इम जाणी अनुमोटनाजी, दान सुपात्र रसाल ॥ टान देवेछे साधुनेजी, तेने नमे मुनि माल ॥ ज०॥ २६॥ ॥ इति॥

दान दियो श्री चीरनेजी, पाम्यो भवनो पार ॥ जठ ॥१४॥ राजादिक सहु-त्र्यावियाजी, धन धन

पूरण सेठ ॥ उत्तम करणी तें करीज़ी, अवर सह तुभ हेठ ॥५०॥१५॥ लोक कहे तुमे सूं दियोजी, पारणो किधो वीर ॥ लोंकां प्रते इम कहेजी, में वहरावी खीर ॥जग० ॥१६॥ जीरण सेठ सुणी तिहांजी, वाजी दुन्दुवी नाद ॥ अनेथ कीयो प्रसु पारगोजी, मनमें थयो विपवाद ॥ ज० ॥ १७ ॥ हुं जगमें अभागियोजी, मेरे न आव्यां खाम ॥ कल्पवृत्त किम पामिएजी साहं मंडल ठाम ॥ ज्ञ ॥ १८॥ जे जे मनोरथ में कीयाजी, ते ते रह्या मन माय ॥ निरधन जिम जिम चिंतवेजी तिम तिम निष्कल थाय ॥ ज० ॥ १६ ॥ स्वामी जी कियो तिहां पारगोजी, कियो उम्र विहार ॥ श्राया पास संतानियाजी, ते मुनि केवल धार ॥ ज०॥ २०॥ विसालानो राजवीजी, लोक सहूँ त्राणंद ॥ राय प्रश्न करे इसोजी, सतगुरु चरण वन्ट ॥ ज॰ ॥२१॥ मेरे नगरमें कुण एंछ जी कालना, तिणने न होसी केवल ज्ञानी रेगान्वव ॥ ३ ॥ तीजे चंद्रमा चालगी, तिग्रां फल राय जोसी रे ॥ समाचारी जुई जुई, वारोटीये धर्म थासीरे ॥ चं० ॥ ४ ॥ भृत भृतणी दीठा नाचतां, सुपने चोथे राय जोसीरे ॥ कुग्रु कुदेव कुधर्मनी, घणी मानता होसीरे॥ चं०॥ ५॥ भेवधारी पाखंडीनी, मानतां पूजा बहुत्तीरे ॥ शुद्ध साधने साधवी, ज्यांरी मानतां थोडीरे ॥ चं० ॥६॥ नाग दीठो वारा फगो, पांचमो सुपनो राय बोलोरे ॥ कितराइक वरसां पछे, पडसी वार वरसो कालोरे चं ा। ७॥ देव विमान पाछा वल्या, तिग्रो सुणो राय भेदोरे ॥ जंघा विद्या चारणी, जासी लन्द विञ्जेदोरे॥चं०॥८॥ उगो उकेरडा उपरे, सातम कमल विकासीरे ॥ च्यारुं ही वरणामध्ये, वाख्या रे जिनधर्म थासीरे ॥ चं० ॥६॥ एको नहीं सह वाणीया, जुदा जुदा मत्तमालीरे ॥ खांच करसी ञ्रापो ञ्रापग्री, विराधक वहु थासीरे ॥चं ॥१०॥ हेत कथाने चोपई स्तवन सज्मायनी जोरोरे॥

अधे चंन्द्रगुप्त राजा की सोलह स्वप्ना लिंख्यते ।

पाटलिपुत्र नामें नगर, चन्द्रगुप्त तहा राय।
सोलह स्वप्ना देिपया, पाणी—पोसा माय ॥१॥
तिण काले ने तिण अवसरे, पाँच से साधु पिरवार।
भद्र बांहु मुनि समेस्क्या पाटलिवन मभार ॥२॥
चन्द्र गुप्त वन्द्रन गया, वैटो परचादा माय।
मुनिवर देवे देशना, सकलजीवा सुखदाय ॥३॥
हाथ जोड राजा कहे, साँभल जो मुनिराय।
सोलह स्वप्ना देखिया ज्यारों अर्थ दीजी सुनाय ॥४॥
वलता मुनिवर इम कहे, सामल जो तुमराय।
सोलह स्वप्ना देखिया, तहनो अर्थ सुणी चितलाय ॥४॥

ाहाल॥ करजोड़ी आगल रही ॥ ए देशी ॥ दीठी सुपनो पहलड़ो, भांगी कल्पचृत्तनी डालोरे ॥ राजा संजम लेसी नहीं, दुपम पांचमें आरोरे ॥ १ ॥ चन्द्रगुप्त राजा सुणो ॥ ए आंकणी ॥ केहे भद्र-बाहू स्वामीरे ॥ चवदे पूर्वना पाठीया, चार ज्ञान अभिरामोरे ॥ चंद्र० ॥ २ ॥ सुर्थ्य अकाले आथ म्यो दुजे सुपने राय मानोरे ॥ जाया पांचमा चं०॥१८॥हाथी उपर वेठो वानरो, सुपना इग्यारमो हिठोरे ॥ म्लेख राजा उच्चो होसी, चर्त्री हिंहू हेरोरे ॥ चं० ॥ १६॥ हीन जात अनारजं, असुर म्लेच्छनो वारोरे ॥ हिन्दू, खीरणी आपसी, राजा सुण आधिकारो रे ॥ चं०॥ २०॥ हीठो सुपने वारमे, समुद्र लोपिंडे कारोरे ॥॥ केई छोर गुरु मा वापना, होई जासी वे कारोरे॥ चं०॥२१॥ विनो भाव थोडो होसी, मच्छर धरसी जाटारे॥ पूत सीख गुरु वापनी, मुकडेणी मर्यादारे ॥ चं० ॥ २२ ॥ निज इच्छाए बोलसी, छांट गुरुनो थोड़ा रे॥ लाज हित अभिमानिया, किया करतृतमे कोरारे ॥ चं० ॥२३॥ कितराइक साधुने साधवी द्र<sub>ठयले</sub>सी दिचारे॥ आज्ञामें थोडा चालसी, सिख देता करसी हो पोरे॥ च॥ २४॥ अकल विहुणवां-ह्युसी, गुरुवादिकनी घातीरे ॥ सिंग अवनीत ईसा होसी, थोडा उत्तम सुपात्रोरे ॥ <sup>चट ॥२५</sup>॥। कियो गुन्हो नहिं मानसी, सामने जवाव देसीरे ॥ ग्रम् वामा उसे नहिं गुरुकी आज्ञा नहिं लेसीरे।

चं०॥ ११ ॥ दिठो सुपने आठमें, आज्ञानो चमरकारोरे ॥ उद्योत होसी जिनधरमनों, विच

विच मिथ्यात्व अंधारो रे ॥ चं ॥ १२ ॥ समुद्र सूको तीनृं दिशा, दिखण कानी पानी डोबेरे ॥ तीनु दिशा, धर्म विच्छेदसी, दित्तणिदसा धर्मजाणोरे ॥ चं० ॥ १३ ॥ जहां जहां पश्च कल्याणका, तहां तहां धर्मनी हाणीरे॥ नवमा हुपनानो अर्थ थासी, एह अहिनागो रे॥ चं० ॥ १४॥ सोनेरी थाली मध्ये, क्रत्तो खायछे खीरोरे ॥ दसमा सुपनाको ऋर्थ सुगा तृ राय सधीरो रे ॥ चं० ॥१५॥ ऊंच तसी लिछमी ती-का, नीच तर्णे घर जासी रे ॥ वधसी चुगलने चोरटा, साहकार सिधासीरे ॥चं०॥ १६॥ न्याय मार्ग सुध चालसी, ते साहकारो कीजेरे॥ दंड मुंड करसी घणो, चोर चुगल पेखीजेरे॥ चं०॥१७॥ देंतो देखी दातारने, सूम वले मन माहीरे॥ ، दियो वथसीघणी, सुपना दसमी प्राहीरे॥

उतरा होशी वेरीरे ॥ चं० ॥ ३६॥ पोताना ऋाव गुण ढांकने, परतणा अवगुण पेखेरे ॥ पगतले चलतो देखे नहीं, ड्रंगर वलतो देखेरे ॥चं० ॥३५॥ सूधो मारग परुपसी, तीग्रस् मच्छर भावोरे ॥ .निंदक वहु सार्थात**णां, होसी धीठ स्वभावोरे** ॥ चंद्र० ॥ ३६ ॥ राय कुंवर चट्यो पोठीये, सुपने पंदरमे दिहो रे॥ श्री जिनधर्म छोडी करी, मिञ्जामत मंहि पेठोरे ॥ चं० २७॥ न्याई पुरुप नहिं मानसी, नीच गमसी वातोरे॥ कुवुद्धीने घणा मानसी, लांच ब्राही पर तीतोरे ॥चं० ॥३८॥ विगैर मावत हाथी लडे,सुपने सोलमे राय दिठोरे॥ काल थोड़ोने आंतरे, होसी नहीं मांग्या मेहोरे। चं०॥ ३९ ॥ वेटा गुरु माईतनी, करसी भगती थोड़ीरे ॥ माईत वात करतां थकां, विचमें लेसी तोड़ीरे॥ चं०॥ ४०॥ काण कायदोथोडो होसी त्र्योछी होसी हेती रे ॥ घणा राड़ने इसका, वधसी इरए भरत खेत्तोरे ॥ चं० ॥ ४१ ॥ ऋरथ सुपना सोले तणा, कह्यो भद्रवाह खामीरे॥ जिन

ग्योरे॥अर्थ वारमा सुग्ना तलो, भद्रवाहू वला-ग्योरे॥चं०॥ २७॥ महा रथ जुत्या वाछड़ा, वाला धर्मज थासीरे॥ कदाचितवुढ्ढा करे,तो प्रमादमें पड़जासीरे॥ चं०॥२⊏॥ वालक वहु घरछोड़सी,

श्राणी बैरागज भावो रे ॥ सज्या संजम पाससी, बुढ्ढा घेंठ सभावोरे ॥ चं० ॥ २६ ॥ सरस नहिं सहु वासका, घेंठा नहिं सहु बुढ्ढारे ॥ समाचारि मांहे भाषीयो, श्ररथ विचारो ऊंडारे ॥ चं० ॥३०॥ रस्न भस्त के दिठा चंउदमे, तिस सुपनानो जोड़ो

रे ॥ भरत चोत्रना साधु साधवी, हेत मिलाप होसी थोड़ोरे ॥ चं० ॥ ३१ ॥ कलहकारीने रम-कडा, असमाधकारी विसेषोरे ॥ उद्योगकारी निरवुद्धिया, रेहेसी द्वेषा द्वेषो रे ॥ चं० ॥ ३२॥ वैराम्य भाव थोड़ो होसी, द्रव्य लिंगिनाधारो रे ॥

भन्नी सीखदेतां थकां, करसी द्वेष अपारो रे॥
ं०॥ ३३॥परशंशा करसी आप आपणी, कटूक
वहु गैरीरे॥ सरल साधु साधकी तणा

कियो निचोड़ो रे ॥ इग् अनुसारे जानजो, रिप जेमलजीनी जोड़ोरे ॥ चं० ॥ ५० ॥ ॥ इति ॥

....

( त्र्रथ जम्बूकुमार जी री सिक्ताय लिख्यते )

॥ राजपहीना वासीयाजी जंव नांम कवार ऋषभ दत्तरा डीकराजी भद्राज्यांरी मांय जंवू कह्यो मान लै जाया मत लै संजम भार, **॥१॥ सुधर्मा स्वामी पधारीयाजी राज**ग्रहीरे मांय कोएक बांद्रण चालियोजी जंवू वांदरण जाय जंबू०॥२॥ भगवत वाणी वागरीजी वरसे अनृतधार वाणी सुणी वैरागियाजी जांग्यो अथिरसंसार॥जंबृ०॥३॥ घर आया माता कने जी,विनवे वारं वार अनुमत दीजो मोरी मातजी. माता लेसुं सजम भार॥ जंबू०॥श॥ माता मोरी सोभलो जननी लेसूं सजम भार ये आटुंही कामणी जंव अप्रुररे उणीहार

॥ ४२ ॥ एहवा वचन राय सांभलो, राय जोड़वा बेहु हाथोरे ॥ वैराग भाव ऋाग्ही कहे, में सरवा ऋषा नाथोरे ॥ चं० ॥४३॥ ए सोले सुपना सुर्णा संयम पराक्रम करसीरे॥ जिनजी वचन ऋराधसी, शिव रमणीने वरसी रे ॥ चं० ॥४४ ॥ राजथापी निज पुत्रने, हूं लेसूं संयम भारो रे ॥ वलता गुरु इसड़ी कहे, मतकरो ढील लिगारोरे ॥चं० ॥४५॥ पुत्रने राज्य वेसाड़ीने, चन्द्रगृप्त लीधो संयज भारोरे इता भोग इटकायने, दियो इवकायने अभय दानोरे ॥ चं०॥ ४६॥ धन करणी साधातणी, वयणे अमृत वरसे रे ॥ जेहनो दर्शन देखने, घणा भव जीव तरसीरे ॥ चं ॥ ४७ ॥ चोखो चोरित्र पालने, सुर पदवी लही सारोरे ॥ जिन मारग अराधने,करसी खेवोपारो रे ॥ चं० ॥४८॥ श्रथीर माया संसारनी,श्राप कही जिनरायी रे ॥ दया धर्म शुद्ध पालने, अजरामरवद पायोरे॥

। ४६ ॥ व्यवहार सूत्रनी चूलका, भद्रवाह

माता लेसूं सूभतो ऋहार माता मो०॥१३॥ संजम मारग दोहिलो जंचू चलणो खांडेरी धार नदी किनारे रूखड़ी जंबू जट तद होय विनास जबू०॥१४॥चांद विना किसी चांदगी जंवू तारां विना किसी रात वीर विना किसी वेनड़ी जंबू म्रसी वार तिवार ॥ जंवू० ॥१५॥ दीपक विना मंदिर सूनो जंबु, पुत्र विना परिवार, कंथ विना किसी कामनी जंबु भुरसी वारू ही मास॥ जंबु-कद्यो मांनलो थेतो भतलो संजम भार ॥ १६॥ मात पिता मेलों मिल्यो माता मिल्यो अनंती-वार तारण समरथ कोई नहीं माता पुत्र पिता परिवार, माता मोरी सांभलों में लेसूं संजमभार ॥१७॥ मोह मत करो मारी मात जी माता मोह कियां वंधे कर्म्म हालर हूलर कईं करो माता कर्जो जिनजी रो धर्म ॥ माता०॥१८॥ये त्राठूं ही

परणीनें किमवरिहरो ज्यांरो किम निकले जमार। जंबू० ॥ ५ ॥ ये अ।ठूं ही कामणी जंबू तुर विना विलखी थाय रिमयां ठिमयां सुं नीस ज्यांरा वदन कमल विलवाय ॥ जंबू० ॥६॥ म हीगो कोई मानवी माता मिथ्या मत भए रूप रमणी सूंराचिया ज्यांरा-नहीं हुवा दुरग दूर, माता मोरी सांभँलो जननी लेसूं संज भार ॥जंबू०॥७॥ पाल पोस मोटो कियो जंबू इ किम दो छिट काय, मातिपता मेले भूरता था दया नहीं ऋषि दोल मांय॥ जंबू०॥=॥ एक लोव पांगी पीयो माता मायर वाप अनेक सगलांरी दर पालसूं माता आणीनें चित्त विवेक,माता मी सांभ०॥धा ज्यूं आंधारे लाकडी जंबू तुं म्ह प्राण अधार तुभविना म्हारे जग सूनो जा जननी जीतव राख॥जंबू० ॥१०॥रतन जड़त पींजरो माता सुत्रो जाए सोही फंद काम भी

संसार न माता ज्ञानी जागो भूठा फंद ॥जम्बू १॥ पंच महावत पालनो जम्बू पांचु ही मे शशा चौतीस ऋतिशय हो प्रभु जी शोभता वाणी-पनरे उत्पर बोस,२ एक सेहस लच्चा हो प्रभुजी त्रागला जीता रागनें रीस,२ ॥ इकचि०॥ शा काया थांरी हो धनुप पांचसे आउसो पूर्व चोरासी लाख,२ निरवद वाग्री हो श्रीवीतरागनी, ज्ञानी अगाम गयार्छे भाष,२॥इकचि०॥३॥सेवा सारेहोथांरी देवता सुरपति थोड़ा तो एक किरोड़,२ मुज मन मांहे हो होंस वसे घणी वंद्र वेकर जोड़, २ ॥इक चि॰ ॥१॥ आडा पर्वत हो नदियां अति घणी, विचमें विकट विद्याधर गांम,२इए। भव मांहे हो श्राय सक् नहीं, लेसुं नित उठ थारी नांम,२॥ इक चि०॥७॥ कागद लिखूं हो प्रभु थाने,वीनती वंद-णा वारंवार, २ कुटंन सागर हो क्रुया की जीये, वीनतडी अवधार ॥ इक-चि० ॥६॥ इति पर्दं ॥



कामणी जंवू सुख विलसो संसार दिन पीछा पड़ियां पीछे थेतो लीजो संजम भार जंबू॥१६॥

ए आहूं ही कामनी माता सममाई एकण रात जिनजीरो धर्म्म पिछाणियो माता संजम लेसी महारे साथ,माता मो।।। २०।। मात पितानें तारिया जंबू तारी छे आहूं ही नार सासू सुसरानें ता-रिया जंबू पांचसे प्रभव परिवार, जंबू भलो चे-तियो थेतो लीनो संजमभार २१ पांचसे ने सत्त-ईस जणासूं जंबू लीनो संजमभार इज्ञारे जीव

( अथ श्रो सीमंधरजीरो स्तवन लिख्यते )

मुगते गया साधू, बाकी स्वर्गमकार ॥ जं० ॥२२॥

॥ इति पदं ॥

॥श्रीश्रीसीमंधरस्वाम इकचित वंदू हो वेकर जोड़ने पूरवढेसा हो प्रभुजी परवरन्या नगरी पुंड-

रपुर सुख टाम, २वेकर जोड़ी हो श्रावक वीनवें रपुर सुख टाम, २वेकर जोड़ी हो श्रावक वीनवें रिक्टेर्स्वाम इकचित वंद्र हो वेकर जोड़ने

विणाञ्जो फोकट वात यो सुख छोडीने वाजो स्रमा, जदी जाणासा वीत्म सांच, ॥ सा. सु.॥ ॥ ६ ॥ इतरा में धनजी उठीने वोलिया, कामख रेज्यो म्हांस् दूर। संजम लेवांगा ऋणि अवसरे जदी वाजांगा जगमें सूर ॥ सा. सु. ॥ ७ ॥ वेकर जोड़ीने सुन्दर विनवे कियो हांसीके वश बोल काचीकी सांची न कीजे साहेवा हिवडे विचा-रीने वाहर खोल ॥ सा, सु, ॥ = ॥ सजम लेगो हो प्रीतम सोयलो, चलगो कठिन विचार **।** वाइस परीसा सेगा दोयला । ममता मारीने स-मता धार ॥ सा. सु.॥ ६ ॥ उतर पड उत्तर हुन्ना अतिघणां आया सारारे भवन उछाव संजम दोई साथे आदरां । उतरोनी कायर नीचे आव-ात्सा० सु. ॥ १०॥ साला वन्दोई संजम त्र्यादयों वीर जिनंदजीके पास। सालभदरजी सर्वार्थ सिद्ध

# श्री धनाशाल भद्रजी को स्तवन

रङ्गत-[ मच्लामें बैठी हो राणी कमलावती ]

सूराने लागे वचन जोताजगो कायरने लागे नहीं कोय, सांभल हो सुरता ॥ सूरा० ॥ टर ॥,

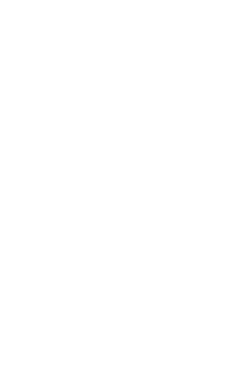
नगरी तो राजगरीना वासीया सेठ धन्नोर्जा जुगमें सार, पूरव पुन्य सुंवहु रिध पाविया आठ नारयां ना भर्तार ॥ सामल ॥ सु० ॥ १ ॥ एक दिन धनजी हो बैठा पाटले, स्नान करे छे तिण वार । आठोंही नारयां मिलकर प्रेमसूं,कुड रही छे

जलनी धार ॥ सा. सु. ॥ २ ॥ सुमद्रा हो नारी चौथी तेहनी, मनमें थाई छे दिलगीर ॥ श्रास नो निकल्या तेना नेणसुं, कामण क्यों थाई छे

उदास, -शंका मत राखो मुक्त आगले, कार ए कहोनीवीमास ॥ सा. सु. ॥ ३ ॥ कामण कहे हो कथां महिरा, वीराने चिटियो वरागे । एक एक नारीओ निर्तकी परिद्धी संजम लेवाकी रही

े लाग ॥ सा. सु. ॥ ४ ॥ धनजी कहे हो भोली

٠,٠



संमत उगणीसे साल इकसटे चितोड़ कियोरे चोमास ॥ मुनीनंदलाल तणा शिष्य गावियो। मन वांछित फलेगा मुक्त आस । सांभल हो सुरता ॥ १२ ॥ इति ॥

त्रथ म्रगा पुत्रकी सज्जाय<sup>्</sup>लिख्यते ।

सुगरीव नगर सुहामगोजी, राजा वलसह नाम ॥ तस घर रागी स्रगावतीजी, तस नंदन गुग धाम ॥ ए माता खीगा लाखीगीरे जाय ॥ १ ॥ एक दिन बैठा गोखड़ेजी, राग्यारे परवार सिस दाजे ने रवी तपे जी दीठा तब अग्गार ॥ ए माता० ॥ २ ॥ मुनि देखी भव सांभाल्यो जी

मन वसीयो रे वेराग ॥ हरप धरीने उठीया जी लागा मानाजी रे पाय ॥ ए जननी ऋनुमत दे मोरी माय ॥ ३ ॥ तुं सुखमाल सुहामगो जी संसारना भोग ॥ जोवन वय पाछी पर्

जब श्रादर जो तुम जोग ॥ रे जाया तुजवीन घड़ीरे छव मास ॥ ४ ॥ पाव पलकरी खवर नहीं एमाय करे कालको जी साज ॥ काल अजाएयो भड़पड़े जी, ड्युं तितर पर वाज ॥ एमाता खिण लाखिगी रे जाय ॥ ५ ॥ रत्न जडत घर श्रांगगोजी तुं सुंदर श्रवतार ॥ मोटा कुलरा जपनाजी कांईँ छोडो निरधार ॥ रे जाया ॥ तु० ॥ ६॥ वाजीगर वाजी रचि ए माय, खिणमें खेर थाय ॥ ज्युं संसारनी सम्पदाजी, देखतड़ा विल जाय ॥ ऍ माता०॥ ७॥ पिलंग पथरणे पोढगो जी, तुं भोगीरे रसाल ॥ कनक कचोले जिमणोजी, काचलड़ीमें ब्रहार रे जाया ॥ तु०॥ ॥ 🛮 सायर जल पीया घणा ए माय चुंग्या मातारा थान ॥तृप्त न हुवो जीवडो जी, इधक अरोग्या धान ॥ ए माता ॥ खी० ॥ ६ ॥ चारित्र चे जाया दोहिलो जी, चारित्र खांडानी धार॥ विन हथीत्रारां भुं जाणी जी, त्रोपद नहीं है लिगार १०॥ चारित्र छैमाता सोहा-॥ रे जाया।

गया, धन्नोजी शीवपुर वास ॥ सा. सु. ॥११॥ संमत उगणीसे साल इकसटे चितोड़ कियोरे चोमास ॥ सुनीनंदलाल तणा शिष्य गावियो। मन वांछित फलेगा सुक्त ग्रास । सांभल हो सुरता, ॥ १२ ॥ इति ॥

त्रथ म्रगा पुत्रकी सज्जाय लिख्यते ।

सुगरीव नगर सुहामगोजी, राजा वलसद्र नाम ॥ तस घर रागी स्नगावतीजी, तस नंदन गुण धाम ॥ ए माता खीग जाखीगीरे जाय ॥ १ ॥ एक दिन बैठा गोखड़ेजी, राग्यारे परवार सिस दाजे ने रवी तपे जी दीठा तव अग्गार ॥ ए माता० ॥ २ ॥ सुनि देखी भव सांभाल्यो जी, मन वसीयो रे बेराग ॥ हरप धरीने उठीया जी,

लागा माताजी रे पाय ॥ ए जननी ऋनुमत दे मोरी माय ॥ ३ ॥ तुं सुखमाल सुहामणो जी भोगो संसारना भोग ॥ जोवन वय पाछी प लारी, आरज्या इतिस सेंस सारि॥ दुहा॥ समी-सरण देवा रच्यो वेठा त्रिभुवन नाथ इन्द्र इन्द्रा-णी सेवा करें पाम्या हरख उल्लास ॥ वीर जिन० ॥ १ ॥ खबर राजेन्द्र भणी लागी । वीरजिन श्राय उतरया बागे: जावणे दरसण के काजे. करूं सजाइ बहु छाजें । दोहा । हाथी घोड़ा रथ पालखी पाय दल रे परिवार, भाइ वेटा उमराव श्रंतेउर सवकू लीधा लार, वीरजिन०।२। अठार सहेस गज छाजे, घुड़ला लख चोविसे गाजे एकविस सहेस रथ ज्योति, पालिख एक सेहम सोहंति । दुहा । हाथी घुमे घुड़ला हिंसे, रथ करे भागकार, पायदल मुखरे आगले, वोले जय जय कार । वीरजिन० । ३ । पांचसे ऋंतेउर लारे करत हे नवा नवा सिएगारे, पहरिया रत जिंदत गहणा वाजता वाजंत वयणा। दुहा। चंवर छत्र ढोलावतां, चाल्या मध्य वाजार राय अपगो आडम्बर देखी गर्व कियो तिग्रवार। वीरजिन । ४ । स्तर्ग से इन्दर भी आया

लोजी चारित्र सुखनी जी खान ॥ चउदेई राज लोकना जी, फेरा टालग् हार ॥ एमाता० ॥ ११ सियाले सी लागसीजी, उनाले लू रे वाय॥ चौमासे मेला कापड़ाजी, ए दु:ख सह्यो न जाय ॥ रे जाया ॥ १२ ॥ वनमें छे एक सृगलो जी कुंण करे उण्रि जी सार ॥ मृगनी परे विचरसुंजी, एकलड़ो अगागार ॥ ए माता ॥ १३॥ मात वचन ले निसरचाजी ज्ञगा पुत्र कुमार ॥ पञ्च महाव्रत त्राद्या जी, लीधो संजसभार ॥ एसाता॥ १४॥ एक मासनी सलेखगाजी, उपनो केवल ज्ञान ॥ कर्म खपाई मुक्ते गयाजी, ज्यांरा लीजे नित प्रते नाम ॥ एमाता ॥ १५ ॥ इति ॥

॥ त्रथ दशारण् भद्रजीरो स्तवनः॥

---

विर जिन वंदनकु आया, दशारण भद्र वड़े रापा॥ टेर ॥ पथारथा वीर जिएांद /

. ्नगरी के वारी; मुनिवर चंड

नहीं कोइ आपतयो तुले ओरतो शक्ति घणी म्हारे, वेके कुंदिचा नाहीं धारे। दुहा। धन धन हे मुनिरायजी, तुमे राख्यो मान श्रखंड, वार वार गुनेह गार हूं, इंद्र गयो गगन के मंद । वीरजिन ।। ६। मुनिवर संजम सुद्धपाले, दोप सह त्रातमना टाले, मिटाया जन्म मरण फेरा, ञ्रातमा अटल हुवा तेरा । दुहा । गुरु देव प्रसाट सें, सुणियो भविजन लोक जो करणी साचि करें तो मिलशी संगला थोक वीरजिन। १०। संमत उगगीसे का सोहे साल तेतिसा मन मोहे। श्रासोज सुद पंचिम जागो, हुर्प से हीरालाल गाणो, । दुहा । देश हडोती विषे कोटो मोटो सहेर, चोमासो कियो राम पुरामां चार संतके लेर । वीरजिन० ।११ ॥इति॥



श्री जिनवर का पाया, ग्यान से सर्व वात जाणी दशारण भद्र वडो मानी । दुहा । मांन उतारण

कारणे इंड दियो आदेश एक ऐरावत ऐसो लावो च्युं गर्व गले विशेष।वीरजिन०। ५।चौसठ सहे स गज लाजे, गगन विच उभाइ गाजे एक एकको

ऐसो हप आयो सुणता आश्चर्यही पायो। दुहा एक एकके मुख पांच से, मुख मुख के आठ दंत

दंत दंत आठ वावडी, ज्यांमांहे कमल महंत वीरजिन । ६ । पांखडी लाख लाख ज्यां के नाटक

पड़े वतीस से तां पे, इंद्र कूं इंद्रासन सोवे करण का उपर मन मोहे । दुहा । जहांपर इंद्र विराजिया जारे वहु परिवार दशारण भद्र जी

देखने, गर्च गल्युं तिगावार । वीरजिन० । ७ चिंतवत दिल अपने माही वडाइ किस विध रह भाइ,इंद्रसे जीतुं हुं नाई,करूं उपाय कठातांइ

। दुहा । श्रवसर देखी संजमितनो, दशारण भव ारंद्र तुरंत श्राइ उतावलो, पगे लाग्यो शकोन्द्र । मा ३न्द्र जद् मृति वर से बोले

लख चोरासि हय गय रथ। छीन्नुं क्रोड जुंमार। अमर०। भरते०। मुगति०। भरते० ॥ ५॥ त्रारीसारे सुवन मेंसजी । त्रायो उज्वल ध्यान । अनित्य भावना भावतांस जी पायो केवल ग्यान । श्रमर० । भरते० । मुगति० । भरते० । ॥ ६॥ संजम ले पधारियासजी भरी सभा के मांय। इस सहेस समजाए नरपत । मुगति पन्थ वताय । अमर० । भरते० । मुगति० भरते० ॥ ७॥ तिजा द्यंग के मायनेसजी। चोथानो अधिकार । उगीउगी उगीयोस जी। पुन्य तणो जय जय कार श्रमरः। भरतेः। सुगति० भरते०॥ = ॥ भरत खंड को चकवर्ति पहलो भरतेश्वरजीनाम । ऐसा धनी को ध्यांन ध्यावतां। पावे सुख श्राराम। श्रमर०। भरते। मुगति०। भरते०॥ ६॥ लाख पुरवलग पालियां सजो । केवल पद अग्रगार अनश्नकरी अष्टा-पद उपरेसजी। पायो भवनो पार । श्रमर० । भरते० । स्र ने० ॥ ५० ॥ ७

॥ भगत चंकी को स्तवनः॥ १६। 📆

يستناب ॥ श्रमर पट पाया हो, भरतेश्वर मोटा 🚟 🖘 मुक्ति पद पाया हो, भरतेश्वर मोटा सुन्दर् शा या टेर ॥ सर्वार्थ सिद्ध थकी चित्रः। हुन्हें

नगर विनिता माय, रिखमदेवजी तात जान सुगङ्गलादे मांय । अमर० । भरते० मु भरते ॥ १ ॥ लाख वरस पूरवतांइ 🛼 🚓 पद महाराज । पट लाख पूरव तांइ ्या

भाग्यो श्रीकार। ग्रमर०। भरते० मु भाषा आपार सहस्य वरसा लग तांइ। कार ज्ञग सधिकार । अष्ट भगत त्रिदस

-॥ भा वसित्धा भूपाल। अमर०। भरते। ३। र नतर प *ટ્ે*લ

रम्ली , तद . ही साम्पार 1 stips

अरज सुर्गीजे, अव में आयो आपके सरगा॥ प्रसु०॥७॥

### ॥ स्तवन ॥

॥ समज जीवा ऋायुजावे ज्यु रेलरे ॥ सीधीरे सड़क वर्णी शिवपुर की, ता पर जावत पेलरे ॥ टेर ॥ समज मन ऊमर जावे ज्युं रेलरे समज जीवा श्रायु जावे न्युं रेलरे ॥ १ ॥ वरस वरस की वर्णी स्टेशन, मास मास की मील रे॥ समज मन उमर जावे ज्युं रेल रे, समज जीवा श्रायु जावे ज्युं रेल रे ॥ २ ॥ रात दिवस खेचत दोय अञ्जन विन घोड़े विन वैल रे॥ समज मन ऊमर जावे ज्युं रेल रे समज जीवा आयू जावे ड्युं रेल रें॥ ३॥ प्रेम जोत की लालटेण है, विन वती विन तेल रे, ॥ समजमन जमर जावे ज्युं रेल रे, समज जीवा श्रायुजावे म्युं रेल रे॥ ४॥ नाडी रेतारखबर देशे कुं, ख़ द्वार रेया फेल रे॥ समज मन ऊमर जावे युं रेल रे, समज जीवा आयु जावे ज्युं रेलरे ॥५॥

ए सन्दे शास in 22 | ॥ असर पद 🕆 मुक्ति पद पारू ॥ या टेर ॥ स्क्री नगर विनिता सुमङ्गलादे मांध भरते ॥ १ ॥ पद महाराज । भोग्यो श्रीकार भरते०॥ २॥सः जय अधिकार। वसकिधा भूपाल भरते । ३ । रतन राणी चौसठ हज राणा चार. रे। नाटकरो घु

त्ररज सुर्गाजे, अव में ञ्रायो ञ्रापके सरगा॥ प्रमु॰ ॥ ७॥

#### ॥ स्तवन ॥

॥ समज जीवा ब्यायुजावे ज्यु रेलरे ॥ सीधीरे सड़क वणी शिवपुर की, ता पर जावत पेलरे ॥ टेर ॥ समज मन ऊमर जावे ज्युं रेलरे समज जीवा श्रायु जावे ज्युं रेलरे ॥ १ ॥ वरस वरस की वर्णी स्टेशन, मास मास की मील रे॥ समज मन उमर जावे ज्युं रेल रे, समज जीवा त्रायु जावे ज्यु<sup>•</sup> रेल रे ॥ २ ॥ रात दिवस खेंचत दोय अञ्जन विन घोड़े विन वैल रे॥ समज मन उत्तर जावे ज्यं रेल रे समज जीवा आयू जावे ज्युं रेल रें॥ ३॥ प्रेम जोत की लालटेख है, विन वती विन तेल रे, ॥ समज मन ऊमर जावे ज्युं रेल रे, समज जीवा श्राय जावे ज्यु रेल रे॥ ४॥ नाडी रेतारखबर देखें कं, द्रसु द्वार रेया फेल रे॥ समज मन ऊमर जावे ज्युं 🐪 े समज जीवा श्रायु जावे ज्युं रेलरे ॥५॥

( ७२ )

पेंतालीस वरसे । रतनपुर चोमास । हीरालाल कहे पुज्य प्रसादे पुरे मनकी आस । अमर०।

भरते ।। मुगति । भरते ।। ११॥ ॥ इति ॥

## ॥ उपदेशी ठुमरी॥

प्रभु नामको समर्ग करना समरग्। करना

नहीं विसरना, जिनवरजी का ध्यान धर के, निज आत्म को निर्मल करना॥ प्रभु० ॥ १॥

तीन तत्व का ध्यान धरके, चार नोकड़ी को

परिहरना ॥ प्रभु०॥ २॥ आश्रव छोड समर

को धारो, ज्ञान उद्यम करना ॥ प्रभु०॥ ३॥ व्रत पंचलाग तपस्या करके पांचु इन्द्री वश

करना ॥ प्रभु० ॥ ४ ॥ तन धन जोवन सव है क्कुठा वैराग भाव दिल में रखना ॥ प्रभु०॥ ५ ॥

शिव पदवीकी च , रत्न हिये 'धरना

की

कामनी ने मन मांहि ए कुण वस्यो जी,श्रेणिक पड्यो रे संदेह ॥ वी० ॥ ४ ॥ अंतेउर परो जाल जो जी श्रेगिक दीयो रे झादेश ॥ भगवंते संशय भांगियो जी, चमकियो चित नरेश ॥ वी० ॥५॥ वीर वांदी वलतां थकां जी, पेसतां नगर मभार

ध्वांधोर तिहां देखी कहे जी, जाजा भुंडा अभय कुमार ॥ बी० ॥ ६ ॥ तात नो वचन ते पाली करी जी, वत लियो अभयक्रमार॥ समय सुन्दर कहे चेलगा जी, पामशे भवतगो पार ॥ वी०॥७॥इति समाप्तम्॥

॥श्री॥

॥ श्री नागलाजीरी सजाय ॥

नुंई रे परगया ते गोरी नागला रे माव देव भाई घर श्राइया रे, त्यां रे.प्रभुवोध्या सुनिराय रे ; हाथ में लीनो पृतरो पात्रो रे, त्यारे भाई मने अधर पोहचाय रे॥

कोई ने तो टिकट लिया शिवपुर का, कोई ने लिया जम गेल रे ॥ समज मन ऊमर जावे ड्युं रेल रे ॥ समज जीवा आयु जावे ड्युं रेल रे ॥ ॥ ६ ॥ संसारी जीव भुला ही फिरत है, मत करना कोई फेल रे ॥ समज मन ऊमर जावे ड्युं रेल रे त्रीप्णा वधे ड्यूं वेलरे ॥ ७ ॥ इति

॥ ग्रथ चेलगाजीनी सभाय ॥

-137

॥ वीर वंदी घरे आवतां जी, चेंलगा दीठो रे निमंथ ॥ वनमांहि राते काउसमा रह्योजी, साधतो मुक्तिनो पंथ ॥ १ ॥ वीर वखागी राणी चेलगा जी, सतीय शिरोमणि जाग ॥ ए आंकगी ॥ चेड़ानी साते सुताजी, श्रेणिक शियल परिमाग ॥ वी० ॥ २ ॥ शीत ठार सवलो पड़े जी चेलगा प्रीतम साथ ॥ चारित्रियो चितमां वस्यो जी, सोड़ वाहिर रह्यो हाथ ॥वी०॥३॥ मव-के जागी कहे चेलगाजी, केम कस्तो हुशे तेह ॥ नुंई रे परएया ते गोरी नागला रे ॥ ५ ॥ नारी नेव करी समजावीया रे, त्यारे भले लीनो संजम भार रे; भाव देव देवलोके गया रे त्यारे समय सुंद्र धरे ध्यान रे नुई रे परएया ते गोरी नागला रे ॥ ६ ॥ ॥ इति ॥

अथ श्री सुगुरु स्तवन लिख्यते ।

वे गुरु मेरे उर वसो, जे भवजलनिधि जहाज आप तीरे परतारतां, ऐसे श्री मुनिराज ॥ वे गु० ॥ १ ॥ मोह महा रिपु जीत के, छोड़े घरवार, होय मुनीश्वर वन वसे आत्म शुद्ध विचार ॥ वे गु० ॥ २ ॥ राग उरग वपु विल घणा, भोग भुजङ्ग समान, कजलि तरु संसारहे, सहु छोड्यो इम जांग ॥ वे गु० ॥ ३ ॥ पंच महाव्रत आदरे, पांचु सुमति समेत, तीन गुप्ति गोपे सदा अजर अमर पद हेत ॥ वे गु० ॥ नुई रे पराएया गोरी नागला रे ॥ १ ॥ ईम केही गरू पासे आइया रे, त्यां रे गरू पुछे दिचा रा काई भाव रे लाजरे कारज नहीं कोयरे त्यां रे दीचा लीनी भाई रे पास रे, नुंई रे परएया ते गोरी नागला रे ॥ २ ॥ वारे वरस संजम रह्या रे, त्यारे धरता नागला रे ध्यान रे, हां हां मुर्ख हां शुं करयो रे, त्यां रेधर ता नागलारो ध्यान रे, नुई रे परएया ते गोरी नागला रे॥ ३॥ चन्दन वदन मिर्ग लोचनी रे, त्यां रे विल विलती मुकी घर नार रे भाव देव ने भोग चेत आइया रे, त्यां रे अर श्रोलखे पुछे घर री नार रे, नुंई रे परएया ते गोरी नागला रे ॥ ४ ॥ नारी केवैछे सुर्ग साध जी रे, तमे छो गुणांरा भगडार रे, गज छोडी खर नही े रे न्युं ही, भिमयोड़ी आर रे,

## ( 58 )

॥ श्रंथ श्रीऋपभदेवजी महाराजरी किर्ती जिष्यते ॥

-পতান্ত্যক্ষাত দু-

॥ लावणी चाल तुरा किलगीरो चालमे॥

श्रीन्यपभदेव भगवान हुये बङ्भागी, महा-राज ज्ञानका व्यान लगायांजी ; श्रीजनधर्मका मूल और मारग वतलायाजी ॥ टेर ॥ ये जेन धर्म धर्म महाधर्म है. महाराज जो कोइ इसपर चलता है, करे जीवकी दया तो लख चोरासी टलता है ; है ढया धमें निज चीज वीज मुक्ति का, महाराज वो नहीं सड़ता गलता है, जैनधर्म पर चले वोही नर फुलता फलता है; (उडावणी) श्रीचरपसदेवको जो कोड शीश नमावे, वो अपने मनका चिन्ता ही फल पावे, महाराज चरगोमें चित्त जो लायाजी, श्रीजैनधर्मका मृल श्रौर मारग वतलायाजी ॥ १ ॥ चस श्रीजैनधर्भका येही मूल मारग है, महाराज जीवको

ईम अर्ज करे ॥ ऐसा० ॥ ३ ॥ लगनमें दिखे छे कोई अधुर, ईण अवसर नहीं परणे जरूर॥ ऐसा० ॥ ४ ॥ कृष्ण केवे रे ब्राह्मण आज ईहां, पीला चावल थाने केल दिया ॥ ऐसा० ॥ ५ ॥ पशुत्रों को वाटमें वाड़ा भरिया, करुणा करीने प्रभु पाछा फिरवा ॥ ऐसा० ॥ ६ ॥ संजम लेई त्यागी रिद्ध छती, कर्म खपाय पांम्या सिद्ध गती ॥ ऐसा०॥७॥ ग्रुरु नंदलाल दयाल मुनिस, मांडल गढ़में गाया तिस ॥ ऐसा० ॥ 🗆 ॥ इति ।



तामस त्याग बैरागी हुयजा, महाराज वारे त्रतोंसु तूँ मत भाग, अव सुता है किस नींद गर्बमें जगए। हे अब जाग, (उडावणी) तूं केड पुरव चोरासी भटक कर आया, कोइ दया धर्म से देही मनुष्यकी पाया, महाराज पुरायका जोग सवायाजी, श्रीजैन०॥ ४॥ चवढे नेम श्राव-कका इनको करणा, महाराज आठों कर्माको टारोजी, श्रीर क्रोध मान मट मोह लोभ पांचों को मारोजी, गुरू साहत्रजी और करीमवकस रतनांजी महाराज गर्व गर्वियोंका गालाजी, मत करो कोइ अभिमान जीवकी रचा पालोजी, (उडावगी) जो गुरुसुं वदले वो पापी है चेला, संसारमे उजला करदो में हुं मेला, महाराज का लेखां तेरा केवायाजी, श्रीजैनधर्मका मूल श्रीर मारग वतलायाजी ॥ ५ ॥ इति॥

सत्तिजी, और कीड़ी मकोड़ी हरें बृचसे वचके जानाजी, छव काया उपर जो रचा करता, महा-राज वो सतरे भेदे संजम पानाजी, पाप अठारे टाल सीधे मारगको जानाजी, (उडावर्णी) हुवा चोवीस तीर्थंकर जैन धर्ममें भारी, हुआ सवसे प्रथम ऋषभदेव अवतारी, महाराज जीनोने जैन चलायाजी ; श्रीजैन०॥ २॥ सत्य वचन मुनीका मुनीराज ही जाने, महाराज पांचुही इन्द्रियोंको मारेजी, एक निज नाम हिरदे धर केवल ज्ञान उचारेजी, धन माल त्यागकर मुनी-राज हुय वेठे, महाराज जैनका धर्म अपाराजी, एक निज नामसे काम रखेतो पार उताराजी, (उडावणी) श्रीऋपभदेव भगवानने एसा कीना, सव छोड़ दिया एक निज नाम ख़लीना, महा-राज नाम हरिनाम रखायाजी, श्रीजैन०॥३॥ समरण मंत्र नवकारका हरदम कर ले, महाराज मुनी हो कनक कामगी त्याग, और महाव्रत है पांच इनोको साध लगाले लाग, तूँ तृष्णा

रि हांक; मत०॥ ४॥ सुठ कपट करके धन ड़े रात दिवस घर धंधा दोड़े, मद् *छ*कीयो ग्णा नहीं छोड़े, मन कर ममता आप मुंवा त्र मार्ल वीराणारे हांक मत० ॥५॥ मात पीता रीया सुत ग्याती, सव स्तार्थके मिले संगाती, सिव जाता कोइ न साथी, दान शील तप

ाव के लें लो साथ खजानारे हांक मत० ॥ ६ ॥ थर जगत जिम वादल छाया, इन्द्रजाल सुपने ो माया, सांक देख गर्वे मत भात्रो, तक रहा रज विच डवके लेसी चमकाणारे हांक मत० ७॥ क्रोध मान मद लोग न राखो, मर्म ॥ इति ॥

चन किण्रो मत भाखो, प्रेम सहित अनभव रस चाखो, धन नर कृष्ण लाल निज तस्व ब्रिंगणारे हांक मतकर गर्व दिवाना ॥ ५॥

## ॥ गारव री लावसी॥

हाँक मत कर गर्व दीवाना, सुग सतगुरूकी सीख सयाना ; धरा रेवे धन माल होत तन राख मसाणारे हांक मत कर गर्व दिवाना ॥ टेर ॥ संत कंवरकी सुन्दर काया अमर रूप देखणकं श्राया, गर्व किया उस वस्त विरलाया, पीक दाणीमें थूकत कीड़ा देख डराणारे हांक मत कर गर्व दिवाना ॥ १॥ सोवन लंका सम-दसी खाई, हरि सुत कुंभकरणसा भाइ, तीन खंडमें आण दवाइ, वर्दि करी जद रावण लञ्चमण हाथ मराणारे हांक मत कर०॥ २॥ नगरी द्वारिका देखण लायक, छप्पन कोड जाद-वको नायक, कृष्ण महावली सुर थेपायक,भस्म हुआ चए मांय देखता सत्र कमठाएारे हांक मत०॥ ३॥ वीर ब्राह्मणी कूलमें ब्राया हरीचंट राजा महा दुख पाया, मुंज भूपति मांगने खाया, अभिमानी संभव चकरी जलमें डवका-

( ॖ ॐ ः ) भेख लियो पिण भेद न पायो, तूँ राग इंष नो

तागयो ॥ १ ॥ हो जोगी कुण व्यारो, कुण म्हारों, ए जुग छे हट्रवाड़ो हो जोगी कुण थारो, कूण म्हारो, ए जुग छे हटवाडों ॥ मोह सुंखदायक मांही विराजे, सो तो मार न सकीये, त्र्रोर सर्व सुपने की माया, विगर विचा-रचो न वकिये ॥ हो जोगी कुण थांरो,कुण म्हारो, ए जुग छे हटवाड़ो ॥ २ ॥ - श्राप ग्रापणी थीत कर जासी, कुण राजा कुण रांणा ; श्राप सरुपी **त्र्राप चितानंद, वाकीरा** भरम मंडा्णा हो जोगी कुण् थारो,,कुण् म्हारो, ए जुग छे हटवाड़ो॥३॥ तूं जोगी क्युं थरहर कांपे, सहु सुपने की माया, जोग तृंगी छे वातां न्यारी, स्युं हुवे राखलगायां, हो जोगी कुण थांरो, कुण म्हारो, ए जुग छे हटवाड़ो ॥ ४ ॥ ए कुटम्य विटम्य तजी ने, किम,कहे थारी म्हारी, दासी वचन सुणी

जोगीसर, अनुतर नयन उघाडो॥ हो जोगी

🕑 ॥ श्री निर्मोही री पांच ढाल लिख्यते ॥ ِ

ः ॥ दोहा ॥ ′

निरमोही गुण वरणवुं, देण भवक प्रीति वोधः कथा कार इधकार छे, जित्यो मोह महा जोध ॥ १ ॥

शक नेद्र गुण वरण्व्या, इन्द्र सभामें जोय ; निरमोही परवार में, मोह न व्यापे कोय ॥ २॥ एक देव पारख्या निमत, धारी मिनखा देह ; जोगी रूप करी खखे, किम जितो ए नेह ॥ ३॥ राय कुँवर परछन कियो, जोवे सगलो साथ; फिरती दासी रावली, जोगी सूँ करे वात ॥श॥

- ॥ दोहा सोरठा ॥

सुण दासी मुर्भ बात, तुभ सुखदायक मठ कने, सिंह हण्यो साचात कहेतां हिवडो थरहरे :—

॥ राग सोरठ भरतजी ॥ त्र्रात्म ज्ञान तगो नहीं रसीयो, निज सुख नहीं पिछाग्यो ; जग जाल ए, जोगी किस राच्यो हो; मोह जाल गर्ल पहरने, जीव नट जिम नाच्यी हो, जोगीं-सर तूँ किम भूख्यो हो ॥ ३॥वाप मरी वेटो हुवे, वेटी मर माता होय : अन्तर ज्ञान विचार ले, ए जगना नाता हो, जोगीसर तूं किम भूल्यो हो, ॥ ८ ॥ जोगी रह गयो जोवतो, एवा पिता कोइ हीय; यो कठिन हृदय एनो घणो, में लिधो जोय हीं जोगीसर तूँ किम भूल्यो हो ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

वाप तंगी मोह अलपता, आगो न मनमेंदुखं; माय जीव अति दुख करे, जिए राख्यो निज कुल ॥ १ ॥ जाय कहूँ हिव मायनें , सुणतां छोड़े प्राण, कठिन अप्र अति पेटनी, इम सह र्मुख की वार्ण⊣। २ ॥ ॥ ढोहा सोरठा ॥

सुण मइया मुभ वांण, कॅवर भणी सिंघ मारियो, छुटया नहीं मुफ प्राण, कहतां हिवड़ो थरहरे

थांरो, क्वेंर्ण म्हारो, ए जुग छे हटवाड़ो ॥ ५ ॥ ॥ दोहा ॥ वचर्न सुगी ने चमिकयो, इगा ने सोच न कोय

चाकर ने ठाकर घर्णा, हिये विमासी जोय ॥१। जाय कहूँ हिव बाप ने, तिए रे कँबरज एक रॉज रिद्ध संहुँ कॉरिमी, करसी दुःखं अनेक॥श

॥ दोहां सीरठा ॥ सांभंति तुँ राजांन, मुँभी श्राक्षम ने पाखती तुम कुल तिलक समान, सिंघ विदारयो कुंव

नें ॥ १॥

॥ रांग मांस ढोल ढुंजी ॥ तूँ किम भुल्यो हीं जोगीसर तूँ किम भुल्यों ही कॅबर कहो किम मांहरी, मत मोह अलुजी ही म्हारी कदेयन विछड़े, ऑन्तर कर बुँजी, हो जोगी

सर तूँ किम भुल्यो हो ॥ १ ॥ वाए मिलिया वादला, छिन मां ही लासी है

संजोगे आई मिल्या, विजोगे उठ जासी हो जोगीसर तूँ किम भुल्यो हो ॥ २ ॥ सुपन भरा के पुत्र इस रो नहीं, के कठिस सभावी होय ॥१॥ कॅवर ऋौर ही संपजे, माता ने तो जोय ; जाय कहुं निज कामिनी, परम महा दुख होय ॥ २॥

्र ॥ डोर्हा सोरठा ॥

नारि त्रागे जाय जोगीसर कल्पी कहे, तुज वल्लभ सुखदाय; मारयो मुभ ज्ञाश्रम कने॥ ॥ ढाल चौथी ॥ जिए विरायां जीव रह गया कोरा ॥ जोगी तें जोग री जुगत न जाणी, कपट जपे जप माला रे, केहए। रो जोगी ने अन्दर रोगी थारी जीभ अप्ति री जाला रे, जोगी तें जोग री जुगत न जाणी ॥१॥ मुज बह्वम मुज मांही विराजे, और तो कर्म विकारों रे, किंग री नार ने कुण भरतारो, थे अन्दर ज्ञान विचारो रे, जोगी तें जोग रीं जुगत न जाणी॥२॥ ए तो मोह कर्म नी चालो, विन भोग्यां नहीं छटे रे, अंखे अडील स्वभाव हमारो, ते पितम कुण लुटे रे, जोगी तें जोगरी जुगत न जासी ॥३॥ सुसत सखी तो पितम चेतन, कुमत ए जर्

॥ ढाल तीजी ॥

शंकर वसे रे केलास में । भोला भरम में किम भमे, बर्यु तुम भालज उठीरे, आत्म ज्ञान विचारतां, ए सहु बातज भुठी रे, ए जग सगलो रे कार्रमो ॥ १ 🗓 थित अनुसार परवार ए,ङ्ग सुख दुख नो दाता रे, थित पुरी कर चालसी कुण बेटो कुण माता रे, ए जग सगलो रे कारमो ॥ २ ॥ मूर्ख नर मन में, घणी राखे उंडी

श्रासा रे; देखत ही गल जावसी, ज्युं जल मांही

पतासा रे, ए जग संगलो रे कारमो ॥ ३ ॥ ः

पुदगल फंद नो वन्थ किसो, जोवी हृदय में जोर्ग रे ; हूँ तूँ मन में तेवड़ें , तूँ तो अन्दुर रोगी रें, ए जंग संगतों र कारमी ॥ ४॥ संजोग

मिलीयां सहु, विजींगे सहु विगटे हैं ; अपूर ज्ञानी आदमी, या वात नहीं अर्टके रे, ए जैंग सगलो रे कारमों 🗓 🗓 🦫

॥ दोहा ॥

पू वातां डाक्स जिसी, आतं न दीजो कोय,

हार रे राजेसर: हाथ जोड़ी पाय पड़े रे लाल, करतो जय जय कार रे राजेसर; धन धन करणी थांहरी रे लाल ॥ १॥ राज कॅवर अगट कियो रे लाल, लागो पिता रे पाय रे राजेसर; ग्रण करना सुर हर्पयो रे लाल, त्र्रायो जिए दिश जाय रे राजेसर, धन धन करणी थांहरी रे लाल ॥ २॥ इम आतम रस पीजिये रे लाल ; किजिए समकित सुद्ध रे राजेसर, राग द्वेप कर्म जितिए रे लाल , टालिये कुमत कुगुद्ध रे राजेसर धन धन करणी तांहरी रेलाल ॥३॥ कथाकार ईंघकार छेरे लाल, जिए सुं वर्णाई ढाल रे चतुर नर , निज मन थीरता कारणे रे जाल, जितगा मोह चमा जागा रे चतुर नर ; धन धन करणी तांहरी रे लाल ॥ ४॥ सम्बत **अठारे** चिहोतरे रे लाल, पाली चौमासो किथोरे चतुर नर , रतनचन्द आनन्द्र में रे लाल, ं

सगाई रे, अन्तर ज्ञान लख्यो नहीं वाबा,क्युं

ए राख लगाई रे, जोगी तें जोग री जुगत न जाणी ॥ ४॥ भरम जाल ए मरणो न रहणो, मूल रहे न राखी रे, इणा ने भुरे सोही ज्ञान स् अलगो, सूत्र सिद्धान्त छे साखी रे, जोंगी तें जोग री जुगत न जाणी ॥ ५॥

॥ दोहा ॥

मन वच् कर डोल्यो नहीं, सांभल कुंवर खरूप ; सूर् परखत हर्षत हुवो, ऋहो ऋद्यातम रूप ॥ १ ॥ निरमोही ईया कारगो, ऊपसम भाव विशे सरपति सख गुगा वरगाल्यां, पतक जिना देख

सूरपति सुद्ध ग्रग्ग वरगाञ्यां, प्रतक लिना देख ॥ २॥

॥ दोहा सोरठा ॥

धन निरमोही राय, धन परिवारज समकतिः पूरव प्राय पसाय, शुद्ध संजम एवी पाइये॥ १॥

रूप उष्प पताया शुक्ष सजम एवा पाइया। उम् ा। दाल पांचमी ॥ - - - - - - - - -

कोयलो परवत् घुंधलों रे लाल ॥ ए देशी ॥

र.वमियारी वान्छा करो हो मुनिवर, शृग थार<mark>ो</mark> वतार ॥ सु०॥ मु०॥ चित्त चित्तयो तूँ,घेर ॥ ર 11 एंगे मन वाल ने हो सुनिवर, लिनो संजम ₹. व कायर क्यो होवे हो मुनिवर,देख पराई नार ०॥ मु०॥ चि०॥ ३॥ ज पंथ ने छोड़ ने हो मुनिवर, ऊजड़ मार्ग ात जाव, अमृत भोजत चाखने हो मुनिवर, प्रद बूकस किम खाय ॥ सु० ॥ सु० ॥ चि० ॥ 1811 गज असवारी छोड़ने हो मुनिवर, खर ऊपर मत त्रैस, खर्ग तणा सुख छोडने हो, मुनिवर, पताला मत पैस ॥ सु० ॥ मु० ॥ चि० ५ ॥ चन्द्रन वाल कोयला करे हो मुनिवर, आंबो काट ववुल , कुण बोवे घर श्रागणे हो मुनिवर, ज्युं होसी थारे सूल ॥ सु० ॥ मु० ॥ चि० ॥ घर घर फिर-सी गोचरी हो मुनिवर, देख पराई नार, हड़ डाल प्रसिर्द्ध रे चतुर नर, धंनु धन करणी थांहरी रेलाल ॥ ५ ॥

॥ इति श्री निरमोही पांच ढाल समाप्तम्॥, ॥ अथ श्री रे नेमि राजमती की सिज्जाय॥

॥ दोह ॥

शासन नायक समरिये, मन वंछित सुखदाय। राजुल इकवीसी कहुं, सुणज्यो चित्त लगाय॥

ા ૧ ા चित चलियो रह नेम नो, देखि राजुलरूप। दृष्टान्त देयने राखियो, पड़तो भव जल कूप॥२॥

॥ ढाल ॥

राजमती इम विनवे हो, मुनिवर मन चलीयो तूँ घेर ; थोड़ा सुखां रे कारणे हो मुनिवर क्युँ हारें नरभव फेर ॥ १ ॥

सुण साध जी हो मुनिवर, मन चलियो तूँ घेर ए आंकडी ॥

पञ्च महावत आदरचा हो,मुनिवर मेरु जितनो

नी जात, सुपने में वान्छ नहीं हो मुनिवर, थारी कितरीएक वात ॥ सु०॥ मु०॥ चि०॥१३॥ जिहां तिहां ही विचरसी हो मुनिवर, नगर ने विल याम, स्त्री देखी चित डोलसी हो मुनिवर, नारी नरक नी ठाम॥ सु०॥ मु०॥ चि०॥ १४॥ सहु सरीखा घर नहीं हो मुनिवर, नहीं सरीखी नार, केई भुगडाने केई भला हो मुनिवर, चलीयो जाय संसार ॥ सुं० ॥ सु०॥ चि०॥ १५ ॥ माह्मी सुन्दरी वेनडी हो मुनिवर, सतीयां में सिरदार, कर करणी मुक्ते गया हो मुनिवर, नाम लिया निस्तार ॥ सुलामुलाचिला १६॥ तिथैकर वावीस मां हो मुनिवर, जग मे मोटा सोय, वालपरा तज निसरचा हो मुनिवर, वन्धव साहमो जोय॥सु० ॥मु० ॥ चि० ॥ १७ ॥ नारी दुखरी वेलड़ी हो मुनिवर, रमग्री दुखरी खाण, इम जांगी ने चेतज्यो हो मुनिवर, कह्यो हमारो मान ॥ सु० ॥ मु० ॥ चि० ॥ १८ ॥ वचन सुणि राजल तला हो मुनिवर, हीयो ठिकाणे आय, धन धन 🗂

नामावृत्त नी परे हो मुनिवर, डिगता न लागसी

बार ॥ सु० ॥ मु० ॥ चि० ७ ॥ विमयारी वान्छ सत करो हो मुनिवर, गन्धन कुलमति होय, रत चिन्तामगी पाय ने हो मुनिवर, कीच माही मत खोय ॥ सु० ॥ मु० ॥ चि० ॥ 🖘 कुल मोटी आपां तलो हो मुनिवर, जिल सामो तूँ जोय, काम भोगने तुँ वान्छसी हो मुनिवर, भलो न कैसी कोय, सु०॥ मु०॥ चि०॥ ६॥ गोवाल भएडारी, सारखो हो मुनिवर, हमाल उठायो भार, वोभ मजुरी अरथीयो हो मुनिवर, नहीं माल सिरटार ॥ सु०॥ मु०॥ चि०॥ १०॥ घणे। रूप नारि तणो हो मुनिवर, वस्त्र गहणा सार, देख देखने सीटावसी हो मुनिवर, जासी जमारो हार ॥ सु० ॥ सु० ॥ चि० ॥ ११ ॥ मन गमतां इन्द्री तणा हो मुनिवर, सुख विलसे घर मांय, त्यां स्त्री न्यारो रहे हो मुनिवर, त्यागी कह्यो जिनराय ॥ सु० ॥ मु०॥ चि० ॥१२ त्रावे वेश्रमण देवता हो मुनिवर, नल कुँवर

संवी नगरी वसे, मुक्क पिता परिगल धन्न परवार परे परवरचा हुँ छूं नेहनो रे पुत्र रत्न ॥ श्रे॥ २॥ इक दिवस मुक्त वेदना, उपनी ते न खमाय ॥ मात पिता सहु जुरि रह्या, तोही पर्ण रे समाधि न थाय ॥ श्रे॰॥ ३॥ गोरडी गुरा मिंग उत्तडी, गोरडो अवला नार ॥ कोड़ पीड़ा में सही, कोणे न किथी मोरडी सार ॥ श्रे॰ ॥४ ॥ वहु राजवैद्य वृत्ताविया, कीधा कोडि उपाय ॥ वावना चन्डन चरचिया. तोही पण रे समधि न थाय॥ श्रे०॥ ५॥ जग मांही कोई केहनो नहीं, ते भगी हुँ रे अनाथ ॥ वीतराग नो धर्म वायरो कोई नहीं रे मुक्ति नो साथ ॥ श्रे०॥ ६ ॥ वेदना जो मुक्त ऊपसमें, तो लेऊ संजम भार ॥ इम चिंतवतां वेदन गई, व्रत लिपुं में हर्प अपार ॥ श्रे ० ॥ ७ ॥ कर जोड़ी राय गुण चिंतवे, धन धन तूँ अणगार ॥ श्रेणिक समकित पामीयो. बांदी पोहतो रे नगर मभार

सोटी सती हो मुनिवर, गई मुगत मकार ॥सु॰

॥मु०॥ चि०॥ १६॥ ए दोनुं ऊत्तम हुवा हो मुनिवर, पाम्या केवल ज्ञान, ए दोनुं मुगते गया हो मुनिवर, किजे ऊगारो ध्यान ॥ सु ०॥ मु०॥ चि० ॥ २०॥ सम्वत् अठारे वावने हो मुनिवर. श्रावण मास मकार, चोथमल कहे पिपाड़ में हो मुनिवर, सुदी पंचमी मङ्गलवार।॥ सुण साधजी हो मुनिवर, चित चिलयो तूँ घेर (सुण साधजी हो मुनिवर, मन चिलयो तूँ घेर )॥ इति श्री रिट्टनेमी राजमती की सज्जाय समासम्॥

॥ अथ श्री अनाथी मुनिनी सजाय॥

श्रेणिक राय वाडी चढयो, पेखियो मुनि एकंत॥ वर रूपकांते मोहियो, राय पुछे रेकहो रे विरतंत॥ १॥ श्रेणिकराय हॅ रे ब्यनाथी निर्यंथ

विरतंत ॥ १ ॥ श्रेंगिकराय हुँ रे श्रनाथी निप्र'थ तिए। में लीघो रे साधुजीनो पंथ ॥ श्रेगिक राय

नणो, गौसंख दूध ज्युं जाण हो गौतम, आ तिए सूं ऊजली अति घणी, समा छत्र संठाए हो गौतम ॥ शि० ॥ ५ ॥ अरजुन सोना में ऊजेली, घठारी मठारी ज्युं जाग हो गौतम फिटक विचे ही ऊजली, सूहाली अनंत वखाण हो गौतम ॥ शि०॥ ६॥ शिला ऊलंघी श्राघा गया, अध रह्या विराज हो गौतम, अलोकथी जाय अवरया, सारया आत्म काज हो गौतम , ॥ शि०७॥ जन्म नहीं मरणों नहीं,नहीं चिन्ता नहीं सोग हो गौतम ; वेरी नहीं मत्री नहीं नहीं विजोग नें संजोग हो गौतम॥ शि०॥=॥ भुष नहीं त्रिया नहीं, नहीं हरख नहीं सोग हो गौतम ; कर्म नहीं काया नहीं, नहीं विषे रस भोग हो गौतम ॥ शि० ॥ ६॥ गाम नगर ए कोय नहीं, नहीं वसती नहीं उजाड़ हो गौतम काल तिहां वरते नहीं, नहीं रात दिवस तिथी-वार हो गौतम ॥ शि०॥ १०॥ शब्द रूप रस गंध नहीं, नहीं फरस नहीं वेद हो गौतम , वे

॥ श्रे०॥ ८॥ मुनि ऋनाथी गुगा गावतां, तुटें कर्मनी कोड॥ गिगा समय सुन्दर तेहना, पाय वन्दे रं वेकर जोड़॥ श्रे०॥ ६॥ इति॥

॥ अथ मोचनगर सजाय लिख्यते ॥

॥ अय माज्ञगर सजाय ।लख्य

गौतम स्वामी पुछा करे, विनो कर शीश नमाय प्रभुजी ; अविचल थानक में सुग्यो, कृपा करो मोय वताय प्रभुजी ; शिवपुर नगर स्हावणो ॥ टेर ॥ १ ॥ आठ कर्म अलगा किया, सारया आत्म काज प्रभुजी; छुटा संसार ना दुख थकी रहेवानो कुण ठाम प्रभुजी ॥ शिव०॥ २ ॥ वीर कह्यो उर्ध्व लोक में, मुक्त शिला तिण ठाम हो गौतम ; स्वर्ग छाईसां ऊपरे, तिण्रा छे वारे

नाम हो गौतम ॥ शि० ॥ ३ ॥ लाख पेंतालीस योजनां, लांवी पौली जाए हो गौतम ; श्राठ योजन जाडी किने केनरे करी करी

योजन जाडी विचै, छेहड़े पतली अनंत वखाण हो गौतम ॥ शि०॥ ४॥ ऊजल हार मोत्यां

## ॥ स्तवन सिङ शीलाका ॥

हो जी सिद्ध शीला सगलामरे, जोजन पेतालीस लाख हो प्रभु ॥ ऋरजुगा सानामे उजनी विस्तार उवाई में भाख हो॥ प्रभु शिवपुर नगर सुहावणो॥ टेर ॥ १ ॥ म्हाने जावण केरो कोड हो. प्रभु पास जिनेसर वीन्वुं ॥ म्हाने कर्म वन्धनथी छोडाय हो॥ प्रमु शिवपुर ॥२॥ थानके सदाईकाल हे सा-स्वतो ॥ मिल रही जोतमं जोत ॥ हो ॥ प्रसु तला लीन एकमें अनेक छे॥जाने कटीय न आवे दुःख ॥ हो प्रभु शिव० ॥३॥ नठेजन्म जरामरण कोय नहीं । नहीं चिन्ता नहीं शोक ॥ हो प्रभु, सासता सुख साता घणी ॥ ज्यारे कदीयन पडे विजोग ॥ हो प्रभु शिव०॥ ४॥ जठे भूख तिर-खा लागे नहीं । तिरपत रहे सदा भरपूर हो प्रसु ॥ ऊण्।रत उपजे नहीं। नहीं मेले भव अकूर।॥ हो प्रमु शिवपुर ॥ ५ ॥ जठ ठाकुर चाकर कोई नहीं। सगला सरीखा होय हो प्रभु॥ केवल ज्ञान

शि०॥ ११॥ राजा नहीं परजा नहीं, नहीं ठाकुर नहीं दास हो गौतम ; मुगति में ग्रुरु चेलो नहीं, नहीं लोहड़ वडांरी रीत हो गौतम ॥शि०॥ १२॥ श्रनोपम सुख पामे सदा, भिल रह्या श्ररुपी जोत प्रकाश हो गौतम; सगलां रा सुख सासता,सगला ही अविचल राज हो गौतम ॥ शि०॥ १३॥ श्रीर जायगा रोके नहीं, रही जोत में जोत समाय हो गौतम ॥ शि० ॥ १४ ॥ केवल ज्ञान सहित छे, केवल दर्शन जाग हो गौतम ; चायक समकित निरमली, कदेइन हुवे उदास हो गौतम ॥ शि०॥ १५॥ ए सिद्ध सरुप कोई ऋोलखो श्राणो मन वैराग हो गौतम शिव रमणी वेगा वरो, पामो सुख अथाग हो गौतम ॥शि०॥१६॥ इति श्री मोच नगर सज्जाय समाप्तम्॥

**अहार ॥ हो प्रभु शिव० ॥१३॥ होजी** अनन्ताही सु ख अरिहन्तना। वले सिध वडासरदार हो प्रभु॥ तीनलोक में कोई श्रोपमा लागे नहीं। म्हाने केतां न ब्रावे पार ॥ हो प्रभु शिव०॥ १८॥ होजी अन्तरजामी आपछो । पर दुःखांरा काटग्-हार हो प्रभु ॥ ज्ञासकरी में ज्ञावियो । मने भव-सागरथी तार ॥ हो प्रमु शिव० ॥१५॥ होजी तीनुंही कालरा देवता। रतनारे विमाणेवेस हो प्रसु ॥ जोड़ लगावे सिङतणी नहीं आवे अनन्त में भाग ॥ हो प्रभु शिव०॥ १६॥ होजी अश्वसेन-रायजी रा नन्द । वामादेरागी श्रंग जातहो प्रसु॥ पास जिनेश्वर वीनवुं म्हारी आवागमन नीवार ॥ हो प्रमु शिव०॥ १७॥ होजी सम्वत अठारे - विसे सम्य फलोटी कियो चौमास ॥हो प्रभु०॥

इन्द्रतुषे लागे नहीं। सगलाई देवांरा सुख ॥ हो प्रमु शिव० ॥१२॥ होजी इन्द्र थकी अधिका कह्या । निमन्थ मोटा अण्गार हो प्रमु ॥ सदाई सुख सन्तोप में रहे। ज्याने भोग जाएया वमण् जीसो दर्शने करी ॥ चवदे राजरया छे जोय ॥ हो प्रभु शिव०॥६॥ जठे सेठ सेनापती मंत्री। सुख भोगवे मगडली कराय हो प्रभु ॥ बोहला सुख वलदेवना ॥ वासुदेव तुले नहीं थाय ॥ हो प्रभु शिव० ॥ ७ ॥ जठे हय गय रथ लख चौरासी ॥ पायदल छिनवे क्रोड हो प्रभु ॥ चवदे रतन नव नीद घरे ऐसा नरपत केरा ईंद्र ॥ हो प्रभु शिव०॥ = ॥ होजी चौसठ सहेस अन्तेवरा । नाटक पड़े विध बत्तीस ॥ हो प्रभु ॥ महल वयालीस भोमिया। सहु राजन में विशेष॥ हो प्रभु शिव०॥ ६॥ हो जी वीसतार स्युं करूं वरतंत छे घणो। जंम्बुद्दीप पंग्तिीमाय हो प्रभु॥ जुगल्या केरो वले जागाजो । जोड़ले जन्म नर-नार॥ हो प्रभु शिव०॥१०॥ होजी जीवा भगव-ती में भाषीयो। वले प्रश्नव्याकरण माय हो प्रभु ॥ ज्ञानी देवा दाखियो ।कल्पवृत्त पुरे अ्यांरी त्रास ॥हो प्रभु शिव ०॥ ११ ॥ होजी चकवृतने . जुगल्या थका । सगलाई सुरांरा सुख हो प्रभु ॥

वर मेघ कुमार रे प्रागी, चित समाधी होने दस वोलां ॥ ५ ॥ चत्री नामे राय रखीसर, वले सद-र्शन सेठ रे प्राणी,नेमी राजा चारित्र लियो तीनु पहोंता ठिकाणे ठेंट रे प्राणी, चित समाधि होवे दस वोलां ॥ ६ ॥ भगु पुरोहितरा दोनुं वेटा. वले तेतली प्रधान रे प्राणी, जातिस्मरण थी सुख पाम्यां, कहतां न ऋावे पाररे प्राणी, चित समाधि होवे दशवोलां ॥ ७॥ तीजे वोले जथा तथ सुपने, राजी होवे मन देखरे प्राणी, रिध विरध पामे परभाते तिखरा अर्थ अनेक रे प्राखी, चित समाधी होवे उस बोलां ॥=॥ कई एक इस भव सिधा ए सुपने विचार रे प्राणी, श्री श्ररि-हंतजी री माता आद देइ देखे, चाल्यो मण सुत्र में विस्तार रे प्राखी, चित समान दश बोलां ॥ ६॥ चोथे वोले दे

पुत्र महलां में पाम्यो,वले डेड के समगतसार रे प्रागी. मरुजीनाथजी रा छऊं मिंत्रीसर मुनी- युज जेमलजी रा परसादथी रिखरॉय चन्दजी किया ग्रग्याम ॥ हो प्रभु शिव० ॥ १८ ॥ ॥ इति श्री सिद्ध शीला को स्तवन समातम्॥

चित समाधि होवे दश वोलां ॥ ढाल ॥ जीव अपुर्व जिन धर्म पामें, ज्यांरे कमी न रेवे काय रे प्राग्गी, करूपवृत्त घर आंगगा ऊग्यो, मन वांछित फल पायरे प्रागी,चित समाधि होवे दश वोलां ॥ १ ॥ लील विलास सदा साता मे, सुख मांही दिन जायरे प्राणी, चित समाधि होवे दश वोलां ॥ २ ॥ दुजे वोले जातीस्मरण पामे पुन्य परमाण रे प्राणी, पुरव भव भली परे देखें समजो नी चतुर सुजान रे प्रागी, चित समाधि होवे दश वोलां ॥ ३ ॥ उतकृष्टा नवसे भवलग तांई देखे, पडे सन्नी पचेन्द्री री ठीक रे प्राणी, त्राउखो जागो त्राप भोग्या ते त्रवधि ज्ञा**न मंग**ली-

श्ररिहंतदेवजीने परसन पुछे, उत्तर श्रापे दीन द्यालरे प्राणी, चितसमाधि होवे दश् वोलां॥१५॥ इटे वोले अवध ज्ञानी, देखें वह संसार रे प्राणी सात में वोले सुर्णे हो सुर ज्ञानी, मन परजा रो विस्तार रे प्राणी: चित समाधि होवे दश वोलां ॥ १६ ॥ मन पर्यव ज्ञान मुनीवर ने पावे लव्ध धारी असानार रे प्राणी, गौतम गणधर त्राद देइ पाम्यां कैसी सामी भव पार रे प्राणी, चित समाधि होवे दश वोलां ॥ १७ ॥ समुन्द्र दोय ने द्वीप अढाइ जेमें सन्नी पचेडी होयरे प्राणी, ज्यां जीवां रे मनड़े री वात्यां छानी न रहे कोय रे प्राणी॥ चित०॥ १८॥ श्राठ में वोले केवल ज्ञानी, नवमें केवल दर्शन जाण रे प्राणी, लोक अलोक भली पर देखें, समजे कोई चतुर सुजाण् रे प्राणी ॥ चित० ॥ १६ ॥ जधन्य तिर्थंकर बीश विराजे, उत्कृष्टा एक सो सीतर रें प्राणी, गणधर मुनिवर केवल ज्ञानी, हुवा पाटोन पाट रे प्राणीता चित्र ॥ २० ॥ लोकामें

देख्यां ठरे त्यांस्रं नेगारे प्राणी, जग में जोत उ-द्योत करे तो. समदृष्टी का सेनागरे प्रागी. चित समाधी होवे दश वोलां ॥ १०॥ सोमल बा-ह्मण ने समभायो, देव समदृष्टी त्रायरे प्राणी. समगत मांही कर दियो सेंठो, चाल्यो निखा वलका सुत्रमें विस्तार रे प्राणी, चित समाधी होवे दश वोलां ॥ ११ ॥ सुगडाल कुंभार ने, सुर राते वोल्यो अधृत वैरा रे प्रासी, श्री वीत-राग श्रासी प्रभाते तुँ भेटीजे जग भांगारे प्रागी, चित्त समाधि होवे दश वोलां ॥ १२ ॥ इमकेइने सुर पाछो वलीयो प्रभु भेट्या प्रभात रे प्राणी. समगत लेइने श्रावक हुवो, मिट गयो भ्रम मि-थ्यात रे प्राणी चित समाधि होवेदश वोलां ॥ १३॥ अवधि लेड अरिहंत जी आया, माता रे गर्भ मांह रे प्राणी, पेटमें पोढ्या दुनिया देखे पुरा पुन्य संच्या जिए राय के ि; . धि होवे दश वे

दयालरे प्राणी, चितसमाधि होवे दश वोलां॥१५॥ **छटे वोले अवध ज्ञानी, देखें बहु संसार रे** प्राणी सांत में वोले सुर्णे हो सुर ज्ञानी, मन परजा रो विस्तार रे प्राणी: चिंत समाधि होवे दश बोलां ॥ १६ ॥ मन पर्यव ज्ञान मुनीवर ने पावे लब्ध धारी ऋगागार रे प्राणी, गौतम गणधर श्राद देड पाम्यां कैसी सामी भव पार रे प्राणी, चित समाधि होवे दश वोलां ॥ १७ ॥ समुन्द्र दोय नें द्वीप ऋढाइ जेमें सन्नी पचेंडी हायरे प्राणी, ज्यां जीवां रे मनड़े री वात्यां छानी न रहे कोय रे प्राणी ॥ चित० ॥ १८॥ आठ में वोले केवल ज्ञानी, नवमें केवल दर्शन जाए रे प्राणी, लोक अलोक भली पर देखे, समजे कोई चतुर सुजाग्र रे प्राग्री ॥ चित० ॥ १६ ॥ जघन्य तिर्थंकर बीश बिराजे, उत्कृष्टा एक सो सीतर रें प्रासी, गराधर मुनिवर केवल ज्ञानी, हुवा पाटोन पाट रे प्राणी ॥ चित० ॥ २० ॥ लोकामें

देख्यां ठरे व्यांसुं नेगारे प्रागी, जग में जोत उ-द्योत करे तो, समदृष्टी का सेनागारे प्रागाी, चित समाधी होवे दश वोलां ॥ १०॥ सोमल त्रा-ह्मण ने समकायो, देव समदृष्टी आयरे प्राणी, समगत मांही कर दियो सेंठो, चाल्यो निरया वलका सुत्रमें विस्तार रे प्राणी, चित समाधी होवे दश वोलां ॥ ११ ॥ सुगडाल कुंभार ने, सुर राते वोल्यो अ्रष्टत वैशा रे प्राशी, श्री वीत-राग श्रासी प्रभाते तुँ भेटीजे जग भांगारे प्राणी, चित्त समाधि होवे दश वोलां ॥ १२ ॥ इमकेइने सुर पाछो वलीयो प्रभु मेंट्या प्रभात रे प्राणी. समगत लेइने श्रावक हुवो, मिट गयो श्रम मि-थ्यात रे प्राणी चित समाधि होवेदश बोलां ॥ १३॥ अवधि लेइ अरिहंत जी आया, माता रे गर्भ मांह रे प्राणी, पेटमें पोट्या दुनिया देखे पुरा पुन्य संच्या जिए राय रे प्राणि, चित समा-धि होवे दश वोलां ॥ १४ ॥ सर्वार्थ सिद्धना देवता देखे तिहां बैठा, लोक नाल रे प्राणी, श्री

**ऋरिहंतदेवजीने परसन पु**छे, उत्तर आपे दीन दयालरे प्राणी, चितसमाधि होवे दश वोलां॥१५॥ छटे वोले अवध ज्ञानी, देखें वहू संसार रे प्राणी सांत में वोले सुणे हो सुर ज्ञानी, मन परजा रो विस्तार रे प्राणी ; चिंत समाधि होवे दश वोलां ॥ १६ ॥ मन पर्यव ज्ञान मुनीवर ने पावे लब्ध धारी असागार रे प्रासी, गौतम गस्पधर श्राद देइ पाम्यां केंसी सामी भव पार रे प्राणी, चित समाधि होवे दश वोलां ॥ १७॥ समुन्द्र दोय ने द्वीप अढाइ जेमे सन्नी पचेंद्री होयरे प्राणी, ज्यां जीवां रे मनड़े री वात्यां छानी न रहे कोय रे प्राणी॥ चित०॥ १८॥ आठ में वोले केवल ज्ञानी, नवमें केवल दर्शन जाण रे प्राणी, लोक अलोक भली पर देखे, समजे कोई चतुर सुजाग्गरे प्राग्गी॥ चित०॥ १६॥ जघन्य तिर्थंकर बीश विराजे, उत्कृष्टा एक सो सीतर रे प्राणी, गणधर मुनिवर केवल ज्ञानी, पाटोन पाट रे प्राणी ॥ चित० ॥ २० ॥ जे

ढेख्यां ठरे त्यांसु<sup>:</sup> नेगारे प्रागी, जग में जोत उ-द्योत करे तो, समदृष्टी का सेनागारे प्रागाी, चित समाधी होवे दश वोलां ॥ १०॥ सोमल त्रा-ह्मण ने समभायो, देव समदृष्टी त्र्रायरे प्राणी. लमगत मांही कर दियो सेंठो, चाल्यो निरया वलका सुन्नमें विस्तार रे प्रागी, चित समाधी होवे दश वोलां ॥ ११ ॥ सुगडाल कुंभार ने, सुर राते वोल्यो असृत वैंगा रे प्रागी, श्री वीत-राग श्रासी प्रभाते तुँ भेटीजे जग भांगारे प्राणी, चित्त समाधि होवे दश वोलां ॥ १२ ॥ इमकेइने सुर पाछो वलीयो प्रभु भेंट्या प्रभात रे प्राणी. समगत लेइने श्रावक हुवो, मिट गयो श्रम मि-थ्यात रे प्राणी चित समाधि होवेदश वोलां ॥ १३॥ अवधि लेइ अरिहंत जी आया, माता रे गर्भ मांह रे प्राणी, पेटमें पोढ्या दुनिया देखे पुरा पुन्य संच्या जिए राय रे प्राणि; चित समा-धि होवे दश वोलां ॥ १४ ॥ सर्वार्थ सिखना देवता देखे तिहां बैंठा, लोक नाल रे प्राणी, श्री

#### पन्नरे तिथी की सज्जाय ।

-0 .0.-

हारे लाला एकम आयो एकलो। तृं तो पर मव एकलो जायरेलाला ॥ धर्म्म विना यो जी-वडो। कांई भव २ गोता खायरे लाला ॥ १ ॥ श्री जिन धर्म्म समाचरो ॥ ए त्र्रांकणी ॥ हांरे लाला पुग्य पाप जग मे कह्या । इन दोनां रा रूप पहचान रे लाला ॥ पुराय से शिव सुख पाइये। कांई पाप छे दुःखरी खागा रे लाला ॥ श्री ॥२॥ हारे लाला तीन मनोर्थ चिंतवो । कांई तीन शल्य दुख दायरे लाला॥ ज्ञान दर्शन चारित्र सूं जीव तिर गर्या मोच मांयरे लाला ॥ श्री ॥ ३ ॥ हां रे लाला च्यार चोकड़ी पर हरो।चांरू श्ररणा राखो घट मांयरे लाला ॥ हां रे लाला च्यार्<sup>र</sup>व्यान जिनवर कह्या । कांई चार विकथा दुःख दाय रे लाला ॥ श्री ॥ ८ ॥ हां रे लाला पांचो इन्द्रिय वश करो । लेवो पंच महावत् धार रे लाला ॥ पांचवी गति पावे प्राणिया, कोई पांच ज्ञान थे- उत्योत करत है, हुवा तिर्थंकर चौवीस रे प्राणी, तीर्थ थापी ने कर्मा ने कापी, जग तारनजगदी-श रे प्रांगी ॥ चित०॥ २१ ॥ दशमें वोले पंडित मरणो करे उत्तम करणी साध रे प्राणी, श्रावागमन रा दुःखसे छुटे, इम कह्यो जिन-राज रे प्राणी, चित्त समाधी होवे दश वोलां ॥ २२ ॥ नुवे जगारो नामज भाख्यो, केयो श्रंत गढ मांही अंत रे प्राणी केवल लही ने मुक्ति सिधाया, हुवा सिङ भगवंत रे प्राणी ॥ चित० ॥ २३ ॥ दशासुत स्कन्ध सुत्र मांही, वली सामायिंगजी रीं साख रे प्राणी, तिण अनुसार जोड़ करीने रिप राय चन्दजी भर्गो मन हुल्लास रे प्राणी ॥ चित० ॥ २४ सम्वत् अठारेने वर्ष अड़तीसे, मेड़ते नगर चौमास रे प्राणी, पुज्य जयमलजी रे प्रसादे, दर्शण पञ्चीसी जोड़ी मन उल्लास रे प्राणी, चित समाधि होवे दश बोलां ॥ २५ ॥ ॥ इति दर्शन पचीसी समाप्तम् ॥

### पन्नरे तिथी की सङ्जाय ।

---0,1 0,---

हारे लाला एकम आयो एकलो। तृ तो पर भव एकलो जायरेलाला ॥ धर्म्म विना यो जी-वड़ो। कांई भव २ गोता खायरे लाला॥१॥ श्री जिन धर्म समाचरो ॥ ए आंकली ॥ हारी लाला पुराय पाप जग में कह्या । इन दोनां रा रूप पहचान रे लाला ॥ पुग्य से शिव सुख पाइये। कांई पाप छे दु खरी खागा रे लाला ॥ श्री ॥२॥ हारे लाला तीन मनोर्थ चिंतवो । कांई तीन शल्य दुःख दायरे लाला॥ ज्ञान टर्शन चारित्र सूं जीव तिर गया मोच मांयरे लाला ॥ श्री ॥ ३ ॥ हां रे लाला च्यार चोकड़ी पर हरो।चांरू शरणा राखो घट मांयरे लाला ॥ हां रे लाला च्यार ध्यान जिनवर कह्या। कांई चार विकथा दुःख दाय रे लाला ॥ श्री ॥ १ ॥ हां रे लाला पाँचो इन्डिय वश करो । महाव्रत्र धार रे लाला वश करो। कोई पांच ज्ञान पांचवी गति

ऊचोत करत है, हुवा तिर्थंकर चौवीस रे प्राखी, तीर्थ थापी ने कर्मो ने कापी, जग तारनजगदी-श रे प्राणी ॥ चित० ॥ २१ ॥ दशमें वोले पंडित मरणो करे उत्तम करणी साध रे प्राणी, ञ्रावागमन रा दुःखसे छटे, इम कह्यो जिन-राज रे प्राणी, चित्त समाधी होवे दश वोलां ॥ २२ ॥ नुवे जगारो नामज भाख्यो, केयो श्रंत गढ मांही श्रंत रे प्राणी केवल लही ने मुक्ति सिधाया, हुवा सिङ भगवंत रे प्राग्री ॥ चित० ॥ २३ ॥ दशासुत स्कन्ध सुत्र मांही, वली सामायिंगजी रीं साख रे प्राणी, तिण अनुसार जोड़ करीने रिष राय चन्दजी भगो मन हुल्लास रे प्राणी ॥ चित्र० ॥ २४ सम्बत् अठारेने वर्ष अड़तीसे, मेड़ते नगर चौमास रे प्राग्री, पुज्य जयमलजी रे प्रसादे, दर्शण पचीसी जोड़ी मन उल्लास रे प्राणी, चित समाधि होवे दश वोलां ॥ २५ ॥ ॥ इति दर्शन पचीसी समाप्तम् ॥

गण्धर वीरना । पाम्या छे पद निर्वाण रे लाला ॥ श्री ॥११ ॥ हांरे लाला वारे भावो भावना । व पडीमा वह मुनिराय रे लाला ॥ वारे वत श्राव तणा। बारे जप तपो सुखदाय रे लाला ॥ १ ॥१२॥ हां रे लाला तेरे किया परिहरो । तेरे काठिय कीजे दूर रे लाला॥ तेरे योग तियँच का। तेरं चारित्र सुख पूर रे लाला ॥ श्री ॥ १३॥ हां रे लाला चउदे भेद जीव राविये । चीतारो चवदे नेम रे लाला॥ चवदे पूर्व नो ज्ञान छै। चव-दे राजू लोक कह्यो एम रे लाला ॥ श्री॥ १८॥ हां रे लाला पंनरे भेदे सिद्ध हुआ। पंदरेपरमा-धामी देव रे लाला॥ पंदरें दिवस को पख क हो। एक अशुक्त दो छेरेलाला॥ श्री॥ १५॥ हां रे लाला दोय पख एक मास छे। दोय मास ऋतु होय रे लाला॥ तीन ऋतु एक अयन हो, दो अयने सम्बत्सर जोय रे लाला ॥ श्री ॥ १५ ॥ हां रे लाला जांयग्र कूप चौरसं विषे। भरे वालय कोय रे लाला ॥ सो सो वर्षे ए

कार रेलाला ॥ श्री ॥५॥ हां रे लाला ऋात्म स-म, छव काय छै। तेहनी जतना करो हित लाय रे लाला ॥ पट् पदार्थ झोलखो । छऊं लेस्यां में तीन लेवो धाय रे लाला ॥ श्री ॥६॥ हां रे लाला सात होथ तन वीरनो । सात नय कही जिनराय रे लाला भय विशन सात परहरो सात नरक ए बै दुःख दायरे लाला ॥ श्री ॥ ७ ॥ हां रे लाला **ञाठ मद उत्तम तजे। प्रवचन ञ्राठ ञ्राराध रे** लाला॥ आठ कर्म अलगा करो। तो पामो अन्य समाध रे लाला ॥ श्री ॥ = ॥ हां रे लाला नव वाड्रेंहे सीलकी । नव नीधी चकरीने होयरे जाला ॥ नव जोकान्तिक देवता ॥ नव-थीवंग छे सोय रे लाला ॥ श्री ॥ ६ ॥ हां रे लाला दश यती धर्म्म धारज्यो । दश वोले चित समाध रे लाला ॥ दश ग्रुग साधू दरश्यो। मिले पुराय होने जो अगाध रे लाला ॥ श्री ॥ १•॥ हां रे लाला ग्यारे पडिमा श्रावक तणी ग्यारे अङ्गका होवो जाण रे काला । ग्यारे

# वारे मास (महीना) की सज्जाय जिख्यते ।

सुणजो भवी जीवा। जतन करोजी वारे मास में ॥ त्र्यांकड़ी ॥ चेत कहेत चेत चतुर नर। तीन तंत्व पेछाण ॥ अरि हन्त देव नियंथ गुरुजी। धर्म द्या में जाएहो ॥ सु ॥१॥ वैशाख कहे वि-श्वास न कीजे। छिन छिन त्रायु छीजे॥ छव काया की हिंसा करता। किए। विधि प्रभुजी रीभोजी ॥ सु ॥ २ ॥ जेठ कहे तूं हे अति मोटो। किसे भरोसे वैठो। दिन दिन चलणो नेड़ो श्रावे। ने ने धर्मको ओटोजी ॥ सु ॥२॥ अपाढ कहे आ-तम वश करिये। सवही काज सधरिये॥ थोड़ा भवां के माय निश्चय । मुगत तणा सुख वरीयेजी ॥ सु ॥ ४ ॥ श्रावण कहे कर साधूकी संगत । ले ले खरची लार ॥ वार वार सतग्रह समभावे । वृथा जन्म मतहार जी ॥ सु॥ ५॥ भादो कहे भ-गवत की वानी। सुणिया पातक जावे॥ शुद्ध भावसे जो कोई श्रद्धो। गर्भवास नहि आवे जी

काढतां। खाली एक पले होय रे लाला॥ श्री ॥ १६॥ हारे लाला दश कोड पले सागर कह्यो । दश कोड सागर सरपगी होयरे लाला ॥ उत्सर्पिगी पर्ग एतली॥ बीस कोड काल चक्र जोय रे लाला ॥ श्री ॥१७॥ हां रे लाला त्र्यनंत काल चक जी-वडो । भम्यो च्यार गतीने मांयरे लाला ॥ पण समिकत दुर्जभ कही । च्यार वोले काज थाय रे लाला ॥ श्री ॥१⊏॥ हां रे लाला नीठ नीठ नर-भव मिल्यो । सुगी जिन वरनी वागा रे लाला ॥ श्रद्धि फरसी जिंगा जीवडे । ते पामें पद निर्वाग रे लाला ॥श्री ॥१६॥ हां रे लाला सम्वत् उगगीसे छपन्ने। फागणा वही दूज ग्रुरुवार रे लाला ॥पटि-याले देश पञ्जवा में। छे राजसिंह सिरदाररे लाला॥ श्री॥२०॥ हांरे लाला केवल रिख पन्नरे तिथी । गाई बुद्धि प्रमागा रे लाला । हलू करमी सुण चेतसी । श्रद्धि जिनवर वाण रे लाला ॥ श्री जिन धर्म्म समाचरो ॥ २१ ॥ इति ॥

॥ कविता ॥

सङ्गसे पुष्पको चन्द्र मिले,
ग्रह्म संगसे लोहा स्वर्ण कहावे।
सङ्गसे पिएडत मूर्ख वने.
ग्रह्म संगसे शुद्र अमर पद पावे॥
संगसे काठके लोहतरे,
तनको सतसंग ही पार लंघावे॥
संगसे सन्तको धर्म मिले,

॥ गजल सत्संगकी ॥

अरु संग कुसंगसे नरकमे जावे ॥

लाखो पापी तिर गये, सत्तंगके परतापसे। छिनमें वेडा पार हें, सत्तंगके परतापसे॥टेर॥ सत्तंगका टिंग्या भरा, कोई न्हाले इसमें आनके कट जाय तनके पाप सब, सत्तंगके परतापसे॥१॥ लोहका सुवर्ण वने पारसके परस'गसे। सु ॥ ६ ॥ श्रासोज कहे तूं श्राञ्जी करले । नर भव दुर्लभ पायो ॥ धर्म्म ध्यानमे सेटो रहिजे । मत पड़जे श्रम मांहींजी ॥ सु ॥ ७ ॥ कार्त्तिक कहे तूं कहां तक है। हृद्य मांही विचारो ॥ मात पिता सुत वहेन भाणजा । अन्त समय नहीं थारो जी ॥ सु ॥ = ॥ मृगसर कहे मृग समो जीवड़ो । काल सिंह विकराल ॥ खुट्यो त्राउखो उठ चलेगो।काया नाखेगा जालजी ॥ सु ॥ ६॥ पौप कहे तूं पोषे कुटंम्बको। परभव से नहीं डरता ॥ पाप कर्म पर काज ने करने । वयों दूर गत में पड़ता जी॥ सु॥ १०॥ माहा कहे मोह मांहि उलभयो।कर रह्यो म्हारोम्हारो॥धन कुटं-म्ब सब छोड़ जायगा। कालको होयगो चारोजी ॥ सु ॥११॥ फागगा फाग सुं मत संग खैलो। ज्ञान तगो रंग घोली॥ कर्म वर्गगा गुलाल उडावो। ज-लावो भव भ्रमण होली ज़ी ॥ सु ॥१२॥ उगणीसे प च्चास फागरो। नाथ दुवारे छ।या॥ गुरु खूबारिखजी प्रसादे । केवल रिख वर्णाया जी ॥ सु ॥१३॥ इति ॥

बलती देखो सहु कोय रे ॥ परना मलमां धाया लुगड़ां रे, कहो केम उजलां होय रे ॥ निं० ॥**२**॥ त्राप संभालो सहको त्रापणो रे, निंदानी मुको पडी टेव रे ॥ थोड़े घणे अवग्रणे सह भरवा रे, केहनां नलीयां चुंए केहनां नेव रे ॥ निं० ३॥ निंदा करे ने थायें नारकी रे, तप जप कीधुं सहु जायरे ॥ निंदा करो तो करजो आपणी रे, जेम **छुटकावारो थाय रे ॥ निं० ॥ ४ ॥ गु**ण यहजो सहुको तसा रे, जेहमां देखो एक विचार रे॥ कृष्णपरे सुख पामसो रे, समयसुंदर सुखकार रे॥ निं०॥ ५॥ इति निंदावारक सजायसमासम्॥

ा भांभित्या मुनिवर, धन्य धन्य तुम अव-तार ॥ ए देशी ॥ सोभागी भाई, काठिया तेर निवार ॥ उत्तम पटवी तो लहो जी, जय जय नपरे संसार॥ सो० ॥ का०॥ ए आंकणी ॥

॥ अथ तेर काठियानी सजाय लिख्यते ॥

लटकी भ'वरी होती है, सत्संगके परतापसे ॥शा राजा परदेशी हुवा, कर ख़ुनमें रहते भरे । उपदेश सुन ज्ञानी हुवा, सत्संगके परतापसे ॥३ संयती राजा शिकारी, हिरनके मारा था तीर । राज्य तज साधू हुवा, सत्संगके परतापसे॥ ४ ॥ अर्जुन माला कारने, मनुष्यकी हत्या करी। द्यः मासमें मुक्ति गया, सत्संगके परतापसे ॥ ५॥ एलायची एक चोरथा, श्रेणिक राय भुपति। कार्य सिद्ध उनका हुवा, सत्संगके परतापसे ॥६॥ सत्संगकी महिमा बड़ी, है दीन दुनिया वीचमें। चौथमल कहे हो भला, सःसंगके परतापसे ॥७॥ इति सत्संगकी गजल समाप्तम्॥ ॥ श्रथ निंदावारक सजाय ॥

॥ श्रथ निदावारक सजाय ॥

निंदा म करजो कोइनी पारकी रे, निंदानां बोल्यां महा पाप रे ॥ वयर विरोध वधे घर्याो रे, निंदा करतो न गगो माय वाप रे ॥ निं० ॥ १॥ दूर वर्जती कां देखो तुम्हें रे, पग मां

कहेशे नरक नां दुःख ॥ के कहेशे केम नाविया जी, पामशो कही केम मोचा। सो०॥का०॥१॥ नवमें देहरे ऋावतां जी,दाखवे शोक विशेष॥ घरनां कारज सवि करे जी, धर्मनां काज उनेख ॥सो० ॥का०॥ १०॥ अज्ञान दश में काठिये जी, देव-तत्व गुरुतत्व॥ धर्मतत्व गुरु सद्दहो जी,एम श्रा-गों मिश्यात्व॥ सो०॥ का०॥ ११॥ अञ्यानेपक अग्यारमें जी, जलपलतो दिन रात ॥ प्राणी धर्मन **ऋोलखे जी,सम**काव्यो बहु मांत॥ सो०॥ का० ॥ १२ ॥ वारमें धर्मकथा तजी जी, कौतुक जोवा जाय ॥ रात दिवस ऊभो रहे जी, नयणे-निंद न भराय॥सो०॥का०॥१३॥ विषय तेरमो काठियो जी, विपयसुं रातालोक॥ विपय साकर लेखवे जी, अवर सर्वे जी फोक ॥सो०॥का०॥ १४॥ सिद्ध चेत्र जातां थकां जी, काठिया ए श्रंतराय॥द्रव्य भावथी टालिये जी, तो मनोवंछीत थाय॥सो०॥का०॥ १५॥ तेर काठिया जिने कह्या ी -जी एह**॥ कुशल सागर**ंव

साधु समीपें आवतां जी, आलस आगें अंग ॥ धर्मकथा नवि सांभले जी, मोड़े झंग वहु भंग ॥ सो० ॥ का० ॥ २ ॥ वीजो मोह महावली जी पुत्र कलत्रशृं लीन ॥ प्राणी धर्म न त्राचरे जी, घर धनने आधीन ॥ सो० ॥ का० ३ ॥ त्रीजो अवज्ञा काठियो जो, शृं जाणे गुरु एह ॥ व्यापारे सुख संपजे जी,कीजें हर्ष तेह ॥ सो० ॥ का० ॥४॥ चोथे मान धरे घणं जी, मुक्त सम अवर न कोई ॥ म वंदुं जगा जगा प्रत्ये जी, एम महोटी माम मन होइ॥ सो०॥ का०॥ ५॥ पांचमें कोधवशे करी जी, छांडे धर्मनां स्थान॥ धर्म-लाभ मुजने नवि दीयो जी, नवि दीयो गुरु सन्मान ॥ सो०॥ का० ॥ ६॥ छठे जीव प्र मादथी जी, करे मदिरादिक सेव ॥ गुरु वाणी नवि सद्दहे जी,नविमाने जिन देव॥सो०॥ का ॥ ७॥ सातमे कृपण् पणा थकीजी,नावे साधु समीप॥ धर्मकथा नवि सांभले जी, मंडाशे धन टीप॥ सो०॥ का०॥=॥ श्राठ में गुरुभय ऊपन्यो जी,

णीयें रे, चकी सनतकुमार ॥ वरस सातशें भोग-वी रे, वेदना सात प्रकार रे॥ प्रा०॥ ५॥ रूपें व-की सुर सारिखा रे, पाग्डव पांच विचार ॥ ते वन-वासे रडवड्या रे॥ पाम्या दुःख संसार रे॥ प्रा० ॥६॥ सुरनर जस सेवा करे रे, त्रिभुवनपति वि-ख्यात ॥ ते पण करम विटंबीया रे, तो माणस केइ मात रे॥ प्रा०॥ ७॥ दोप न दीजें केहने रे, कर्म विटवरा हार ॥ दानमुनि कहे जीवने रे, धर्म सदा सुखकार रे॥ प्रा॰॥ =॥ इति कर्मनी सज्जाय समाप्तम् ।

। अथ श्री सुमतीहस कृत करम पद्मीसीनी सङ्जाय प्रारंभः॥

-

॥ढाल॥ पेख करमगति प्राणिया, सायर जेम अथाहोरे॥ अलख अगोचर ए सही, इम भाषे जिल्ला नाहोरे॥पे०॥१॥ब्रह्माविष्णुमहेसरा, करता भाषे जेहो रे॥ मारग चूकिया धीर ते, ( १२२ )

तणोजी,ऊत्तम कहे गुणगेह॥ सो०॥का०॥१६ ॥ इति ॥

> ॥ अथ मुनि दानविजयजी कृत कर्म ॥ जपर सज्जाय ॥

। कपूर होवै अति ऊजलो रे ॥ ए देशी ॥ सुख दुःख सरज्या पामीयें रे, ञ्चापद संपद होय ॥ जीजा देखी परत**णी रे, रोष म धरजो कोयरे** ॥ प्राणी मन नाणो विषवाद ॥ एतो कर्म तणा परसाद रे ॥ प्रा०॥ १॥ फलने आ्राहारे जी-वीऊंरे, बार वरस वन राम ॥ सीता रावण लइ गयो रे, कर्म तणा ए काम रे।। प्रा०॥२॥नी-रपाखें वन एकलो रे, मरगा पाम्यो मुकुंद ॥ नीच तगो घर जल वहारे रे, शीसधरी हरिचंद रे॥ प्रा० ॥३॥ नले दमयन्ति परिहरी रे,रात्रि समय वन वास ॥ नाम ठाम कुल गोपवी रे, नले निस-वाह्यो काल रे ॥ प्रा॰ ॥ ४॥ रूप अधिक जग जा-

मभारो रे ॥ पे० ॥१०॥ शेठ सुता शिर परिहरी, ईलाची पुत्र रसालो रे, ऊपसम रस भर पूरियो. मुक्तिगयो ततकालो रे॥ पे०॥ ११॥ नंदनश्री श्रेणिकतणो, नंदीषेण रीषी गायो रे ॥ चारित्र सुं चित चुकवी,महीलाशुं मनलायो रे ॥ पे० ॥ १२॥ आपाडभृति महामुनि, मोदक सुं ललचा-णो रे॥ सदगुरु वचनने ऊलंगी, नटविशं भं-डागो रे ॥ पे० ॥ १३ ॥ दासी मोहे मोहियो, 'मूं ज वड़ो राजानो रे ॥ घरघर भीख भमाड़ीयो, मत कोई करो गुमानो रे॥ पे०॥ १४॥ घणा दिवस भोले वहे, वलिभद्र कांघे वीरोरे ॥ हरी चंदराजाये आणीयो, नोचतणे घरे नीरो रे ॥ पे० ॥ १५॥ साठसहस्र सुत सामटा, सगररायना सारो रे ॥ नागकुमारे वालिया, करम तणो परि चारो रे॥ पे० ॥१६॥ तिर्थंकर चक्रवर्ति हरी, जे सूखभोगवे देखे रे॥ शालिभट सुख भोगवे, ते सह करम विशेषें रे॥ पे ॥१७॥ सिंह ग्रुफा-वासी मुनि,दोड्यो वेस्या वोले रे॥ रख्

मनें, जीव भणी मत वंचो रे ॥ पे० ४ ॥ ॥क मवसे सुख दुख हुवे, लीला लखमी लाहो रे भलाभला भृपती नड्या, रणहु ताजिम राहो रे ॥पे०॥५॥ करकंडूनें साधवीं, परठवीयो सम साणो रे ॥ वेहु देशनो राजीयो, दुकर करम मागो रे॥ पे॰॥ ६॥ सोल शगागार बनावत भरतेसर सुविचारो रे ॥ तप जपविंगाते पामीय केवल महल मकारो रे॥पे०॥शा रागा रावण कियो, लखमण वीरे संहारो रे ॥ लंक विभीप भोगवे, करम वड़ो संसारो रे ॥ पे० ॥=॥ ऋ<sup>र्</sup> सेना अर्कतूल ज्युं, ऋष्णेगसी भुजपाणे रे ॥द देखि निजपुर तशी, मरसा लहे एक ठासी रे ॥ पे० ॥ ६ ॥ दृढप्रहारी पापी वडो, हत्या की चारो रे ॥ केवलपामी तिस्सेनवे, पोहोतो मी

वीजो मन जागो रे ॥ करम पसायें भोगवे, रांव अने वली रागो रे ॥पे०॥३ ॥पापपडल सवि परि हरे सांचे। जिनधर्म संचों रे ॥ पोपी पोढो म की

## ॥ कर्म रो स्तवन ॥

कर्म चंद कांई कांई नाच नचावे, श्रो श्रच-रज म्हाने आवे ॥कर्म ० ॥ १ ॥ आद जिनेशर श्रंतरजामी, हुवा हे श्रादना करता ॥ तुम प्रसाद श्राहार ने कार्जे.रया वरस लग फीरता ॥कर्म०॥२॥ उगर्णीसमां जिनराज महीजिन, स्त्री वेद अवत रीया॥जान लेड लेइन छव राजा,कुंभ घरे परवरी या ॥ कर्म०॥३॥ श्रतुल वली महावीर सरीसा,जाह अंगूठें मेरू कंपायो॥ तुम प्रसादे अनारज देशमे, संगम चालीने आयो॥कर्मणाशा एक दिन भाव देख जादवको,वैश्रमण द्वारा वसाई ॥ तुम प्रसाद तपसी दीपा वगा,छन मे आय जलाई॥ कर्मणाप्र॥ सतीय शिरोमगी, चंदनवाला राज किनकाथाई॥ तुम प्रसादे राजगृही, चौटेमे मोल विकाई ॥ कर्म ० ॥६॥ हु नेखुद्धि अजाग जन्मको, जीग सु ए ऋचरज ऋावे,जीगा वनमें नहीं धाक सिंहनी, सुसलीयो केम डरावे ॥कर्म०॥७॥कुड़कपट मर

कारण गयो,चोमासे नेपाले रे ॥ पे० ॥ १८ ॥ सा-षु थई चंडकोशीयो, पामी वीरसंयोग रे ॥ अ-णसण लही सूंध मने, विलसे सुरना भोग रे॥ ॥ पे० ॥ १६ ॥ अवला सवला जागीने, सूतीकं न विमासी रे ॥ राति मांहि मूकी करी, नलराजा गयो नासी रे॥ पे०॥ २०॥ सतीय शिरोमणी द्रौपदी, नामथकी निस्तारो रे ॥ करम वशे तेणे सही, पंच वरया भरतारो रे ॥ पे०॥२१ ॥ सहस पचीस सेवा करे, सुर लखमी विगा पारो रे॥ सुभुमचकीस नरकें गयो, ब्रह्मदत्त ए ऋधिकारो रे ॥ पे०॥ २२ ॥ धन्य धन्य धनो धीर जे,पगपग रिद्ध विशेषो रे ॥ करम पसाय थकी लहे, कय-वन्नो वली देशो रे ॥ पे० ॥२३॥ वस्तपाल तेजपाल जे, करण अने वली भोजो रे॥ विक्रम विक्रम पूरियो,करमत्तगी ए मोजो रे॥ पे० ॥२४॥ संबत सतर तरोतरे, श्रीसूमतीहंस ऊवकाय रे ॥ कर-मपचीसी ए भणी, भणतां आगंद थायरे॥ पे० ग्रास्प्रा। इति ॥

## ॥ दया की लावणी ॥ 🍃

दर्याको पाले है वुधवान, दया मेक्या समके हेवान॥

प्रथम श्री जैन धर्म मांही, चोवीस जिनराज हुना भाई, मुखसे ज्याने दयाज वतलाई, दया-विन धर्म केंद्यो नाही, धर्म रूची करणा करी, नेमनाथ महाराज, मेगरथराजा परेवो, सरखे रखकर सारचा काज, हुवा श्रीशांतीनाथभगवान, दयाको पाले है वुधवान ॥ १ ॥ दूसरा विष्णुमत ममार, हुवाश्री कृशादिक अवतार, गिता और भागवत कीनी, और वेदा में दया लीनी, दया सरीखो धर्म नहीं, अहिंसा परमोधर्म सर्वमत और सर्वपंथ में, येही धर्म को मरम, देखली निज शास्त्र धरप्यान, दया को पाले है बुधवान ॥ २॥ तिसरा मत है मुसलमान, खोंलकर देखो उनकी कुरान, रहे रहेम ना हुने जीसके टील उसीको वेह रहेम लो जाण, कहते रे

मच्छ ठगाई करने काम चलायो ॥ एक ठगाइ ई की किनी जिश्मे,श्राकव नाम धरायो।।कम०॥= हरचंद राय तारादे राणी, पुत्र लेइने निसरचा सोभाग कुलने घरेकरी चाकरी, पाणी पीसए करवा ॥कर्म० ॥६॥ विक्रमराय पंचमें त्रारे,परदुरु काटण कह्यो॥ तुम प्रसाद हाथ पग खंढी,घाची घर रहियो॥ कर्म ०॥१०॥ मो सरिखो कूण नीन जगतमें,दुष्ट महा कुकरमी, उपर कली इसी वता लोक देखापे धर्मी ॥ कर्म ॥११॥ मोय सरीख श्रनजान हुए, सो तो उपर दोष चढ़ावै, सुगर कहे मा करोहो सगाई तो कुण पर जरावे॥ कर्म ॥१२॥ इत्यादिक मोटा पुरसा तोय, करकरणी हटायो, सेस कहे इगा संगत वावजी, थारो पा न पायो ॥कर्म॥१३॥ इति



राखेरे ॥ त्रांतम ज्ञान अमीरस तजने, जहेर जड़ी किम चाखेरे॥ ते०॥ १॥ काल वैरी तेरे

लारे लागो,ज्युं पीसे जिम फाके रे ॥जरा मंसारी छलकर बेठी,जिम मुसे पर ताके रे ॥२॥ सिरपर पाग लगी कसवोई, तेवडा छिएगा राखे रे। निरखे नार पारकी नेला, वचन विषे रस भाखे रे ॥ ते ।। इंग्रं इंद्र धनुष ज्यूं पलकमे पलटे देह खेह सम दाखेरे ॥ इएासूं मोहं करे सोही मुरख, इम कह्यों त्रागम साखे रे॥ ते०॥शा रत्नचन्द जी जग देख इथरता, वंधिया कर्म विपाकेरे॥ सिव सुख ज्ञान दीयो मोय सतगुरु ॥ तिए सुख़ारी ऋवीलाखा रे॥ ते० ॥५॥ इति ॥

॥ अथ कालरी सज्जाय लिख्यते॥ इस कालरो भरोसो भाईरे को नहीं, श्रोकिस वीरीया मांहे त्र्रावे ए ॥ वाल जवान गींगो नहीं, **ऋो** सर्व भग्गीगटकावे ए ॥ इग्र० ॥ १ ॥

मुस्तफा, सुण लेना इनसान, जो कीसी को दुःख देवेगा, जावे दोजक की खान,मार ज्यां मुदगल की पेछान, दयाको पाले है वुधवान ॥ ३ लानत है उसीमत तांइ, जीसी में जीवदया नाहीं, जीव रचा में पाप केवै, दुःख**्दुरगत**्का जो सेवे, मा हणो मा हणो वचन है, देखो आंख्यां खोल, सुत्र रहस्य में ना समम्भे,मुरख खाली करे भक्तभोल, कहो चत्रक केंद्रुक अज्ञान, दया को पाले हैं वुधवान ॥ ४॥ इस तिनुं मजहव के कह दीये हाल, इसी पर कर लेना तुम ख्याल, सुणके कुगुरू का संग देवो टाल, वण तुम पट् काया रा प्रतिपाल, गुरू हीरालालजी रे हुकुमसे नाथ द्वारे मांय, किया चोमासा चोथमलने, उगगीसे साठ के मांय, सुगा के जीव रचा करी गुण्वान, दया को पाले है बुधवान ॥ ५॥ इति ॥ ॥ अथउपदेशी लिख्यते ॥

तेरी फुलसीदेह, पलक में पलटे, क्या मगरुरी

उठ चलतो रह्यो, आ उभी हेला मारे ए॥ इग् ॥ ६॥ चेजारे चित्त चूपसुं, करी अंमारत मोटी ए॥ पावड़ीए चड़तो पडचो, खायन सकीयो रोटी ए॥ इग् ॥ १०॥ सुरनर इन्द्र किन्नरा, कोइ न रहे नीसंकोए॥ मुनिवर कालने जीति-यां, जिग्दीया मुक्तमाहे डंको ए॥ इग् ०॥ ११॥ किसनगढ मांहे सीडसटे. आया सेले कालो ए॥ रतन कहे भव जीव ने, की जो धर्म रसालो ए ॥ इग् ०॥ १२॥ इति॥

॥ अथ आस्म-शिचा सज्जाय लिख्यते ॥ (दाल—कर्मान कुटेरे प्राणिया परिणि )

मानन कीजे रे मानवी,माने ज्ञान विनाश । प्यान न पायोरे धर्मानो, मरने हुर्गति जाय ॥ मा०॥१॥ जे नर महेलां मे पोढता, करता भोग विलास, ते नर मरने माटी थया, उपर जगा छेघास॥मा०॥२॥जे नर रुच रुच प दादो बैठो रहे, पोतो उठ चल जावे ए॥ तो पीण धेठा जीवने, धरमरी वात न सुहावे ए ॥ इ० ॥ २ ॥ मेहेल मिंदरने मालिया, नदीए निवाणनें नालो ए॥ स्वर्गने मृत्यु पातालमे, कठेन छोडे कालो ए ॥ इ० ॥ ३ ॥ घर नायक जागी करी, रच्या करी मन गमती ए॥ काल अचाएक ले चल्यो,चोक्यां रेह गई किलती ए॥ इगा० ॥ ४ ॥ रोगी उपचारगा कारगो, बेद विच-चरा आवे ए॥ रोगी नें ताजो करे, आपरी खबरन पावे ए ॥ इग्ए० ॥ ५ ॥ सुंदर जोडी सारखी, मनोहर मेहेल रसालो एँ॥ पोडचा ढोलिये प्रेमसुं, जठे आय पहुंतो कालो ए ॥ इगा० ॥ ६ ॥ राजकरे रिलयामगो, इंद्र अनोपम दिसे ए॥ वैरी पकड़ पछाडीयो, टांग पकड़ने घीसे ए॥ इ०॥ ७॥ वल्लभ वालक देखने, मांडी मोटी श्रासोए॥ छिनक मांहे चलतो रह्यो, होय गई निरासो ए॥ इग्ए०॥ 🖂॥ नार निर खने परणीयो, अपच्छरने अगुहारे ए ॥ सूल

करे मेन मांय, ॥ मां० ॥ ११॥ घर मंदिर यांही रह्या, साथे पुरस्य ने पाप, कुटुम्ब कार्ज कर्म्म वांधिया, भोगवे एकलो जी छाप ॥ मा० ॥१२॥ धर्म विहुगी रे जे घड़ी, निश्चय निष्फल जाय, श्रोछा जीतव रे कारगो,मृढ रह्यो ललचाय ॥ मा० र्शिश्च ॥ नोवन घुरती जी वारणे, सरणाई संख भेर, काल तिहांने जी ले गयो, नहीं कोई लावे जी घेर ॥ मा० ॥ १४ ॥ धमण धर्मति जी रह-गई, वुक्त गई लाल अंगार, एरण ठवको जी मिट गयो, उठ चाल्यो जी लोहार, ॥मा०॥१५॥ सिरख पर्थरणा में पोढता, तेल, फुलेल लगाय, एक दिन इसड़ी वर्गी,कुत्ता काग जे खाय॥मा० ॥ १६॥ तन सराय में वासो करी, जीव साथे सुख चैन, शास नगारा कूंचरा, वाजत है दिन रैन ॥ मा० ॥ १७ ॥ परजालीने पाछा फिरचा, कुं कुं वर्णि जी देह, जल में पेश सीचो लियो घृग घृग कारमुं स्तेह ॥मा०॥ १८॥ मानी

में,काया काजल समान॥मा०॥४॥ चौसठ सहस श्रंतेउरी,पायक छिन्तु जी कोड़,ते नर श्रंत श्रके-लड़ों, चाल्यो छे सह रिद्ध छोड़ ॥मा० ॥५॥ जे नर छत्र धरांवतां,चम्मर विक्तंता जी सार,ते नर पोड्या छै त्राग में, ऊपर डांगां की मार ॥मा०॥ ॥६॥ जे नर दीपक करी पोढ़ता, फूलड़ां सेज विद्याय, ते नर ऋटवि मांहे पोढ़िया, चांचां मारे रे काग ॥ मा० ॥०॥ जादव पति सरिखा जी चित गया, जोवो कृष्ण नरेश, वन को<sup>,</sup> शुंबी में एक्को, हरयो बांस सुं जेम ॥ मा० ॥=॥ दोड़ा दोड़ा रे चालता, निर्खता विल छांय, पहिले पोहरे दिट्टा हुंता,छुले दिशे जिनांय ॥मा०॥६॥ कहता म्हासुं जी कुण अड़े,म्हेंकाढ़ां करड़ा नी वांक मगज मांहे मावतां नहीं, ते तो होय गया रांक, ॥ मा० ॥ १० ॥ गरीब लोकां ने खोसता, डरता

भांडा घड़े रे क्रम्भार ॥ मा० ॥३॥ जे, नर सुखमें, विराजतां,वायुलता मुख पान,ते नर पोट्या छे त्राग

कर्म्मज वांधिया, रोयां छटेजी नांय, सतगुरु देवे रे चेतावाणी, चेतो चंतुर सुजाण, ॥ मा० ॥ २७ ॥ पड़दे रहती जी पटमग्री, सचित नित र्श्वंगार, त्राखर उत्तरयाजी धर्म्मरा, तव, घर घर री पिणहार ॥ मा० ॥ २८ ॥ चिह्न दिस हंडी जी चालती, हींडता हिंडोले ख़ाट, प्राप्य रो संचो पुरो हवो, तब कवड़ी मांगे जी हाट ॥ मां॥ २६॥ आगे जाचक ओ लगे, अवल्ल वडो असवार,अत्यविण तिथिरे प्रगटिया, आणे ईधन बार, ॥मा० ॥३०॥ राज तेज रिद्ध कुटुम्बरा,केस्र करो रे ऋहंकार, मेलो मंडियो छै कारमों. विञ्चइंता नहीं वार ॥ मा० ॥ ३१ ॥ पृथ्वी पाणी अगन में, वायु वनस्पति त्रसकाय, इगा रचा धर्म्म ऊपजे, दुख दारिष्ट मिट जाय॥ मा० ॥ ३२ ॥ परनारी संग परिहरो, कोध तजो हु दांय, चोरी छोड्या सम्पति मिले, सांच वे सुर्खे थाय ॥ मा०॥ ३३॥ ८ पापिंग, वात करो संतोप,

( १३६ ) नानी थया, देता नारकि नींव, इम जाणि धर्म श्रादरे, ते तो पुग्यवंत जीव॥ मा०॥ १६॥ निर्लोभी निर्लालची,छवकाय रा रचपाल, तिहांरी प्रतीत श्रांग्रज्यो,छोडो श्राल जंजाल ॥मा०॥२०॥ सद्गुरु सांसो रे टालसि,जोवो सुवुद्ध नरेश,साधु श्रावक त्रत पालजो, ज्यांसु सुगति सुगति सुख थाय ॥ मा० ॥ २१ ॥ कुगुरू कुमार्ग घालसि, रखे पतीजो त्यांय, हिंसा धर्म्म करायने, मेल से नारकी मांय ॥ मा० ॥ २२ ॥ तिहां कोइ आडो नहीं त्र्यावसी, जी जी जप से तिवार, मारसे हेलो रे एकलो, छेदन भेदन तेह ॥मा० ॥२३॥ अनंत भूख तृषा सही, शीत ताप दुःख घोर, धरती करवत सारखी, वेदन कठिन कठोर, ॥ मा०॥ २४॥ पांच पच्चीस वाकी रह्या, हिंसा भंठ अदत्त, मांस मद्य पर नारना लागा दोष अनंत ॥ मा० ॥ २५ ॥ देव दु दाला जी आवसी, करता लोचन लाल, देख्या जीवड़ो रे कांपसी, मुद्रल भाल ॥ मा०॥ २६॥ हसतां र्ज वांधिया, रोयां छटेजी नांय, सत्गुरु रे चेतावाणी, चेतो चतुर सुजाण, ॥ मा॰ ७ ॥ पड़दे रहती जी पदमणी, सचित नित गार, त्राखर उत्तरयाजी धर्म्मरा, तव घर री पिंग्हार ॥ मा० ॥ २⊏ ॥ चिहू दिस ो जी चालती, हीडता हिंडोले खाट, पुराय संचो पुरो हुवो, तब कवड़ी मांगे जी हाट ॥ ॥ २६ ॥ त्रागे जाचक स्रो लगे, स्रवह्न बड़ो सवार,ऋत्यविण तिथिरे प्रगटिया, त्र्राणे ईधन र, ॥मा० ॥३०॥ राज तेज रिष्ट कुटुम्बरा,केंसु रो रे अहंकार, मेलो मंडियो छ कारमो, बञ्जंता नहीं वार ॥ मा० ॥ ३१ ॥ पृथ्वी पाणी गन में, वायु वनस्पति त्रसकाय, इगा रचा ार्म्म अपजे, दुख दारिह मिट जाय ॥ मा० । ३२॥ परनारी सग परिहरो, क्रोध तजो दुख द्याय, चोरी छोड्या सम्पति मिले, साच वोल्या पुर्ख थ्राय ॥ मा०॥ ३३ ॥ तृष्णा तोड़ो जी करो संतोप, निंदा मकरो रे पापिण,

( ४३७ /)

मानी थया, देता नारिक नींव, इम जािण धर्म ब्रादरे, ते तो पुग्यवंत जीव ॥ **मा**० ॥ १६ ॥ निर्लोभी निर्लालची,छवकाय रा रचपाल, तिहारी प्रतीत त्रांग्ज्यो,छोडो त्राल जंजाल ॥मा०॥२०॥ सद्गुरु सांसो रे टालसि,जोवो सुवुद्ध नरेश,साधु श्रावक त्रत पालजो, ज्यांसु सुगति मुगति सुख थाय ॥ मा० ॥ २१ ॥ कुग्रुक्त कुमार्ग घालसि, रखे पतीजो त्यांय, हिंसा धर्म्म करायने, मेल से नारकी मांय ॥ मा० ॥ २२ ॥ तिहां कोइ ऋाडो नहीं श्रावसी, जी जी जप से तिवार, मारसे हेलो रे एकलो, छेदन भेदन तेह ॥मा० ॥२३॥ त्रमंत भूखं तृपा सही, शीत ताप दुःख घोर, धरती करवत सारखी, वेदन कठिन कठोर, ॥ मा०॥ ३४ ॥ पांच पच्चीस 🔒 रह्या, हिंसा भंठ अदत्त, मांस मद्य पर अनंत ॥ मा० ॥ २५॥ देव दु न्धरता लोचन लाल, 🖫 मुहलः 🛴

तर्णे पण मंदरा जी,चंद न टाले जोत॥ हो जि ॥ १४ ॥ नुगरो तो पिरा तुम्हायरो जी, नाम धराऊं छुं दास, कृपा करी संभाल जो जी, पूरो मुभ मन आस ॥ हो जि० ॥ १५ पापी जासी भुम भागी जी, मत मुको विसार, विष हला हल ऋादयों जी, ईश्वर न तजनार ॥ हो जि० ॥ १६॥ उत्तम गुणकारी होवे जी, स्वार्थ विना हे धुजार्ग, किसान सीचे सरवरू' जी, मेह नमांगे दारा ॥ हो जि० ॥ १७ ॥ तुभने शुं कहिये घणो जी, तुम सब वातां जी जांण, मुज ने थायजो साहेंबा जी, भवोभव थांरी आए। हो जी।। १८॥ तुमउपकारी गुणनिलो जी, तुं सेवग प्रतिपाल, तुं समस्य मुख पुरवा जी, करो म्हारी सार ॥ हो जि० ॥ १६ ॥ नामिराय कुल चंद-तो जी, मरु देवी नो जी नंद, कहे जिनहरख नेवार जो जी, दीजो परमानन्द ॥ हो जिनजी कुम पापी ने जी <sup>तार</sup> २०॥ सम्पूर्णम् ॥

करणी म्हायरी जी,सुणाऊं छुं तुमः॥ हो जि॥ ७॥ पुण्य विना सुमः प्राणिया जी, जाणुं मेलु श्राथ, ऊंचेतरवर माडीया जी,तीहां पसारूं हाथ ॥ हो जि०॥ =॥ विन वांघ्या विन भोगव्या

जी, फोकट कर्म वंधाय, आर्तध्यान मिटे नहीं जी, कीजे कुण उपाय ॥ हो जि ॥ ६ ॥ काजल थी पण सांवला जी, म्हारा मन प्रणाम, सुपने में पर्ए थांयरो जी, संभाल्यो नहीं नाम ॥ हो जि ॥ १०॥ मुढ ने ठगवा भणी जी, करूं अनेक प्रपंच, कूड़ कपट वहु केलवुं जी, पापतणा करूं संच ॥ हो जि ॥ ११॥ मन चंचल नारहि सके जी, राचे रमणी सुं रूप, काम विटमणा सुंकहूं जी, नाखे दुर्गिति कूप ॥ हो जि ॥ १२ ॥ किसा कहुँ गुण्म्हायराजी,किसा कहुँ ऋपवाद, जीम जीम संभालुं हीया जी, तीम तीम वर्षे विखवाद ॥ हो जिं॥ १३ ॥ गीरवा जो नहीं लेखवे जी, नुगरा सेवकनी जी वात, नीच



## ॥ अथ सवासो शिप छतीसी लिख्यते ॥

श्री सद्गुरु उपदेश संभारो, धर्म सीख सं वुद्धि धारो, विधि सहू मांहि विवेक विचारो, सगला कारज जेम सुधारो ॥ १ ॥ प्रथम प्रभाते श्भ परिणाम, नित लिजे भगवंत रो नाम, पणी रासांस धर्म में रहीजे, कथन मुख थी भूठ नकहिजे ॥ २॥ धर्म दया मन मांहे धार, अधिक सह में पर उपकार, वाट म करे जिहां वसवो वास, बैरी नो मत करजे विश्वास ॥३॥ वरजे समसठाम व्यापार, चाले अपने कुल श्राचार, मांडतांरी श्रांण म खडे, मोटा सेती श्राण मित मंडे॥ ४॥ मगड़े साख म देजे भुठी, श्राप वडाई म करे अपुठी, म लडे

पाडोसी स्ं मूल, अपणा स्ं होजे अनुकुल ॥५॥ सभे व्यापार स्ं पुंजी सारु, अटकल ठांम देड

उधारु, रखे वधारे ऋण ने रोग,लखण लेजे ज्यॅु न हॅसे लोग ॥ ६॥ वस्ती छेह म करिजे वास, लावा लूत्र. पाप तजे तूँ सकजे पुत्र, सांभलजे सुभ शास्त्र सूत्र ॥ २१ ॥ भूंडा सुँ पिए। करे भलाई, परहर पांचे जेह पलाई, वठा वात करे वेई जो,तंड्या विश तिहांना हुवे तीजो ॥ २२॥ कारज सोच विचारी कीजे,खता पडयां ही ऋति मत खीजे, सुधरेच काम कहे स्यावास. म करे याचक निपट निरास ॥२३॥ म करे मृल किणही री निंद्या, छात्री जे वली ग्रुरु रा छंदा, नांम लोपीने न हुंड जे निग्रुरा, निव चांपी जे कीड़ी नगरा॥ २४॥ ऋाटर टीज माणस ऋाए, जिहां नहीं आदर तिंहा मत जाए, हसजे मत विशा कारण हेत, कपड़ो पिण मत करे कुवेत ॥२५ ॥ वह विषमे श्रासण मत वसे, पर घर श्रण जांगयां मत पेसे, पाणी अती तांख्यो मत पीजे, सारो ही दिन सोय न रहीजे ॥ २६॥ मूत्र अवाधा, खाजे मत फल वसत परोई मतां विपोडे, अंनी

छोडे ॥ २७ ॥ जीमजे

जे हे प, जूते मत मोटा नी जोड़े, छोकर वादरी रामत छोडे ॥ १४ ॥ गांम चलंता शकून

( १४६ )

गिणिजे, हणतां विस किसही न हसीजे, विस गहणा दिजें नहीं व्याज, निश्चें वर्षनो राखें

नाज ॥ १५॥ दुश्मण ने दुश्मण मत दाखे, रीस हुवे तोही मन में राखे, खत जिखाए मत विरा -साखें, मांग्एपोतानोगालमनाखे ॥ १६॥ लाज

न कीजे नामे लेखे, वधारे परतीत विसेपे,

धरीजे मेलज गाम धाणी सुँ,इकतारी कर ऋपाणी स्त्री सुँ ॥ १७ ॥ चलतां वसतां सह चीतारे,

वाल्हा सेंगा मतां वीसारे, जावतो करतो राते। जागे, न सुइजे अंगे नागे॥ १८॥ जे करतो हुने चोरी जारी, ऊण सेती कीजे नही यारी,

वसत न लीजे चोरी वाली, लु वे मत तूँ निवली **े। ॥ १६ ॥ दे फूंका न बुक्तावे दीवो, पां**गी ्रं े मत पीवो, छींक लीयां े मनावो फाटो

साहमो मल मूत्र,

वरजे परी तुँ वेठ वेगार, स्त्राप वसे जिहाँ हुं स्त्रियकार, दुटप्पी वात कहें दरवार, सहुने पृद्धी जे तॅतसार ॥ ३५ ॥ सीख सवासी कहीं समकाय, साचवतां सहुने सुखदाय, थित नित विजय हर्ष जश थाय, इम कहें धर्मसी उव-काय ॥ ३६ ॥

॥ इति सवासो शिव छतीसी समासम्॥

 $\sim$ ॥ श्रथ ज्ञान वतोसी रा टोहा लिख्यते ॥ightarrow

42200

कका कर कक्षु काम, धर्म हेन उद्यम, कक्षु कर स्मरण ल्यें नाम, मज भगवंत म मुल तूँ ॥ १ ॥ खखा खिजमत रोस, कर्म कमाए आंपरो, किसीयन दिजे दोप, विशा भोगव्यां छुटे नहीं ॥ २ ॥ गगा गर्च निवार, गर्व तर्णा दु ख बाट कर, संकट उटर ममार, उधे मुख जब लटकते ॥ ३ ॥ घघा घरके लोक, स्वार्थ मिले छटम्ब सव, ट पीड़ा आवे रोग, बॉट शत्रु न हुइ जे कारिज सरीये, पैसे मत ऋटि ठे पाणी, तोड़े प्रीति मतां अतिताणी ॥२८॥ घरमें मत खाये फिरतो घिरतो, म कहे मरम न वोली जे निरतो, तेरु सुँ मत तोडे तिरतो, वडांरे काम म थाए विस्तो॥ २६॥ पंथ टते नव जिजे पुछ, मोटां साहमी मत मोडे सुँ<sup>ह</sup>, तुछ वचन म कहैं तूँकार, मत वैसे विल भुंडी, अपणी जाति विचारे उंडी, जिए सांभि लतां ऊपजे लाज, एहवो म कहे वेगा अकाज ॥ २१॥ किजे नहीं पग पग क वाट, अरा हुती उपने उचाट, महिला सुँ न हुइने मन महूँ हारा न कीजे अपरो हरे े २२॥ े जंगी टट्ट, ललचायो 🤚 मुर्ख<sup>-</sup> करजे<sup>-</sup>परिपा. सरिया ॥:

in Mij

सत्तसुँ दर्शन राखियो, ऋ भया दुखणी थाय ॥ ३०॥ पपा खिजमत ख़ुव कर, ले साहिव की औट, साहिव की खिजमत कियां लगे न जम की चोट ॥३१॥ ससा साहिव समर ले, स्मरण स्रॅ सुख होय, स्मरण करतां जीवड़ा, अविचल पट लह्यो सोय ॥ ३२ ॥ हहा हरदम भजन कर, भजन उतारे पार, भजन विहुणा प्रांणिया, किण विध उतरे पार॥ ३३॥ चचा चमा करो रे जीवड़ा, चमा वड़ी संसार, गजसकमाल चमा थकी, पहुंतो मुक्त मभार ॥ ३४॥ अचर बत्तीसी करी, आत्म पर उपकार, वधे ज्युँ कुरव कायदो, वधे ज्युँ वुध सॅसार ॥ ३५ ॥ चतुर पुरुष वांचे तिके, चतुराई पामंत, पूरण किथी मुनि वरु, दोलत राम कहंत ॥ ३६ ॥

॥ इति अच्चर ज्ञान वतीसी समाप्तम्॥

ठाल<sup>,</sup> ञ्रनंत, घर घर किए ही न राखीयो, कर-णी करे वहु ऋंत, मुक्तपुरी सुख भोगवो॥२२॥ ववा वैर नहीं जाय, जेती लछ पुन्ये मिली, ऊदे गप के जाय, मन पछतावा रहि गया ॥ २३॥ भभा भरमत भूल, दीरघ दुःख सुख तुच्छ है, अवर नहीं सम तुल्य , जाप जवो भगवंत को ॥ २४ ॥ ममा मन न डुलाय, देख विरागी लच्मी, पूरव पुन्य कमाय, भोगवे आपो आपनी ॥ २५ ॥ यया घट मांय, नाम नहीं जग-दीश का, सो घट सुधरे नांय, ऋारत ही भ्रमतो रहे ॥ २६ ॥ ररा रस न लुभाय, जिभ्या स्वाद निवारिये, मीन वहुत तड़फाय, कांटे विंध्यो तालवो ॥ २७ ॥ लला लोभ निवार, लोभ कियां कछु सुख नहीं, लोभ कियां दुख थाय े। जिनराज जी ॥ २८ ॥ ववा बीशन u, विशन ि ं दुःख होत है, ि तिगा कर्म ત્તર વ,

तसुँ दर्शन राखियो, ऋ भया दुखणी थाय ३०॥ पपा खिजमत खुव कर, ले साहिब ्त्र्यौट, साहिच की खिजमत कियां लगे न म की चोट ॥३१॥ ससा साहिव समर स्मरण सुँ सुख होय, स्मरण करतां जीवड़ा, विचल पद लह्यो सोय ॥३२ ॥ हहा दम भजन कर, भजन उतारे पार, भजन हुणा प्रांणिया, किण विघ ऊतरे पार॥ रे॥ चचा चमा करो रे जीवड़ा, चमा वड़ी सार, गजसुकमाल चमा थकी, पहूंतो मुक्त फार ॥ ३४॥ अन्तर बत्तीसी करी, ब्रांतम पर कार, वधे ज्युं कुरव कायदो, वधे ज्युं वुध सार ॥ ३५ ॥ चतुर पुरुष वाचे तिके, चतुराई मंत, पूरण किथी मुनि वरु, टोलत राम

हंता। ३६॥ ॥ इति श्रचर ज्ञान वतीसी समाप्तम्॥

काल अनंत, घर घर किए ही न राखीयो, कर-**गी करे वहु ऋंत, मुक्तपुरी** सुख भोगवे।॥२२॥ ववा वैर नहीं जाय, जेती लछ पुन्ये मिली, ऊदे षाप के जाय, मन पञ्जतावा रहि गया ॥ २३॥ भभा भरमत भूल, दीरघ दुःख सुख तुच्छ है, अवर नहीं सम तुल्य , जाप जयो भगवंत को ॥ २४ ॥ ममा मन न डुलाय, देख विराणी लच्मी, पुरव पुन्य कमाय, भोगवे आपो आपनी ॥ २५ ॥ यया घट मांय, नाम नही जग-दीश का, सो घट सुधरे नांय, आरत ही भ्रमतो रहे ॥ २६ ॥ ररा रस न लुभाय, जिभ्या स्वाद निवारिये, मीन बहुत तङ्फाय, कांटे विंध्यो तालवो ॥ २७॥ जला लोभ निवार, लोभ कियां कछु सुख नहीं, लोभ कियां दुख थाय एह कह्यो जिनराज जी ॥ २८ ॥ ववा वीशन तजेय, विशन कियां दुःख होत है, विशन कियो नलराय, हरचो राज तिए कर्म, थी ॥ २६॥ श्शा सत्त न छोडिरे 🔭

पडयो, और अथयो केवल नांगा॥ क०॥ पूर्व-धारी विच्छेदिया, कि**गाविध पडे पिछांगा ॥ क**०

॥ ६॥ सम्यकत्व ही आतां छतां, छुटे मिथ्या गांठ ॥ क० ॥ केवल घाती गये हुवे, सिद्ध हुवे च्य आठ ॥ क०॥ ७॥ अकल पिरा चल्ले नहीं,

और चल्ले नहीं कछू जोर॥ क०॥ मुनि सम

कहे केवल विना, मिचयो घोरमघोर ॥क०॥६॥

॥ इती कर्मा को आंटो केवली गम्म

॥ अथ ललीत छंद ॥

## ॥ कर्मा की सज्जाय ॥

## - Company

सुखिया घरमें जनिमयो, दुखी थयो किंग काज, कर्मको आंटो रे ; कोई न खोलग्रहार, कर्मको झांटो रे ; दुखी थकी सुखीयो थयो, केई करता दीसे राज ॥ कर्म० ॥ कोईन० ॥ ॥ कर्म० ॥ एक ञ्रातम खोलगहार ॥ कर्म० ॥ १॥ वडा तपस्वी अवलिया, केई पाले छै ब्रह्म-चार ॥ क०॥ केई श्रेगी चढ पाछा पड़चा,पंडित पेले पार ॥ क० को० क० ए० क० ॥ २ ॥ सिद्ध साधक केई पृछिया, फरचो फकीरां लार ॥ क०॥ यह गोचर केई पुजिया, झोर पुज्या पर्वत पाड़ ॥ क०॥३॥ किए विध कर्मज बांधियां, किए विध दीवी ऋँतराय ॥ क० ॥ लाख उद्यम कर देखिया, पिण् कुंण् नहीं सक्यो चताय॥ क०॥४॥ कोई श्रावक धोरी वाजिया, निंदा करत श्रपा क०॥ केई साधुकी करगी करें, 🗀 👝 निदाके लार ॥ क०॥ ५॥

**अवुर आचनो हुं थयो धर्गा ॥ १६ ॥ अधिक** त्रास्तो त्रंतरे घणी॥ त्रारर लोभ ने नाश क्यो हुगी ॥ २० ॥ मगन मन थी साजनो परे ॥ हित फंटमां फल्यो ॥ ऋरर रागथी ना लह्यो कल्यो ॥ २२॥ दिल डुवी रह्यं द्वेप दर्दमां ॥ ग्रण नथी गण्या मेरी मर्टमां ॥ २३ ॥ अरुण आंखडी रोपथी भरी ॥ ऋरर सर्वनो हुं थयो ऋरी ॥२४॥ निज कुटंच ने नात जातमां ॥ वढी पड्यो हुं तो वात वातमा ॥ २५ ॥ अवुज आ्रात्मा घात मां घड्यो ॥ अरर क्लेश थी कुंपमां पड्यो ॥ २६ ॥ अण हु'ता दिया आल अन्यने॥ अलिक ओचरी मेल्युं धनने ॥ २७॥ सदगुरु तग्गो संग ना कर्यो ॥ **अर्रेर** पापथी पींडमा भर्यो ॥ २६॥ परनी चीवटे चुगली करी॥ नृषसभा-भुठी साहदी भरी॥२६॥ पिसुन धुर्त हु लांच लालची ॥ पशु पर्गे रही। पाप मां पची ॥ ३०।।पार पुटेपरा दोप टाखवा

शद्युणी शीरे ञ्राल ञ्रापीयां ॥ ञ्रार पापना पंथ थापीया ॥ ६ ॥ अदत दानश्री हुं नथी डरचो॥ परिधनो हरी केर में करचो॥ आ तसकरो तगा तानमां चढ्यो॥ ऋरर पापना पुंजमां पड़चो॥ ॥ ॥ रमणी रंगमां ग्रंग उलस्युं ॥ विषय-सुखमां चीतडुं वस्युं ॥ ६॥ शीत्रज्ञत भंगनो दोपना गएयो ॥ अरर हायरे वाहुरो वएयो ॥१०॥ अथीर दाममां हुं रह्यो अड़ी ॥ धरम वात तो चीतना चढ़ी ॥ ११ ॥ उंघत मोहमां हुं थयो अती ॥ अरर माहरी शीथशे गती ॥ १२ ॥ कूर भावथी क्रोधमें यह्यो॥ सजन दुहवी रोपमां रह्यो॥ १३ ॥ सरवजनथी सप छोडियो ॥ तरण तोलथी तुछ हुं थयो॥ १४॥ मच्छर मनथी मे वहु कर्यो ॥ ममत भावथी हु अती भर्यो ॥१५॥ मदछके चट्यो मानमां अड्यो॥ विनय ना कर्यो गर्वमां पड्यो ॥ १६ ॥ दगल वाजिये हूं वहु रम्यो॥ कपट कूड़मा काल िय 🗽 🤙 १८९॥। मख मोठुं लवी सृष्टी भोलवी॥

- ( १६१ ) (४) साफी की सुधरे सदा, कदेन गोता खाय
- - कदेन पड़े पाधरी, मन मैले की वात॥ (५) सिंह समान यो जीव है, कर्म करे चव
    - चुर । प्राकर्म फोडे मांयलो, तो मुक्त किर्स छें दूर ॥

खेह ॥

खेवा पार ॥

- तुरन्त लागे अवनीत ने,मिथ्यात रुपी यो रोग
- (प) विनयवंत विगडे नहीं, ऊंड़ो दे उपयोग
- शक्त मरोड़े जीव कूं, उद्य महा वलवान।
- (७) जब जैसी जाके उदय, वैसा सेवेस्थान

- श्रवसर मोन पकड़ीये ॥

(E) जब लग आंकुश शीश्पे, तव लग निर्मल देह । हाथी ऋांकुश वाहिरो, शिर पर डारत

(१०) विन झांकुश विगडया घणा, कुशिपे कपूत कु नार । त्र्यांकुश माथे धारिया, ज्यां रा

- (६) मन की सरधा मन में धरिये, जिनसे पा उत्तरीये। मिथ्यात्वी से वाद न करीये

शद्युगी शीरे ञ्राल ञ्रापीयां ॥ अरर पापना पंथ थापीया ॥ ६ ॥ अदत टानथ़ी हुं नथी डरचो॥ परिधनो हरी केर में करचो ॥ ७॥ तसकरो तणा तानमां चढ्यो ॥ ऋरर पापना पुंजमां पड़चो ॥ ॥ ॥ रमगी रंगमां अंग उलस्युं ॥ विषय-सुखमां चीतडुं वस्युं ॥ ६॥ शीत्र्यत भंगनो डोपना गरायो ॥ अरर हायरे वाहुरो वरायो ॥१०॥ अथीर दाममां हुं रह्यो अड़ी ॥ धरम वात तो चीतना चढी॥ ११॥ उंघत मोहमां हुं थयो अती ॥ अरर माहरी शीथशे गती ॥ १२ ॥ ऋर भावथी क्रोधमें बह्यो॥ सजन दुहवी रोपमां

रह्यो॥ १३ ॥ सरवजनथी संप छोडियो ॥ तरण तोलथी तुछ हुं थयो ॥ १४ ॥ मच्छर मनथी में वहु कर्यो ॥ ममत भावथी हुं अती भर्यो ॥१५॥ द े चट्यो मानमां अड्यो ॥ विनय ना कर्यो विमं पड्यो ॥ १६ ॥ दगल वाजिये हुं वहु

रम्यो॥ कपट कूडमा काल निरगम्यो॥ १७॥ मुख मोठु लवी खष्टी भोलवी॥ ऋरर केमरे भुलशे

(१८) त्राता हीं त्रादर करे, जातां दे जीकार। मिलियां हंस कर वोलवो. ए ऊतम घर श्राचार ॥ (१६) धर्म धर्म सब कोई कहे, मरम न जाएोकोय। जात न जागे जीव की, धर्म किसी विध

होय ॥ (२०) नां काह़ से दोस्ती, नां काह़ से वेर। सत खडे वाजार में, सब की चाहत खेर ॥

(२१) बोली बोल अमोल है, बोल सके तो बोल।

हीये तराज़ तोल के, पीछे वाहिर खाल॥ (२२) सरवर तरवर संत जन, चौथो वरसे मह।

(२३) संतोपी सटा सुखी, दुखी तृष्णावान। भावे तो गीता पढ़ो, भावे पढ़ो पुरान ॥

क्रोधी से चमा करे तो,वैर विघन टल जाय॥

पर ऊपगार के कारगे, च्यार धारी देह ॥ (२४) क्रोधी से क्रोधी मिले, काठा कर्म बंधाय। (२५) सव जीव जीवणो वछे, मरणो वंछो न कोय। जीवां ने ह्यातां थका, मुक्त न पहुतो क

राग होष नष्ट थडने, परम तत्व प्रकाशजो ॥ लोक क्चीनो त्याग करीने, शुद्ध मार्ग आदरुं ॥ दुष्ट कर्मी नष्ट करी, आनन्द ने वेगो वरू । कल्याण

थाञ्रो सर्वनु, परहितमां तत्पर रहुं। दोप सर्वे नाश पामो, सहु लोकनुं कुश्ल चहुं ॥ ज्ञान दर्शन चरण गुण, आराधना प्रेमे रहो। अही-निश ए प्रभु भावना हरिदासनी वेगे वहो ॥

॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

(१) सिव हरन मंगल करन, धन है श्रो जैन **ंधर्म। यह समरचां संकट कटे, टुटे आ**ठहूँ कर्म ॥

(२) निचे जोयां गुण घणां, जीव जंत टल जाय। ठोकर की लागे नहीं, पड़ी वस्तु मिल

जाय ॥ (३) लोभी गुरु तारे नहीं, तिरे सो तारन हार।

र्ि जो थारे तिरखो होवै, तो निरलोभी ग्रह धार।।

) रतन जड़त री कोटडी, मांही पन्नालाल । सत गुरू ऐसा भेटिये, छिन मे कर दे <sub>३३)</sub> वालपणे में जोग्या वास,गगा ऊपर कियो निवास । बुढ़ापे भोगारी ज्ञास, ता कात्यो (३४) मिठा वोल्या गुण घणा, सुख उपजे कर्छ ग्रीर । वशीकरण ए मंत्र हें, तजो बोल (ईप्र) गुणी जन को वन्दणा, श्रोगुण देख म<sup>ध्य</sup>-स्य । दुखी देख करुणा करे. मित्र भाव (३६) साथ सदाही वांदिये, पो उनते सूर।

डमां घर लच्छमी सपजे, टलिंद्र जावे दूरे॥ (३७) कुल मरजाटा छोडे माजना, पिने चिलम ने होका । धम ध्यान री चटणी कर गया,

<sub>त्र्याला</sub> गिर्ते न सुका ॥

(३८) होके में हिसा घणी, हे पाप रो

(११) ञ्रारंभे धन निपजे, ञ्रनर्थे धन जाय । क्या पत्थर कृटावसी,क्या लुचा सोधा खाय ॥ (१२) देतो भावे भावना, ढेतो करे संतोप । वीर

कहे रे गोयमा, ए दोनु जासी मोच ॥ (१३) छोटी ने वेटी गिगो, वरावरी की वैन।

मोटी ने साता गिर्णे, ए ऊतम का चैन ॥ (१४) वचन वचन के आंतरो, वचन के हाथ न पांव।

एक वचन है श्रोपधी, एक वचन है घाव॥ (१५) चतुर पुरुष वह जानिये, सगली समभे

श्रेन। श्रेननमे समभे नही तासे करिये सैन, सैनन में समभे नहीं तासे करिये

वैन। वैनन से समभे नहीं तासे लेन न दैन ॥

(१६) ज्ञानी से ज्ञानी मिले, करे ज्ञानकी वात।

मुर्ख से मूर्ख मिले, क्या मुकी क्या थाप॥ (१७) सबसे चढता प्रेम हैं. प्रेम ऊतरतां नेम।

जहां घर प्रेम न नेम है, तहां घर कुशल न खेम ॥

(४५) ऋहि विप काटत चहे, या देखत ही चढ जाय । ज्ञान ध्यान पुग्य प्राण्कू, जड़ा मूल से खाय ॥ (४६) आंव नमें आंवली नमें, नमेस डाडम दाख । इरंड विचारा क्या नमे, ऊसकी श्रोञ्जी जात ॥ (४७) चुमा वडेंन को होत है, श्रोहे को उत्पात । क्या कृष्ण का घट गया,भद्यु मारी लात ॥ (४८) जैसी नजर हरोम पै, वैसी हर पे होय। चला जाय बैकूंठ में, पला न पकडे कोय ॥ (४६) पपे सूं परचो घणो, हवे रहो हजुर। लला लिव लागी रही, ददा दिल से दूर ॥ (५०) पंडित वो जो ना ऋ। एो गर्व ज्ञानी वो जो जाणे सर्व। तपस्त्री वो जो ना धरे कोघ, कर्म ऋाठ जोते वो जोध ॥

जाए सवा तपरवा वा का कर्म आठ जोते वो जोध ॥ (५१) जतम वो जो वोलेन्याय, धर्म वो जो मन में भाय॥ मेलो वा जो निन्दा करे, पाणी वो जो हिंसा आचरे॥ (२६) धर्म धन आं संचीया, जाकी होड़ न होय क्या राजा क्या वादशाह, तुले न लाग

राज । एकज पृकर्ति ना तजी, जिनसे भय अकाज ॥ (२८) अकल अमोलख गुग् रत्न, अकलां वुभे

(२७) कनक तज्याकामन तज्या, तज्या सिहांस

राज। एक अकल की नकल से, सुधे सगला काज॥

(२६) दुष्ट न छोडे दुष्टता, सज्जन तजे न हेत काजल तजे न श्यामता, मुक्ता तजे न

श्वेत॥ (३०) भली आपसुं नहीं वर्णे, बुरी किंया मत

जाय। अध्त भोजन छोडने, जहर काहेकू

(३१) भुरकी भगवंत नांमरी, होल कर्मी ने लागे। अंतस रो वैराग हुवे तो, ऊभो ही कींग। जात न जाएँ। जीवरी, तो धम क्यां थकी होय॥

👫 ५६। धर्म वाडी न नीपजे, धर्म हाटे न वैकाय। धर्म शरीरे नीपजे, जे कछ कीनो जाय॥

६०। धन अनंतीवार पामियो, धम ज पायो नांय। हुवे दालीडी शाश्वता, कीसी गएतरी मांयः॥

<sup>६</sup> ६१। धनवंत ने ही दुख छे, निरधनियांने दुःख । श्रंतर ज्ञान विचारलो, समता पकडयां सुख ॥

ं ६२। ज्ञान समो कोई धन नहीं, समता समो ने सुख। जीवित समो श्राशा नहीं, लोभ समो नहीं दुःख॥

<sup>र</sup> ६३। जे घरे साधु न संचरे, कर सु<sup>'</sup> न देवे दान। ते घर ऋकुरडे सारखो, के जाणो समसान॥ ि ६४ । जो घरे साधु संचरे, करसुं देवे दान । ते घर नंदन वन जिसों, के जागो देव विमागा॥

ं६५ । द्याज माता विनवुं, सतग्रह

( १६६ )

(३६) रात गमाई सोय कर, दिवस गमायो खाय। हीरे जिसो मनुष्य जमारो, कोडी सटे जाय ॥ (४०) द्या तो दिलमें घणी, मीठा जारा वैण।

उंचा वाने जाएजो, नीचा राखे नैए॥ (४१) दया तो दिल में नहीं, कडवा ज्यांरा वैण। नीचा वाने जाएजो, ऊँचा राखेँ नैए ॥

(४२) अकल अमोलप गुण रत्न, अकल पूछें मुनिराजं। एक अकल री नकल सुं, सव

ही सुधरे काज ॥ (४३) कलियुग त्रायो कवीर जी भली वातको

पेरो ॥

संग ॥

चेरो । मन गमताई बोलगो, खुसामदीको (४४) नागए के मुख जहर है, स्त्री के सब ग्रंग। तिण कारण इस नार का, कवह न करीये

गवार | क्रुष्णा वलभद्र द्वारिका, जातां न लागी गर्॥ े १ रे जीव सुगा तूँ वापड़ा, म करिश गर्व गंबार । मूल स्वरूप देखी करी, निज जीवशु तू विचार ॥ ্ৰত্ত হ<sup>া</sup> जे रचना दिन ऊगती,तेरचना नही सांक । इस्युं जाणी रे जीवड़ा, चेतिह हृदय ,७४ । त्र्यांख तर्गे फरुकड़े, ऊथल पाथल थाय। ्डस्यु' जागी जीव वापड़ा, म करिश ममता माय॥ ७५ । कोई दिन राणो राजीयो, कोई दिन भयो तूँ देव। कोई दिन रांक तूं अवतरचो. करतो श्रोरज सेव॥ ७६। कोई दिन क्रोडपामीयो, कोई दिन हिं कोई पास। कोई दिन घर घर एकलो, मे रांक ज्युं दास ॥ ७७। निंद्या करे जे पापणी, ते जीवो जग य। मल मुत्र धोये परतणां, पछे अधोगति

श्रधिकी अभय कुमार । मंत्र खरो वो श्री <sup>नव-</sup> कार, देव खरो वो मुक्ति दातार ॥

प्र। पदवी वो तीर्थंकर तणी, मित वो जो उपजे ज्ञापणी। समिकत वो जो साचु गमे, मिथ्यात वो जो भुलो भमे॥

५४। मोटो वो जो जाए। पर पीड, धनवंत वो जो भांजे भीड़। कामी नर वो कहिए अन्ध, मोह जाल वो मोटो फंद॥

पूप । त्र्याज्ञा वो जहां वोली टया, मुनिवर वो जो पाले किया। साचो जपे वो प्रमुको नाम,

जोगी हुवे जो तजे अभिमान॥
प्रह । आयोञ्जेजीव एकलो,जासे एकाएक॥

काचे भरोसे काई रहो, समजो आणी विवेक॥

५७। चोरासी में भटकतां, पाम्यो नर
अवतार। चेत सके तो चेत ले, नहीं तो फेर

चोरासी तैयार ॥

जाकी, ऐसी छवि छाई है. मरि जावे नरक घार ताकूं नहीं और ठौर, ऐसो दुप्ट जीव जेने समिकत न पाई है ॥ १ ॥ जासुं श्रागे चोकड़ी को नाम है अप्रस्याख्यान, जामे जीव वर्ष एक केरी स्थिति पाई है, कोध, मान, माया, लोभ, जामे जीव रह्यो खोभ, आदि केरी चोकडी सुं श्रति कप्टदाई है, कोध हे तालाव की लीक. मान दांत केरो थंभ, माया मीढ़ा सीग सम. एवी दुःख दाई है, लोभ है मोरी केरो रंग ताको नहीं होत भंग, मरीने तिर्यंच होय, वृतो न आई है॥ २॥प्रत्याख्यानी चोकड़ी मे, वस्यो हैं चेतन राय, जीव जीहां चाग् मास, केरी स्थिति पाई है, क्रोध है वालु की लीक, मान वेंत केरो थंभ, पिछली से कछु कम ज्ञानी वत-लाई है, माया वेल केरो मृत, समय की नहीं कूत, धर्म सेती राखे हित, श्रावक वर्ति थाई है लोभ हें ( गाड़ा के ) खंजन को रंग, तासु जीव राखे संग, मनखा ढेह छांड़ि जीव मनुप्य

( १८० ) सतगुरु दाता मोचका, माग दिय

राज। जत्र जाग्यो तव एकलो, राज न सीमे काज॥

निरधार ॥ ६६। जिसुं कीजे तिसुं पाइये, करे तैसा फल जोय। सुख दुःख त्राप कमाइये, दोर्प न

दोजे कोय ॥

शासन मम ॥

राखण हार। इंड चंद्र जिनवर वली, गया सभी

६७। तिम ए कुटंम्त्र सहू मल्युं, खोटी माया जाल। आयू पहोंचे आपणे, खिण थाये विसराल ॥

६६। सुतो सुपन जंजाल में, पाम्यो जाए

६८। स्राय पहोती स्रात्मा, कोई नर्ह

७०। दोप दीजे निज कर्मने, जिल नही कीनो धर्म । धर्म विना सुख नहीं मीले, ए जिन

७१। धन जोवन नर रुपनो, गर्व करे तूं

ुजैन विता फेंन हिंसा धर्म न होय रे, जैन मे ज़न्म लीयो, महाजन नाम दीयो, नीच नीच काम कीयो, गयो कुल खोयरे,जयणा किनी सुं-सीला की,जयगा किनी परेवा की, जयगा किनी धर्म रुचि, नेमी जिन जोय रे, रिपलालचंदजी केने, जयागा करे धन सोही, जयागा विना जग सहु, रीतो गयो खोयरे॥ २॥ ं नगरी सोहंति जल मूल वृत्तं, राजा सोहं-ता चतुरंगी सेना। नारि सोहंति शुसिलवंतो, साधू सोहंता अमृत वाणी॥ २॥ विजली रे भवके मोती पोयले तो पोयले, र्ज्ञान री चिराग चित जोयले तो जोयले. प्रभुजी सु बिंम प्यारो होयले तो होयले ॥ ४॥ 📆 पेटही के काज मानव, जोग लेई जोगी भयो, पर सुख देख भुरे जेसो कांगो हाट को, भेख लेय भट कत गट कट सवरस, फुटो मोती मोंगो नहीं, पोयो फुंढो पाट को, श्रोंरां ने देवे, आप पोता रीता रेवे, हांस नहीं

( ६७३ )

७८। परतांत निंदा जे करे, कुडां देवे त्रात। मर्म प्रकाशे पर तगाा, तेथि भलो चंडात ॥

७६। सञ्जन दुर्जन किम जाणीये, जब मुख बोले वाण । सज्जन सुख अमृत खबे, दुर्जन विष-

नी खाण॥ ८०। देखत सब जुग जातही, थिर न रही सबि कोय। इसो जागी भलो कीजिये, हिय

विमासी जोय॥ ॥ इति ॥

॥ संवैया ॥

॥ च्यार कवाय को लिख्यते ॥

प्रथम कपाय वश पड़यो हे जगत <sup>जीव,</sup>

आदि केरी चोकड़ी में उमर गमाई है, क्रोध है पत्थर लीक, मान है वज्र थंभ, मुड्यो न

मुड़त जाकी ऐसी करड़ाई है, माया है वांस की जड़. लोभ है किरमची रंग, धोयो न धोवत

जैन विना फेंन हिंसा धर्म न होय रे, जैन में जन्म लीयो, महाजन नाम दीयो, नीच नीच काम कीयो, गयो कुल लोयरे, जयणा किनी सुं-सीला की, जयणा किनी परेवा की, जयणा किनी धर्म रुचि, नेमी जिन जोय रे, रिपलालचंदजी केवे, जयणा करे धन सोही, जयणा विना जग सहु, रीतो गयो खोयरे ॥ २ ॥

े नगरी सोहंति जल मृल वृत्तं, राजा सोहं-ता चतुरंगी सेना। नारि सोहति शुसिलवंतो, साधू सोहंता अमृत वाणी॥३॥

विजली रे भवके मोती पोयले तो पोयले, ज्ञान री चिराग चित जोयले तो जोयले, प्रभुजी सुं श्रेम प्यारो होयले तो होयले ॥ ४ ॥ ४ में पेटही के काज मानव, जोग लेई जोगी भयो, पर सुख देख भुरे जेसो कांगो हाट को, भेख लेय भट कत गट कट सव रस, भुटो मोती मोंगो नहीं, पोयो फुंदो पाट को, श्रोरां ने उपदेश देवे, आप पोता । रेवे, हांस नहीं पुगे

पाई है ॥ ३ ॥ संजल को कोध जैसो, पाणी केरी लीक जान, त्रागे होय काढ़त है, पाछेही मिटाई है, मेग् थंभ मान कह्यो, धूप लागी गली गयो, ताकी मास केरी थिती पाई है, माया तागा केरा वल, ऐसो जीव करे छल, केवल की हाए करे, साधु विरती आई है, लोभ है हलद रंग, धोया सेती होय भंग, मोच नहीं जासुं जीव देवगति पाई है ॥ इति ॥ ॥ सबैया ॥ वो विरलां संसार नेह, निरधन से पाले; वा विरलो संसार, लाभ और खरच संभाले; वं विरलो संसार, दीठा करे अदीठा ; वो <sup>विरलो</sup> संसार. जीभसे वोले मीठा, श्रापोमारेहरि<sup>भजे,</sup> 'तन मन तजे विकार ; श्रौगुण उपर गुण्<sup>करे,</sup> वो विरलो संसार ॥ १ ॥ जैन धर्म जतना में केह्यो श्री जिन<sup>द्या</sup>.

रत पड्यो छे वजार मे. रह्या गरङ लपटाय ॥ मूरख जागो कांकरो, चतुर लियो उठाय ॥७॥ चौटा केरे वाजार मे, लांवा पान खजूर॥ चढ़े तो चाखे प्रेम रस, पड़े तो चकनाचूर ॥=॥ ए सिखामण सांची कही, सर्वा ने हितकार ॥ कईकद्याकरुणाराखजो तमेसांभल्यानापरिमाण॥ <sup>खरो</sup> मार्ग वीतरागनो, सूजम जेना भेद ॥ सेठा थईने सरध जो, मनमा राखी उमेद ॥१०॥ डिगाट्यां डिगजो मती, निश्चय राखन्यो मन॥ हिंसासे रह जो वेगला, कहेवाशो धन धन ॥११॥ ढील न कीजे धर्मनी, तप जप लीजे लृट ॥ जैसी शीशी काचकी, जाय पतक मे फूट ॥१२॥ **दुपम श्रारो पंचमो, निश्चल राख जो मन**॥ थोड़ा मांहे नको घणो, जिम कूंडा मांहि रत्न ॥१३॥ साधु चन्द्रन वावना, शीतल जाको ऋहु ॥ लहर उतारे भुजह की, देय ज्ञानको रह ॥१४॥ साधु वड़े परमार्थी, मोटो जिन को मन ॥ भर भर मुष्टी धर्म रुपियो धन ॥ १५

दोड़ायो घोडो काठ का, रिप लालचन्दर्जी कहे समकित विना नर, धोबी केसो कुत्तो जैसो घर को न घाट को ॥ ५॥

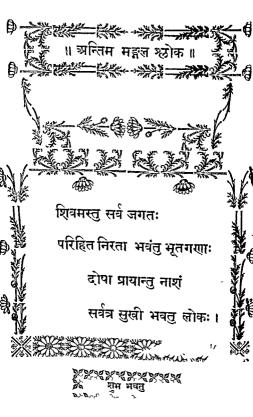
## वँराग्योपदेशक दोहा।

-30 Miles

दया सुखांनी वेलड़ी, दया सुखांनी खान ।
अनंत जीव सुगते गया, दया तया फल जाया।१॥
हिंसा दुखनी वेलड़ी, हिंसा दुखनी खाया ॥
अनंत जीव नरके गया,हिंसा तया फल जाया॥॥
चेतो रे भव प्रायिया, ए संसार असार ॥
थिरता कोइ दीसे नहीं, धन जोवन परिवार ॥३॥
धर्म करो तमे प्रायिया, धर्मथकी सुख होय।
धर्म करंता जीवनें, दुखिया न दीठा कोय ॥॥॥

जीव दया पाली सही, पाली छे छव काय ॥ वस्ता घरनो प्राहुगो, मीठा भोजन खाय ॥॥ जीव दया पाली नहीं, पाली नहीं छव काय ॥ सूना घरनो पाहुगो, जिम आद्यो तिम जाय ॥६॥

経験を 参り शान्तिः। शान्तिः॥ शान्ति॥ 新の作品を変われるか श्री महावीरके वचन में कुछ सन्देह नहीं। जैसा लिखा हुआ प्रन्थ पुस्तक, पाने में देख्या वांच्या या सङ्जन से धारचा सुगया वैसा ही ऋल्प वुद्धि के अनुसार लिखा है, तत्व केवली गम्य , अजर, पद, हस्व, दीर्घ, कानो, मात, मिंडी, श्रोछो अधिको, श्रागो पाछो, जिन वासी विपरीत अशुद्ध पसे लिख्यो होय अथवा कोई तरह की छपाने में ज्ञानादिक की विराधना कीनी होय, जागाते अजागाते कोई दोप लाग्यो होय तो मन वचन काया करी मिच्छामि दुक्कडं ॥ इति श्री जेन रतवन सभाय मंत्रह प्रन्थ समाप्तम् ॥ 的推紧流流流



Jain Stawan Saghay Songsah To be had of :--Augarchand Bhairondan JAIN LIBRARY. моноция MAROTIAN BIKANER, RAJPUTANA Augarchand Bhairondan JAIN NATIONAL LIBRARY Moholla Marotian BIKANER, RAJPUTANA AND Augarchand Bhairondan Jain National Girls Institute THANTHARA KI GOWAD Near Moholla Marotian

> BIKANER, RAJPUTANA ଭିତ୍ୟକ୍ତି (ଭିତ୍ୟକ୍ତିକ୍ତିକ୍ତିକ୍ତିକ୍ତିକ୍

